अपनी ओर से

सितम्बर '६५ मे पाकिस्तान के साथ जो सैनिक सघर्ष हुआ, उस ने पूरे देश मे एक अभूतपूव वैचारिक क्रान्ति ला दी। प्राय एक माह का यह सघर्ष समय-विस्तार की दृष्टि से बडा नही कहा जा सकता, लेकिन उस ने लोक-मानस को जितना प्रभावित किया, उसे बिना किसी अतिशयोक्ति के आजादी के बाद की सब से महत्वपूर्ण घटना कहा जा सकता है।

'युद्ध-काल मे साहित्यकार का दायित्व' इस विषय पर इधर बहुत ज्यादा चर्चाएँ हुईं, लेकिन सभी चर्चाओ मे केन्द्र बनी हुई थी युद्ध-स्थिति, न कि युद्ध-साहित्य। कुछ फैशनेबल साहित्यकारो ने युद्ध को बाह्य, आरोपित और अस्थायी कह कर उस के जन-मानस पर पडे प्रभाव को नकार देना चाहा। उन की अन्तर्मुखी चेतना युद्ध से बिल्कुल न हुच-मचाई हो, सो नहीं, लेकिन युद्ध को अपने साहित्य मे बिम्ब देना उन्हे फारमूलाबाजी लगी। फारमूला-लेखक हो जाने के भय ने उन्हे इतना आक्रान्त कर दिया कि वे उन सभी साहित्यकारो को हिकारत की निगाह से देखने लगे, जो अपनी रचनाओ मे युद्ध-चेतना का अवतरण कर रहे थे या कर रहे हैं।

'सीमाएँ' लिखते समय मेरे मन मे इस का भय तो नही था कि मुझे हिकारत का सामना करना पडेगा, लेकिन यह सशय अवश्य था कि इसे मै कितना साहित्यिक रूप दे सकूगा। अन्तत इस सशय को मै ने एक चुनौती के रूप मे स्वीकार किया।

'सीमाएं' मे कुछ जासूस पात्र हैं। जासूस हैं इस लिए जासूसी भी है। युद्ध-स्थिति मे जासूसी एक सहजता होती है, अत उस के चित्रण मे जासूसी तत्व आ जाएँ तो मै नहीं समझता कि भडकने की कोई

आवश्यकता है। 'जासूसी याने फारमूला' इस पूर्वाग्रह को छोडने के लिए जो बिल्कुल तैयार न हो, उन्हें शायद इस कृति मे कोई रुचि न हो सके।

इस का कथानक पूर्णतया काल्पनिक है। किसी भी व्यक्ति से किसी तरह का साम्य मात्र एक संयोग समझा जाए। युद्ध तथा अन्य विषयो-क्षेत्रो की तारीखें सही हैं।

—मनहर चौहान

आई-१५४, कीर्त्तिनगर,
नई दिल्ली-१५।
तीन जनवरी, १९६६।

एक

बोर हो कर सईदा 'एयर-इण्डिया' के आफिस से बाहर निकल आई।

उस ने अपनी इमली के दाने जैसी कलाई-घडी मे देखा। नौ भार्गव साहब को साढे आठ बजे तक आ जाना चाहिए था। आधे घंटे की देर कोई कम नही होती। इस के अलावा, यदि उन्हे बस मे आना होता तो दिल्ली की बदनाम परिवहन-व्यवस्था को दोषी ठहराया जा सकता था, लेकिन उन का तो अपना लैम्ब्रेटा है।

नौ बजे ही धूप तेज हो गई थी। 'दूकाने खुलने से पहले का कनाट-प्लेस कितना सूना लगता है ' सईदा ने सोचा, 'हमेशा मेक-अप मे रहने वाली कोई आधुनिका किसी गफलत मे बिना मेक-अप के दिखाई पड जाए कुछ ऐसा!'

तुरन्त लगा कि उस के इस तरह सोचने मे एक विशेष साहित्यिकता है। साधारण लडकी हद-से-हद यही सोचती कि दूकाने बन्द हो तो कनाट-प्लेस बुरा-सा लगता है। दो-ढाई साल पहले वह दिल्ली आई थी तब उस ने भी इसी तरह सोचा होता, लेकिन रेडियो-स्टेशन के सजीदा वातावरण, वहा आते-जाते पत्रकारो-साहित्यकारो तथा भार्गव साहब के साथ के कारण सईदा को सोचने-समझने के अनेक नए सदर्भ मिले थे।

कारे, टैक्सिया गुजर रही थी। कभी कोई स्कूटर नीला धुआ उडाता, भरभराता हुआ निकल जाता। लू के झोके आने लगे थे। झडे हुए, सूखे पत्तो के झुण्ड-के-झुण्ड जमीन को खुरचते हुए-से, धीमी व रहस्यमय सरसराहट के साथ उड रहे थे। सईदा ने पल्लू को अपने कधो

पर अच्छी तरह लपेट लिया। साडी मे उस का व्यक्तित्व हिन्दुत्व से ओतप्रोत हो उठता था। उस के चेहरे पर वह मुसलमानपन नही था, जो 'सईदा' कहने से कल्पना मे उभर सकता है। 'सईदा' की बजाय उस का नाम 'कमला' या 'सुशीला' कर दिया जाता तो शायद ज्यादा ही विश्वसनीय लगता।

'सपादकजी के यहा अटक ही गए। देखू, शायद फोन पर मिल जाए।' सोच कर सईदा फिर 'एयर-इण्डिया' के एयर-कण्डीशण्ड आफिस मे चली आई। देखा कि फोन पर पहले से कोई बाते कर रहा है। वह फोन रखे जाने का इन्तजार करती रही, लेकिन बातचीत लम्बी जा रही थी। बीच-बीच मे वह व्यक्ति धीमे ठहाके लगा रहा था। हु ! घरेलू किस्म की बातो के लिए इन्हे 'एयर-इण्डिया' का ही फोन मिला है।

वह एक सोफे पर बैठ गई। एयर-कण्डीशनर सोफे के पीछे से ठण्डी हवा का मोटा झरना अन्दर फेंक रहा था, जो उस के पैरो पर महसूस हुआ।

दो कुर्सियो के नजदीक, फर्श मे एक खाचा-सा बना हुआ था, जिस के बीच मे एक नाजुक, नन्हा फव्वारा चल रहा था। खाचे के किनारे छोटे-छोटे गमलो मे कैक्टस लगे हुए थे। सडक की ओर वह पूरी दीवार काच की होने के कारण जमीन को खुरचते हुए उडते वे सूखे पत्ते स्पष्ट देखे जा सकते थे। बोईंग-हवाई-जहाज का एक माडल काच से प्राय सटा हुआ रखा था, जिस मे अन्दर बैठने की व्यवस्था वामन रूम मे दिखाई गई थी।

उस व्यक्ति ने फोन रख दिया। सईदा ने डायरेक्टरी मे सम्पादकजी के घर का नम्बर देखा और डायल घुमाया। दूसरे छोर पर हो रही घण्टी की आवाज वह सुनती रही। 'हैलो' होते ही वह बोली, "भार्गव

साहब है क्या ?"

"जी हाँ।"

"जरा उन्हे दीजिए।"

"आप कौन साहिबा बोल रही है ?"

"मिस सईदा हियर "

"प्लीज होल्ड आन।"

फोन पर भार्गव के आते ही वह नाराज होने लगी, "मै कब से इतजार कर रही हूँ और "

भार्गव ने ठहाका लगा दिया।

वह झल्लाई, "यही तो बुरी बात है आप मे। किसी समय तो सीरियस हुआ करिए !"

"मेरी बीवी को भी यही शिकायत है।"

"फिर मजाक ?"

"कहा से बोल रही हो ?"

"जहन्नुम से !"

" 'एयर-इडिया' के आफिस से ?"

"मैं बेहद बोर हो चुकी हूँ।"

"बस, रवाना होने ही वाला था। तुम ने फोन कर के रोक लिया, वरना अब तक पहुच चुका होता।"

"क्या खूब ! इस का भी कसूर हमारे मत्थे ! खैर· तो आप रवाना हो रहे है ?"

"हा।"

सईदा को कौतूहल हुआ कि पूछे, फैसला क्या रहा, लेकिन उस ने "जल्दी आइए," कह कर फोन रख दिया। फैसला नव्वे प्रतिशत मालूम ही था। साप्ताहिक 'किरण' मे उस का कालम यथा-सम्भव अगले महीने से शुरू हो जाएगा।

तीन रशियन महिलाओ ने प्रवेश किया। उन मे से दो काफी मोटी थी। उम्र मे भी तीस से कम नही थी। तीसरी युवती चौबीस-पच्चीस की थी। छरहरी और खूबसूरत। तीनो खामोशी के साथ एक सोफे पर बैठ गई।

बोर्ड पर लगी सूचनानुसार भार्गव के छोटे भाई का हवाई-जहाज मौसम की खराबी के कारण चार घण्टे देर से उडने वाला था। उडान का वक्त पहले शायद बारह बजे था। अब शाम को चार बजे। उडान इस से आगे-पीछे भी हो सकती थी।

सईदा ने उन युवको की टोली की ओर देखा, जो भिलाई स्टील प्रोजेक्ट की ओर से विशेष प्रशिक्षण पाने के लिए रूस जा रही थी। इन्ही युवको मे से कोई भार्गव का छोटा भाई था। सईदा ने उन के चेहरे से मिलता-जुलता चेहरा ढूढने का असफल प्रयास किया। ऐसा एक भी चेहरा नही था। सगे भाई भी कभी-कभी इतने अलग होते है कि सहसा विश्वास न हो। शायद यही किस्सा इस बार भी है। बहरहाल, सईदा को किसी की रूस-उडान मे दिलचस्पी नही थी। वह यहा आई थी तो इस लिए नही कि भार्गव के छोटे भाई को 'सी-आफ' कर सके, बल्कि इस लिए कि यहा मिलने की बात कल शाम रेडियो-स्टेशन के केंटीन मे तय हो चुकी थी।

भार्गव ने कहा था, "मै सुबह साढे सात बजे सम्पादकजी के यहा पहुच जाऊगा। वहा से 'एयर-इण्डिया' का आफिस पास ही है। सारी बात तय करके साढे आठ तक जरूर तुम से आ मिलूगा। बीस-पच्चीस मिनट पन्ना से बाते कर के फिर कही चले चलेगे। पन्ना को 'सी-आफ' करने के लिए पालम जितनी दूर तो जाने से रहे।"

फोन पर उन्होने कह तो दिया था कि अभी रवाना हो रहा हू, लेकिन सईदा ने उकताहट के साथ फिर अपनी कलाई पर बधे उस इमली के दाने मे देखा।

"माफ कीजिएगा "

अपरिचित स्वर ने उसे चौका दिया। घुघराले बालो, भरे चेहरे और बारीक, घनी मूछो वाला एक युवक हाथ मे नोट-बुक और पेन्सिल लिए, उस के करीब आ कर झुकता हुआ पूछ रहा था, "आप ने अपने सामान का वजन करा लिया ?"

"ओह, नो ! मै फ्लाई नही कर रही, मैं तो किसी को 'सी-आफ' करने के लिए "

"दैट्स ओके " युवक मुस्करा कर दूसरे मुसाफिरो की ओर चला गया।

सईदा ने फिर अपने पैरो पर एयर-कण्डीशनर द्वारा फेकी जा रही ठण्डी हवा के झरने को महसूस किया। उस ने पैर पर पैर रख कर साडी को सहेजना चाहा, लेकिन उसी समय वह युवक वापस आया और सोफे पर बैठता हुआ बोला, "एक्सक्यूज मी अगर आप एकाध मिनट स्पेयर कर सके तो "

"जी ?"

"जब आप फोन कर रही थी, मैं काउण्टर के पास ही खडा था। मैं यहा रिसेप्शन मे काम करता हू।" युवक ने सईदा की आखो मे क्षण-दो-क्षण बिल्कुल सीधे देखा, फिर अपनी गोद मे और उस के बाद सामने की दीवार की ओर, जिस पर विशिष्ट भारतीय शैली मे फर्श से छत तक एक सुरुचिपूर्ण पेण्टिग बनाई गई थी। पेन्सिल जेब मे रख कर उस ने नोट-बुक बन्द कर ली, "आप के जो दो-चार लफ्ज सुनाई पडे, उन से मालूम हुआ कि आप आई मीन 'आप मोहमेडन है।"

"तो ?"

"जी मेरा मतलब था साडी मे आप बिल्कुल "

"जी हा, मुझे मालूम है। मैं बिल्कुल हिन्दू लगती हू।"

सईदा की आवाज मे तेजी आ गई। सचमुच उसे बुरा लगा था।

वह हिन्दू है या मुसलमान, दूसरो को इस से लेना या देना ? रेडियो-स्टेशन मे तो मेला लगा हुआ है । वहा इतने सम्प्रदायो और देशो के लोग है और इतने अधिक है कि किसी को अपने हिन्दू, मुसलमान या पारसी वगैरह होने का पता नही चलता, लेकिन रेडियो-स्टेशन से बाहर जब ऐसे सवालो या लोगों से मुठभेड हो जाती तो सईदा झुलस उठती है ।

"आप शायद बुरा मान गई आय'म रियली सॉरी मेरा मतलब वह नही था •"

"जी नही, बुरा मानने लायक आप ने कुछ नही कहा ।" सईदा की आवाज मे वही तेजी थी ।

"खैर दरअसल मै ने पूछना इस लिए चाहा कि मै मै भी मुझे अख्तर हुसैन कहते है ।"

सईदा के होठो पर औपचारिक मुस्कान आई । 'तो बात यह है !'- उस ने सोचा ।

कम-से-कम समय मे अधिक-से-अधिक कह देना चाहता हो, कुछ इस तरह वह युवक बोलता गया, "मै यहा कुछ महीने पहले ही आया हू और कोई अजीज़ दोस्त न होने से बडा अकेलापन महसूस करता हू । शायद इसी से आप का नाम सुन कर मुझे लेकिन आप को बुरा लगा हो तो माफ कीजिएगा "

"मै ने कहा न, बुरा लगने लायक आप ने कुछ नही "

"आप का लहजा ऐसा था कि "

दोनो चुप हो गए । सईदा अकुलाने लगी । निश्चय ही युवक का सम्मान आहत हुआ था, जबकि सईदा ने ऐसा नही चाहा था । उस ने तो बचने की कोशिश ही की थी—बेमकसद की उन बातो से बचने की कोशिश, जिसे खूबसूरत लडकियो पर थोपने के लिए कुछ ढीठ लोग हमेशा लालायित रहते है । ऐसी ढीठता का सामना रेडियो-स्टेशन मे आए-दिन करना पडता । शुरू-शुरू मे सईदा को बडी बौखलाहट हुई थी

कि कहा आ फसी, लेकिन बाद मे यह सब स्वाभाविक हो गया था। इतना जरूर था कि धोखे मे कभी वह उन लोगो से भी तीखे स्वर मे बोल बैठती, जो वैसे नही होते थे।

युवक दीवार की पेण्टिग की ओर चुपचाप देखने लगा था। उठ कर वह वहा से चला क्यो नही जाता? बैठा क्यो है? क्या इस आशा मे कि सईदा को शर्मिन्दगी महसूस कराई जा सके?

"आप दिल्ली मे नए-नए आए है?" आखिर उसे पूछना पडा।

"जी हा।" अख्तर का चेहरा ऊपर उठा। 'कुछ मर्द तो लडकियो से भी नाजुक होते है।' सईदा सोच गई, 'छोटे-से एक वाक्य से चेहरा बुझ जाए और एक ही वाक्य से चमकने भी लगे!'

"पहले मै नागपुर मे था। अपने भाईजान के साथ। ग्रेजुएशन के बाद अभी कुछ महीने पहले ही नौकरी मिली है। आप?"

"मै रेडियो-स्टेशन मे हू—हिन्दी एनाउन्सर।" सईदा ने बताया। अपने को सभ्य दिखाने के लिए वह दो-चार औपचारिक बाते कर लेना चाहती थी।

काच की दीवार मे बने प्रवेशद्वार पर खस की टट्टियो द्वारा मई की गरमी के खिलाफ मोरचा खडा किया गया था। सडक पर आवागमन एकाएक कई गुना हो गया था। साढे नौ के बाद जनपथ के फुटपाथो पर लगी छोटी-छोटी, लेकिन समृद्ध दुकाने खुल चुकी थी। खरीदारो की सख्या अभी ज्यादा नही थी, लेकिन तेजी से बढ रही थी।

"वेरी नाइस! रेडियो-स्टेशन बहुत दिलचस्प जगह होनी चाहिए।" वह बोला। सईदा मुस्कराई और चुप रही।

भार्गव आ गए थे। काच की दीवार के इधर से सईदा ने उन्हे अपना लाल स्कूटर खडा करते देखा। स्कूटर मे से चाबी निकाल कर वह प्रवेश-द्वार की ओर बढे। चमडे के नए केस मे उन का कीमती कैमरा कन्धे से झूल रहा था। युवक से बिना कुछ कहे, बिना उस की

ओर देखे सईदा उठ कर प्रवेश-द्वार की ओर चली गई। भार्गव मुस्कराए।

यह बात लगातार सईदा के ध्यान मे थी कि सोफा छोडने से पहले उस ने युवक की ओर देखा तक नही। इस तरह उस ने उस के प्रति एक तुच्छता ही दिखाई थी और यह असभ्यता थी। लेकिन • हुँ ! ऐसे-ऐसे तो न जाने कितने

"आप को 'बस अभी' आने मे भी इतनी देर लगती है ?"

"क्या करता ! सम्पादकजी है मूडी। घर से निकलते-निकलते भी उन्होने रोक लिया और कैसी ट्रान्सपेरेन्सी अच्छी होती है, लगे इस पर डिस्कस करने।" भार्गव ने चारो ओर हडबडी मे देखते हुए कहा, "खैर तुम्हारा काम बन गया अ पहले तुम्हारा परिचय कराऊँ। अरे, पुन्ना !" वह एक युवक की ओर बढ गए। सईदा पीछे-पीछे खिची। न चाह कर भी उस ने उडती निगाह से फोन की दिशा मे देख लिया। अख्तर उधर के काउण्टर पर कागजात मे उलझा हुआ था।

भार्गव ने एक लम्बे, छरहरे और सावले युवक से, जो देखने मे किसी तरह उन का भाई नही लगता था, परिचय कराया, "यह है हमारे छोटे भाईजान। फिलहाल छह महीनो के लिए रूस जा रहे है, बाद मे ट्रेनिग का पीरियड शायद बढ जाए।" इस के बाद सईदा की ओर इशारा करते हुए कहा, "और यह है मिस सईदा। रेडियो-स्टेशन मे एनाउन्सर। इन की बदौलत मै पत्रकारिता का एक नया क्षेत्र अपने अधिकार मे लेने वाला हू।"

"मेरी बदौलत ! क्यो शर्मिन्दा करते है !"

"और नही तो क्या मिस्टर भुट्टो की सहायता से ?"

सईदा को हसी आ गई। पिछले कुछ दिनो से भार्गव ने यह नया तकियाकलाम ईजाद किया था। हर बात मे वह मिस्टर भुट्टो को फिट

कर देते । "देखो भई," उन्होने कहा, "अपन। पन्ना तो बेचारा जा रहा है रूस। इसे रहस्य बता देने मे कोई हर्ज नही । हा, तो माजरा यह है पन्ना बाबू कि मैं यहा के प्रसिद्ध साप्ताहिक 'किरण' में जल्द ही एक कालम शुरू करने वाला हू । पता नही, तुम कालम-फालम समझते हो या नही ! कालम याने हर बार छपने वाला विभाग । जानते हो, उस मे क्या हुआ करेगा ? रेडियो की धाधलियो की खाल उधेडी जाएगी । कालम असल मे लिखेंगी मिस सईदा और छपेगा श्रीमान भार्गव के नाम से । अगर सईदाजी के नाम से छप जाए तो इन की नौकिरी छू ! सब बडे चकराएगे कि भार्गव साहब हफ्ते मे मुश्किल से चार घण्टे तो रेडियो आते है । इतनी बातो का उन्हे पता कैसे चल जाता है ? लोगो को क्या मालूम कि भार्गव साहब दूरदर्शिता मे मिस्टर भुट्टो से किसी तरह कम नही । रेडियो-स्टेशन मे उन्होने एक निहायत खूबसूरत जासूस छोड रखा है ।"

"आप सब के सामने मजाक करते है !" सईदा शरमा गई । रेडियो-स्टेशन के माहौल मे यह एक मामूली मजाक होता, लेकिन किसी अन-जाने युवक के सामने, जो है भी भार्गव का छोटा भाई, एकदम से इतनी छूट ले लेना सईदा को अखर गया ।

भार्गव हसने लगे, "झेपने की कोई जरूरत नही । पन्ना मुझे अच्छी तरह पहचानता है ।"

कौन सोच सकता था कि कई बार लगभग वेतुके मजाक करने वाले इन भार्गव साहब की उम्र चालीस से कम नही है और वह दो बच्चो के जिम्मेदार पिता भी है ? मित्र-मण्डली मे कभी-कभी भार्गव बडी विचित्र स्थिति पैदा कर देते । महिलाओ की उपस्थिति में भी उन के मजाक कभी इतने अशिष्ट हो उठते कि सब अकुला जाते, लेकिन इस के लिए सईदा ने उन्हे कभी पछताते नही देखा था ।

सख्या सचमुच बहुत बडी थी। वे उन के घर भी आती-जाती। भार्गव साहब ने अनेक की समस्याए सुलझाई थी। अनेक को रोमास के मामले मे न केवल सलाहे दी थी, सफलता के लिए आवश्यक अनेक सुविधाए भी जुटाई थी। कइयो के रिश्तेदारो, दोस्तो या जान-पहचान वालो के बरसो से अटके काम चुटकियो मे करवा दिए थे। बदले मे उन्हे चाहिए था विभिन्न लोगो का साथ और मौके-बेमौके मनचाहा मजाक कर लेने की छूट। पत्रकारो, प्रोफेसरो, टेलिवीजन के कलाकारो, सम्पादको, सगीतकारो, साहित्यकारो आदि न जाने कितने वर्ग थे, जिन मे उन का ससम्मान उठना-बैठना था। इसी लिए सईदा कहा करती, "आप मल्टी-परपज़ है।"

दिल्ली के सब से अधिक बिक्री वाले दैनिक अखबार 'प्रभात' के पत्रकार तथा फोटोग्राफर होने के नाते उन का विभिन्न लोगो से बहुत आसानी से मेल हो जाता। एक बार की मुलाकात को मजबूत दोस्ती का रूप देने मे वह बहुत माहिर थे। जबान से मीठे थे ही, उन के साफ दिल का भी अहसास बहुत जल्द होने लगता और वह अनायास ही आत्मीय बन बैठते। पत्रकार की हैसियत से वह कई बार विदेश-यात्रा कर चुके थे। मूड मे होते तब विदेशो की ऐसी-ऐसी घटनाएँ सुनाते कि पेट मे बल पड जाए। पी० आर० आर० एम० (प्राइज राइज रेसिस्टेन्स मूवमेट) काफी-हाउस को उन्होने 'प्याराराम काफी-हाउस' नाम दे रखा था। शाम को उन का अड्डा वही होता। जिस मेज पर वे डटे होते, वहा के ठहाके 'प्याराराम' को हचमचा देते। विशाल मित्र-वर्ग को एक ही जगह समेट लेने मे 'प्याराराम' उन के लिए अत्यन्त सुविधाजनक था।

पिछले सप्ताह सईदा ने कहा था, "भार्गव साहब, घर इतना भेजना पडता है कि तनख्वाह पूरी नही होती। अम्मीजान बीमार ही चली आ रही है। कही से छोटा-मोटा कोई काम दिलवाइए न? लेकिन ऐसा हो कि घर-बैठे किया जा सके।"

दूसरे ही दिन भार्गव साहब एक 'आइडिया' के आथ आ धमके। बोले, "खास मिस्टर भुट्टो से सलाह कर के आया हू। चलो केण्टीन मे चाय-वाय पिलाओ, फिर बताऊ।"

वहा उन्होने कहा, "मै ने साप्ताहिक 'किरण' के सम्पादक मे औपचारिक बात कर ली है। क्या तुम रेडियो-स्टेशन की कमज़ोर नीतियो, धाधलियो या सफलताओ पर एक गम्भीर लेकिन छोटा लेख हर सप्ताह लिख कर दे सकती हो?"

"कोशिश करू तो पता चले। ऐसा काम पहले कभी किया नही है। कालेज के दिनो मे एक-दो चीजे छपी थी, सो भी मामूली पत्रिकाओ मे।"

"शुरू मे मै सुधार कर दिया करूगा। बाद मे अपने-आप कलम बैठ जाएगी, लेकिन कालम मेरे नाम से छपेगा।"

"मै भी यही पूछने वाली थी कि नाम का क्या करे, क्योकि यहा किसी को पता चल गया तब तो "

"मैं सब समझता हूँ। इट विल बी ए वेल-गार्डेड सीक्रेट।"

"लेकिन किसी दूसरे अखबार मे आप के नाम से कालम आएगा तो 'प्रभात' वाले एतराज न उठाएगे?"

"वह मैं सम्भाल लूगा। अभी 'किरण' के सम्पादक से मैं ने औपचारिक बातचीत ही की है। उसे फाइनल करने से पहले मै चाहूगा कि "

"क्या?"

"तुम उस कालम की एक-दो नमूने की किश्ते बना कर मुझे दे सकती हो? मै उन मे सुधार कर के, फिर से टाइप करवा कर सम्पादकजी को दिखा लू। उस के बाद ही · "

सईदा समझ गई थी कि भार्गव का असली मतलब क्या है। निश्चय ही भार्गव यह कहना चाहते थे कि पहले तुम लिख कर दिखाओ तो

सही। कही ऐसा न हो कि चीज़ मेरे सुधारने के बाद भी छापने के लायक न बने। सईदा को बुरा न लगा था। भार्गव की जगह वह होती तो उसने भी वही किया होता। दो-चार दिनो मे उस ने खूब परिश्रम कर के कालम की दो क़िश्ते बनाई। उन मे रेडियो मे इस्तमाल होते हिन्दी के स्वरूप की विशद चर्चा की गई थी। भार्गव को दोनो किश्ते इतनी पसन्द आई थी कि वह बोले थे, "इन मे तो सुधार की भी बहुत कम गुन्जाइश है।"

दोनो किश्ते सम्पादक 'किरण' को विचारार्थ दे दी गई थी। सम्पादकजी ने आज सुबह बुलाया था अन्तिम निर्णय के लिए। इत्तफाक से आज ही सुबह पन्ना को भी फ्लाई करना था। कल शाम भेट होने पर भार्गव साहब ने पूछा था कि क्या तुम सुबह साढे आठ बजे 'एयर-इण्डिया' के जनपथ-आफिस मे आ सकती हो ?

"कल मेरी ड्यूटी दस बजे से है।" सईदा ने कहा था, "ठीक है, आप से मिलने के बाद मै रेडियो-स्टेशन चली जाऊगी।"

इस वर्ष वह कुछ मोटे हो गए थे, वरना पिछले साल हद-से-हद तीस के नजर आते थे। अब भी चालीस नही, पैंतीस के ही आसपास लगते थे। दोनो गालो पर एक-एक झुर्री गहरी होती जा रही थी, लेकिन आखो मे वही शरारत। तोद काफी निकल आई थी तो भी तग मोहरी की पेंट पहनते। अच्छी नही लगती थी, लेकिन उन से कहे कौन ? कोई कह भी दे तो ठहाका लगा देने के सिवा उन पर शायद हो कोई असर हो।

सईदा एक ओर बैठी रही और भार्गव पन्ना से बाते करते रहे। सईदा की आखे फोन के पास वाले काउण्टर की ओर बार-बार चली जाती, लेकिन अख्तर अपने कागजात मे ही उलझा रहा। एक बार—··केवल एक बार हल्के से उन की आखे मिली, लेकिन तुरन्त दोनो निगाहे चुरा गए।

"ओके, माई डीयर, विश यू बेस्ट आफ लक !" भार्गव पन्ना की पीठ थपथपा रहे थे। पन्ना का सिर झुका हुआ था। भार्गव बहुत गम्भीर थे। उन्हे इतना गम्भीर सईदा ने पहली बार देखा। शायद इस के पीछे उन की असीम खुशी छिपी हो। "आओ, सईदा !" कहते हुए वह मुख्य दरवाजे की ओर बढ गए।

सईदा ने मुस्करा कर पन्ना की ओर देखा और धीमी आवाज मे कहा, " बेस्ट आफ जर्नी !"

"थैक्यू !"

वह सडक पर निकल आई। ठण्डक मे से अचानक बाहर आने पर पूरे शरीर मे कैसी चुभन होती है। अन्दर की एयर-कण्डीशनिंग न केवल शीतल, बल्कि कितनी सुगधित थी, इस का भी पता तभी चलता है। भार्गव स्कूटर स्टार्ट कर चुके थे। पलट कर एक निगाह भीतर डाल लेने की इच्छा पर काबू पाती हुई सईदा पीछे बैठी। स्कूटर चल पडा।

'रीगल' का चौराहा पार करने के बाद ही भार्गव और वह कुछ बोल सके।

"सईदा !"

"जी।"

"मै कई बार हवाई-जहाजो मे घूम चुका हूँ· आगे भी घूमूगा, लेकिन मुझे उन से डर लगता है।"

सईदा न समझ सकी कि क्या उत्तर दे।

"तुम मुझे हमेशा गम्भीर होने के लिए टोकती रहती हो न ? अभी मैं बहुत गम्भीर हू और एक गम्भीर ही बात कहने जा रहा हू। पता नही, तुम उसे कितना एप्रीशिएट कर पाओगी। क्या हवाई यात्रा किसी बच्चे के जन्म की तरह नही है ? जन्म अक्सर ठीक-ठीक हो जाता है, लेकिन कभी-कभी इस तरह हवाई यात्रा मे भी कभी-कभी "

सईदा ने कुछ कहा। एकाएक वह नरवस होने लगी थी। बहुत।

स्क्वाड्रन-लीडर, फाइटर-पायलट कुलवन्तसिह

रेडियो-स्टेशन के सामने स्कूटर रोक कर भार्गव ने एञ्जिन बन्द कर दिया।

"क्यो ? अन्दर नही चलेगे ?"

"नही। मुझे आफिस पहुचना है। सम्पादकजी ने दोनो किश्ते रख ली है। कहा है, तीसरी भी उन के हाथ मे होनी चाहिए, क्योकि उन के तीन अक एडवान्स छपते है। उस के बाद हर हफ्ते एक-एक किश्त देते जाएगे।"

"मतलब, मैं तीसरी तैयार रखू ?"

"हा। कल हो सकेगी ?"

"हो तो सकती है। कहा मिलेगे ?"

" 'प्याराराम' ! और कहा ?" भार्गव हसने लगे।

वह न हस सकी।

"क्या बात है ? बहुत उखडी-उखडी लग रही हो ? अभी थोडी देर पहले तो किलक रही थी ?"

"भार्गव साहब, मैं नरवस हो रही हूँ। आप सब जानते है।"

"ओह ! पगली कही की ! इस का मतलब यह थोडे ही है कि हवाई-जहाज न हो, हवाई उडाने न हो, पायलट न हो और·· स्क्वाड्रन-लीडर न हो !" उन्होने लैम्ब्रेटा को किक किया, "अच्छा, मैं चलता हू। कल शाम 'प्याराराम' मे कब मिलोगी ? स्क्रिप्ट उसी समय देख-दाख कर टाइप होने दे देगे। सुबह मिल जाएगी और मैं सम्पादकजी को थमा आऊगा।"

"छह बजे कैसा रहेगा ?"

"ठीक। शार्प छह बजे, वही।"

सईदा रेडियो-स्टेशन के अहाते मे प्रवेश कर गई।

दो

सुबह-सुबह इस फोन को क्या हो गया है ?

डाक्टर सिह घनघनाहट सुन कर चौक गए थे और पलट कर नाराजगी से देख रहे थे। अभी दो घण्टो मे यह पाचवी बार बजा है। पहली बार किसी ने गलत नम्बर घुमा दिया था। दूसरी बार भी उसी व्यक्ति ने फोन किया। जब डाक्टर सिह की ही आवाज सुनाई दी तो क्षमा-याचना करते हुए उस ने बताया कि मै नम्बर तो ठीक मिलाता हूँ, किन्तु एक्स्चेज की गडबडी से फोन आप का बज उठता है।

"चलिए, कोई बात नही।" उन्होने यथासम्भव अपना स्वर सन्तुलित रखते हुए कहा था। इस के आधे घण्टे बाद फोन फिर बज उठा, तब डाक्टर सिह गुसलखाने मे थे और केश धो रहे थे। हडबडाते हुए बाहर आए और रिसीवर उठा कर पूछा, "हैलो!"

उधर से कोई आवाज न आई।

"हैलो!" जरा ऊचे स्वर मे उन्होने दोहराया, परन्तु दूसरी ओर से खामोशी कायम रही।

"कम्बख्त!" बुदबुदा कर उन्होने रिसीवर रख दिया।

उस छोटी-सी लेकिन आलीशान कोठी मे इस समय सिवा उन के और कोई नही था, अत फोन उठाने की तकलीफ हर बार उन्ही को करनी पडती थी। पता नही, लाजपतनगर से हजारे अभी तक क्यो नही लौटा था। कुमाऊ-गढवाल का यह सत्रह-अठारह साल का नवयुवक उन के यहा पिछले कई वर्षो से नौकर था। कल रात उन से इजाजत ले कर वह लाजपतनगर अपने छोटे भाई से मिलने गया था।

उस ने वादा किया था कि सुबह की पहली बस से लौट आऊगा। पहली क्या, अब तक बीसियो बसे गुजर चुकी थी। 'जरूर कोई विशेष बात हो गई होगी।' डॉक्टर सिह ने सोचा। हजारे को वह अच्छी तरह पहचानते थे। यह नवयुवक एक बार जो कह देता, उसे पूरा कर के ही रहता, फिर भले वह ठीक समय पर कही पहुचने की बात होती या 'गेलार्ड' रेस्तोंरा से भी ज्यादा स्वादिष्ट तन्दूरी मुर्गा तैयार करने की।

चौथी बार फोन बजा और हजारे की आवाज सुनाई दी।

"माफ कीजिएगा, साहब," "उस ने कहा, "मुझ से देर हो गई अब रवाना हो रहा हू। मेरा वह भाई है न, सुबह उस की तबीयत जरा खराब हो गई, इस लिए मुझे नही-नही, अब ठीक है। मेरे रुकने की जरूरत नही। आधे घण्टे मे वापस आया समझिए।"

"हु " बुदबुदा कर उन्होने रिसीवर रख दिया था।

हजारे कभी लम्बी छुट्टी पर जाता तो पहले अपनी जगह पर किसी और नौकर का अस्थायी इन्तजाम कर देता। खुद जा कर नौकर की तलाश करना डाक्टर के लिए मुमकिन था ही नही। किसी पडोसी से भी जा कर कहने की तत्परता उन मे नही थी। पडोस के सभी लोग उन्हे पहचानते थे, लेकिन वह अपने-आप मे इतने सिकुडे रहते कि पहचानने और पूरा सम्मान देने के बावजूद उन्हे नमस्कार करने वालो की सख्या न के बराबर थी। नमस्कार यदि कोई करता तो भी अक्सर उन्हे पता न चलता कि यह है कौन। कभी वह अपने विचारो मे इतने खोए होते नमस्ते का उत्तर भी न देते।

फोन उठाने का जिम्मा हजारे का था। जिन लोगो से बात करना डाक्टर सिह को पसन्द था, उन की आवाजे वह पहचान गया था। यदि कोई अनचीन्ही आवाज सुनाई पडती तो पहले वह पूरी तसल्ली कर लेता कि बात करने का इच्छुक सही व्यक्ति है या नही। इस के बाद वह साहब घर मे है या नही, इस का 'पता लगाने' जाता। डाक्टर सिह

यदि प्रयोगशाला मे होते तो लौट कर वह कह देता, "घर मे नहीं है। जी ? कब आएगे ? पता नही कब आएगे। आप का शुभ नाम ? ठीक है, आने पर उन्हे बता दूगा।"

आज हजारे नही था और यह पाचवी बार फोन बज रहा था। फोन का एक एक्स्टेन्शन हजारे की कोठरी मे था, लेकिन इस समय उसे यहा डायरेक्ट कर दिया गया था। मन हुआ, फोन सुने बिना ही कनेक्शन काट दे। इस के बाद रिसीवर लगा दे स्टैण्ड पर, ताकि अगर कोई फिर नम्बर मिलाए तो हमेशा 'व्यस्त' की ही बार-बार टूटती, धीमी आवाज होती रहे।

उन्होने रिसीवर उठाया, "यस ?"

दूसरी ओर से एक्स्चेज की लडकी की आवाज सुनाई दी, "क्या यह नम्बर ४७-३ है ?"

"जी हा।"

"डाक्टर सिह के लिए इलाहाबाद से ट्रक-काल।"

"बोल रहा हू।" कहते हुए वह सावधान हो गए।

"मै कनेक्शन देती हू।" उन्होने सुना। थोडे सेकण्ड बाद उन्होने फिर सुना, "हा—अब बोलिए।"

"हैलो !"

"कौन, डाक्टर सिह ?" इलाहाबाद मे बोले गए शब्द उन के कानो तक आए।

"जी हा।"

"नमस्कार। मै सलूजा बोल रहा हू।"

"हैलो डाक्टर सलूजा ! हाऊ आर यू ? वाकई ? मैं तो बडे चक्कर मे था कि पता नही किस ने सुबह-सुबह ट्रक किया होगा ?"

स्वर की खनक से लगा कि उन्हे हार्दिक प्रसन्नता हुई है।

"आप अभी कर क्या रहे हैं !"

"खडा हू—क्यो ?" उन्होने सरलता से कह दिया, लेकिन कहते ही लगा कि इस मे तो एक मजाक छिपा है । वह हसे और बोले, "खैरियत तो है ? कैसे याद किया ?"

"यू ही ।"

"क्या मतलब ? यू ही इलाहाबाद से ट्रक ?" उन के चेहरे की मुस्कान गायब हो गई । तत्क्षण उन्हे लगा कि उन का समय खराब किया जा रहा है ।

"बस, यू ही समझिए । सोचा कि डाक्टर साहब के हालचाल पूछ ले ।"

"मैं बिल्कुल ठीक हू ।"

"सुबह की डाक तो आ गई होगी ?"

"आई हो या न आई हो, लेकिन क्या यह ट्रक पर पूछने की बात है ?"

इस वक्त किसी ने उन का चेहरा देखा होता तो उसे उन की कुढन का आभास बडी आसानी से मिल जाता, लेकिन फोन पर वह सयत बने रहे । डाक्टर सलूजा की उम्र उन से कम-से-कम बीस साल अधिक थी । उन्होने अमेरिका जा कर आकाश-विज्ञान मे डाक्टरेट की उपाधि ली, इसे भी पन्द्रह साल जरूर बीत चुके थे, जबकि डाक्टर सिह को 'विस्फोटक पदार्थों मे अनुसन्धान' के लिए डाक्टरेट मिले अभी मुश्किल से तीन साल हुए थे । यह उपाधि थी भी भारत के ही एक विश्वविद्यालय की, जिस से वह उन सब के सामने अपने को कुछ हीन अनुभव करते थे, जो उपाधियो के लिए विदेश जा सके थे । यो, वह जानते थे कि वह किसी रूप मे किसी से हीन नही है, क्योकि विदेश हो आए लोगो को भी उन्होने बडी-बडी भूलें करते देखा था, लेकिन हीनता उन के ज्ञात मन से अज्ञात मन मे जा बैठी थी । रह-रह कर वह अपना धुधला आभास दिया करती पर इतनी खुल कर कभी सामने न आती कि उसे पकड कर, घसीट कर बाहर निकाला जा

सके। विदेशो मे आयोजित कई वैज्ञानिक सम्मेलनो मे वह शामिल हो चुके थे, लेकिन डाक्टरेट की उपाधि तो 'स्थानीय' ही थी न !

कुछ वर्ष पूर्व बम्बई मे हुई वैज्ञानिको की एक कान्फ्रेन्स मे उन की और डाक्टर सलूजा की पहली मुलाकात हुई थी। उस समय यह पहचान लेना असम्भव ही रहा था कि डाक्टर सलूजा कुछ-कुछ सनकी है। बाद मे सलूजा दिल्ली मे दो-तीन बार मिले और लम्बे समय तक साथ घूमते रहे, तभी यह बात सामने आई कि वह स्वय अपनी जानकारियो से आक्रान्त हो गए है। "आप को मालूम होना चाहिए, डाक्टर सिह, कि आकाश बहुत बडा है। उस के सामने हमारी कोई हस्ती नही।" उन्होने कहा था, "हम आकाश को कभी न जीत सकेंगे। यह असम्भव है।"

"हा। शायद।"

"अजीब आदमी है आप ! आप 'शायद' कहते हे ?" सलूजा नाराज हो गए थे, " 'शायद' नही, माई डीयर, वाकई। वाकई हम बिल्कुल बौने है। आकाश के सामने हम कुछ नही हे। नथिग, यू नो, एब्सोल्यूटली नत्थिग ! वी आर ज़ीरो ! नाट ईवन जीरो !"

उन्हे एकाएक उत्तेजित देख कर डाक्टर सिह को आश्चर्य हुआ था। जवाब मे उन्होने इतना ही कहा था, "आप सच कहते है। हम कुछ नही है।"

बातचीत यहा खत्म हो गई थी। खत्म भी ऐसी, मानो दो गूगे व्यक्ति अगल-बगल बैठे हो। सलूजा को किसी से मिलने सप्रू-हाउस जाना था। डाक्टर सिंह ने उन्हे गेट पर छोड कर अपनी कार वापस मोड ली थी।

इलाहाबाद मे सलूजा अपनी छोटी बहन के यहा रहते थे, जो वहा की सफल लेडी-डाक्टर्स मे से एक थी। उस का पति भी एक प्रसिद्ध डाक्टर था। दोनो सलूजा का बहुत सम्मान करते थे।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर डाक्टर सलूजा ने शादी नही की थी। अब वह लगभग पचपन साल के हो रहे थे, जिस से कुवारे होने

के बावजूद कुवारो की सूची मे से उन का नाम कट गया था। बहन-बहनोई को इस का कितना दुख है अथवा दुख है भी या नही, डाक्टर सिंह नही जानते थे। या वह मालूम करना चाहते नही थे। इस का कारण शायद यह था कि स्वय उन्होने शादी नही की थी। वैसे, चूकि डाक्टर सिह की उम्र पैतीस-छत्तीस थी, इस लिए कुवारो की सूची मे उन का नाम प्राय अन्तिम भले ही हो, लेकिन अभी वह कटा नही था।

दूसरो द्वारा न कटा हो, न सही, लेकिन अपनी ओर से उन्होने अवश्य काट रखा था। इस के दो कारण थे। एक, उन के पास समय नही था। जो दिन-रात अपने प्रयोगो मे डूबा हुआ हो, उस के पास समय कहा से और दूसरा यह कि स्त्रियो के प्रति वह अजीब-सी दया अनुभव करते थे। हर दृष्टि से स्त्रिया उन्हे इतनी निम्न लगती थी कि और उन का दृढ आग्रह था कि शादी बराबरी के व्यक्तियो मे होनी चाहिए। स्त्रिया निम्न क्यो लगती थी, उन्हे नही मालूम था। मालूम इस लिए नही था कि उन्होने सोचा नही था। सोचा इस लिए नही था कि सोचना चाहा नही था। सोचना चाहा क्यो नही था ? ओह ! इस तरह सवाल-पर-सवाल पूछते जाएगे तब तो सिलसिला कभी खत्म हो नही होगा मुझे अपनी प्रयोगशाला मे जाने दीजिए प्लीज

"मैं ने कल सुबह आप को एक आर्टिकल भेजा है।" दोस्ताना व्यवहार होने पर भी, उम्र मे उतने बडे होने के बावजूद सलूजा उन्हे 'आप' कहते थे।

"तो ?"

"मैं ने सोचा, आज सुबह की डाक से आप को मिल गया होगा।"

"मिल जाएगा, लेकिन क्या इतनी-सी बात के लिए ट्रक ?"

"याने आप को अभी नही मिला है।" सलूजा हसने लगे, "ठीक है, तो लीजिए, मैं आप के सामान्य ज्ञान को कसौटी पर कसता हू। बताइए, चण्डीगढ की रचना किस ने की थी ?"

"भारत सरकार ने।" डाक्टर सिह को हसी आ गई। मलूजा का यह सवाल इतना सदर्भहीन और अप्रत्याशित था कि सुन कर उन्हे वही मजा आया, जो किसी बच्चे को अचानक मदारी का भालू देख कर आता है।

"नही, सरकार ने तो सिर्फ खर्च किया था। वहा कल्पनाए किस की साकार हुई है ? इमेजिनेशन !"

"मुझे नही मालूम।" डाक्टर सिह ने उत्तर दिया। अपने पीछे आहट का आभास पा कर उन्होने निगाह घुमाई। हजारे आ कर चुपचाप खडा हो गया था।

"आप को नही मालूम ? बडी शर्मनाक बात है।"

डाक्टर सिह को बुरा लगा। उन्होने रूखे स्वर मे कहा, "मै दुनिया की सारी बाते नही जान सकता। न जानना चाहता हू।"

"लेकिन आप कनाट-प्लेस मे 'अत्यन्त महत्वपूर्ण लोगो' की कालोनी मे रहते है। आप को उन के बारे मे जानकारी अवश्य होनी चाहिए, जो दूसरे क्षेत्रो मे 'अत्यन्त महत्वपूर्ण' हैं।"

'दुनिया मे महत्वपूर्ण लोगो की भी कोई कमी नही।"

'लगता है, आप अच्छे मूड मे नही है।"

"नही-नही, ऐसी बात तो नही।"

"फिर आप को इस की खुशी क्यो नही है कि मैं आकाश के अलावा और भी कुछ बातो मे दिलचस्पी लेने लगा हू ?"

"मेरी ओर से अनेक शुभ-कामनाए, लेकिन डाक्टर, बात यह है मुझे इस वक्त कही जाना है, इस लिए "

"ओह, वण्डरफुल ! जरूर जाइए। गुड बाय।" सलूजा ने फोन रख दिया।

डाक्टर सिंह ने एक हल्की मुस्कान के साथ हजारे की ओर देखते हुए कहा, "इलाहाबाद से ट्रक था।"

हजारे के चेहरे पर भी मुस्कान उभरी । ऐसे ट्रक अकसर आते थे, जिस से डाक्टर सलूजा की सनक को हजारे भी पहचान गया था । वह कुछ न बोला । उस के भाई के स्वास्थ्य के बारे मे डाक्टर सिह ने कोई पूछताछ नही की । हजारे ने इस की आशा भी नही रखी थी । वह कमरे से बाहर चला गया, क्योकि आगन मे कुछ गिरने की आवाज हुई । सुबह की डाक आ गई थी ।

एक चिट्ठी थी और एक पुलिन्दा । पुलिन्दा डाक्टर सिह ने पहले खोला । प्रेषक के स्थान पर सलूजा का नाम-पता लिखा हुआ था । अन्दर कोरे कागजो की भरमार थी, जिन के बीच म उन्हे किसी अखबार की कतरन नजर आई । कतरन की पते खोलने पर उन्होने जगह-जगह लाल स्याही से लकीरे बनी दखी । वह कोई लेख था, जिस मे स्थापत्य-जगत् के देदीप्यमान नक्षत्र ल कोरबूज़िए का सचित्र परिचय दिया गया था । किस प्रकार प्रारम्भिक दिनो मे ल कोरबूज़िए की वास्तुकला को कोई मान्यता नही मिली, किस प्रकार उस के बनाए नक्शो को बचकाने कारणो की आड मे बरखास्त कर दिया गया और किस प्रकार बाद मे वह दुनिया के श्रेष्ठतम वास्तुकारो मे गिना जाने लगा चण्डीगढ, जहा प्राय डेढ लाख लोगो के रहने का इन्तजाम है, किस तरह ल कोरबूजिए की कल्पनाओ से प्रसूत हुआ ल कोरबूजिए की जन्म-तिथि ६ अक्तूबर, १८८७ को लाल स्याही से रेखाकित कर के हाशिए मे सलूजा ने लिखा था, 'काश ! मै इस दिन के सितारो की स्थितिया जान सकता, उन का अध्ययन कर सकता । ज्योतिष-विज्ञान मे जरूर कोई-न-कोई तथ्य होना चाहिए ।'

'इसी को कहते है सठिया जाना !' सोचते हुए डाक्टर सिह ने दूसरा लिफाफा उठाया, जिस के पते की लिखावट से ही वह जान गए कि स्क्वाड्रन-लीडर बलवन्तसिह का खत है । सताईस-अट्ठाईस साल का यह युवक पत्राचार की नियमितता को बहुत गम्भीरता से नही लेता था

और इसे वह सख्त नापसन्द करते थे ।

उन्होने अब इस पर एतराज उठाना बन्द कर दिया था कि उन्हे डाक्टर सिह क्यो कहा जाता है । उन का पूरा नाम हरदयालसिह था । 'सिह' उन का उपनाम नही, नाम का ही एक अश था, लेकिन लोगो की जबान पर 'डाक्टर सिह' ही आता गया । छूत की बीमारी की तरह यह सम्बोधन दूसरे लोगो मे भी फैल गया । डाक्टर सिह ने भी तब स्वीकार कर लिया कि वह डाक्टर सिह है ।

उन के जीवन का सब से बडा मोह बलवन्त पर केन्द्रित था । बलवन्त यह न जानता होता तो पत्राचार मे उस की लापरवाही को एक बार क्षम्य माना जा सकता था, लेकिन उसे अपने चाचा की इन भावनाओ की पूरी जानकारी थी । डाक्टर सिह कुढते रहते, 'हफ्ते मे एकाध कार्ड डाल देने मे समय ही क्या लगता है ?'

देहात मे डाक्टर सिह के बडे भाई की सर्प-दश से मृत्यु तब हो गई थी, जब बलवन्त इस धरती पर आया नही था । आया तो प्रथम प्रसव न सह पाने के कारण उस की मा ने आखे मूद ली । नव-दम्पति के ऐसे अन्त ने घर मे तथा दूर-दूर बसे रिश्तेदारो मे ही नही, बल्कि मुहल्ले के उन लोगो मे भी हचमचा देने वाली करुणा उत्पन्न कर दी, जो इस परिवार के प्रति ईर्ष्या रखते थे ।

बलवन्त की हर ख्वाहिश को डाक्टर सिह हथेली पर लिए-लिए घूमते । उन्ही की जिद की बदौलत बलवन्त वायु-सेना मे जा सका । "बड भाई की इकलौती निशानी को फौज मे भेजते हो ?" कह कर रोना-धोना मचाने वालो को उन्होने डाट-डपट कर चुप कर दिया—हालाकि उन का अपना मन भी बलबन्त ने जो मार्ग चुना था, उस के विरोध मे ही बगावत कर रहा था । वह चुप रहे और आज तक चुप थे । ऊपर से उन्होने बलवन्त की हर तरक्की पर असीम प्रसन्नता दिखाई, लेकिन हर बार उन के मन से यही आवाज उठी कि बलवन्त की न केवल जिम्मे-

दारी बढी है, उस पर खतरा भी पहले से ज्यादा हो गया है ।

उन के बड़े भाई जिन्दा थे तब भी घर मे डाक्टर सिह की ही चलती थी। उन की आखो मे खुशी की वैसी चमक देखने के पश्चात् किसी मे साहस नही था कि कहे, "अब भी मौका है, बलवन्त को अब भी वापस बुला लो ।" डाक्टर सिह ने पाया था कि जो जिद उन्होने दूसरो के खिलाफ इस्तेमाल की थी, वही उन्होने खुद अपने को हराने के लिए भी की है ।

जिद ही जिद मे वह परिवार से अलग हो गए थे। किसी को उन का वैज्ञानिक बनना पसन्द नही था । पसन्द तो दूर, घर मे कोई ठीक से समझ भी न पाया था कि वैज्ञानिक होता किस चिडिया का नाम है । उन्होने समझाने का भरपूर प्रयास किया था, किन्तु सब को यही लगा था कि कोई जादूगरनुमा व्यक्ति आ कर उन्हे बेवकूफ बना रहा है । लडका सही राह पर है, इस का आश्वासन उन्हे तभी मिला, जब डाक्टर सिह ने सरकारी वजीफो के जोर पर उतनी महगी पढाई भी बिना किसी बाधा के जारी रखी । यह मोटा तर्क सब की समझ मे अपने-आप आ गया कि जो सरकार एक विद्यार्थी को पढाने के लिए इतना खर्च कर रही है, वही सरकार उस की अन्य देखरेख भी रखेगी ।

झटपट बूढियो ने घोषणा कर दी कि लडके की शादी का इन्तजाम जल्द-से-जल्द हो जाना चाहिए । डाक्टर सिह उस समय बम्बई मे थे—पढाई मे व्यस्त । उन्होने साफ कहलवा भेजा—अभी पाच सालो तक सवाल ही नही उठता । पाच साल और बीते, तब तक उन्हे अकेले रहने की आदत पड चुकी थी । उन्होने निजी, एकाकी प्रयोगशाला बसा कर स्वय के लिए जीवन की नई ही सार्थकता ढूढी थी, जो उन लोगो को नही समझाई जा सकती थी, जिन के लिए सम्पूर्ण सार्थकता शादी और उस के बाद बच्चो के शीघ्रातिशीघ्र उत्पादन मे होती है । डाक्टरेट के बाद उन्हे कई वैज्ञानिक सस्थानो की सलाहकार-समितियो मे ले लिया

गया था। उन की प्रयोगशाला के लिए समय-समय पर सरकार की ओर से निधि मिलती रहती। इन दिनो उन का अधिकाश समय 'भारतीय अणु अनुसधान' के कार्यो मे बीत रहा था। उन की छोटी-सी प्रयोगशाला इस के लिए पर्याप्त नही थी। वह देश की अन्य प्रयोगशालाओ मे भी जा कर व्यस्त रहते।

"मेरा काम ऐसा है कि मुझे छोटा-सा दखल भी गवारा नही हो सकता।" उन्होने कहा था और बम्बई से लौट कर घर (अम्बाला) से अलग ही रहने के लिए दिल्ली-निवास की व्यवस्था कर ली थी। बाद मे कारपोरेशन तथा सरकार की योजनानुसार कनाट-प्लेस की एक शान्त जगह फायरब्रिगेड लेन मे उन्हे एक छोटी-सी लेकिन बढिया कोठी मिल गई, जिस का लान और बगीचा उन्हे बहुत पसन्द आया। हजारे को उन्होने अम्बाला से बुलवा लिया।

लिफाफे पर के अक्षरो को यदि उन्होने पहले देख लिया होता तो पुलिन्दे को बाद मे ही खोला होता, लेकिन बडे आकार के पुलिन्दे ने उन का ध्यान पहले आर्कषित कर लिया था। अब जरा अधैर्य के साथ उन्होने बलवन्त का लिफाफा खोला। उस ने लिखा था कि इन छुट्टियो मे वह बगलौर से सीधा गोआ जा रहा है, इस लिए दिल्ली आने की सम्भावना बहुत कम है।

डाक्टर सिंह ने लिफाफा एक ओर रख दिया। फिर अपनी मूछो पर हाथ फेरा। दाढी पर भी। इस के बाद वह पगडी को सम्भालने-से लगे।

तीन

तीसरी किश्त बहुत मन लगा कर लिखी थी, तो भी सईदा को शक था कि पता नही कैसी हो।

'प्याराराम' का शामियाना नजर आया। साइकलो और स्कूटरो का हजूम गेट से बाहर एक निश्चित व्यवस्था मे खडा था। सईदा को उबलती ताजा काफी की सुगन्ध आई। किसी बिल मे चीटिया समा न रही हो, इस तरह यहा लोग भरे हुए थे। गेट पर आने-जाने वाले इतने थे कि सईदा को दाखिल होने के लिए भी कुछ इन्तजार करना पडा।

काफी के कुछ कप एक ट्रे मे उठा कर एक बैरा तेजी से किचन की ओर जा रहा था। सईदा से वह टकराते-टकराते बचा। टकरा जाता तो भी उस भीड मे शिकायत का मौका नही था। किचन मे से काफी के अलावा पकौडो और बडो की भी सुगन्ध उठ रही थी। पुराने 'इण्डियन काफी-हाउस' ने जब अपनी काफी के दाम बढाए तो एक पत्रकार के प्रयासो से यह नया, सहयोगी काफी-हाउस खुल गया। 'प्याराराम' मे काफी का एक कफ सिर्फ पच्चीस पैसो मे मिलने लगा। दूसरी चीजे भी इसी अनुपात से सस्ती हो गई। इस के अलावा, देर तक बैठे रहने या जोरो से ठहाके लगाने पर से भी रोक हट गई। मेन हाल छोटा होने के कारण अधिकाश लोग बाहर के विशाल शामियाने मे बैठते है। खुले शामियाने मे जोर का ठहाका भी नही गूजता।

सिगरेट के धुए से हवा सनी हुई थी। सईदा ने भार्गव को ढूढने की चेष्टा की।

बैठने के लिए कुर्सिया न मिलने से कई लोग काफी के कप हाथ मे ही लिए-लिए शामियाने से बाहर लान मे जा खडे हुए थे। उन मे से

कुछ बहुत गम्भीर थे। कुछ हस रहे थे। कुछ खामोशी से इधर-उधर देख रहे थे। सईदा 'परिवार-कक्ष' के प्रवेश-द्वार के पास खडी हो गई ताकि भार्गव साहब की निगाह उस पर आसानी से पड सके।

भार्गव दूर की एक कुर्सी मे बैठे 'ईवनिग-न्यूज' उलट-पलट रहे थे उन की मेज पर तीन व्यक्ति और बैठे थे। तीनो मे बातचीत हो रही थी, लेकिन भार्गव कोई दिलचस्पी नही ले रहे थे। अवश्य ही वे तीनो भार्गव के परिचित नही होने चाहिए। 'प्याराराम' मे अपरिचित व्यक्ति भी एक ही मेज व अगल-बगल की कुर्सियो का इस्तेमाल बडी बेतकल्लुफी से कर लेते है। सईदा रास्ता बनाती हुई भार्गव की ओर बढी। अभी आधी दूरी तक ही जा पाई थी कि भार्गव ने उसे देख लिया। वह उठे। पीछे खडे एक व्यक्ति ने तुरन्त उन की कुर्सी खीच ली। पूछा भी नही कि आप वापस इसी कुर्सी मे आ तो नही रहे।

भार्गव का कैमरा रोज की तरह कन्धे से भूल रहा था। इस के बिना उन का व्यक्तित्व अधूरा ही लगे। "आओ!" सईदा को साथ ले वह 'परिवार-कक्ष' की ओर बढ गए। एक कोने मे दो कुर्सिया खाली मिल गई। मेज छोटी होने के कारण आसपास और कोई कुर्सी नही थी। वे इसी तरह की कोई जगह चाहते थे।

"लिख ली ?"

"हा।" सईदा ने पर्स मे से रफ लिखे हुए कुछ पन्ने निकाले।

'मै अभी पढता हू। तुम बैरे को बुला कर आर्डर दो।" भार्गव पर्ते खोलने लगे, "मुझे कुछ भूख भी लगी है—चाहो तो वडे मगा लो। या कुछ और।"

लेख पढते समय भार्गव इतने खामोश और औपचारिक-से हो गए कि सईदा को लगा, उन के साथ जैसे कोई जान-पहचान ही न हो। उस ने एक बैरे को आवाज दी। बैरे ने सुनी जरूर होगी, लेकिन वह आगे चला गया। जब वह लौट रहा था, सईदा ने फिर से पुकारा, लेकिन

गर्दन अकडी हुई रख कर वह 'परिवार-कक्ष' से बाहर निकल गया। 'शायद यह मेज उस की नही है ' सईदा ने सोचा। एक तरफ तीन पारसी महिलाए बैठी थी। उन मे से दो सिगरेटे पी रही थी। "सुनो, भई," सईदा ने एक तीसरे बैरे को आवाज दी। वह पास आ कर झुका, "यस, मैडम ?"

"दो प्लेट वडे लाना। गरम। अच्छा ? और दो हॉट काफी।" सईदा ने कहा, फिर भार्गव से पूछा, "वडो के साथ और कुछ मगाऊ ?'

सिर उठाए बिना भार्गव ने कहा, "नही। वडा इज इनफ।"

बैरा चला गया।

भार्गव पूरे ध्यान से पढ रहे थे। कुर्सी मे वह कुछ इस तरह धसे हुए थे कि उन की तोद कुछ ज्यादा ही बडी लग रही थी। बैरा चीजे जल्दी ले आया, वरना यहा तो बहुत इन्तजार करना पडता है। वडे इतने गरम थे कि कुछ ठहर कर ही खाए जा सकते थे। सास की बोतल भी आ गई।

भार्गव ने कागजो को मोडते हुए कहा, "आई मस्ट कान्ग्रेचुलेट यू। तुम्हारी कलम बहुत रवा हो गई है। मेरा टाइपिस्ट पडोस मे रहता है। आज ही रात को टाइप कर देगा। सुबह सम्पादकजी के सामने।"

"छपना शुरू किस तारीख से होगा ?"

"आज से तीसरे हफ्ते की तारीख से मार्केट मे आने लगेगा। रेडियो वाले ऐसे बौखलाए घूमेगे कि तबीयत हरी हो जाएगी।"

"लेकिन यह रहस्य खुलना नही चाहिए।" सईदा ने कहा।

"देखो, मै नाराज हो सकता हू।"

"क्यो ?"

"एक बार कह तो दिया कि यह बात तुम्हारे और मेरे बीच रहेगी। फिर दूसरी बार टोकने की जरूरत ?"

"खता के लिए मुआफी चाहती हू।"

"मै फिर नाराज हो सकता हू। माफी मागने के लिए मै ने कब कहा ?"

"क्यो ? बार-बार नाराज होने की सलाह ?"

"जी हा, मिस्टर भुट्टो ने दी है।"

दोनो हस पडे।

सईदा ने काफी मे चीनी डाली। भार्गव एक चम्मच पीते हे, उसे याद था। चुस्की लेती हुई बोली, "इस किश्त को कई बार लिखना पडा।"

"क्यो ?"

"बार-बार बिगड जाती थी। कल मै बहुत डिस्टर्ब्ड थी।"

"हवाई-उडानो के बारे मे हमने जो बाते की थी, उन से ?"

"हा, लेकिन फिर यह भी याद आया कि उडाने खतरनाक होने का मतलब यह नही कि वायु-सेना ही न हो। वायु-सेना होगी तो स्क्वाड्रन-लीडर भी होगे।"

"ब्रेवो ! ब्रेवो !"

"पता नही, 'उन' का यहा आना कब हो रहा है।"

"क्यो ? तुम्हे इधर कोई इन्फर्मेशन नही ?"

"काफी दिनो पहले एक खत आया तो था, लेकिन दिल्ली के बारे मे कुछ नही लिखा था।"

"बडा विचित्र लडका है। कम्बख्त को कितना समझाया था कि गधे, ऐसे मामले मे तो लोग रोज दो-दो मीटर लम्बे खत लिखते है और एक तुम हो कि जीने-मरने की भी सूचना नही देते। जानती हो, उस ने क्या कहा था ? यही कि खत लिखू या न लिखू, सईदा और मैं ने एक-दूसरे का रिजर्वेशन कर लिया है !"

सईदा शरमा कर नीचे देखने लगी। उस ने अपने को कई बार समझाना चाहा था कि ऐसा शादी के बाद भी होगा और इस की आदत अभी

से पडनी चाहिए। बलवन्त को चिट्ठिया देर से लिखने मे न जाने क्या मजा आता है। ऐसी लापरवाही वह हमेशा बरतेगा और हमेशा उडाने भी भरेगा।

बलवन्त से पहली मुलाकात हुई, उस समय सईदा मुरादाबाद से आई ही थी और दिल्ली जैसे भडकीले शहर मे सहमी-सहमी अपने को स्थिर कर रही थी। रेडियो-स्टेशन के दूषित वातावरण के बारे मे मुरादाबाद मे उस ने तरह-तरह की बाते सुन रखी थी। विधवा अम्मीजान ने विदा करते हुए कहा था, "बेटी, अपना हर तरह से ख्याल रखना।" 'हर तरह से' का मतलब वह न समझे, इतनी छोटी सईदा नही थी। दूर के एक रिश्तेदार ने अम्मीजान को पूरा यकीन दिलाया था कि सईदा को दिल्ली मे कोई आच नही आएगी। रिश्तेदार महोदय जामा मस्जिद के पास एक—सिर्फ एक—कमरे मे रहते थे, इस लिए सईदा को अपने यहा ठहरा सकने की स्थिति उन की नही थी।

वर्किंग-गर्ल्स-हास्टल मे सईदा को जगह मिल गई तब अम्मीजान को उन्होने बताया कि हास्टल मे सुरक्षा के नियमो का कितनी कडाई से पालन होता है। "ऐसा न हो तो काम कैसे चले ?" उन्होने अपनी दाढी पर हाथ फेरते हुए कहा था, "वहा बडे-बडे घरानो की लडकिया रहती है। सईदा अकेली थोडी ही " अम्मीजान ने सईदा से वचन लिया था कि वह हर महीने कम-से-कम एक दिन के लिए मुरादाबाद जरूर आएगी। नौकरी के शुरू के कुछ महीनो तक सईदा इस वचन का पालन करती रही, लेकिन बाद मे इस मे जो ढील हुई थी, वह दिन-ब-दिन बढती ही चली गई। अम्मीजान को भी इस की आदत पड गई। सईदा खत लिखने मे देर नही करती थी, यही उन के लिए कम तसल्ली की बात नही थी।

सईदा ने फैसला कर रखा था कि किसी भी पुरुष को अपने करीब आने का मौका नही देगी। बस, अपने काम से काम रखेगी। समय पर

आएगी, समय पर हास्टल चली जाएगी। कभी पिक्चर वगैरह का कार्य-क्रम हुआ तो हास्टल की ही लडकियो के साथ। पहली मुलाकात के समय बलवन्त की ओर उस ने ध्यान भी नही दिया था। पहली के बाद दूसरी मुलाकात न हुई होती तो वह उसे भूल जाती। बल्कि भूलना भी क्यो ? न वह उसे याद रहता, न भूलने का सवाल उठता। किन्तु पहली मुलाकात के वातावरण मे ही दूसरी मुलाकात हुई प्राय तीन महीनो के अन्तर से। तब बलवन्त एक विशिष्ट व्यक्ति था।

उस दिन ही सईदा ने जाना था कि तीन महीने पहले डाक्टर हरदयाल-सिह के साथ जो युवक आया था, वह बलवन्त था। "वह मेरे चाचा लगते हैं।" बलवन्त ने बताया था। सईदा ने क्षमा-याचना के स्वर मे कहा था, "उन का इण्टरव्यू लिया तो मैं ने ही था, लेकिन सारा ध्यान इण्टरव्यू मे होने के कारण मैं आप को ठीक से देख भी न पाई होऊगी। वरना आज पहचान न जाती कि आप पहले भी आ चुके है ?"

"कोई बात नही। अब पहचान लीजिए !" बलवन्त मुस्कराने लगा था।

डाक्टर सिह को रेडियो-स्टेशन के सवेदनशील माइक के सामने बिठा कर कुछ ऐसे प्रश्न पूछे जाने थे, जो उन्हे पहले से मालूम नही थे। उन्हे मात्र इतना आभास दिया गया था कि 'अणु-युद्ध और भारत की शान्ति-प्रियता' इस सदर्भ मे आप के विचार रिकार्ड किए जाएगे। दस मिनट की 'टाक' थी। प्रश्न रेडियो के एक साहित्यकार कार्यकर्ता ने तैयार किए थे और उन्हे सईदा की आवाज मे पूछा जाना था।

रिकार्डिङ्ग के लिए स्टूडियो मे जाने से पहले डाक्टर सिह ने बलवन्त की ओर सकेत करते हुए कहा था, "यह मेरे साथ है। यहा अकेले बैठे बोर हो जाएगे। क्यो न इन्हे भी स्टूडियो मे ले चलें ?"

"ऑफकोर्स ! व्हाई नाट !" ड्यूटी-आफिसर ने तुरन्त अपनी सह-मति दर्शा दी थी।

बलवन्त एक कुर्सी मे बैठा रहा था और सईदा क्रमवार वे प्रश्न पूछती रही थी, "डाक्टर साहब, भारत के अनेक राजनीतिज्ञ कहते है कि हमे अणु-बम बनाना चाहिए। अणु-शक्ति के क्षेत्र मे आप ने इतना अनुसन्धान किया है। •हम जानना चाहेगे कि इस बारे मे आप के क्या विचार है।"

• "इस मे शक नही "

डाक्टर सिह अपने धीर-गम्भीर लहजे मे, रुक-रुक कर बताते रहे थे कि निस्सन्देह शान्तिप्रियता एक आदर्श नीति है। आज की युद्धप्रिय सभ्यताओ की बीहडता तभी सन्तुलित रह सकती है, जब भारत जैसे राष्ट्र भी इस दुनिया मे हो, किन्तु हम ने शान्तिप्रियता का अर्थ शायद कमजोर होना लगा लिया है। हमारी शान्ति कबूतरो की शान्ति रही है। हमे तो नन्दी की शान्ति चाहिए। कबूतर की जान निकालना बडा आसान है, लेकिन नन्दी ? जब तक छेडा न जाएगा, वह कुछ न कहेगा, लेकिन ज्यों ही छेडखानी होगी, नन्दी की उग्रता के सामने टिकना मुश्किल हो जाएगा।

"याने आप का मतलब है 'भारत को अणु-बम बनाना चाहिए ?"

"हा—किसी शहर या या सभ्यता को तबाह करने के लिए नही, बल्कि दुनिया मे अपनी शान्तिप्रियता को' 'मनवाने के लिए। कोई भी बात मानी तभी जाएगी, जब वह सुनी जाए और ' सुनी तभी जाएगी, जब उसे कोई पावरफुल कण्ट्री याने ''याने कोई समर्थ राष्ट्र उठाए। रूस को हम शान्तिप्रिय नही कहते क्या ? मेरा एक साथी रूस गया था। उस ने लिखा था कि रूस सचमुच शान्ति चाहता है। वहा बहुत कम पुरुष ऐसे है, जिन के शरीर पर वार की • युद्ध की कोई-न-कोई निशानी न हो, लेकिन रास्तो पर, दूकानो और घरो पर और और सभी जगह आप को पीस के, शान्तिप्रियता के ही नारे लिखे मिलेंगे। रूसियो की बाते थोथी नही हैं। यो बाते हमारी

भी थोथी नही है—उन के पीछे सालिड इण्डियन फिलासफी है लेकिन कभी-कभी हमारी बाते थोथा साबित जरूर हो जाती है। चीन ने सन् '६२ मे अटैक किया तब तब यही तो साबित हुआ था कि कि हम शान्तिप्रिय बाद मे है— कमजोर पहले है निहत्थे है।"

मात्र दस मिनट मे ऐसे विषय की विशद चर्चा असभव थी, फिर भी 'टाक' बहुत महत्वपूर्ण रही थी, ऐसा सभी ने कहा था।

अगली बार जो इण्टरव्यू टेप-रिकार्ड किया गया, उस मे सारी बात बलवन्त के ही आसपास घूम रही थी। सईदा उस से आतकित नही, प्रभावित हुई थी। हवाई-युद्ध के प्रशिक्षण के समय 'नैट' हवाई-जहाज मे आग लग जाने के बावजूद उसे सही-सलामत उतार लेने का शौर्य बलवन्त ने अभी पिछले सप्ताह प्रदर्शित किया था। भारत के अधिकाश अखबारो ने ये समाचार बहुत महत्व दे कर प्रकाशित किए थे। आगजनी की यह दुर्घटना पन्द्रह हजार मीटर की ऊचाई पर हुई थी। सरकारी प्रवक्ता ने दो दिन पहले बताया था कि स्क्वाड्रन-लीडर बलवन्तसिह को 'वायु-सेना पदक' प्रदान किया जाएगा। अखबारो मे उस की फोटो दो-एक बार सईदा के देखने मे आई थी, लेकिन उस ने सोचा भी न था कि बलवन्तसिह को स्टूडियो मे अपने सामने बिठा कर इटरव्यू लेने का अवसर उसे ही मिलने वाला है।

उस ने पूछा था, " 'नैट' हवाई-जहाज सामरिक दृष्टि से कैसा है?"

रिकार्डिङ्ग-सेक्शन मे टेप घूमते रहे थे और बलवन्त बताता रहा था, "हवाई-युद्ध दो तरह का होता है—'स्ट्रैटेजिक' और 'टैक्टिकल'। 'स्ट्रैटेजिक वार फेयर' मे दुश्मन के हवाई-अड्डो, इडस्ट्रीज, आर्डिनैस फैक्ट्रियो वगैरह पर बमबारी की जाती है। 'टैक्टिकल वार फेयर" मे जमीन पर लडती फौज को फाइटर, लाइट-बाम्बर और ट्रासपोर्ट हवाई-जहाजो द्वारा सपोर्ट दिया जाता है। 'नैट' छोटा होने के कारण अमरीकी सैबर-जेट से भी तेज उडता है और और अपनी अनोखी

कलाबाज़ियो से दुश्मन को भौचक कर देता है। 'स्ट्रैटेजिक वार फेयर' मे तो 'नैट' का जवाब ही नही। वह पन्द्रह हजार मीटर तक उडान भर सकता है और उस की स्पीड शून्य दशमलव नौ आठ 'मैक' याने ७६० मील याने एक हजार दो सौ किलोमीटर प्रति घण्टा होती है। सैबर-जेट की स्पीड एक हजार एक सौ किलोमीटर से आगे नही जाती। कम ऊचाई पर डॉग-फाइट के लिए 'नैट' को बहुत पसन्द किया जाता है, क्योकि छोटे आकार का होने के कारण दुश्मन उस पर आसानी से निशाना भी नही लगा पाता।"

कई प्रश्न। उन के रोमाचक उत्तर। "आप की जिन्दगी बडी थ्रिलिंग है।" सईदा ने स्टूडियो से बाहर आते हुए कहा था।

"हा," वह मुस्करा उठा था, "मौत को मै ने इतने पास से देखा है कि अब वह किसी फ्रेंड जैसी लगती है। मौत से सभी डरते है लेकिन हम लोग तो उसे छेडते है, खूब छकाते है उसे!"

प्रशिक्षण के सिलसिले मे बलवन्त कभी दिल्ली छावनी मे होता, कभी देहरादून, कभी कही और। शहरो की बदली करना उसे बहुत पसन्द था। सईदा से पहली मुलाकात के बाद वह जान-बूझ कर बार-बार दिल्ली आने लगा था या ऐसा केवल सयोगो के कारण हुआ था, सईदा न जान सकी थी, आज भी नही जानती, लेकिन सत्य यही था कि उन की मुलाकाते आए-दिन होती रही थी और बहुत जल्द, जैसे कि ऐसा होना पहले से तय रहा हो और तय होने का उन्हे पता भी चल गया हो, वे अपने मन की पर्ते एक-दूसरे के सामने खोलते गए थे—मुलाकातो मे, पत्रो मे। लेकिन, जैसा कि बलवन्त कहता था, जब उस ने सईदा को अपने लिए 'रिजर्व' कर लिया तो पत्रो की नियमितता अचानक भग हो गई। सईदा को इस से बहुत बडा झटका लगा था, लेकिन अब वह सहज हो गई थी। पत्र की जितनी सम्भावना होती, उस से कही ज्यादा स्वय उसी के आ जाने की होती। इस मे सईदा को कभी

रोमाच अनुभव होता, कभी गुस्सा आता। लेकिन जैसा भी था यह—था।

"कहो तो डाक्टर सिह को फोन कर पूछ ले कि वह कब आ रहा है?" भार्गव बोले।

"नही। मुझे उन से झिझक होती है।"

"अरे, तो फोन मै कर लूगा तुम चुपचाप एक तरफ खडी रहना। हिन्दुस्तानी लडकियो का भी कोई जवाब नही। तुम इतनी पढी-लिखी हो, मुरादाबाद मे दो साल टीचरशिप कर चुकी हो और अब रेडियो-स्टेशन जैसी आधुनिक जगह मे काम करती हो, लेकिन 'अपने ही घर मे' फोन करने से झिझक होती है! खूब!"

सईदा मुस्कराती रही। अपना ही घर!

डाक्टर सिह की आखो मे न मालूम ऐसा क्या था कि उस दिन इटरव्यू लेने के बाद से सईदा हमेशा उन से कतराती रही थी। न जाने कौन-सी अज्ञात मूल-प्रवृत्ति उसे उन के सामने जाने से रोकती। कभी-कभी उसे लगता कि इस झिझक के पीछे शायद उस का मुसलमान होना है। बलवन्त के साथ वह कई बार उन की कोठी मे जा चुकी थी, लेकिन डाक्टर सिह अपनी प्रयोगशाला से बहुत कम समय के लिए बाहर आते और लगभग हडबडी मे मुलाकात कर के वापस चले जाते। सईदा को तुरन्त राहत मिलती। एक सिक्ख के घर मे कोई मुसलमान कुवारी लडकी आए और आए भी यथा-सम्भव भविष्य की मालकिन के रूप मे, तो लडकी को झिझक तो लेकिन क्या यह सईदा के अपने मन का चोर नही था? डाक्टर सिह ने अपने व्यवहार मे कभी ऐसा झलकने भी नही दिया था कि सईदा मुसलमान

बैरा बिल नही लाया था। सईदा उसे बुलाने ही वाली थी कि

'प्याराराम' के कोलाहल मे एक डूबन-सी महसूस हुई। लोगो की फुस-फुसाहटे एकाएक छीज गई थी।

'क्या बात है? लोग चुप क्यो हो गए?' सईदा पूछती, इस से पहले उस ने 'परिवार-कक्ष' के बाहर से एक मर्दाना आवाज सुनी, "भाइयो और बहनो, अब आप लोगो "

"अरे, 'प्याराराम' मे भाषणबाजी?" वह चौक कर बोली। भार्गव साहब खडे हो गए और कमर से ऊपर का शरीर झुकाते हुए बाहर देखने लगे। तोद के कारण झुकने मे उन्हे तकलीफ हुई, लेकिन इस का शायद उन्हे पता न चला। सईदा ने भी देखने का प्रयास किया, लेकिन इस के लिए जरूरी था कि वह अपनी कुर्सी से उठ खडी होती। वह बैठी रही।

" के सामने ये चार विद्यार्थी एकार्डियन पर अपने कार्यक्रम पेश करेगे "

"कुछ नही!" भार्गव साहब बैठते हुए बोले, "कुछ विदेशी छोकरे हैं।"

"लेकिन काफी-हाउस मे उन का कार्यक्रम?"

"हा। परसो उन से मेरी मुलाकात भी हुई थी। वे अपनी कार मे विश्व-भ्रमण पर निकले है और उन का पेट्रोल खत्म हो गया है। जहा भी जाते हैं, एकार्डियन बजा कर पेट्रोल के लिए धन इकट्ठा करते है। उन की मस्ती अद्भुत है। उन्हे किसी की परवाह नही। यह प्रोग्राम है 'कणिका' की ओर से। 'कणिका' उन्हे पे कर चुकी होगी।"

"वण्डरफुल! याने 'कणिका' के कार्यक्रम यहा भी शुरू हो गए? सुना तो था कि काफी-हाउस वालो से बातचीत चल रही है।"

"हा, आज से ही शुरू हुए है " भार्गव ने सिगरेट सुलगाई, "कल दो-चार लाइनें इस बारे मे भी लिख दूगा।"

बाहर कहा जा रहा था, "ये जरमनी से आए है। दिल्ली मे दो दिन

और ठहरेंगे। 'कणिका' कल भी इन के कार्यक्रम पेश करेगी। परसो रात दस बजे के बाद होगा एक छोटा-सा कवि-सम्मेलन " "

भार्गव ने धुए का छल्ला उगलते हुए बैरे को आवाज दी, "बिल ले आना।"

बिल बैरे की जेब मे ही था, झट पेश कर दिया गया। आज सईदा पे करना चाहती थी, लेकिन भार्गव ने इसे समझ लेते हुए कहा, "नाट यू!" और जेब से पाच का नोट निकाल कर ट्रे मे रख दिया। सईदा ने आग्रह न किया। भार्गव उसे कभी पे नही करने देते। रेडियो-स्टेशन आते है और सईदा के एक तरह से मेहमान ही होते है, तब भी नही। बैरे ने बकाया नोट व सिक्के उसी समय गिन कर ट्रे मे रख दिए। भार्गव ने टिप छोड कर शेष राशि उठा ली।

एकार्डियन की बारीक आवाज किसी फीते की तरह उडती हुई 'परिवार-कक्ष' मे आई और सहमा अनेकमुखी व दीर्घ होकर छितराने लगी। "आओ, देखे।" कहते हुए भार्गव उठे। सईदा भी। पाण्डुलिपि मोड कर भार्गव अपनी जेब मे रख चुके थे।

बाहर के शामियाने की नव्वे प्रतिशत कुर्सिया उन चार जरमन विद्यार्थियो की ओर घूम गई थी। उन मे से तीन विद्यार्थी कतारबद्ध हो कर चुपचाप खडे थे। चौथा एकार्डियन बजा रहा था। सहसा वे तीनो एक स्वर मे कुछ गाने लगे। उन का ढग अजीब था। एकदम गला-फाड आवाज अचानक पतली। चार आवाजें कभी परस्पर गुथी हुई और कभी एकाएक बिदकती हुई उन के गाल लाल सुर्ख थे। चेहरो पर जो लुटा-लुटा भाव था, उस से यही लगता था कि गरमी के दिनो मे भारत आ कर वे पछताए होगे। उम्र मे और कद मे सब से छोटा लडका, जो देखने मे सब से मासूम भी था, अपनी आवाज को बकाया साथियो के साथ ठीक से मिला नही पा रहा था।

बैठने के लिए कुर्सी न मिलने के कारण भार्गव और सईदा शामियाने

की दीवार से सटते हुए खडे हो गए। और भी कई लोग खडे थे।

"कौन-सी भाषा है यह ?" सईदा की आखे भार्गव की ओर उठी, "अग्रेजी तो नही लगती ?"

भार्गव हसे, "अग्रेजी ही है। जरमनो का लहजा अपरिचित होने से हम लोगो को लेकिन देखो, काफी-हाउस के ये कीडे कितने ध्यान से सुन रहे है ! जैसे एक-एक शब्द न केवल समझ रहे हो, गुरु-मन्त्र की की तरह ग्रहण भी रहे हो "

दो चश्माधारी युवक अपनी कुर्सियो पर आगे झुक कर दोनो हाथ घुटनो पर रखे हुए ऐसे 'बबुओ जैसी' मुद्रा मे बैठे थे कि सईदा मुस्करा पडी। जरमन गायको पर टिकी उन की आखे बिल्कुल नही झप रही थी। अचरज व अविश्वास की तीव्रता के कारण उन की गुण-ग्राहकता इतनी बचकानी हो गई थी कि उन के चेहरे आकार मे बडे होने पर भी पाच साल से ज्यादा के नही लग रहे थे। कुछ लोग सुनने के अलावा मन्द-मन्द मुस्करा भी रहे थे। थोडी देर बाद एक लडका, जिस के साथ मोजो जैसी चुस्त पोशाक मे एक लडकी भी थी, अपना सिर हिलाने लगा। तब लडकी भी सिर हिलाने लगी। आसपास के लोग जान गए कि जरमनो का गाना इन की समझ मे आ रहा है। 'हम भी समझ रहे है' यह जताने के लिए कइयो के सिर हिलने लगे। कुछ के पैरो ने जमीन पर थाप भी दी। जरमनो ने आवाज तेज कर दी।

मानो भूला हुआ कोई काम अचानक याद आया हो, इस तरह काले-जिएट-सा लगता एक सिक्ख युवक उठा और जरमनो के करीब आ कर ताली बजाने लगा। "या हू !" वह लाक्षणिक अमरीकी ढग से इतनी मस्ती के साथ चिल्लाया कि अधिकाश को उस के अमरीका-हो-आए-होने पर विश्वास हो गया। जरमनो का उत्साह बढा। एकार्डियम पर थिरकती उगलियो मे तीव्रता आ गई। सिक्ख युवक दो-ढाई मिनट तक अपनी ताल-बद्धता दिखाता रहा, फिर बैठ गया। इस के साथ ही जरमनो का पहला गाना

समाप्त हुआ । तुरन्त उन्होने दूसरा शुरू कर दिया । यदि इस नए गाने का लहजा अलग न होता तो सईदा को उस के शुरू होने का पता ही न चलता—बहुत प्रयास करने पर भी वह चार-पाच शब्दो से अधिक कुछ न समझ सकी थी । एकार्डियन-वादक के साथियो ने तालियो की शुरूआत की । अनेक लोग ताल देने और घुटने हिलाने लगे ।

"देखी इन की आधुनिकता ? मै शर्त बद सकता हू—गाने की एक भी लाइन इन की समझ मे पूरी आई हो तो किसी भारतीय लोक-गायक को ये इतना सम्मान दे सकते ? कैसे देते ! उस के शब्द आसानी से समझ मे जो आ जाते ! " भार्गव ने अपना फोल्डिग कैमरा खोल लिया । उस मे फ्लैश-गन फिट कर के उन्होने जरमन गायको के दो स्नैप लिए, फिर सईदा से कहा, "यहा और रुकना है ?"

"नही । आप फोन करने के लिए कह रहे थे न ?"

"ओह, हा । चलो ।"

थियेटर कम्यूनिकेशन बिल्डिग के पोस्ट-आफिस मे लगे टेलीफोन-बूथ से भार्गव ने डाक्टर सिह का नम्बर मिलाया । एक फोन काफी-हाउस मे भी है, पर आसपास इतना शोर होता है कि

"हैलो ! डाक्टर साहब है क्या ? मैं भार्गव बोल रहा हू । के० के० भार्गव । हा, बहुत जरूरी काम है । कौन बोल रहा है—हजारे ? क्यो ? कहा गए है ? सो रहे है ? अरे ! अभी तो मुश्किल से शाम हुई है और अभी से अच्छा, मै बाद मे फोन कर लूगा " भार्गव ने रिसीवर रख दिया और बूथ से निकलते हुए बताया, "हजारे कहता है—दो दिन से साहब जाग रहे थे । अभी शाम को सोए है ।"

सईदा चुप रही । हजारे ने सच कहा था या नही, वह तय न कर सकी । बहरहाल, इतना स्पष्ट था कि डाक्टर सिह किसी सूरत मे फोन पर न आ सकेंगे ।

भार्गव स्कूटर-स्टैण्ड की तरफ बढे और बुदबुदाए, "चलो, तुम्हे

हास्टल पहुचा दू ।"

सईदा पीछे बैठी । भार्गव ने स्कूटर कर्जन रोड की ओर मोड दिया ।

"तुम्हे क्या लगा ? लोग उन जरमनो की ओर किस तरह देख रहे थे, जिस तरह उन्हे तालिया बजा-बजा कर साथ दे रहे थे—लोगो के एक-एक गेस्चर' मे क्या ऐसा नही लगा कि उन मे उन सब मे हीनता की भावना थी ? उसी हीनता को नकारने के लिए वे आधुनिक बनने की कोशिश मे थे, लेकिन सिर्फ तालिया बजाने से आधुनिकता नही आती। तुम ने शायद गौर किया हो तालिया बज तो रही थी, लेकिन उन्हे मानो यकीन ही नही हो रहा था कि चार-चार जरमन उन की तालियो को मजूर कर रहे है · उन के चेहरे कैसे फक हो रहे थे ! तालियो से वे मानो अपने खोखलेपन का ऐलान कर रहे थे और सहम भी रहे थे "

"हा, लगा तो यही ।" सईदा ने छोटा-सा उत्तर दिया, क्योकि वह अन्यमनस्क होने लगी थी । बलवन्त

- "इस हीनता को जीतने का कोई मौका, सईदा, हमे जरूर मिलना चाहिए। तीन साल पहले चीनी हमले ने भारत के चेहरे पर हार की जो कालिख पोती थी, वह अभी तक मौजूद है ।" भार्गव अपनी रौ मे बोलते जा रहे थे, "उसे पोछने का मौका जल्दी न मिला तो भारत का आम आदमी हीनता से दब जाएगा। काफी-हाउसो मे, प्रबुद्ध वर्ग के समारोहो मे इस की छिपी या खुली घोषणाएँ हुआ करेगी "

"इस का चीनी हमले से इतना गहरा ताल्लुक है ? मुझे नही लगता ।" बलवन्त के बारे मे न सोचने के लिए सईदा ने इस ओर ध्यान केन्द्रित करना चाहा ।

"हीनता उस हार के बाद ही पैदा हुई हो, ऐसा मैं भी नही कहता, लेकिन इतना जरूर मानना पडेगा कि सारी दुनिया के सामने हम जितने

जलील हुए थे, उस से ग्राम जनता मे ऐसी भावना आ जाना लाजिमी ही था। बरसो की गुलामी ने हम मे एक दीनता पैदा की है। इसी लिए आज भी हम हर क्षेत्र मे आख मूद कर पश्चिम की नकल करते है और नकल करने वालो को ही ज्यादा इज्जत देते है। जरमनी, फ्रास, इङ्गलैड, अमरीका किसी भी देश का मूर्ख आदमी भी यहा आ जाए तो हम उसे इस लिए बुद्धिमान मान लेगे कि वह उन देशो का है। वह गुप्त विजेता और शासक है। चीनियो ने हमे इतना कमजोर साबित किया कि अपने को 'हिन्दुस्तानी' कहने मे भी शर्म से माथा झुकने लगा। हम खुद ग्रपनी निगाह मे गिर गए—इस से बडी हार और कोई नही हो सकती। ग्राजादी पाने के बाद ग्रनेक क्षेत्रो मे हमारी उपलब्धिया अनोखी है, लेकिन उन का अनोखापन महसूस क्यो नही होता ? क्यो लगता है कि हम बिना लडे ही पराजित है ?"

"हिन्दुस्तानियो मे लियाकत की कतई कमी नही।" सईदा सप्रयास ढग से चर्चा मे भाग ले रही थी, "रही चीनी हमले की बात, उस मे हमे धोखा दिया गया था। नीद-मे-बेखबर किसी शख्स को चाटा मारने मे ग्राप कामयाब हो जाए तो इस का मतलब यह नही कि वह कमजोर था।"

"ठीक है, हम योग्य है, हम जानते है कि हम योग्य है, लेकिन दुनिया क्या कहती है ? हमारी हीनता तभी समाप्त होगी, जब दुनिया भी हमे योग्य माने, हमारी योग्यता को उचित सम्मान दे, ऐसा न सोचे कि आदर्शवाद या शान्तिप्रियता भारत की नीति नही, लाचारी है—निहत्थेपन की लाचारी।"

वर्किङ्ग-गर्ल्स-हास्टल तब तक आ चुका था। उस की सीढ़िया चढते-चढ़ते सईदा हताश-सी होने लगी स्क्वाड्रन-लीडर

चार

"बैठिए। मै पूछता हू कि वह है या नही।"

रेडियो-स्टेशन के गेट के पास रिसेप्शन का केबिन तब से बना हुआ है, जब से चीनी हमले के कारण देश मे आपत्कालीन स्थिति घोषित कर के रेडियो-स्टेशन को 'सुरक्षित स्थान' करार दे दिया गया। पहले की तरह अब यहा निधडक प्रवेश नही किया जा सकता।

अख्तर ज्यो ही अहाते मे आया था, दरबान ने पास मागा था। 'नही है' कहने पर उस ने रिसेप्शन मे जाने का इशारा कर दिया था। कूलर लगा होने के कारण केबिन मे गर्मी नही थी, लेकिन सिगरेटो का धुआ इतना था कि ऐसी घुटन मे ये लोग बैठे कैसे रह सके है, इस पर अख्तर को अचरज हुआ था। जोरो के ठहाके लग रहे थे, जो अख्तर के दाखिल होते ही रुक गए। रेडियो-स्टेशन वह पहली बार आ रहा था। इस से पहले कभी कोई काम नही निकला था। रिसेप्शनिस्ट के सामने रखी मेज, जो कूलर के सब से करीब थी, काफी बडी थी। उस पर हरे रग का रेक्सिन चढा हुआ था।

"कहिए?"

"जी, मै किसी से मिलने आया हू।" उस ने बताया।

"किसी से? किसी से का मतलब?" रिसेप्शनिस्ट मुस्कराया।

"यहा एनाउन्सर के बतौर मिस सईदा काम करती है। उन से "

"यहा बहुत सारी एनाउन्सर्स है। मिसे भी ढेर-सी है। आप यूनिट बताइए।"

"जी· ·वह तो नही मालूम।"

"हु याने आप को यूनिट नही मालूम !" रिसेप्शनिस्ट अपने सामने बैठे एक प्रौढ की ओर देखने लगा । इस मे अख्तर को किसी इशारेबाजी का शक हुआ । उस ने भी पलट कर प्रौढ की तरफ देखा । प्रौढ गम्भीर था, लेकिन निश्चय ही यह गम्भीरता नकली थी । "बडी टेढी समस्या है !" वह अपने गाल को छूता हुआ हल्के से बोला, "अब ?"

"आप को इतना तो मालूम होगा कि वह विविध-भारती मे है, एक्स्टर्नल मे या मेन-स्टेशन मे ?" रिसेप्शनिस्ट की जासूसी आखे अख्तर के चेहरे पर आ टिकी । वह समझ न पाया कि ये लोग मजाक करने के मूड मे है या सचमुच उसे अन्दर जाने नही देना चाहते ।

"जी, मुझे यह भी नही मालूम ।" उसे कहना पडा ।

"इतना तो मालूम है न कि आप मिस सईदा से ही मिलने आए है ?"

केबिन मे ठहाका गूज उठा । रिसेप्शनिस्ट व उस प्रौढ के अलावा वहा चार मर्द और बैठे हुए थे । सभी काफी उम्र के थे । एक को छोड कर सब सिगरेट पी रहे थे । रिसेप्शनिस्ट की हसी अचानक रुकी । उस ने काच की ऐश-ट्रे मे सिगरेट बुझाते हुए कहा, "माफ कीजिएगा, ये सब मेरे बहुत पुराने दोस्त है और लम्बे अरसे बाद मिले है । आप अन्दर आए तब यहा चुटकुले सुनाए जा रहे थे, जिस से सब का और ही तरह का मूड था । प्लीज़ डोण्ट टेक इट अदरवाइज ! हा, तो आप मिस सईदा से मिलना चाहते हैं ? बैठिए । मै पूछता हू कि वह है या नही ।"

अख्तर बैठ गया । रिसेप्शनिस्ट ने फोन का डायल घुमाया ।

"हैलो ! रिसेप्शन हियर मिस सईदा से कोई सज्जन मिलना चाहते है हु 'ओ-यस ! आई नो ! आई नो ! अह ? अह ? ओके ।" फोन रख दिया गया । अख्तर की ओर देख कर वह बोला, "देखिए जी, कई बाते है—अव्वल तो मिस सईदा इस वक्त ड्यूटी पर नही है । दूसरी यह कि मिस सईदा एनाउन्सर है—कोई आफिसर नही । पास केवल आफिसर के नाम का बन सकता है । तीसरी बात यह कि

अगर आप पर्सनल काम से मिलना चाहते है तो इजाजत तब तक नही मिलेगी, जब तक वाकई जरूरी काम न हो।"

"लेकिन आप इतना तो बता सकते है कि उन की ड्यूटी कब-कब होती है ?" अख्तर ने दोनो हथेलियो को मेज पर टिकाते हुए पूछा, "या उन के नाम मेरा मेसेज दे सकते है ?"

"जी नही। आय'म सॉरी। यह हमारी ड्यूटो नही है।"

एक लडके ने कोकाकोला की छह बोतलो के साथ प्रवेश किया। रिसेप्शनिस्ट ने ड्रार खोल कर रबर-पैड्स निकाले और मेज पर इस तरह फेंके, मानो वे ताश के पत्ते हो। लडका बोतलो को उन पर एक-एक जमाने लगा।

अख्तर बाहर निकला। तुरन्त लू का एक सपाट झोका उस के चेहरे पर आ लगा। 'एयर-इण्डिया' के एयर-कण्डीशण्ड आफिस से निकलने पर भी लू इसी तरह सपाट और क्रूर लगती है। बालो मे उगलिया फेरते हुए उस ने दरबान की ओर देखा, जो इशारे से कह रहा था कि आप इस 'अन्दर' के साइन-बोर्ड वाले दरवाजे से ही बाहर हो जाइए।

वह बस-स्टाप पर खडा हो गया। इत्तफाक से 'रीगल' की बस तुरन्त मिल गई।

रेडियो-स्टेशन पीछे छूट रहा था और अख्तर का मूड उखडता जा रहा था। उसे काफी हद तक यकीन था कि जान-बूझ कर उसे अन्दर जाने नही दिया गया। उस के बोलने के लहजे से ही शायद यह भाप लिया गया कि वह मिस सईदा से किसी ऐसे काम से मिलना चाहता है, जिस के लिए रेडियो-स्टेशन के अलावा कोई और जगह भी हो सकती है। रिसेप्शनिस्ट ने अख्तर का नाम नही पूछा था। अगर सईदा अपने कमरे मे होती तो पूछती जरूर कि मिलने कौन आया है। कमरे मे न हो, न सही, लेकिन वह ड्यूटी पर आई जरूर होगी। कही स्टूडियो वगैरह मे गई होगी। रिसेप्शन वालो ने जान-बूझ कर अख्तर को पता नही,

ऐसे बरताव के लिए रिसेप्शन कितना दोषी है। रोज न जाने कितने फालतू लोग आ कर तग करते होगे। गेहू के साथ घुन पिसता ही है।

'मैं ने अपना रौब भी तो अच्छा नही डाला था।' उस ने सोचा, मै उन के किसी भी सवाल का ठीक से जवाब न दे पाया। कैसे दाखिल होने देते ?'

उस का उबाल शान्त होने लगा। रेडियो-स्टेशन के लिए रवाना होते समय ही उस के मन मे शायद कही पर यह बात छिपी हुई थी कि सईदा से मुलाकात न हो सकेगी। इस आशा के सच निकलने की रहस्य-मय खुशी, एक अटपटा-सा सन्तोष भी उसे हुआ।

सईदा को फोन किया जाए ? लेकिन नम्बर ? रेडियो-स्टेशन का नम्बर तो डायरेक्टरी मे होगा, लेकिन सईदा कौन-से एक्स्टेशन पर मिल सकती है, यह कैसे मालूम हो ? यो, एक्स्टेशन की सूची भी डायरेक्टरी मे होती है, लेकिन सिर्फ आफिसरो के नाम पर। सईदा कोई आफिसर तो है नही रिसेप्शनिस्ट ने भी यही कह कर टरका दिया था। न सईदा के आफिसर का नाम ही उसे मालूम है। दरअसल सारी बाते उसी दिन, पहली मुलाकात के समय ही पूछ लेनी चाहिए थी, लेकिन यह असम्भव रहा था। ऐन मौके पर मोटी तोद और कैमरे वाला वह आदमी वहा आ धमका था। पता नही, कोई रिश्तेदार था या सिर्फ जान-पहचान का, बहरहाल, उस की मौजूदगी मे सईदा से बाते जारी रखने की ढीठता उस से न हो सकी थी। सईदा ने रुख भी तो ऐसा अपनाया था कि किसी भी जानकारी के लिए उस से बार-बार जिरह करनी पडती। तब वह कैमरे वाला आ कर जरूर पूछता, "क्या बात है, जनाब ?"

पाच

"अरे, भार्गव साहब, आप ?"

भार्गव ने घास पर लेटे-लेटे पलट कर देखा—उन के पडोसी श्री हीरेन्द्रकुमार अग्रवाल अपने बाईस-वर्षीय पुत्र वीरेन्द्रकुमार के साथ खडे मुस्करा रहे थे। आखो पर धूप सीधी पडने के कारण दोनो की भौहे सिकुडी हुई थी। हीरेन्द्रजी धोती-कुरते मे थे। वीरेन्द्र ने पतला, लखनवी कुरता और लट्ठे का पायजामा पहन रखा था।

पडोसी होने के बावजूद चूकि भार्गव का अधिकाश समय घर से बाहर बीतता था और रात को लौटने मे भी उन्हे प्राय देर हो जाती थी, अग्रवाल परिवार से उन की विशेष बोलचाल नही थी। उन की पत्नी लक्ष्मी का अग्रवाल परिवार मे आना-जाना अवश्य था, लेकिन पति-पत्नी मे उन्हे ले कर शायद ही कोई बातचीत होती।

ट्राजिस्टर का स्विच आफ कर के भार्गव ने कहा, "आइए, अग्रवाल साहब, बैठिए।"

पाच बज चुके थे। आज लू विशेष नही थी। आकाश के नीले पार्श्व के साथ उठी हुई कुतुब मीनार भव्य लग रही थी। इतवार होने पर भी आज सैलानी उतने नही थे, जितने कि भार्गव ने आशा रखी थी। 'प्रभात' के सम्पादकीय विभाग मे काम करती दो महिलाए आज सुबह दस-साढे-दस के करीब उन के घर आ धमकी थी। दोपहर का खाना भार्गव के ही यहा खाने के बाद उन्होने जिद की थी कि कुतुब चलेगे।

वे लोग बस-स्टाप पर पहुचने के लिए जब हीरेन्द्रजी के घर के सामने से गुजरे थे तो कार की सफाई हो रही थी। सफाई आज नौकर के सुपुर्द थी। भार्गव ने नही सोचा था कि यह कार भी यहा आ पहुचेगी।

भार्गव ने कुतुब के बस-स्टाप पर कुछ चटपटी चीजें खरीदी थी और सब के साथ थोडा टहलने के पश्चात् लान मे चादर बिछा कर कहा था, "आप लोग घूमिए। मै यहा लेटता हू।" महिला-पत्रकारो, लक्ष्मी और अपने दोनो बच्चो को रवाना कर के उन्होने तसल्ली से ट्राजिस्टर खोल लिया था और एक विदेशी धुन सुनते हुए करवट पर लेट रहे थे।

महिलाओ को खास मजा नही आया था। उन्होने भार्गव साहब से चुटकुले सुनने की आशा रखी थी, लेकिन हसने-हसाने का आज भार्गव का मूड नही था। शायद इस लिए कि वह अनिच्छा से आए थे। सही-सलामत मास्को पहुच जाने का पन्ना का पत्र अभी तक प्राप्त नही हुआ था, जिस से उन का मूड ठीक नही था।

दरी पर स्वय बैठते और वीरेन्द्र को भी बैठ जाने का इशारा करते हुए हीरेन्द्रजी बोले, "और लोग कहा है ?"

भार्गव समझ गए कि महिलाओ-बच्चो को भी घर से निकलते हुए इन्होने देख लिया होगा। "यही कही घूम रहे होगे। शायद उधर कैफेटेरिया मे चाय-वाय पी रहे हो। बच्चे आइसक्रीम की जिद कर रहे थे।" वह हीरेन्द्रजी की आखो मे देखते हुए औपचारिकता से मुस्कराए।

"आप ने ट्राजिस्टर बन्द क्यो कर दिया ?" हीरेन्द्रजी की आखें ट्राजिस्टर पर टिकी, "बाहर से लाए है शायद ?"

"हा, दो साल पहले अमरीका गया था, तब..."

"अभी शायद कोई विदेशी धुन सुन रहे थे ?"

"जी हा।"

इस के अनुसधान मे अब क्या कहा जाएगा, इस का अन्दाजा भार्गव ने तुरन्त लगा लिया। इस 'टाइप' के लोग ऐसा ही कुछ पूछते हैं। भार्गव ने ट्राजिस्टर हीरेन्द्रजी को देखते ही बन्द कर दिया था, अत वह समझ रहे होगे कि हम ने भार्गव की कोई चोरी पकडी है। असलियत मे भार्गव स्वय ही बन्द करने वाले थे, धुन मे एकरसता आने लगी थी।

"पता नही, साहब, हिन्दुस्तान मे ये विदेशी धुने इतनी लोकप्रिय क्यो हो रही है !" भार्गव ने उन्हे कहते सुना, "धुने । फिल्मे । पत्रिकाए । अपनी समझ मे तो सिर-पैर भी नही आता । न कोई ताल, न लय, न माधुर्य, न स्वरबद्धता । जब जैसा मन हुआ, गला फाड दिया और ड्रम बजा दिया—हो गया काम ।"

भार्गव ने टालने के लिए पूछा "आप दो ही आए है क्या ?"

हीरेन्द्रजी ने बडी हसरत से अपने पुत्र की ओर देखा, "नही । मैं हूँ । इस की मा है । इस की वहू भी है । बडे और मझले के चार बच्चे भी कहने लगे कि साथ चलेगे दूर से आप को देखा तो उन्हे छोड कर हम दोनो यहा चले आए ।"

वीरेन्द्र शरमा कर नीचे देखने लगा था । भार्गव को याद आया, छह-सात महीने पहले उस की शादी हुई थी और पिछले सप्ताह ही उस की पत्नी ससुराल आई थी । 'बजाय इस के कि नए जोडे को अकेले भेजते, साथ मे बुढिया-बुढऊ भी ' भार्गव ने सोचा । यह स्थिति उन्हे बडी दिलचस्प मालूम हुई, हालाकि इस मे कोई नवीनता नही थी ।

"भार्गव साहब, आप इतने पढे-लिखे और समझदार है । आप की सगत का कभी अवसर ही नही मिला, अन्यथा मन की अनेक शकाओ का समाधान हो जाता ।" हीरेन्द्रजी कुतुब मीनार की चोटी पर दृष्टि टिका कर विह्वल हो रहे थे, "यह कुतुब कितनी बुलन्द है ! अधिकाश का मत है कि इसे मुसलमानो ने बनाया, लेकिन मैं उन इतिहासकारो को सच मानता हू, जो कहते है कि इस का निर्माण अवश्य किसी हिन्दू ने किया । पता नही, हमारे जिन्दा रहते यह विवाद समाप्त होगा या नही, लेकिन मेरा भी मन कहता है कि जरूर यह किसी हिन्दू राजा का निर्माण है ।"

"'लगने' या 'मन के कहने' से ही कोई बात सच नही हो जाती, हीरेन्द्रजी !"

"बिल्कुल ठीक !" उन्होने इतने तपाक से अनुमोदन किया कि भार्गव

को अचरज हुआ। ध्वस्त दीवार की वह छाया, जिस मे दरी बिछी हुई थी, सरकती हुई दूर चली गई थी।

हीरेन्द्रजी ने एक तिनका तोडते हुए कहा, "ताजमहल के बारे मे भी विवाद है। यह विवाद 'मेरे मन के कहने से' या 'मुझे लगने से' पैदा नही हुआ होगा। निश्चय ही उस की नीव विद्वानो के मानस-मन्थन मे है। इसी तरह कुतुब का विवाद भी "

"अग्रवालजी, विद्वान भी कई श्रेणी के होते है। न केवल भारत मे, सारी दुनिया मे होते है। कुछ विद्वानो पर कभी विश्वास नही करना चाहिए। वे अपनी अनर्गल बातो से लोगो का ध्यान आकर्षित करना चाहते है। ताजमहल या कुतुब मीनार की तो फिर भी एक बात है, 'भाई लोग' शेक्सपीयर को भी भारत मे जन्मा एक मुसलमान सिद्ध कर चुके है। उन के अनुसार शेक्सपीयर का असली नाम शेख पीर था।"

"कहा है तो कौन जाने ठीक ही कहा हो। भारत शुरू से ही मनीषियो की जन्मभूमि रही है।"

भार्गव को बडी तिलमिलाहट हुई, "क्यो ठीक कहा होगा ?"

"आखिर हम यही कैसे कह दे कि ठीक नही कहा होगा ?"

"हम सब के पास एक सामान्य विवेक भी तो है।"

"खैर, छोडिए, वह तो असलियत जो होगी, सामने आ ही जाएगी। मुद्दे की बात यह है कि हमारी सस्कृति नष्ट हो रही है। विदेशी पत्रिकाएँ, विदेशी फिल्मे, विदेशी नृत्य और धुने माफ कीजिएगा, मै आप पर व्यग्य नही कर रहा। मै तो आम पढे-लिखो के बारे मे बोल रहा हू। हमारे युवको का सोचने-समझने का ढग ही बदल गया है। सारे देश मे—कैसे कहू—कामुकता का नग्न नृत्य हो रहा है।"

'कामुकता' शब्द बोलते हुए वह खीझ-से गए, क्योकि यह बात उन्हे वीरेन्द्र की उपस्थिति मे कहनी पडी थी। वीरेन्द्र दूसरी ओर देखने लगा। भार्गव ने पिता-पुत्र की यह अकुलाहट न देखी होती तो उन्होने जरा

स्पष्टता से जवाब दिया होता। वह इतना ही बोले, "आप का कहना आशिक रूप से मैं भी स्वीकार करता हू, लेकिन हमे न भूलना चाहिए कि विज्ञान के कारण दुनिया सिकुड कर छोटी हो रही है। सस्कृतियो का आदान-प्रदान इतना बढा है और बढने वाला है कि हम दूसरी सस्कृतियो के प्रभाव से नही बच सकते। ऐसा नही कि भारतीय दृष्टि को विदेशो मे कोई सम्मान न मिलता हो। जरूर मिलता है लेकिन मुखर इस लिए नही होता कि "

"कुछ भी कहिए, साहब, भारतीयता का घनघोर नाश हो रहा है। पता नही, इस देश का कल्याण कैसे होगा।"

"असल मे यह सब मशीनी-युग "

"वह जमाना अब कहा, जब दूध-दही की नदिया बहती थी ? वह बल, वह शौर्य, वह मातृ-पितृ-पूजा वह गुरु-भक्ति, वह ब्रह्मचर्य · कुछ भी कहिए, साहब, मै तो जब भी आगे की सोचता हू, दिमाग घूम जाता है "

"अग्रवालजी, सच पूछे तो भूत-काल की यादो से चिपकने की बजाय हमे वर्त्तमान और भविष्य की चिन्ता "

"कुछ भी कहिए, साहब सच्चाई यह है कि देश डूब रहा है।"

"अजीब आदमी है आप ! मेरा एक भी वाक्य पूरा नही सुनते !" भार्गव नाराज हो गए। उन का लहजा एकदम इतना बदल गया कि हीरेन्द्रजी चौक पडे, "जी ?"

"आप ने खुद अपने घर मे कितना सुधार किया है ?" भार्गव ने सीधा प्रश्न किया।

"सुधार ? मेरे घर मे बिना बाहो का ब्लाउज़ कदापि नही पहना जा सकता। चुस्त पोशाक का सवाल ही नही उठता। आप मेरे यहा कभी पधारिए तो सही हमारी विशुद्ध भारतीयता देखे बिना कैसे आप ऐसी आलोचना "

"क्या सारी भारतीयता सिर्फ कपडो मे " भार्गव की आवाज फिर तीखी होने लगी।

"बेशक नही !" फिर से उन का वाक्य बीच मे ही काट कर हीरेन्द्रजी बोल उठे, "हमारे यहा तो हर तरह का सयम है। अपने बच्चो को मै प्रारम्भ से ही कठिनतम कसौटियो पर कस लेता हू। इस से उन्हे आगे कोई कठिनाई नही होती।" उन्होने वीरेन्द्र की ओर दर्प से देखा, "इस की बहू अभी चार दिन पहले ससुराल आई है, लेकिन विश्वास करेगे आप कि आज के जमाने मे भी कोई पुत्र अपने पिता के इतने अनुशासन मे रहता होगा ? हमारा यह वीरेन्द्र रोज व्यायाम करता है। लाठी चलाना, कुश्ती लडना, दौड लगाना, दण्ड पेलना देखने मे भले ही दुबला हो, लेकिन अन्दर से इस्पात है इस्पात ! बहू की सूरत भी इस ने ठीक से न देखी होगी। रात को यह दूसरे आगन मे सोता है। इसे कहते हैं सयम !"

वीरेन्द्र का चेहरा तमतमा आया। वह नीचे देखने लगा। यह तम-तमाहट शर्म की थी ? या गुस्से की ? या मात्र उस अकुलाहट की, जो किसी रहस्य के बेपर्दा हो जाने पर होती है ? भार्गव ने सोचा कि वीरेन्द्र अभी कुछ-न-कुछ कहेगा, लेकिन उस की जबान से एक शब्द भी न फूटा। भार्गव अविश्वास से देखते रह गए। झुझलाए, हसे या इन्हे अपने सामने से रवाना कर दें, कुछ न समझ पाए।

छह

क

सुबह आठ बजे वह रेडियो-स्टेशन के गेट के पास आ कर खडा हो गया। उस के मन मे चमात्र भी ऐसी आशका नही थी कि वह बेवकूफी कर रहा है।

रूपनगर मे गन्दे नाले के किनारे एक काफी बडे मकान मे उस ने छोटी-सी मियानी किराए पर ले रखी थी। उस की छत इतनी नीची थी कि अख्तर उस मे तन कर खडा भी नही हो सकता था। उसे लगता, वह किसी कमरे मे नही, डिब्बे मे रहता है—बिस्कुट के डिब्बे मे। मियानी मे पहुचने के लिए लकडी की एक पुरानी सीढी थी, जो पाव रखते ही हिलने लगती। दरवाजा खोलने पर बहुत कम चौडाई और उसके अनुपात मे बहुत ज्यादा लम्बाई की वह मियानी किसी सुरग के टुकडे जैसी नजर आती। खिडकी के नाम पर एक छोटा-सा छेद था—चौकोर छेद, जिस मे सलाखे थी और दो पलडो वाला एक दरवाजा भी। अख्तर मियानी मे घुस कर सब से पहले इसी छेद को खोल देता, ताकि गरम हवा बाहर निकल सके। अपनी नई-नई खरीदी गई खाट पर लेट कर वह सिगरेट सुलगा लेता। तम्बाकू की यह लत उस से बहुत बुरी तरह आ चिपकी थी, जो उस की ढाई सौ की तनख्वाह मे प्राय तीस रुपए नष्ट कर देती। कनाट-प्लेस के एक चौराहे पर ट्रैफिक-कण्ट्रोलर का रग लाल हो जाने के कारण बस मेढक जैसी टर्राहट के साथ ब्रेक लगाती हुई रुक गई थी। तब अख्तर ने सडक पर खडे एक लडके की आवाज खिडकी के पास से सुनी थी, "अखबारवाला अखबारवाला ताजा खबर· " अख्तर ने तेरह पैसे दे कर दैनिक 'प्रभात' खरीद लिया था।

अप्रैल के अन्तिम सप्ताह मे जब से पाकिस्तान ने कच्छ सीमान्त पर तेज हमला किया था और भारतीय जवान करारे जवाब दे रहे थे, सभी अखबार बहुत दिलचस्प हो उठे थे । पर्तें खोलने पर ताजा छपाई की हल्की गन्ध अख्तर महसूस कर सका । उस ने सुर्खियो पर नजर दौडाई सत्रह मई, '६५ कच्छ समझौते के बिट्रिश प्रस्ताव मे दोबारा हेरफेर । पाकिस्तान की तरफदारी । दिल्ली मे असन्तोष । त्रिपुरा, शिलौग, कारगिल मे पाकी गोलियो की बौछार । जवानो द्वारा कारगर जवाब

उसी समय गीयर बदलने की रिरियाती आवाज के साथ बस चल पडी थी । उस का पूरा ढाचा इतना काप रहा था कि अख्तर ने अखबार समेट लिया था—रेडियो-स्टेशन पर उतर कर तसल्ली से पढूगा, इस इरादे के साथ । दो मिनट मे ही वह अपनी मजिल तक पहुच कर बस के दमघोटू वातावरण से छुटकारा पा चुका था ।

निखरती धूप बुरी नही लग रही थी । थोडी ही देर मे यह अखरने वाली सीमा तक गरम हो जाएगी । उस के भी कुछ समय बाद यह धधकने लगेगी

लेकिन किसी छाया मे, लू के झोको के बीच अख्तर खडा रहेगा । आज वह तय कर के आया था । 'एयर-इण्डिया' से आज उस ने पूरे दिन की छुट्टी ले ली थी । पिछले कई दिनो से वह अत्यन्त नाजुक मनस्थिति से गुजर रहा था । यह एक सच्चाई ही थी कि उसे सईदा का चेहरा भी अब ठीक-ठीक याद नही था, लेकिन उसे पूरा यकीन था कि अगर सईदा सामने आ जाए तो वह उसे उसी क्षण पहचान लेगा ।

सईदा उसे पहचानेगी ?

उस ने रेडियो-स्टेशन मे प्रवेश करने के लिए एक बार और पास बनवाने की चेष्टा की थी, लेकिन रिसेप्शन मे पहले वाला ही व्यक्ति बैठा हुआ था, जिस ने अख्तर को तुरन्त पहचान लिया था । अख्तर ने जितनी जिद की थी, उतना ही वह भी अपनी जिद पर अडता गया था ।

वहा से लौट कर अख्तर 'रीगल' के पीछे एक सस्ते होटल मे चाय पीता हुआ सिगरेटो-पर-सिगरेट फूकता रहा था। सोचता रहा था कि अब क्या करे। ज्यो-ज्यो दिन बीत रहे थे, अख्तर जानता था कि वह जवान नही हो रहा है। उसे तीसवा साल लग चुका है। तीसवे को बीतते उसी तरह देर नही लगेगी, जिस तरह उन्तीस सालो को नही लगी। यो एक दिन अख्तर अकेला ही बूढा हो जाएगा। नही उसे सईदा को जीतना ही चाहिए। सईदा से उस की मुलाकात एक सयोग था और सयोग चूकि रोज-रोज चमत्कार नही दिखाते, उन का अधिकतम लाभ एक ही बार मे उठा लेना चाहिए था।

सारी स्थिति को उस ने किसी अनुभवी राजनीतिज्ञ की तरह समझ लिया था और आगे के कदम भी उसे राजनीतिज्ञ की तरह ही उठाने थे हचमचा देने वाले कुछ अनुभवो ने उस के सारे रोमाटिक विचारो को पोछ दिया था। वे अनुभव न हुए होते तो आज यह जानकारी भी उसे न होती कि दुनिया के किसी भी काम के लिए, फिर चाहे वह प्यार ही क्यो न हो, सिर्फ दिल नही, काफी दूर तक सोच सकने वाला दिमाग और इस के साथ जेब की पर्याप्त गर्मी भी चाहिए।

उस की तनख्वाह ढाई सौ न होती, ढाई हजार होती—क्या सईदा को इस आकडे से ही इतना प्रभावित न किया जा सकता कि वह अख्तर से दूसरी बार मिलने के लिए स्वय लालायित हो उठती? रेस्तोराओ के भारी बिल अदा करने, बाजार मे घूमते हुए अचानक कही रुक कर कोई आकर्षक उपहार ले देने, सिनेमा के ऊचे दर्जे के टिकट खरीदने, कभी कोई नाटक देख आने वगैरह मे जेब की गर्मी नही तो और कौन-सी चीज खर्च होती है?

होटल से बाहर आते समय उस ने फैसला किया था कि कल छुट्टी ले कर मै सुबह से शाम तक सईदा का इन्तजार करूगा—रेडियो-स्टेशन के गेट के सामने खडा हो कर। यह उपाय ऊब से भरा हुआ था, किन्तु

अख्तर को एक यही सूझ सका। यह ऐसा उपाय था जो तुरन्त आजमाया जा सकता था और जिस मे किसी की मदद की आवश्यकता नही थी।

उस ने अखबार मोड कर बगल मे दबा लिया। यहा खडे रह कर उसे केवल समय नही बिताना है। ऐसा होता तो वह कोई जासूसी उपन्यास साथ लाया होता। बल्कि कई जासूसी उपन्यास, जो खडे-खडे, कुछ-कुछ घण्टो मे पढ लिए जाते। यहा तो उसे चौकस खडे रहना है। किसी भी बस या फोर-सीटर से सईदा उतर सकती है। इस से पहले कि वह रेडियो की सीमा मे प्रवेश कर जाए, उसे रोक लेना है। किस तरह लपकता हुआ वह सईदा के सामने जाएगा, किस तरह 'जरा सुनिए ?' कहेगा और उस के पलटते ही पूछेगा, 'आप ने पहचाना नही शायद ?' और किस तरह आदि सोचते हुए अख्तर ने अपनी धडकन मे तेजी महसूस की।

वृक्षो की आधी सूखी पत्तियो मे सरसराहट हो रही थी। हिलती डालियो और शाखाओ के कारण जमीन पर लेटी परछाइयो मे छोटे-बडे छेद बार-बार बनते और बन्द होते। यह एक ऐसी हरकत थी, जिस के कारण वे परछाइया जमीन पर कुछ-कुछ फूली हुई लग रही थी। दो आइसक्रीम वाले इस फुटपाथ पर और तीन उस फुटपाथ पर आ कर खडे हो गए। दो पैसो मे ठण्डे पानी का एक गिलास पिलाने वाली चलती-फिरती टकियो के पास कुछ बाबू लोग खडे हस रहे थे। लाल व स्लेटी रग की बसे आती, गुजर जाती। नई डबल-डेकर दाहिनी ओर के ट्रैफिक-आइ-लैण्ड के मोड पर अपनी गति धीमी करती दिखाई दी। जब वह पास आई तो उस की ऊची छत पर वृक्षो की नीची टहनिया रगड खाती हुई कडकने लगी। बस धीमे-धीमे रुकी, दो-चार सवारियो को उतार कर धीमे-धीमे ही रवाना हुई और सेण्ट्रल सेक्रेटेरिएट की ओर चली गई। वह किसी बत्तख की तरह थी, जो अपने झुर्रियोदार पजो को हौले-हौले उठा कर, डोलती हुई कही जा रही हो।

नौ ।

कभी वह अपने शरीर का भार एक पैर पर रखता, कभी दूसरे पर । कघी निकाल कर उस ने बालो मे फेर ली ।

साढे नौ ।

उस की जिद गीले सीमेट की तरह थी, जो समय बीतने के साथ और पक्की होती जा रही थी । दूध की ठण्डी बोतले बेचने वाला खामोशी से खडा था । उसकी उपस्थिति मात्र से मन मे लालच आ जाता था । यह बात उसे मालूम भी जरूर होगी, अन्यथा उस ने अपना माल बेचने के लिए आवाजे लगाई होती । अख्तर ने दो-तीन बार उसकी ओर देखा और अनदेखा कर दिया । चौथी बार देखने पर उसे प्यास महसूस हुई । पेडो की छायाए सिकुडती जा रही थी । सडक पर आवागमन तेजी से बढ रहा था । साइकिले, लैम्ब्रेटा और वैस्पा, पर्ल और राजदूत, घड-घडाते फोर-सीटर बसे, कारे, टू-व्हीलर स्कूटर, टैक्सिया जैसे बहुत देर से रुका हुआ कोई बाध अचानक टूट गया हो । उस ने ठण्डे दूध की एक बोतल खरीदी और पाइप से उस का स्वाद चूसने लगा । अगर ऐन इसी वक्त सईदा किसी बस से उतरे, तो ? अख्तर को बोतल आधी छोड कर उस के पीछे लपकना पडे । सुरक्षा के लिए उस ने बोतल के पैसे पहले ही चुकता कर दिए ।

"नेहरू ?" उस ने पीछे से किसी की खरखराती आवाज सुनी, "नेहरू राजनीतिज्ञ से ज्यादा एक कवि था । आप उस की लिखी कोई भी पुस्तक उठा लीजिए । या उस की वसीयत ही देख लीजिए । जीवन को उस ने हमेशा आदर्शवादी कवि की निगाह से देखा, लेकिन राज-नीतिज्ञ को यथार्थवादी होना चाहिए ।"

"हा, लेकिन वह राजनीतिज्ञ के रूप मे कितना सफल या असफल रहा, इस का मूल्याकन अभी नही हो सकता । अभी तो उसे बस प्यार किया जा सकता है । कोई चाहे कुछ कहे, लेकिन वास्तविकता मे वह बहुत दूरदर्शी था । उस का मूल्याकन करने की कोशिश कम-से-कम दस

साल बाद होनी चाहिए।" दूसरा बुजुर्ग नीचे देखता हुआ सिर हिला रहा था, "उस से पहले हम तटस्थ नही हो सकेगे।"

पहले ने कहा, "भारत का औसत आदमी आज भी वीर-पूजा मे विश्वास रखता है—द हीरो-वरशिप। आउट-डेटेड नाऊ! इसी लिए नेहरू बहुत जल्दी हम सब का हीरो हो गया। उस की गलतिया भी हमे गलतिया नही लगती थी। लगती थी, तो भी हम राजी-खुशी उन्हे माफ कर देते थे। इस हीरो-वरशिप के कारण ही आज आप किसी भी क्षेत्र मे देख लीजिए—युवक वर्ग को हमेशा कम महत्व मिलता है। नार्लीकर ने विदेशो मे जा कर अपना चमत्कार न दिखाया होता तो हिन्दुस्तान मे उस को उतनी मान्यता कभी न मिलती, जितनी कि मिली है। साहित्य, राजनीति, पत्रकारिता, सपादन, रेडियो के कार्यक्रम, विज्ञान वगैरह कोई भी क्षेत्र हो, सम्मान और स्थापना बुजुर्गो के लिए सुरक्षित है, जब कि युवक उन से कही ज्यादा ईमानदारी से काम करता है। उस की समझ-बूझ भी ज्यादा पैनी होती है।"

"रहने भी दे, यार!" दूसरे ने दोस्ताना मुस्कान के साथ टोक दिया, "हम दोनो भी बुजुर्ग ही है।"

पहला हसने लगा।

फिर दोनो चुप हो गए। स्टाप के खम्भे के पास वे जिस तरह खडे थे, उस से जाहिर था कि उन्हे बस का इन्तजार है। अख्तर उन की ओर से उदासीन रहा, क्योकि वह सईदा के बारे मे सोच रहा था। जब उस के विचारो की तन्मयता टूटी, पहला बुजुर्ग कह रहा था, "सवाल यह है कि बात ब्रिटेन की ओर से ही क्यो कहलवाई गई? रूस, कनाडा या और कोई देश नही—ब्रिटेन ही क्यो? मेरा इशारा कच्छ समझौते की ओर है। क्या दुनिया सोचती है कि हम अपने भूतपूर्व शासको की धौस अब भी मानते हैं? आज का अखबार देखा? ब्रिटेन ने पाकिस्तान की तरफदारी की है। आखिर क्यो न करे? पाकिस्तान उन के बच्चे की

तरह है। बन्द दरवाजे के पीछे बच्चे की भले ही पिटाई कर दी जाए, लेकिन सब के सामने तो उस की तरफदारी ही की जाएगी।"

उसी समय बस आ गई। वह सेण्ट्रल सेक्रेटेरिएट की थी, जिस से खाली जा रही थी। दोनो लपक कर उस मे घुस गए। कण्डक्टर ने घण्टी दे दी। बस चली और अख्तर के सामने से गुजरने लगी। सडक और सडक के लोग उस के पीछे छिप गए। वह पूरी गुजर गई तो अख्तर ने देखा, दूसरी ओर के स्टाप पर एक लाल बस रुकी है और सवारिया उतर रही है।

वह सईदा ही है वही, सफेद साडी और अख्तर दौड पडा। वह रेडियो-स्टेशन के गेट के नजदीक ही उतरी थी, जिस से अन्दर जाने मे उसे देर नही थी। कदम भी वह तेजी से रख रही थी।

"सुनिए !"

सईदा न रुकी। उस ने यही समझा कि 'सुनिए' शब्द किसी और के लिए है। अख्तर बिल्कुल पास आ कर बोला, 'सुनिएगा ! मै आप ही से "

वह ठिठक कर खडी हो गई।

गेट मे प्रवेश कर रही एक कार ने सहसा ब्रेक लगा कर जोर से हार्न बजाया। अख्तर और सईदा एक तरफ हटे। गुर्राहट-भरी एक धीमी गूज के साथ कार अन्दर चली गई।

"जी, बात यह है मै यो ही इधर से गुजर रहा था अचानक आप नजर आ गई तो सोचा · आज आप की ड्यूटी दस बजे से है क्या ?"

सईदा के चेहरे पर अचरज था। वह कुछ न बोल पाई।

"आप ने मुझे पहचान लिया न ? कुछ दिन पहले हम 'एयर-इण्डिया' के आफिस मे "

"पहचान तो लिया, लेकिन ·"

"मै ने आप को अपना नाम भी बताया था—अख्तर ।"

सईदा को नाम याद था, लेकिन वह चुप रही ।

"मै ने सोचा था शायद आप फिर कभी दिखाई पडेगी "

"मेरा उधर आना-जाना नही है ।" वह रूखेपन से बोली ।

"फिर भी देखिए, मुलाकात हो ही गई ।"

सईदा ने चुप रह कर अपनी कलाई-घडी मे देखा ।

"आप को जाने की जल्दी है शायद ?"

"जी हा ।" वह बोली, "मुझे अभी एक ट्रासमीशन करना है ।"

"क्या मुझे दो-चार मिनट भी "

"कहिए ?"

"यो कहने को तो कुछ भी नही है और होने को हो भी क्या सकता है "

"तो ?"

"आप बहुत जल्दी मे हो तो मैं फिर कभी मिलू ?"

"लेकिन क्यो ?"

"मै बता चुका हू ।"

"क्या बता चुके है ? कहा ?"

" 'एयर-इण्डिया' के आफिस मे ।"

"मुझे कुछ याद नही है ।"

"मै ने कहा था कि मै दिल्ली मे निपट अकेला हू और "

"लेकिन मै इस बारे मे क्या कर सकती हू ?"

अहाते मे जा रहे कुछ व्यक्तियो ने पलट कर उन की तरफ देखा । सईदा को अकुलाहट हुई ।

"आप तो इस तरह टाल रही है, जैसे मैं कही का चन्दा वसूल करने आया हू ।" अख्तर हसा ।

"असल मे मैं समझ नही पाई कि "

"आप समझ जाएगी "

"जी ?"

"यही कि मै एक बहुत अच्छा दोस्त "

"माफ कीजिएगा, गेट पर खडे रह कर लम्बी बाते नही की जा सकती।"

"चलिए, आप को अन्दर छोड आऊ।"

"लेकिन मुझे स्टूडियो मे जाना है।"

"मै आप के लौटने का इन्तजार कर सकता हू।"

"आप को मुझ से कहना क्या है ?"

"या आप चाहे तो मै फिर कभी आऊ ?"

"ओफ ! आप तो "

"मै ने पहले भी आप से मिलने की कोशिश की थी, लेकिन रिसेप्शन वालो ने जाने नही दिया। कहा कि पास सिर्फ आफिसर्स के नाम पर बन सकता है।"

"बिल्कुल ठीक कहा।"

"और यहा मेरी किसी आफिसर से जान-पहचान नही है। सपोज मैं किसी और दिन आप से मिलने आऊ "

"आप चाहते क्या है ?" सईदा को इस ढीठता पर अचरज हो रहा था। कोई और युवक होता तो इतने विरोध के बाद जरूर 'उखड' जाता। अख्तर की पलके झुकी हुई थी। अधिकाश समय वह नीचे अथवा आस-पास देखता रहा था। क्या अख्तर उन लोगो मे से है, जो निगाह दूसरी तरफ कर के दुनिया की कोई भी बात कह सकते है ? प्रशसा की, शिकायतो की या मान-अपमान की कोई भी बात ? यदि सईदा अभी यहा से जाने लगे तो अख्तर क्या करेगा ? रास्ता रोक कर खडा न हो जाए कही ! क्या भरोसा ऐसो का ! गेट पर अच्छा-खासा तमाशा लगता है, यह टलने वाला नही। फिर ? लेकिन आज की तरह यह बाद मे भी आ सकता है। आएगा। सईदा झुझला उठी। कहा से यह हमेशा की

मुसीबत

"जी ?" वह बोली। अख्तर ने कुछ कहा था, जिसे वह सुन नही पाई थी।

"यकीन रखिए, मेरे कारण आप को कभी कोई परेशानी "

सईदा को बडी कोफ्त हुई। अख्तर का यह वाक्य गेट से बाहर निकल रही एक लडकी ने सुन लिया था। उस ने घूम कर अख्तर को देखा था, फिर सईदा को, फिर दोनो को एक-साथ। यह लडकी मेन-स्टेशन मे नही थी, विविध-भारती मे थी, लेकिन बातचीत न होने पर भी सईदा और वह एक दूसरी को चेहरे से अवश्य पहचानती थी। सईदा के मन मे अख्तर के प्रति सख्त नाराजगी उफनने लगी। 'यह तो गले पड रहा है!' उस ने सोचा, किन्तु थोडा दोष उस का अपना भी तो था। गेट पर बातें करने की बजाय वह बडी आसानी से अख्तर को अपने साथ अन्दर ले जा सकती थी। कमरे मे दूसरो की मौजूदगी होती जिस से यह इतना ढीठ भी न हो पाता अगर होता तो सईदा सब के सामने ऐसी रुखाई से पेश आती कि वह ऐसा साहस फिर कभी न करता। शायद अब भी यही किया जाना चाहिए। कही ऐसा न हो कि 'मेरे कारण आप को कभी कोई परेशानी ' से भी 'आगे का' कोई वाक्य यह कह बैठे और जाता-जाता कोई सुन ले। पल्लू को सकोरती-सहेजती हुई वह बोली, "चाहे तो आप अन्दर आ सकते है लेकिन मै तुरन्त ट्रान्समीशन के लिए चली जाऊगी "

"कोई बात नही। मै ने कहा न, मैं आप के लौटने का इन्तजार कर लूगा।" वह यो बोला, मानो पहले से जानता रहा हो कि सईदा को ऐसा निर्णय लेने के लिए वह मजबूर कर सकेगा।

दरबान ने अख्तर का पास देखने के लिए हाथ बढाया। सईदा ने इशारा किया कि बनवा रहे है। अख्तर के साथ वह रिसेप्शन मे आई। रिसेप्शनिस्ट अख्तर को उस के साथ देख कर चौका, लेकिन यह चौकना उस ने सफलतापूर्वक छिपा लिया। सईदा ने कहा, "इन का पास बना

दाखिए ।"

"एण्ट्री करिए ।" रिसेप्शनिस्ट ने सिगरेट की राख झाडते हुए उत्तर दिया ।

अख्तर ने 'नेम आफ द विजिटर' मे अपना नाम अग्रेजी के बडे अक्षरो मे लिखा । पूरा पता भी लिखा । 'नेम आफ द आफिसर टू बी विजिटेड' के कालम मे क्या लिखा जाए ? उस ने सईदा की ओर आखे उठाईं ।

"मिस्टर सेठी लिख दीजिए । 'परपज आफ द विज़िट' मे 'आफिसियल' ।"

केबिन से निकलते हुए अख्तर ने रिसेप्शनिस्ट की ओर विजय की दृष्टि से देखा, लेकिन वह सिगरेट सुलगाने मे मशग़ूल होने का दिखावा कर रहा था ।

सईदा जान-बूझ कर तेज कदम रख रही थी, ताकि अख्तर पीछे-पीछे घिसटता हुआ-सा चले, किन्तु वह साथ चल रहा था । इस व्यक्ति से आगे कैसा व्यवहार रखा जाए, वह समझ नही पा रही थी और चुप थी । अख्तर भी तब तक चुप रहा, जब तक दोनो ने उस कमरे मे प्रवेश न कर लिया, जहा सईदा बैठती थी । दरवाजे पर खस होने के कारण भीतर क़ाफी राहत थी । एक कुर्सी की ओर सकेत करते हुए उस ने कहा, "बैठिए, मैं आधे घण्टे मे आऊगी ।"

"जी ।"

बिना उस की ओर देखे सईदा चली गई ।

कमरे मे अब सिवा अख्तर के कोई नही था । पखा काफी ऊचाई पर था, लेकिन तेज चलने के कारण अच्छी हवा दे रहा था । कमरे मे तीन मेजे थी । तीनो पर एक-एक काच और काच के नीचे आवश्यक निर्देशो के कागजात रखे थे । एक-एक कलम-दावात भी । तीनो मे जो मेज सब से बडी थी, उस पर फोन था । अख्तर ने उस का एक्सटेन्शन नम्बर याद रख लिया । रजिस्टर मे किस आफिसर का नाम लिखवाया

था सईदा ने ? हा मिस्टर सेठी। आगे यह जानकारी शायद काम आए। वह उठा और बाहर आया। कमरे का नम्बर दरवाजे की चौखट पर लिखा हुआ था। उसे ध्यान मे रख कर वह अन्दर चला आया।

बाहर से उस ने कुछ महिलाओ की खिलखिलाहट सुनी। खस की टट्टी हटा कर एक युवती ने भीतर झाका। वह झाकते समय भी हस रही थी। अख्तर पर उपेक्षा से निगाह डाल कर उस ने खाली कमरे मे चारो ओर देखा। फिर उस का चेहरा वापस खस के पीछे, बाहर चला गया। पुन सब की खिलखिलाहट सुनाई पडी, जो क्रमश दूर सरकती गई। मिनट-दो-मिनट बाद एक गजा युवक कमरे मे आया। उस ने दो मेजो पर कुछ कागजात को उलटा-पलटा और अख्तर की ओर देखे बिना बाहर निकल गया।

अख्तर अखबार खोल कर ऊब कम करने की कोशिश मे था, लेकिन थोडी ही देर मे उस का मन उचट गया। एकाएक उसे खीझ महसूस हुई। लगा, वह गलत जगह आ गया है। रेडियो-स्टेशन की इतनी बडी इमारत। उस मे उस का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व ही नही। लेकिन अभी सईदा आती होगी। उस ने घडी मे देखा। दस ही मिनट बीते थे। बकाया बीस मिनट बीतेंगे तो काफी दिक्कत से, लेकिन उस के बाद •

उस के बाद क्या ?

आज उस से क्या-क्या कहना है ? कल, परसो या किसी और दिन के बारे मे सईदा के साथ क्या-क्या तय कर लेना है ? सईदा मानेगी ?

जो युवती अभी-अभी झाक कर गई थी, एकाएक वह तूफान की तरह अन्दर आई। उस के पीछे पाच और युवतियो ने प्रवेश किया। वे सभी हमउम्र और खूबसूरत थी। उन मे से दो ने अपने जूडो मे फूल लगा रखे थे। पूरा कमरा सेण्ट और साडियो की सरसराहट से भर उठा। पहली युवती फोन के पास पहुच चुकी थी। रिसीवर उठा कर वह डायल घुमाने ही वाली थी कि एक युवती को जोर से हसी आ गई। इस से

सभी युवतिया हसने लगी। पहली युवती हसी के कारण फोन ही न कर सकी। उस ने रिसीवर रख दिया। "ओफ!" एक ने कहा। दूसरी किसी तरह इतना बोल सकी, "बाबा रे! हद हो गई!" वे जिस तरह आई थी, उसी तरह झटपट बाहर निकल गई। जाने से पहले उन की हसी रुक गई और चेहरो पर नकली गम्भीरता उभर आई।

अख्तर ने अखबार खोला। उस की आखे अक्षरो पर घूम तो रही थी, लेकिन वह पढ कुछ नही रहा था। जब उस ने चेहरे के सामने से अखबार हटाया, बडी मेज के पीछे एक भारी-भरकम आदमी मौजूद था। वह कब आ कर उस कुर्सी मे बैठ गया था, पता न चला था—अख्तर अखबार पढने मे उतना डूबा हुआ नही था तो भी। फाइलो मे कुछ देख-दाख कर वह बाहर जाने लगा। अचानक रुक कर उस ने पूछा, "किसी का इन्तजार कर रहे है शायद ?"

"जी हा।"

वह पलटा और चला गया। अख्तर को अजीब लगा। उस ने यह भी न पूछा था कि इन्तजार किस का किया जा रहा है। अख्तर के होठो पर हल्की मुस्कान उभरी। वह जल्द ही इस लिए डूब गई कि मुस्कान देखने वाला कमरे मे कोई नही था।

सईदा सईदा सफेद साडी मे उस का व्यक्तित्व कितना निखर आया था। उस के होठ कितने अच्छे हे—लिपस्टिक लगे हुए-से, हालाकि उस ने नही लगाई थी। और उसे जरूरत भी नही। बरौनिया उस की कितनी घनी, कैसी कमान की तरह ऊपर मुडी हुई हैं सईदा सईदा ·

"आक्ख्खाडाग्गाघा ·!"

उस के कान के पास एक ऐसी विचित्र आवाज हुई कि वह चौंक कर प्राय. उछल पडा।

"माफ कीजिएगा मैं ने मै ने समझा ·ओह! वाकई बडा धोखा हुआ " एक युवक पानी-पानी होता हुआ उस के सामने हाथ जोड कर

खडा था, "पीछे से आप बिल्कुल मेरे एक दोस्त जैसे मैं ने सोचा कि चलो, इसे शेर की आवाज कर के डराए लेकिन माफ कीजिएगा मैं बहुत शर्मिन्दा हू।"

अख्तर को हसी आ गई।

"मुझे अनवर कहते है।" युवक भी हस पडा और बैठता हुआ बोला, "तरह-तरह की आवाजे निकालने के लिए मशहूर यहा का एक ड्रामा-आर्टिस्ट हू। आप ने अभी शेर की आवाज सुनी। जानते है, तीतर कैसे बोलता है? किडीकोको-कीडीकोको! हा, हा, हा! खैर, आप को चौकाने के लिए मैं फिर से माफी चाहता हू और क्या मै आप का शुभ नाम ?"

"क्यो नही!" अख्तर ने उस से हाथ मिलाया, "मुझे अख्तर कहते हैं। अख्तर हुसैन। 'एयर-इण्डिया' के रिसेप्शन मे हू।"

"वैएरी गुड! शायद आप को यहा किसी का इन्तजार है?"

अख्तर जानता था कि यह जरूर पूछा जाएगा। उस ने कहा, "मिस सईदा अभी स्टूडियो गई हुई है "

"ओह, ग्रेट! शी इज़ ग्रेट! वैसे तो रेडियो वाले सभी एक-से-एक ग्रेट होते हैं—जैसे मैं ही कितना ग्रेट हू आक्ख्खाडाग्गाघा! हा, हा, हा, लेकिन मिस सईदा तो वाकई ग्रेट है। अच्छा, दोस्त, फिर मिलेगे। अभी एक रिहर्सल है। मैं चला।" अनवर लपकता हुआ कमरे से निकल गया।

अख्तर ने कलाई-घडी मे देखा। आधा घण्टा बीत चुका था। सईदा आ रही होगी।

ख

"ओहो! आप हैं। नमस्कार! पधारिए। इधर का रास्ता कैसे भूले?" भार्गव का चेहरा खिल उठा।

हीरेन्द्रजी खादी के धोती-कुरते की वही परिचित जोडी धारण किए हुए थे। लम्बे अरसे मे पडोस मे रहने पर भी आज वह पहली बार यहा आए थे। वीरेन्द्र जरूर कभी-कभी आया करता। अग्रवाल परिवार के दूसरे लोग भी आते-जाते, लेकिन प्राय तब, जब भार्गव की उपस्थिति न होती। लक्ष्मी हीरेन्द्रजी को नमस्ते कर पाती, इस से पहले उन्होने ही कह दिया, "भाभीजी, नमस्कार।"

लक्ष्मी ने हाथ जोड दिए।

भार्गव ने सोफे की ओर इशारा किया, "विराजिए। लक्ष्मी अग्रवाल जी के लिए बढिया चाय बनाओ।"

लक्ष्मी चली गई।

हीरेन्द्रजी के पास ही सोफे पर बैठ कर उन्होने ऊपरी गम्भीरता से कहा, "पडोस मे यदि कोई ढग का परिवार है तो एक आप का। आज-कल तो भाई साहब, क्या जमाना आया है। सयम नाम की कोई चीज नही रही। उस दिन वीरेन्द्र वाली बात सुन कर मैं आप से इतना प्रभावित हुआ कि क्या कहू।"

हीरेन्द्रजी भार्गव की ओर देखने लगे। उन्हे शक हुआ था कि वह मखौल कर रहे है। रसोई मे हीटर पर चाय का पानी रख रही लक्ष्मी ने जब सुना कि पति महोदय ने शुरूआत ही वीरेन्द्र के मसले से की है तो वह चौकी। रसोई के दरवाजे पर झूलते परदे को हटा कर झाकते हुए उस ने पुकारा, "सुनिए।"

"आया।" भार्गव उठे। वह रसोई मे पहुचे ही थे कि लक्ष्मी बरस पडी, "आप भी कैसे आदमी है। एकदम से वही बात। पहले इतना तो पूछते कि आए क्यो है जरूर कोई खास वजह होनी चाहिए। पहली बार आए हैं।"

"भई देखो, हम ठहरे आनन्दी प्राणी। जहा से और जैसे भी आनन्द मिलता हो, हम लेते जरूर है। फिर भी आप ने फरमाया है तो हम पूरा

ध्यान रखेगे और हीरेन्द्रजी को जरा भी नाराज नही होने देगे। बस ?"

भार्गव ने वादा करते हुए कहा, "और आप भी जरा जोरदार ही चाय बनाइए।"

"दो केक-पीस भी है। रखू या नमकीन बिस्कुट ?"

"नही, जी, नही। सिर्फ चाय !" भार्गव परदा हटा कर बैठक मे आए और बोले, "तो अग्रवालजी, पहले यही बताइए कि आप ने अपने चरण-कमलो द्वारा हमारी इस कुटिया को पावन कैसे "

"मुझे इतना महत्व न दीजिए, भार्गव साहब ! मै तो एक अत्यन्त सामान्य व्यक्ति हू।"

'भारतीय परम्परा के अनुसार व्यक्ति अपनी प्रशसा स्वय नही करता !"

"कोई विशेष उद्देश्य तो नही, यू ही जरा " भार्गव की ओर कुछ ताक कर, फिर सामने के कैलेण्डर पर निगाह ले जा कर हीरेन्द्रजी बोले, " सोचा, आप लोग पत्रकार-जगत् के नक्षत्र है। सारी दुनिया के समाचार जनता से पहले आप लोगो तक पहुचते है। कई समाचार ऐसे भी होते है जो मात्र आप ही जानते है "

भार्गव चुप रह कर भापने की चेष्टा करते रहे कि इस भूमिका के बाद क्या कहा जाएगा।

"आज मन बडा उद्विग्न था।" हीरेन्द्रजी ने आगे चलाया, "अब देखिए न, यह भी कोई जमाना है कि बकरी मिमियाए और शेर डर कर भागे ?"

"जी ?"

"आखिर पाकिस्तान की हमारे सामने हस्ती क्या है ? भारत इतना बडा देश हो कर भी उस की ज्यादतिया क्यो सहता है ? इतिहास उठा कर देख लीजिए। शायद ही कोई दिन ऐसा रहा हो, जब पाकिस्तान ने हमारी सीमाओ से छेडछाड न की हो। सौ सुनार की और एक लुहार

की। हमे पाकिस्तान पर अचानक ऐसा हमला करना चाहिए कि छठी का दूध याद आ जाए।"

भार्गव ने कुछ न् कहा। तपाक से कुछ कहा जाएगा—समर्थन मे या विरोध मे—ऐसी आशा के साथ आए हीरेन्द्रजी इस मौन से कुछ झेप गए। भार्गव ने बात को दूसरा रुख देना चाहा "गर्मी ने तो हद कर दी! सुबह नौ बजे नही कि जान सूखने लगती है।"

"हा " हीरेन्द्रजी को भी उस झेप से छुटकारा मिला, "मई-जून तो सब से भयकर होते है दिल्ली के। न जाने कितने लोग 'सूर्य-दश' से मरते होगे।"

" 'सन-स्ट्रोक' का आप ने यह हिन्दीकरण अच्छा किया।"

"जी वह तो आप की दया से " हीरेन्द्रजी फिर कुछ झेप गए। प्राय चालीस वर्ष का उन का चेहरा पाच साल छोटा हो गया। अपनी प्रशसा को एकाएक पचा लेते हुए उन्होने सिर उठाया और कहा, "सम्भ्रात भारतीयो की बोलचाल मे कितनी अग्रेजी है, जरा सोचिए। 'जीवन' को हम 'लाइफ' कहते हैं और पत्नी को 'वाइफ'। 'मा' को 'मदर', पिता को 'फादर', बहन को 'सिस्टर' अखिर इतना अग्रेजीदा होने की क्या जरूरत है?"

भार्गव मुस्कराए, "आप का पहला वाक्य बडा जोरदार रहा—'जीवन' को 'लाइफ' और 'पत्नी' को 'वाइफ'! इतना पोएटिक माफ कीजिएगा, इतना काव्यात्मक लगा कि मजा आ गया।"

"कालेज के दिनो मे मुझे साहित्य का अच्छा-खासा शौक था। अब तो वन्धो मे ऐसे पडे है कि साहित्य का रसास्वादन किए महीनो-के-महीनो गुजर जाए और याद भी न आए "

लक्ष्मी ने चाय रखी।

"लीजिए," भार्गव ने प्याला उन की ओर खिसकाया।

हीरेन्द्रजी चम्मच हिलाते हुए बोले, "ऐसे कई शब्द है जो अग्रेजी से

ज्यो-के-त्यो लिए जा सकते है। जैसे स्टेशन, कुली, सिगनल, रेल वगैरह। लेकिन क्या यह शर्म की बात नही है कि हम पिता को पिता कहने मे अपने को असभ्य महसूस करे और 'फादर' कहने मे नही ?"

"आप बजा फरमाते है, लेकिन इस का तो एक ही इलाज है, जो गाधीजी ने सजेस्ट किया था—मेरा मतलब है, सुझाया था।"

"क्या ?"

"हिन्दी या अपनी मातृ-भाषा का ज्ञान होने पर भी यदि कोई अनावश्यक रूप से अग्रेजी का प्रयोग करे तो उसे बाकायदा दण्ड दिया जाए।"

"हा, कई बाते सचमुच डण्डे के जोर पर ही मनवाई जा सकती हैं। इसी लिए तो कहता हूँ कि सौ सुनार की और एक लुहार की। पाकिस्तान को कभी ऐसा सबक देना चाहिए कि फिर छेडखानी की हिम्मत ही न करे।"

हीरेन्द्रजी जानबूझ कर नही, बल्कि सहज ही अपनी पुरानी बात पर लौट आए हैं, भार्गव को ऐसा लगा। उन्हे आज 'प्रभात' के आफिस पहुचने की जल्दी नही थी। दोपहर के बाद कभी भी जा सकते थे। हा, लच से पहले रेडियो-स्टेशन मे सईदा से अवश्य मिल लेना था—रेडियो से सम्बन्धित उस कालम की पाण्डुलिपि लेने के लिए। हीरेन्द्रजी मे उन्होने एक अदम्य अकुलाहट पहचानी। पहली बार कोई घर आए, बातचीत करने के लिए आए, बातचीत के लिए समय भी हो—इस के बावजूद उसे टाल देने मे उन्हे ज्यादा ही क्रूरता नजर आई। इस के अलावा, 'लाइफ-वाइफ-प्रकरण' ने भी उन्हे कुछ आश्वस्त कर दिया था कि वार्त्तालाप उतना कष्टदायक नही रहेगा, जितना कि वह समझे हुए थे। हीरेन्द्रजी ने अपने आने का उद्देश्य अभी तक नही बताया था, लेकिन जिस तरह अचानक उन्होने पाकिस्तान की बात छेडी थी, उस से स्पष्ट था कि वह जम कर मात्र चर्चा करना चाहते है।

"याने आप पाकिस्तान को छोटा देश समझते है ?"

"मेरे समझने-न-समझने से क्या होता है ? है ही छोटा।" हीरेन्द्रजी बोले।

"छोटे देश से आप का क्या आशय है ? आकार और आबादी मे छोटे देश भी पूरी दुनिया पर रौब रख सकते है। जापान इस का बहुत अच्छा उदाहरण है। इगलैण्ड भी भारत की तुलना मे बहुत छोटा है, लेकिन "

"पाकिस्तान सैनिक दृष्टि से भी छोटा है।' हीरेन्द्रजी उत्साहित हो गए, क्योकि चर्चा चल पडी थी।

भार्गव ने कहा, "पाकिस्तान की फौज देखने मे छोटी भले ही लगे, लेकिन उस के पास जो अमरीकी हथियार है, वे आधुनिकतम है। पेशावर और सरगोधा के हवाई अड्डे लाजवाब ही कहे जाएगे। इस के अलावा, पाकिस्तान यदि हारने लगे तो अमेरिका उसे खुली व छिपी, दोनो तरह की मदद देगा। हमे नही भूलना चाहिए कि पाकिस्तान कई युद्ध-सन्धियो का सदस्य है।"

"तो हम भी सन्धियो के सदस्य बन सकते है। अमेरिका के विरोधी गुट याने रूस के साथ जा सकते है।" हीरेन्द्रजी बोले, "शान्तिप्रिय होने का यह अर्थ तो नही कि जगह-जगह हमे नीचा देखना पडे ? अब इस कच्छ वाले मामले को लीजिए। मुझे लगता है, शास्त्रीजी इगलैण्ड का प्रस्ताव मान कर युद्ध-विराम स्वीकार कर लेगे। इस का तो अर्थ यह हुआ कि जो चाहे आए, डराए-धमकाए और हमारे किसी इलाके पर अधिकार कर के बैठ जाए। शास्त्रीजी मुझे जरूरत-से-ज्यादा समझौतावादी लगते है।"

"जब तक युद्ध-विराम सन्धि पर हस्ताक्षर नही हो जाते, हमे टीका-टिप्पणी नही करनी चाहिए। यहा, इस सोफे पर बैठ कर किसी भी विषय की चर्चा करना बहुत आसान है, लेकिन जिन्हे सचमुच राजनीतिक

निर्णय लेने पडते हैं, उन के सामने अनेक समस्याए होती है। हम आज, कल या परसो को निगाह मे रख कर सोचते है, जबकि राजनीतिक नेताओ को अनेक पीढियो का भविष्य ध्यान मे रखना होता है।" भार्गव ने कहा।

"कुछ भी कहिए, साहब, लेकिन सत्य यह है कि हमारे नेता देश के सम्मान का ख्याल उतना नही करते, जितना कि करना चाहिए।" हीरेन्द्रजी ने सिर हिलाया, "भला यह भी कोई तर्क है कि बडे आराम से कह दिया, 'कच्छ मे हमारी सडके नही हैं। पाकिस्तान ने अपनी तरफ सडके बना ली है। इसी लिए हमारी सेना के पाव ठीक से जम नही पाए।' अरे भाई, पाकिस्तान जब सडके बना रहा था तो आप क्या सो रहे थे? आप भी सडके बनाते। मना किस ने किया था?"

भार्गव साहब तल्ख हो उठे, "बडे-से-बडा राष्ट्र गलतिया कर सकता है। चतुर-से-चतुर राष्ट्र भी कई मसलो पर ध्यान नही दे पाता। इस का अर्थ यह नही कि हमारे नेता राष्ट्र के सम्मान के प्रति लापरवाह है। होना यह चाहिए कि गलतियो की सिर्फ आलोचना करने की बजाय उन से कुछ सीखा जाए।"

"कुछ भी कहिए, साहब, लेकिन अगर कच्छ-समझौते मे राष्ट्रीय सम्मान का ध्यान न रखा गया तो "

"मै आप के इस 'कुछ भी कहिए, साहब' वाले तकियाकलाम से बहुत डरता हू।" भार्गव ने कह दिया, "इस के सामने दुनिया की कोई दलील काम नही कर सकती।"

हीरेन्द्रजी चाय की चुस्की लेते हुए मुस्कराने लगे।

"आप भी कैसे है!" लक्ष्मी आई और बोली, "पहली बार घर आने वालो से भी झगडा! आप को बात करते तो मै ने शायद ही कभी देखा हो। हमेशा या तो दलीले देगे या झगडेगे।"

"हम क्या करे! जैसी तुम्हारी तकदीर!" भार्गव हसने लगे।

हीरेन्द्रजी काफी जोर से हसे, "अरे, भाभीजी, इसी चखचख के लिए तो इन के पास आया हू, वरना इस मुहल्ले मे है ही कौन बाते करने लायक ?"

भार्गव सुन कर मूँड मे आ गए और बोले, "इतना बडा देश होने के बावजूद भारत एक सफल लोकतन्त्र है। भारत के जितनी तेजी से तरक्की करने वाले देश बहुत कम होगे। पाकिस्तान मे है तानाशाही। यही हाल चीन का है। ये दोनो हमारे लोकतन्त्र को फूटी आखो नही देख सकते—और यह स्वाभाविक भी है। किसी-न-किसी बहाने ये हमारी सीमाओ मे घुसपैठ करते ही रहेगे। हमे लगातार चौकस रहना है।"

दोनो मे जो दलीले हो रही थी, उस की गर्मी समाप्त हो गई, क्योकि अब वे जिरह नही, केवल बाते कर रहे थे। भार्गव ने कहा, "पाकिस्तान से हमारा सघर्ष विचारधाराओ का सघर्ष है। है और तब तक रहेगा, जब तक पाकिस्तान पडोसी के नाते हमारी इज्जत करना नही सीख लेता। रही आक्रामक कार्रवाइयो की बात। उस के लिए बहानो की कमी नही। कच्छ के रण की सीमा विवादास्पद है ही नही। कच्छ और सिन्ध की स्थायी थल-सीमा है, जबकि पाकिस्तान वहा जल-सीमा के अन्तर्राष्ट्रीय कानून लागू करने की बात करता है। कहता है कि कच्छ के रण को या तो जमीन से घिरा हुआ समुद्र मानिए या सीमावर्ती झील —और इसी लिए सिन्ध और कच्छ की सीमा रण के बीच मे से गुजरनी चाहिए।"

"सरासर शैतानी है !" हीरेन्द्रजी ने कुछ जोश मे आ कर कहा, "मुझ से पूछिए। 'रण' शब्द सस्कृत के 'इरण' से बना है, जिस का अर्थ है रेगिस्तान। कच्छ को झील या समुद्र मानने का सवाल ही नही उठता। १६०६ मे ब्रिटिश सरकार ने जो नक्शे तैयार करवाए थे, उन मे भी कच्छ एक दलदल है, न कि झील या समुद्र।"

भार्गव को एकाएक लगा कि उन मे राजनीतिक स्थितियो की नही,

मौसम की बातचीत हो रही है । दो व्यक्ति परस्पर मिलने पर अच्छे या बुरे मौसम की चर्चा कुछ इस तरह करते है, गोया उन मे से किसी एक को ही मालूम हो कि मौसम अच्छा है या बुरा । कृच्छ से सम्बन्धित जो तथ्य उन दोनो को ज्ञात थे, उन्ही को वे भार्गव को सारी बातचीत का स्तर बहुत निम्न लगा । उन्होने चाहा कि हीरेन्द्रजी अब चले जाए । एकाएक इतनी अरुचि शायद इस लिए भी पैदा हुई कि उन्हे बार-बार हीरेन्द्रजी का तकियाकलाम खटक रहा था कुछ भी कहिए, साहब !
और वीरेन्द्र

"माफ कीजिएगा, अग्रवालजी !" वह बोले, "हम कभी बाद मे मिले तो कैसा रहे ? अभी मुझे कही जाने की तैयारी करनी है ।"

"ओह, क्यो नही, जरूर !" हीरेन्द्रजी उठ खडे हुए, "बल्कि इसी का बहुत-बहुत धन्यवाद कि आप ने मुझे इतना समय दिया ।"

ग

सईदा के मन मे जो कोफ्त घिरी हुई थी, वह ट्रासमीशन के दौरान स्टूडियो के वातानुकूलित, एकाकी, शान्त व शीतल वातावरण मे समाप्त हो गई । स्टूडियो से निकल कर वह अपने कमरे की ओर बढी ।

धूप और लू से बचने के लिए नीला-कपडा-लगी-हुई चिके बरामदे मे झुला दी गई थी । कही-कही खस की टट्टिया भी थी । कमरो के दरवाजो पर जो खस लगी थी, उस मे छिडके गए पानी ने बह कर फर्श पर धारिया बना दी थी । पिजडे जैसे ढाचे मे लगाई गई वह खस उसे दूर से नजर आई, जो उस के अपने कमरे को गर्मी से बचाए हुए थी । यह कितना आसान था कि सईदा खस का दरवाजा सरका कर भीतर चली जाए और कुर्सी मे बैठा अख्तर मुस्करा कर कहे, "आ गई आप ?" और यह भी कितना आसान था कि इसी खस को सरकाए बिना, बिना अपने

कमरे मे झाके, सईदा बरामदे मे आगे चलती जाए। अख्तर को पता ही न चलेगा कि सईदा

खस का पिंजडा पास आ रहा था

वह बरामदे मे झटपट बाए घूम कर केण्टीन की ओर बढ गई। उसे बरामदे की छाया मे से धूप मे निकल आना पडा, जो बहुत खला। धूप-भरा फासला काटे बिना केण्टीन तक जाने का कोई रास्ता नही था। दाहिनी ओर साइकिल-स्टैण्ड। बाई ओर नाटे कद की वह इमारत, जिस के कोठरीनुमा कमरो मे देहाती यूनिट और एकाउण्ट्स सेक्शन आदि के कार्यालय थे। कमरो की कमी के कारण ड्रामा-सेक्शन फिलहाल तम्बुओ मे सरका दिया गया था। वे तम्बू नाटी इमारत के पिछवाडे होने के कारण नजर नही आ रहे थे।

केण्टीन मे सईदा कोने की एक खाली मेज की ओर बढी। उस के ऊपर पखा घूम रहा था। पखे वाली मेज पाने के लिए उस ने अपने को भाग्यशालिनी समझा, लेकिन अगले ही क्षण उसे केण्टीन असुरक्षित जगह महसूस हुई। मान लो, अख्तर वहा बैठा-बैठा ऊब जाए और काफी या चाय पीने के इरादे से यहा आ पहुचे। केण्टीन उस ने देखा तो नही है, लेकिन पूछताछ करता हुआ वह सचमुच यहा आ सकता है। सईदा को अकेली देख कर वह क्या कहेगा? कुछ भी कहे, बला से! सईदा कोई बादी थोडे ही है, जो उस की इतनी परवाह बैठी है यहा— और इस लिए बैठी है कि बैठने का मन है। आप को, जनाब, मतलब?

"हा जी?" बैरा आ कर पूछ रहा था।

वह सम्भलती हुई जरा अकड कर बैठ गई और बोली, "कोकाकोला है?"

"जी नही, आज सप्लाई बहुत कम सिरफ 'काकटेल' है।"

"ले आओ वही, और क्या!" सईदा मुह बिगाड कर बोली। 'काकटेल'—इस कैफे का विशेष कोल्ड-ड्रिंक। नाम भले ही 'काकटेल'

हो, लेकिन अधिकाश लोगो को वह बिल्कुल पसन्द नही था। वह पेय न लग कर पिपरमेण्ट का ठण्डा घोल मालूम पडता। उस मे से जो सुगन्ध उठती, वह जरूरत-से-ज्यादा तीखी लगती। बैरा 'काकटेल' का गिलास रख गया। स्वाद की ओर से बेखबर सईदा स्ट्रा से उस के कतरे खीचती रही।

उस ने फिर से अपने को असुरक्षित महसूस किया। ज्यो ही किसी के आने की आहट होती, उसे यही लगता कि अख्तर

"सईदा!"

वह चौक गई।

"यहा हो?"

भार्गव साहब अपना कैमरा लटकाए खडे थे।

उन्हे पा कर इतनी बडी राहत सईदा ने शायद ही पहले कभी अनुभव की हो। वह बोली कुछ नही। मुस्कराई और एक कुर्सी की ओर इशारा कर दिया।

"अकेली कैसे?" भार्गव बैठते हुए पूछने लगे। वह सईदा की आदत जानते थे कि उसे अकेले चाय-काफी पीना पसन्द नही है। प्राय. वह किसी-न-किसी को अपने साथ ले आती है। बल्कि अकसर यही होता है कि उसे चाय पिलाने के लिए आतुर लोगो की कतार-सी लगी होती है।

"आज मैं बहुत यू कहिए, परेशान हू। अभी-अभी ट्रासमीशन कर के लौटी हू। गनीमत समझिए कि माइक पर कोई गलती न हुई, वरना सुनने वालो से माफी मागनी पडती।"

"स्क्वाड्रन-लीडर ने ऐसी कौन-सी बात लिख दी?"

"ओह, नही! उन का गोआ से खत आया था। लिखा है कि छुट्टिया मजे मे कट रही हैं। एक कार्ड पर उन्होने बस, चन्द लाइने लिखी थी। इसी से जाहिर है कि वह कितनी मौज कर रहे हैं।" सईदा ने

बताया, लेकिन उस ने डूबन महसूस की वह जानती थी कि चन्द लाइनें लिखने का मतलब 'मौज कर रहे हे' नही होता। डूबन का अहसास झुठलाना चाहती हो, कुछ इस तरह वह हसने लगी। भार्गव आश्चर्य से बोले, "अचानक क्या याद आ गया ?"

"आप ने मुझे खोजने की कोशिश कमरे मे की होगी ?"

"हा, तो ?"

"क्या वहा कोई ऐसा युवक बैठा था, जिसे आप पहचानते न हो ?"

"होगा, मै ने ध्यान नही दिया। तुम वहा नही थी तो सोचा कि केण्टीन मैं देख लू।"

"वहा एक युवक बैठा हुआ हे। वैसे, एक बार आप उसे 'एयर-इण्डिया' मे देख चुके है, लेकिन भूल गए होगे।"

भार्गव कुछ न समझ पाए, इस लिए केवल उत्सुकता से देखते रहे।

वह बोली, "जानते है, वह क्यो आया है ? उस का नाम है अख्तर हुसैन।"

"अख्तर " भार्गव ने यो दोहराया, मानो यह नाम महत्वपूर्ण होने के बावजूद आगे कभी न बताया जाएगा।

"उस दिन मै ने आप को 'एयर-इण्डिया' से सपादकजी के यहा फोन किया था—याद है ?"

"हा।"

"फोन पर मै ने अपना नाम भी बताया था। जनाब अख्तर हुसैन 'एयर-इण्डिया' के रिसेप्शन मे काम करते है। उन्होने नाम सुन कर जान लिया कि मै मोहमेडन हू।"

"समझा—याने इसी आधार पर वह· "

"उस दिन आप 'एयर-इण्डिया' पहुचे, उस से पहले जनाब ने मेरे पास आ कर अपना नाम बताया, फिर कहा कि वह दिल्ली मे अकेले हैं, जिस से बहुत मायूस रहते है। जानते है, आज क्या हुआ ? मैं गेट मे दाखिल

भी न हो पाई थी कि हुजूर रास्ता रोक कर खडे हो गए और लगे बाते करने ।"

"जबरन ?"

"जबरन ही तो ! मै बडी तल्खी से पेश आई, लेकिन चिकने घडे पर कोई असर ही न हुआ ।"

"हु "

"सा'ब, क्या लाऊ ?" बैरे ने झुकते हुए पूछा ।

"अ हॉट काफी ।" भार्गव बोले, फिर सईदा से मुखातिब हो गए।

"जनाब मुझ से बात करने की ऐसी जिद पर उतारू थे कि गेट पर खासा तमाशा हो जाता । लिहाजा मै उन्हे अपने साथ अन्दर ले आई । कमरे मे बिठाया और चली गई ट्रासमीशन के लिए । आधे घण्टे के बाद अब यहा आ बैठी हू । जनाब उधर इन्तजार मे बोर हो रहे होगे !"

भार्गव बनावटी गम्भीरता से बोले, "एक जोरदार आइडिया है ।"

"क्या ?"

"मानो तो कहू ।"

"पहले कहिए तो सही ।"

"अख्तर को फोन करो कि मै केण्टीन मे आप का इन्तजार कर रही हू ।"

"फिर ?"

"फिर क्या ! उसे थोडा और बोर कर के आनन्द लूटेगे ।"

सईदा को यह बात अद्‌भुत क्यो लगी, ठीक-ठीक वह न जान सकी, लेकिन प्रस्ताव उस ने तुरन्त मान लिया ।

"फोन आप करिए ।" वह बोली ।

"मैं क्यो ?"

सईदा चुप रही ।

"भई, यह काम तुम्हारा है । तुम्हारी आवाज होगी, तभी वह दौडा-

दौड़ा आएगा।"

"अच्छा।" सईदा उठी और काउण्टर के पास पहुची। बैरा काफी रख कर जा चुका था। भार्गव सईदा की पीठ की ओर देखते हुए चीनी मिलाते रहे।

कभी रेडियो-स्टेशन के सारे फोन-कनेक्शन एक्स्चेंज से मागने पडते थे, लेकिन अब डायल वाले नए फोन लग गए है। सईदा ने नम्बर घुमाया।

दूसरे छोर पर ट्रिन-ट्रिन होती रही। काफी देर तक किसी ने रिसीवर न उठाया। क्या अर्थ है इस का? क्या अख्तर कमरे से बाहर बरामदे मे जा खडा हुआ है? या, है तो वह कमरे मे ही, लेकिन इस लिए नही उठा रहा है कि उस ने सोचा हो, फोन की रिग अपने-आप बन्द हो जाएगी? उस का अन्दाजा यही रहा होगा न कि किसी 'आफिसियल' काम से रिग आई होगी। वह फोन उठा लेता तो भी कोई 'आफिसियल' सूचना नही दे सकता था। हद-से-हद यही बता सकता था कि अभी कमरे मे कोई नही है। ऐसी स्थिति मे फोन उठाने की एकाएक तबीयत नही होती। खास कर उसे, जो रेडियो-स्टेशन से सम्बन्धित न हो। सईदा ने अपने होठो को परस्पर जरा दबते अनुभव किया।

घ

रिहर्सल कैंसल हो जाने के कारण अनवर कमरे मे वापस आ गया था और अख्तर के सामने बैठ कर सिगरेट-पर-सिगरेटें फूकता हुआ विभिन्न क्षेत्रो के अपने अनुभव सुना रहा था। अख्तर कतई सुनने के मूड में नही था। बार-बार वह अपनी घडी देख रहा था, लेकिन इस की साकेतिकता अनवर या तो समझ नही रहा था या समझ कर भी उपेक्षा कर रहा था।

अब तक वह भारी आवाज मे बोल रहा था। सहसा उस ने आवाज बहुत बारीक कर ली। अख्तर की ओर जरा झुकते हुए कहा, "जानते

है ? अमेरिका और इगलैण्ड मे जल्द ही झगडा होने वाला है ।"

"क्यो ?"

"दोनो मे तय नही हो रहा है कि पाकिस्तान का असली अब्बाजान कौन है ।" अनवर ने आवाज को उसी तरह बारीक रख कर, लेकिन लहजे को कुछ चबा कर कहा, "इसी लिए पाकिस्तान को जीतने के लिए दोनो एक ही फारमूला बनाए हुए है—'मर-मर कर प्यार किए जा ।' "

आखिरी वाक्य उस ने किसी गाने की तरह गुनगुनाते हुए कहा । जरा रुक कर आवाज को बहुत मोटी बनाता हुआ वह बोला, "देखे, पाकिस्तान किस की 'अब्बाजानियत' मजूर करता है और किस की नामजूर ।"

अख्तर खामोशी से नीचे देखता रहा ।

अनवर ने जारी रखा, "हिन्दू जहा भी होता है, हिन्दू होता है । पहले मुसलमान भी जहा होता था, मुसलमान ही होता था, लेकिन जब से पाकिस्तान बना है, मुसलमान दो हिस्सो मे बट गए है । एक तो मुसलमान है लेकिन दूसरे सिर्फ पाकिस्तानी हैं । मुसलमान दुनिया के किसी भी देश मे हो सकते है, लेकिन पाकिस्तानी अकेले पाकिस्तान मे पैदा होते है । पैदा होते नही— किए जाते है । फिर उन्हे आप ग्रीनलैण्ड भेज दीजिए, चाहे आइसलैण्ड, पाकिस्तानी पाकिस्तानी ही रहेगे ।"

अख्तर की निगाह अखबार के आयताकार पृष्ठ पर घूम रही थी । वह कुछ न बोला । अनवर उस की व्यस्त आखो मे पल-दो-पल देखता रहा । उस ने हाथ बढा कर अख्तर का कन्धा पकड लिया और हिलाते हुए कहा, "जनाब, सुन रहे हैं ?"

अख्तर चौक गया । अनवर उसे छू लेगा, ऐसा उस ने नही सोचा था । "जी ?"

"मैं ने कहा, जनाब, सुन रहे है या नही ?"

अख्तर कुछ कह पाता, इस से पहले ही फोन की घण्टी [illegible]

अनवर ने रिसीवर की तरफ देखा और कहा, "आइए, आइए, घण्टी जी, आप ही का इन्तजार था।" घण्टी काफी देर तक बज चुकी, तभी उस ने रिसीवर उठाया, "हैलो !"

"कौन साहब बोल रहे है ?"

"अगर मै आप का नाम बता दू तो आप मेरा नाम बता सकेंगी ?" अनवर के सम्पूर्ण चेहरे पर मुस्कान आ गई।

"जी ?"

"आप का नाम है—स-ई-दा-जी ! अक्खखाडाग्गाघा !"

"ओह, अनवर साहब ? आदाब-अर्ज है।"

"आदाब ! आआदाआब !"

"देखिए—मै केण्टीन से बोल रही हू।"

"मै आऊ क्या ?"

"नही-नही मेरा मतलब है, आना चाहे तो आप भी आइए, लेकिन वहा कमरे मे कोई साहब बैठे होगे—उन का नाम है "

"मै समझ गया। अभी मै उन्ही से बाते कर रहा था। उ ाम है साहब-ए-दिल अख्तर हुसैन ! वह मुझे बता चुके उन्हे किस का इन्तजार है। आप बशौक उन से बातें करिए— न, हैलो ! एक मिनट पहले यह तो बताइए कि मै आऊ या नहीं ?"

"देखिए, बात यह है कि "

"चलिए, जाने दीजिए—फिर कभी सही ·"

"नही-नही, आप आना चाहे तो "

"हा, तो अब आप साहब-ए-दिल से बातें करिए··" उस ने रिसीवर अख्तर की ओर बढा दिया।

"हैलो !"

'कौन ? अख्तर साहब ?"

"जी हा।"

"मैं, सईदा माफ कीजिएगा। हुआ यह कि स्टूडियो से निकलते ही एक सज्जन मिल गए और जबरन मुझे केण्टीन तक खीच लाए। सोचा था कि जल्दी ही छुट्टी मिल जाएगी, लेकिन वह डटे हुए है। आप वहा बोर तो नही हो रहे ?"

"कैसे कहू कि हो रहा हू।" अख्तर हसा।

"आय'म सॉरी ! ऐसा करिए न, किसी से भी पूछ लीजिए कि केण्टीन कहा है। आप इधर ही आ जाइए।"

"ठीक है, शुक्रिया, मै आ रहा हू।"

उधर से फोन रख दिए जाने की खडखडाहट हुई। अख्तर ने भी रख दिया और अनवर की ओर देखा। "याने आप केण्टीन जा रहे है ?" निगाह मिलते ही अनवर ने पूछा।

"जी हा।" अख्तर ने इस तरह कन्धे उछाले, मानो कोई चुनौती जीत गया हो।

"ठीक है, आप चलिए। मै भी चलता हू। याने केण्टीन नही, कही और। आइए, कमरे से बाहर तो साथ-साथ निकल ही सकते है।"

खस के दरवाजे को धकेल कर दोनो बरामदे मे आए। हवा काफी गर्म थी। लू रोकने के लिए झुलाई गई चिकें बार-बार अन्दर फूल आती। बरामदे मे कोई आ-जा नही रहा था। अख्तर ने अनवर से ही पूछ लिया, 'केण्टीन किधर होगा ?"

"आइए, मुझे विविध-भारती मे एक से मिलना है। रास्ते मे पडेगा।"

दोनो दाहिनी ओर घूमे और बढने लगे।

"ओके, डियर, बाय-बाय !" अनवर ने कहा, हाथ हिलाया और केण्टीन की ओर इशारा कर के चला गया।

अख्तर केण्टीन मे दाखिल हुआ। अन्दर अजीब फुसफुसाहट भरी हुई थी। फुसफुसाहट और चाय-काफी की मिलीजुली सुगन्ध। उस ने चारो

ओर शीघ्रता से देखा, लेकिन कही सईदा का चेहरा नजर न आया। शायद वह दरवाजे की ओर पीठ कर के बैठी थी और अख्तर उसे इतना नही पहचानता था कि पीठ देख कर ही जान ले। कुछ चकित-सा होता हुआ वह आगे आया, फिर पीछे घूम कर देखने लगा। अब कई चेहरे देखे जा सके। वह रही। वह मुस्करा उठा और सईदा की ओर बढा। सईदा न मुस्कराई। वह पास आ गया, तब भी नही। औपचारिकता से बोली, "बैठिए।"

अपनी हिचकिचाहट छिपाता हुआ वह भार्गव के पास वाली कुर्सी मे बैठ गया। इसी कुर्सी की ओर सईदा ने इशारा किया था।

"आप का परिचय कराऊं।" सईदा ने अख्तर की ओर देखा, फिर भार्गव की ओर, "आप जनाब अख्तर हुसैन है, 'एयर-इण्डिया' के रिसेप्शन मे काम करते है। और आप है मिस्टर के० के० भार्गव, 'प्रभात' के प्रेस-फोटोग्राफर और रिपोर्टर।"

भार्गव और अख्तर ने हाथ मिलाए। भार्गव ने अख्तर का हाथ ज्यादा ही दबा दिया। बुदबुदाए, "बडी खुशी हुई आप से मिल कर "

"मुझे भी " अख्तर बोला। उसे याद आ गया कि 'एयर-इण्डिया' मे यही व्यक्ति सईदा के साथ नजर आया था। यह 'याद आ जाना' अख्तर ने जाहिर न किया। वह सईदा से मुखातिब होना चाहता था, लेकिन इस से पहले ही भार्गव ने अपना खाली कप एक ओर सरकाते हुए सईदा से कहा, 'हा, तो बातचीत इस मसले पर चल रही थी कि आदमी कितना उलझा हुआ जानवर है। जानवर इस लिए कि प्रकृति की निगाह मे सब जानवर ही है। आदमी ने कम्प्यूटर बना लिए, सुपर-सोनिक जेट और उपग्रह तैयार कर लिए, गाइडेड मिसाइल्स और हाइड्रोजन बम का निर्माण भी कर डाला, लेकिन· ·"

सईदा को अचरज हुआ। ऐसी किसी भी बातचीत का सिलसिला नही चल रहा था। अख्तर के आने से पहले भार्गव साहब ने दो-तीन

चुटकुले सुनाए थे, फिर यह बताया था कि आज सुबह उन के पडोसी महोदय ने कैसा बोर किया।

'लेकिन' कह कर भार्गव अख्तर की आखो मे ताकने लगे। क्षण-दो-क्षण बाद उन्होने तपाक से पूछा, "आप क्या सोचते है ? आदमी उलझा हुआ जानवर है या नही ?"

"जी हा, है तो सही।" अख्तर ने कहा। मुस्कराया भी। उस ने सईदा की ओर देखा, लेकिन वह 'काकटेल' के खाली गिलास पर निगाह टिकाए हुए थी।

"आप सिर्फ 'जी हा, है तो सही' कह कर छुटकारा नही पा सकते। बताइए कि अगर आप भी आदमी को उलझा हुआ जानवर समझते है तो क्यो ?" भार्गव ने अपनी कुर्सी पीछे ठेल कर दोनो हाथ छाती पर मोड लिए।

अख्तर कुछ न कह सका।

"बताइए ! बताइए ! आप जो भी सोचते हो, बताइए।"

अख्तर ने सईदा की ओर कुछ निरीह होते हुए देखा, लेकिन सईदा की निगाह गिलास पर ही थी। "ऐसा है, भार्गव साहब " अख्तर ने कहा, "आप है प्रेस-रिपोर्टर। आप लफ्जो के साथ खेलते है, किसी भी बात पर लगातार बोल सकते है। मैं ठहरा एक सीधासादा इन्सान। जिन बातो को वाकई महसूस करता हू, उन्हे भी शायद तरकीब के साथ पेश न कर पाऊ।"

"चलिए, बेतरतीबी से ही पेश करिए।" भार्गव गम्भीर थे।

सईदा की हसी बडी मुश्किल से रुक रही थी।

"असल मे भार्गव साहब, बात यह है मैं ने सोचा ही नही था कि यहा आप से मुलाकात हो जाएगी और मुझे ऐसी कसौटी पर कसा जाएगा।"

"अच्छा, तो सुनिए, मैं आप को एक बहुत मोटी मिसाल दे कर

समझाता हू ।" भार्गव आगे झुके और बोले, "इन दिनो कच्छ के मामले को ले कर सब की जबान पर पाकिस्तान और ब्रिटेन के नाम चढे हुए है । ब्रिटेन दूर है, इस लिए पाकिस्तान से पकड कर लाने मे आसानी होगी ।"

यहा भार्गव रुक गए और अख्तर की तरफ सीधी निगाह से देखने लगे । ऐसा लगा, मानो उन के आखिरी वाक्य मे से कुछ शब्द जान-बूझ कर गायब कर दिए गए है, जिस से सईदा ने भी कौतूहल से उन की ओर देखा । वह अपनी जेबो मे सिगरेट टटोल रहे थे, यह सईदा उन की मुद्रा से समझ गई । पैकेट एक जेब से और माचिस दूसरी से प्राप्त हुई । अख्तर की ओर सिगरेट बढा कर उन्होने पूछा, "आप पीते तो होगे—मेरा मतलब है, सिगरेट या बीडी ?"

चूकि वह काफी सिगरेटें पीता था, इस लिए अचानक फेंके गए इस सवाल का जवाब वह 'ना' मे न दे सका, लेकिन वह तुरन्त ही सचेत हो गया कि सईदा के सामने उसे नही पीनी है । उस ने 'जी नही, शुक्रिया ।' कहा, लेकिन उस की 'ना' 'हा' जैसी थी । सईदा और भार्गव, दोनो ने उस के झूठ को पकड लिया और पकडे जाने का अहसास भी अख्तर को हो गया । भार्गव ने दूसरी बार आग्रह न किया । उन्होने सिगरेट सुलगाई और पैकेट व माचिस को आदतन अलग-अलग जेबो मे रख लिया ।

"पाकिस्तान से पकड कर याने—वहा के किसी भी आम आदमी को पकड कर हिन्दुस्तान लाइए । पूछिए कि कश्मीर किस का है ? वह कहेगा, 'हमारा ।' पूछिए कि क्यो ? कहेगा, 'इस लिए कि है ।' पूछिए कि क्यो है ? कहेगा, 'क्योकि होना चाहिए ।' पूछिए, 'क्यो होना चाहिए ?' कहेगा कि होना चाहिए, इस लिए होना चाहिए । बताइए, ऐसे लोग इस का सबूत है या नही कि आदमी एक बहुत उलझा हुआ···"

"आप भी भार्गव साहब, बात को कहा-से-कहा ले गए !" सईदा बोली, "अखबारनवीसो के साथ यही तो दिक्कत है । बात शुरू करिए

खेत से, पहुँच जाएगी खलिहान मे।"

"चलिए, सईदाजी ने भी एक और सबूत पेश किया।"

सईदा काफी खुल कर और अख्तर थोडा-सा हसा। भार्गव तब तक न हसे, जब तक वे दोनो हसते रहे। उन के रुकते ही वह कुछ देर तक मुस्कराते रहे, फिर हसे और बोले, "खेद है कि आप ने मेरी बात को मजाक मे उडा दिया। दरअसल आप दोनो की उम्र ही ऐसी है कि किसी बात के पीछे छिपा दर्शन आसानी से नही समझ सकते। इस की बजाय अगर मै ने इश्क-विश्क की बात की होती तो झट दोनो अपने-अपने मत पेश करते, शायद अपने अनुभव भी सुनाते। मैं इस के लिए आप मे से किसी को दोष भी नही दे सकता। कसम जनाब भुट्टो की, आप की उम्र मे मै भी ऐसा ही था। क्यो अख्तर साहब, अगर मैं इश्क के मामले को ले कर आदमी को उलझा हुआ जानवर सिद्ध करू तो आप को दिलचस्पी होगी?"

सईदा को रोमाच हो आया—भार्गव इतनी शीघ्रता से सारी बात-चीत समेट कर ऐसे मोड पर ला देगे, उस की कल्पना मे था ही नही, लेकिन जब उस ने अख्तर का लगभग फक हो चुका चेहरा देखा तो उस का रोमाच छीजने लगा। उसे अख्तर पर दया आई। मन हुआ, भार्गव को रोके, लेकिन और वह स्वय अपने से नाराज होने लगी।

बैरा खाली गिलास और कप उठा रहा था। सईदा ने अख्तर से पूछा, "क्या लेगे?"

"शुक्रिया, कुछ नही।"

"फिर भी?"

"बिल्कुल मन नही है।" अख्तर ने किसी तरह कहा और मेज के नीचे अपने घुटने हिलाने लगा। इस से मेज की सतह पर कपकपी हुई। अख्तर ने तुरन्त घुटनो को रोक दिया।

"कुछ तो लीजिए।" सईदा चाह रही थी, सचमुच चाह रही थी कि अख्तर कुछ ले। भार्गव ने तो अभी शुरूआत ही की थी। 'आगे न

जाने कैसी गत बनाए इस की !' वह सोच रही थी, 'बाद मे अच्छी-से-अच्छी चीज भी इसे अच्छी न लगेगी ।"

"छोडो भी," भार्गव ने टोका, "जब इन का मन नही है तो क्यो जबरन "

बैरा जाने लगा ।

"सुनो !" सईदा ने उसे रोका और अख्तर से पूछे बिना ही उस के लिए काफी का आर्डर दे दिया । फिर कहा, "आप को पीनी पडेगी । भला यह कैसे हो सकता है कि हम दोनो पी चुके हो और आप बिल्कुल कोरे "

अख्तर ने पानी का गिलास उठा कर होठो से लगाया । भार्गव सईदा की ओर कनखियो से देख कर मुस्कराए । सईदा न चाह कर भी अपनी मुस्कराहट न रोक पाई । अख्तर ने ज्यो ही गिलास नीचे रखा, भार्गव साहब बोले, "इश्क के मामले मे हिन्दुस्तान एक अनोखा देश है । सामाजिक बन्धन थोडे-बहुत टूट गए है, जिस से लडके-लडकिया एक-दूसरे को दिखाई तो पडने लगे है, लेकिन दूर-दूर से । बडे शहरो मे वे जरा पास-पास आ गए है, लेकिन अब भी उन सभी के जहन मे अठारहवी सदी घुसी हुई है । उन की सारी आजादी, सारी मस्ती, सारी आधुनिकता केवल नए फैशन की पोशाके पहन कर इधर-उधर घूमने मे है । लडकियो ने 'बी-हाइव हेयर-स्टाइल' बनाना और लिपस्टिक लगाना शुरू तो कर दिया है, लेकिन कोई युवक आ कर उन से कह भर दे कि क्या आप मेरी जीवन-सगिनी बनना पसन्द करेगी ? अगर देवीजी को सुझाव पसन्द आया तब तो ठीक, वरना सख्त नाराज हो कर तुरन्त जूती निकाल लेगी । बस ? इतनी ही गहरी है नई आधुनिकता ? अरे भई, इन्कार ही करना है तो कर दो—सब को इस का पूरा हक है—लेकिन नाराजगी की क्या जरूरत ? बल्कि लडकी को तो खुश होना चाहिए कि किसी ने उसे अपनी जीवन-सगिनी बनाने के योग्य तो समझा । नाराजगी दिखाने की बजाय उसे

लडके का अहसान मानना चाहिए ।"

"आप की बाते खासी दिलचस्प हे ।" अख्तर हसा ।

"दिलचस्प होगी, मुझे नही मालूम, लेकिन वे सच्ची जरूर है। हमारे अधिकाश युवक-युवतियो—माइण्ड यू ! मै 'अधिकाश' कह रहा हू, 'सारे' नही ।—हमारे अधिकाश युवक-युवतियो की आधुनिकता सिर्फ रहन-सहन और नए ढग के कपडो तक सीमित है, जबकि वास्तविक आधुनिकता होती है विचारो मे । दूर तक सोचने-समझने की कोशिश ही हमारे युवक-युवतिया नही करते । पहले कोशिश तो करे, कामयाबी-नाकामयाबी बाद की बात है । नई उम्र की लडकियो को देखिए—सईदाजी, माफ कीजिएगा, बात आप की कौम के खिलाफ जा रही है (सईदा मुस्कराई)—उन का ज्यादा-से-ज्यादा समय सजने-सवरने मे, अपने को ज्यादा उत्तेजक और 'हाऊ स्वीट !' बनाने मे गुजरता है, लेकिन विचारो से वे छुईमुई ही है । इसी लिए अभी तक भारत मे महिलाओ से हाथ मिलाने का रिवाज नही है । आधुनिकतम समाज मे भी महिलाए दूर से ही हाथ जोड कर कह लेगी, 'नमस्ते !' मानो किसी के छू लेने से ही उन पर दाग लग जाएगा !" भार्गव ने 'नमस्ते' कहते समय नाटकीयता के साथ अख्तर की तरफ हाथ जोड दिए ।

अख्तर ने राहत महसूस की, क्योकि बातचीत का रुख 'आदमी को उलझा हुआ जानवर' सिद्ध करने की दिशा मे नही था । उस ने दो-चार बार घुटने हिलाए, फिर पानी पिया । बैरा काफी ले कर मेज की ओर बढ रहा था ।

भार्गव बोले, "आप लोग सोच रहे होगे, मै भाषण देने के मूड मे हू, क्योकि बात मुद्दे से वाकई दूर हट गई है । मुद्दे की बात यह थी कि आदमी को इश्क के मामले मे एक उलझा हुआ जानवर सिद्ध किया जाए ।"

अख्तर की वह राहत खत्म हो गई । बैरा काफी रख कर जा चुका था । अख्तर ने झट चीनी मिलाई और जल्दी से एक घूट लिया ।

"इश्क एक अनोखी चीज है । अनोखी इस लिए कि उस के बारे मे

आप कभी किसी तरह का अन्दाजा नही लगा सकते । न मालूम कब बात बन जाए, कब बिगड जाए, कब बन और बिगड साथ-साथ जाए। इश्क के इतने पहलू है कि गिने नही जा सकते। इश्क एक शेर की तरह है। इस शेर को मारिए, वरना वह आप को मार डालेगा।"

भार्गव यहा कुछ रुके । अख्तर काफी की चुस्की ले कर कप नीचे रख रहा था। उन्होने पूछा, "क्यो अख्तर साहब, आप ने कभी शेर का शिकार किया है ?"

"जी नही !" अख्तर की आवाज मे से औपचारिक कोमलता कम हो गई थी।

"फिर क्या आप खाक किसी से इश्क करेगे !"

"भार्गवजी, माफ कीजिएगा, लेकिन कभी-कभी आप बेतुकी दलीले देते है।" सईदा ने कहा। हालाकि इस तरह उस ने अख्तर की तरफदारी ही की थी, लेकिन अपने को वह न रोक सकी।

' इस बेतुकेपन का एक ठोस कारण है।" उन्होने गम्भीरता से कहा।

"क्या ?"

"मैं टेलीपैथी से अकसर मिस्टर भुट्टो की सलाह लिया करता हू !" भार्गव ठठा कर हस पडे ।

अख्तर का चेहरा तन आया, "भार्गव साहब, आप मेरे बुजुर्ग है । जहा तक मुमकिन हो, मुझे आप मे उलझना नही चाहिए, लेकिन आप ने अभी एक गैरजिम्मेवाराना मजाक किया है।"

सईदा तुरन्त बीच मे पडी, "नही, नही, अख्तर साहब, असल मे 'मिस्टर भुट्टो' को हर जगह फिट कर देना इन की आदत है । इन का मतलब वह नही जो आप समझ रहे होगे।"

"जो भी हो, लेकिन किसी भी मुल्क—चाहे वह पाकिस्तान हो या इडोनेशिया—उस के फारेन मिनिस्टर का ऐसा मजाक नही उडाना चाहिए। खास कर उन्हे, जो जिम्मेदार कहे और समझे जाते है।"

"अरे, भाईजान, यह मजाक नही, सिर्फ एक तकियाकलाम है। आप तो खामख्वाह् नाराज होने लगे! भुट्टो साहब से आप की कोई रिश्तेदारी मालूम होती है!" भार्गव बोले।

"प्लीज भार्गव साहब" सईदा ने कहा, " क्यो आप बेवजह किसी को नाराज "

"नही, जी, नही, अख्तर साहब नाराज थोडे ही है। क्यो अख्तर साहब, क्या आप नाराज है ?"

अख्तर चुप रहा।

भार्गव सहजता से बोले, "खैर, छोडिए—बात चल रही थी इश्क के अनोखेपन की।"

"मुझे नही लगता कि आप इश्क के बारे मे कुछ जानते भी हैं। आप जो भी कहने जा रहे है, सब अपनी अटकलो के भरोसे पर " अख्तर ने प्रतिक्रिया मे आ कर स्पष्ट विरोध किया, "आप अखबारनवीस है, तरह-तरह की अटकले लगा सकते है। यह आप का पेशा है।"

भार्गव ने ठहाका लगा दिया। बोले, "बस ? आप इतना ही जानते है ? भाईजान, अखबारनवीसी अटकलो पर नही, सच्चाइयो के जोर पर की जाती है। अटकलो वाली अखबारनवीसी की जाती होगी पाकिस्तान या चीन मे।"

अख्तर का स्वर गुस्से से लरज उठा, "भार्गव साहब, अगर आप समझते है कि पाकिस्तान की बुराई कर के आप मुझे चिढाने मे कामयाब हो जाएगे तो आप गलती पर है। पाकिस्तान से मेरा कोई उस तरह का वास्ता नही। फिर भी इतना जरूर कहूँगा कि बातचीत के दौरान आप दूसरो को चिढाने के शायद आदी हो चुके है। यह अच्छा नही।"

"शुक्रिया। आइन्दा मैं ध्यान रखूगा।" लेकिन कहते समय भार्गव हस रहे थे। अचानक हसी रोक कर बोले, "क्यो अख्तर साहब, आप तो शादीशुदा होगे ?"

"जी नही।"

"ओह! चेहरे से आप की उम्र काफी ज्यादा मालूम पडती है। पैंतीस के करीब तो आप जरूर होगे? मै चालीस का हू।"

"आप मेरी उम्र मे पाच साल ज्यादा लगा रहे है, लेकिन ऐसी भटकती हुई बातचीत का आखिर मतलब क्या है? कभी आप पाकिस्तान-चीन की बात करते है, कभी इश्क की, कभी उम्र की बताइए, इतनी देर मे फैसले के तौर पर क्या हासिल हुआ?"

"ओह! आप की जडे तो काफी गहरी है! लेकिन जनाबेआली, बातचीत से हमेशा फैसले हासिल किए ही जाए, यह कोई जरूरी तो नही? मै ने सोचा था खैर, छोडिए कि मै ने क्या सोचा था। वैसे, तीस साल की उम्र भी कम नही होती। याद करिए इश्क को ले कर अभी-अभी आप ने एक चुनौती-सी दी थी। उस से लगा था कि आप जरूर कोई सफल इश्क फरमा चुके है। सफल याने वह इश्क, जिस का अन्त शादी मे हो। इसी से मै ने पूछ लिया था आप से, वरना आप के निजी मामलो मे, आप ही बताइए, मुझे भला क्यो दिलचस्पी लेनी चाहिए?" भार्गव ने सईदा की ओर देखा, "क्यो सईदा?"

"मै क्या कहू? शायद हम तीनो ही गलत 'टोन' मे बोल रहे है।" उस ने कहा।

"तीनो क्यो?" अख्तर ने विरोध किया, "अगर गलत है तो मैं और भार्गव साहब—आप तो चुपचाप बैठी है।"

सईदा निर्विकार रही। भार्गव उसे क्रूर लग रहे थे, हालाकि अख्तर को सताने की अनुमति वह पहले ही सईदा से ले चुके थे। अभी अख्तर ने जो कहा है कि 'आप तो चुपचाप बैठी है', क्या इस के पीछे यह अर्थ नही छिपा कि आप मुझे सहमति नही दे रही है? लेकिन · हुँह! कैसी सहमति? अख्तर को सहमति की आशा ही क्यो रखनी चाहिए? सईदा की उस से कोई आत्मीयता थोडे ही है, जो वह ·

सईदा ने अपने सिर को एक झटका दिया। इस झटके ने अख्तर और भार्गव दोनो का ही ध्यान आकर्षित कर लिया, क्योकि अख्तर ने तुरन्त पूछा, "शायद आप कुछ कहना चाहती है ?"

"नही।"

"अजी, अख्तर साहब, आप उन से नही, मुझ से बात करिए।" भार्गव फिर अख्तर के पल्ले आ पडे, "अगर सचमुच हम दोनो का 'टोन' गलत है तो जरा सोचिए कि इस का क्या कारण होना चाहिए।"

"मै अपने को साइकालाजिस्ट नही मानता।"

"अरे ! इस मे साइकालाजिस्ट होने-न-होने की क्या बात है ?"

सईदा अपनी अकुलाहट को न दबा सकी। कलाई पर बधे उस इमली के दाने मे देखती हुई बोली, "ओह ! साढे बारह हो रहे हे ! क्यो अख्तर साहब, आज आप को अपने आफिस नही जाना ?"

निश्चय ही यह बात अख्तर को यहा से छुटकारा दिलाने के लिए कही गई थी। अख्तर ने भाप लेते हुए कहा, "आप ने अच्छा याद दिलाया—मुझे वाकई चलना चाहिए।" वह उठने लगा, लेकिन भार्गव ने तुरन्त उस का हाथ पकड लिया, "अजी, ऐसी भी क्या जल्दी ! एक मिनट तो बैठिए। पहले हम तय कर ले कि अगली मुलाकात कब होगी।"

"जी ?"

"मैं ने कहा, अगली बार आप कब मिल रहे है ?"

"क्या जरूरत है ?" अख्तर का चेहरा तपने लगा। हाथ छुडा कर वह उठ हुआ। सईदा की निगाहे उस की आखो पर टिकी हुई थी।

"क्यो ?" भार्गव बैठे-बैठे ही बोले, "आज हमारी बातचीत पूरी कहा हुई है ? इश्क के मामले मे आदमी एक उलझा हुआ जानवर अभी साबित कहा हुआ है ?"

"मुझे ऐसे सबूतो मे दिलचस्पी नही है।"

"अख्तर साहब, लगता है, आप वाकई बुरा मान गए। हम ने तो

आप को यार समझ कर सोचा था कि दो-चार मजाक कर ले और आप है कि ''

''शुक्रिया '' अख्तर ने पर्स निकाला और एक रुपए का नोट मेज पर रखते हुए कहा, ''यह मेरी काफी के लिए ।''

सईदा चौक गई, ''नही, नही, जनाब, यह कैसे हो सकता है ''

लेकिन तब तक वह पलट चुका था। लम्बे डग भरता हुआ वह केण्टीन से बाहर चला गया ।

भार्गव पीछे से देखते रहे, फिर मुस्कराए ।

सईदा ने अपने को अपराधिनी महसूस किया

''तुम ने किश्त लिख ली होगी ?'' भार्गव पूछ रहे थे ।

वह इस इस सोच मे मशगूल थी कि अख्तर काफी भावुक मालूम पडता है । यहा से उठ कर शायद वह कही अकेले मे जा बैठेगा, कनाट-प्लेस के किसी पार्क या रेस्तोरा मे—और दुखी होता रहेगा एक-एक बात उसे क्रमवार याद आएगी और अन्त मे इतना जलील होने के लिए वह सईदा को ही कसूरवार ठहराएगा। सईदा के ही कारण वह रेडियो-स्टेशन आया था और

वह भार्गव से कहना तो चाहती थी कि आप ने जरूरत-से-ज्यादा ही बेचारे को

लेकिन उस के होठो पर मुस्कान उभरने लगी । जो भी हुआ—था कितना रोमाचक !

सात

सलूजा इलाहाबाद मे बीमार थे। तार मे केवल इतना सूचित किया गया था कि उन की हालत गम्भीर है, पहली गाडी से आइए। एकाएक उन्हे क्या हो गया, डाक्टर सिह न समझ पाए।

तार पा कर वह पसोपेश मे पड गए कि जाए या न जाए। इन दिनो एक नए ही ढग के टैंक-भेदी गोले का प्रारूप अन्तिम स्पर्श पा रहा था और उन का मूड बहुत जम रहा था। प्रारूप तैयार हो जाने के बाद उन्हे देश के अन्य वैज्ञानिको तथा शस्त्र-उत्पादन के महत्वपूर्ण अधिकारियो से मुलाकाते करनी थी। अपनी निजी प्रयोगशाला को मिलती सरकारी सहायता मे वृद्धि के लिए भी उन्हे प्रयास करना था। ये सभी काम श्रम-साध्य न होते हुए भी समय-साध्य तो थे ही।

और सलूजा के सामने हाजिर हो कर डाक्टर सिह करेगे भी क्या? उम्र मे छोटे होने के कारण वह उन को तसल्ली या सलाह देने मे आशिक सफलता ही पा सकते थे। क्या सलूजा को न्यून मात्रा मे मिलने वाला ढारस इतना महत्व रखता है कि डाक्टर सिंह मूड की परवाह न करते हुए इलाहाबाद चले जाए? वहा से वापस आने मे सात दिन कम-से-कम लगेगे ही। सलूजा के बहन-बहनोई, जो उन्हे इतने स्नेह से सहेज कर उन की सारी सनको को सह रहे थे, डाक्टर सिह से कभी मिले तो नही थे, लेकिन उन्हे वे एक-दो दिनो मे ही लौट आने दे, इस की सम्भावना बहुत कम थी।

अन्त मे उन्होने जाने का ही निर्णय लिया। न जाते तो न जाने का डक मन मे ऐसा चुभता कि प्रारूप तैयार करने का मूड शायद ही जम पाता। बेहतर यही था कि हो आए, ताकि किसी को कभी उलाहने का

अवसर ही न मिले । तार देने वाले व्यक्ति के रूप मे लिखा हुआ था—सुलोचना । वह डाक्टर सलूजा की बहन का नाम होना चाहिए, लेकिन यह स्पष्ट नही था कि बहन ने यह तार स्वय डाक्टर सलूजा की सलाह से दिया है या अपनी मरजी से । यदि अपनी मरजी से दिया है तो उसे पता कैसे चला कि डाक्टर सिह की उपस्थिति आवश्यक है !

तार की सक्षिप्ति झुझलाने वाली थी । एक बार यहा तक विचार आया कि तार दे कर ही पूछू, 'क्या मेरा आना सचमुच आवश्यक है ?' लेकिन फिर इस मे कोई तुक नजर न आई । तार दिए जाने—सामान्य अथवा एक्स्प्रेस पत्र से नही, बल्कि तार द्वारा सूचना दी जाने का एक-मात्र अर्थ यही था कि उपस्थिति आवश्यक है ।

"व्यर्थ है ! सब व्यर्थ है !" सलूजा बुदबुदाए ।

डाक्टर सिह का इलाहाबाद मे यह तीसरा ऊब-भरा दिन था और आज शाम वह वापस रवाना हो जाना चाहते थे । उन्होने सलूजा को अपने इस निर्णय से अभी सूचित नही किया था, लेकिन उन के बहन-बहनोई को अवश्य समझा दिया था कि दिल्ली मे वह बहुत महत्वपूर्ण काम छोड कर आए है । बहन-बहनोई की इच्छा तो बहुत थी कि वह रुके, लेकिन उन्होने व्यर्थ का आग्रह न कर के अपनी समझदारी का ही परिचय दिया ।

सलूजा को अचानक दिल का दौरा पडा था । दौरा बहुत हल्का था, लेकिन इस के द्वारा शरीर ने चेतावनी दे दी थी कि भविष्य मे बहुत सावधानी बरतने की जरूरत है । बहन-बहनोई दोनो के डाक्टर होने के कारण उपचार की कोई कमी नही थी । इलाहाबाद मे उन का निजी अस्पताल बहुत प्रतिष्ठित था ।

सलूजा पर दौरे का जितना शारीरिक असर पडा था, वह इतना गम्भीर नही था कि डाक्टर सिह को तार दे कर बुलाया जाता । असल

मे चौबीसो घण्टे बिस्तर मे लेटे रह कर डाक्टर सलूजा को जरूरत-से-ज्यादा सोचने की आदत पड गई थी। नीद मे भी वह न जाने क्या-क्या बका करते। उन की सनके डरावनी हद तक विचित्र हो चली थी। बार-बार वह डाक्टर सिह को याद करते। तार देना ही बहन-बहनोई को एक मात्र तरीका नजर आया था।

"हम इन्हे अस्पताल की सुविधाए तो दे सकते है, लेकिन मानसिक शान्ति कहा से लाए ? यह बहुत परेशान है। हमे तो कुछ समझ मे नही आता। शायद आप के आने से यह कुछ सम्भले। प्लीज, डाक्टर, इन्हें किसी तरह समझाइए कि दिमागी तनाव से दूर रहने मे ही भलाई है। यह चुपचाप लेटे क्यो नही रहते ? हर समय कुछ-न-कुछ सोचते क्यो है ?" उन की बहन ने चिन्तित स्वर मे कहा था, "कई बार तो ऐसी बातें करते हैं कि पता नही इन के मन मे क्या है।"

बहनोई को कम बोलने की आदत थी, लेकिन उन की आखो मे झलक आता था कि उन्हे डाक्टर सलूजा की कितनी चिन्ता है। उन्होने कहा था, "डाक्टर सिह, आप को तकलीफ देने का हमारा कोई इरादा नही था, लेकिन क्या करे ! यह आप का ही नाम रटे जा रहे थे। किसी तरह मालूम करिए कि इन के भीतर क्या घुट रहा है।"

"मैं कोशिश करूगा।"

"व्यर्थ है ! सब व्यर्थ है !" सलूजा रह-रह कर बुदबुदा उठते।

"क्या व्यर्थ है, डाक्टर ?"

"आप का या मेरा दिल्ली चले जाना। आप का या मेरा मर जाना। इस सारी दुनिया का नष्ट हो जाना।"

"आप को ऐसी बाते नही सोचनी चाहिए। आराम से नीद लीजिए।"

"मैं सिर्फ दवाओ के जोर मे सुलाया जा सकता हू।" उन्होने कहा, "जानते हैं, क्यों ? क्योकि जागने पर मुझे अपना जीवित होना याद आता

है और मैं परेशान हो जाता हू । ऐसी परेशानी मे सोना असम्भव है ।"

दौरा बहुत हल्का था । उसे लगभग एक सप्ताह हो भी चुका था । बोलने की मनाही अब उतनी सख्त नही थी । डाक्टर सिह उन के सिरहाने एक आराम-कुर्सी डाल कर बैठे थे। पास ही आक्सीजन-सिलिडर था—किसी भी आपत्कालीन स्थिति के सामने के लिए ।

"पता नही, आप महसूस करते है या नही, लेकिन मैं करता हू । किसी भी व्यक्ति का जिन्दा होना एक बहुत ही डरावना अनुभव है । जितना सोचे, उतना ही यह खौफनाक लगता है ।"

"मुझे नही लगता । ऐसी बाते आप को बिलकुल नही सोचनी चाहिए ।" डाक्टर सिह ने उन पर झुकते हुए कहा, लेकिन सलूजा की आखें उस धूप पर जा लगी थी, जो खुली खिडकी मे से तिरछे खम्भे की तरह फर्श पर टिकी हुई थी । उस मे धूल के असख्य कण—उस धूल के कण, जो हर जगह होती है, लेकिन दिखाई नही देती—उतराते हुए चमक-बुझ रहे थे । धूप का दायरा जहा तक था, धूल वही तक नजर आ रही थी, जिस से वह धूल के खम्भे जैसी लग रही थी ।

सलूजा बोले, "देखते है ?"

डाक्टर सिह उन का आशय न समझ पाए, "क्या ?"

"इस कमरे मे कितने धूल-कण होगे ?"

डाक्टर सिह चुप रहे ।

सलूजा बोलते गए, "असख्य । इन मे से किसी एक धूल-कण को लीजिए । उस की क्या हस्ती है ? कुछ नही । शून्य । पूरे ब्रह्माण्ड मे देखे तो हमारी पृथ्वी भी एक धूल-कण के बराबर है । और यही पृथ्वी हमे कितनी विशाल लगती है । पृथ्वी के जरा-से टुकडे को ले कर कच्छ मे युद्ध हो जाता है, लेकिन सच पूछें तो इस तरह लड मरने की जरूरत ही क्या है ? बल्कि मरने, जिन्दा रहने, पैदा होने वगैरह की ये सारी बाते, जो इतनी महत्वपूर्ण लगती है, क्या व्यर्थ नही हैं ? स्वय पृथ्वी का

अस्तित्व ही व्यर्थ हो, शून्य के बराबर हो, तो उस के ऊपर हो रही गतिविधिया ओह, मुझे डर लगता है। काश, मैं पैदा ही न हुआ होता!"

डाक्टर सिह चुप रहे। सलूजा ने कुछ ठहर कर एकाएक पूछा, "क्या आप ईश्वर पर विश्वास करते है?"

"ईश्वर विश्वास करने या न करने की चीज नही है। वह मानने या न मानने की चीज है।"

"यदि ईश्वर का होना मान ले तो सवाल है कि वह आया कहा मे? उसे आदि और अनन्त कहा गया है। याने, वह शुरू से है और हमेशा रहेगा। भला यह भी कोई तुक हुई? ईश्वर का कोई-न कोई जनक अवश्य होना चाहिए। तब ईश्वर के उस जनक के जनक के जनक के जनक के "

डाक्टर सिह ने सलूजा की हथेली दबाते हुए बडी स्निग्धता से कहा, "प्लीज, डाक्टर, ज्यादा मत सोचिए। सोचने के लिए बाद मे बहुत दिन मिलेगे। अभी आप को पूरा आराम करना है। आप ने वचन दिया है कि मेरी सारी बाते चुपचाप मानते जाएगे।"

"बस, डाक्टर सिह, यह आखिरी बात कर लेने दीजिए। मै बोल रहा हू। बोल वही सकता है, जो जिन्दा हो। ज्यो ही मैं बोलता हू, मुझे अपना जिन्दा होना याद आ जाता है और मैं और मैं खैर हा, तो यदि ईश्वर को न माने तो तो यह पृथ्वी कहा से आई? यह सूर्य, ये आकाशगगाए "

"देखिए, डाक्टर, ईश्वर है या नही, इस का जवाब तो कोई नही दे सकता। ईश्वर हमारी रोजाना की जिन्दगी मे कही, किसी रूप मे आड नही आता। जिस तरह परीक्षा मे विद्यार्थी पास या फेल होते हैं, उसी तरह हम ईश्वर को भी पास या फेल कर सकते हैं। ईश्वर पर इस से ज्यादा नहीं सोचना चाहिए। सोचने का कोई मतलब नही है।"

"हा आप सच कहते है—मैं भी महसूस करता हू कि ईश्वर फेल हो गया है लेकिन लेकिन मेरे विचार नीद मे भी जारी रहते हैं। सोते ही मुझे सपने आने लगते है और "

'यह सब ज्यादा सोचने के कारण है।"

"मुझे गहरी नीद लेनी चाहिए। सिस्टर को बुलाइए। क्या वह नीद का इजेक्शन नही दे सकती ?"

"डाक्टर, आप से एक बात पूछनी है।"

"क्या ?"

"अगर आज शाम मैं दिल्ली चला जाऊ, तो ? मुझे कुछ जरूरी—बहुत ही जरूरी काम करना है।"

सलूजा पल-दो-पल चुप रहे। फिर बुदबुदाए, "व्यर्थ है। आप का यहा होना-न-होना, दिल्ली जाना-न-जाना, मेरा बीमार होना या मेरा अस्तित्व ही होना-न-होना अनेक आकाशगगाए, जिन के बारे मे हम कभी नही जानेंगे, वे सभी एक-दूसरे की तुलना मे शून्य है। हमारी आकाशगगा मे पृथ्वी एक शून्य है। पृथ्वी मे भारत, भारत मे उत्तरप्रदेश, उत्तरप्रदेश मे इलाहाबाद, इलाहाबाद मे भी एक अस्पताल, अस्पताल मे एक मरीज—क्या मतलब है इस झमेले का ? क्यो है यह सब ?"

नीद मे सलूजा इतनी बेचैनी से उलट-पलट रहे थे कि बहुत चाह कर भी डाक्टर सिह उस शाम रवाना न हो सके।

आठ

"हैलो !"

"हैलो, कौन, सईदाजी ?"

सईदा उस पुरुष-स्वर को न पहचान सकी। उस ने कहा, "जी हा।"

"आदाब-अर्ज़ है मै अख्तर बोल रहा हू।"

"आदाब ! कहिए ?"

"क्या कर रही है ?"

"क्यो ?"

"मैं ने सोचा, यो ही जरा फोन कर ले। उस दिन तो "

सईदा ख़ामोश रही।

"उस दिन तो बाते हुई ही नही।" अख्तर ने वाक्य पूरा किया।

"हा, दरअसल "

"मैं आप के पास से ही, याने 'एयर-इण्डिया' से बोल रहा हू।"

"हु "

"कहिए तो लच के समय आऊ ?"

"कहा, रेडियो-स्टेशन ?"

"हा, क्योकि आप तो 'एयर-इण्डिया' आएगी नही।" वह हसा।

"बात यह है, ये लोग पास बनाने के मामले मे और भी सख्त हो गए हैं।"

"आप का मतलब है, मै अन्दर न आ सकूगा ?"

"लगता यही है।"

"तो एक काम करिए न ? मैं यहा से एक बजे रवाना हो जाऊगा। याने सवा, एक-बीस तक रेडियो-स्टेशन के सामने। आप गेट पर मिलिए।

उस के बाद कही साथ-साथ लच लेगे ।"

"लेकिन अख्तर साहब, बात यह है, लच के समय मुझे किसी से मिलने जाना है । पहले से समय दिया हुआ है ।" उस ने बहाना बनाया ।

"तो कल का तय रखिए ।"

"कल से मैं तीन दिनो की छुट्टी पर हू ।"

"क्यो ?"

"दिल्ली से बाहर जा रही हू ।"

"बहुत खूब । कहा ?"

सईदा के मन मे कौंध-सी हुई । नही । अख्तर को पता नही चलना चाहिए कि वह अम्मीजान से मिलने मुरादाबाद जा रही है । वह स्टेशन आ कर मुरादाबाद जाने वाली एक-एक गाडी देख सकता है । उस ने कहा, "यू ही आसपास ।"

"नही बताना चाहती ?" वह फिर हसा ।

सईदा चुप रह गई । यह मौन पूरी बातचीत पर किसी अवसाद की तरह छा जाता, लेकिन अख्तर ने सिलसिला आगे चला दिया, "खैर· · वैसे, अगर मैं आप की जगह होता तो जरूर बता देता ।"

सईदा इस बार भी चुप रही ।

"हैलो ! सुन रही हैं न ?"

"जी हा, आवाज आ रही है ।"

"बिल्कुल साफ-साफ ?"

"जी हा, साफ-साफ ।"

"चलिए, गनीमत है, वरना अच्छा, यह बताइए, आज शाम को आप की छुट्टी कब होगी ?"

"कुछ तय नही है ।"

"आप टाल रही हैं ।"

"नही, असल मे कोई एनाउन्सर कही चला जाए तो उस की

जगह ”

“फिर भी छुट्टी का कोई वक्त तो होगा ?”

“मैं कुछ नही बता सकती।”

“हु ”

फिर से मौन का अवसाद छा सकता था, लेकिन सईदा ने कह दिया, “देखिए, अख्तर साहब, फोन वाले अकसर अर्ज करते है कि एक ‘काल’ मे दो मिनट से ज्यादा बातचीत न की जाए।”

“तीन दिन बाद आप वापस आ जाएगी ?”

“काफी गुजाइश है।”

“ठीक है फिर, मैं चौथे दिन फोन कर लूगा। बाय-बाय !”

सईदा अपनी कुर्सी पर वापस आई। ‘चौथे दिन फोन कर लूगा’ सुनने के बाद ‘नम्र विरोध’ दर्शाने के लिए वह कह सकती, ‘क्या जरूरत है ?’—इस से पहले ही अख्तर फोन रख चुका था।

दो महीनो से वह मुरादाबाद न जा पाई थी और अम्मीजान की शिकायत बढ रही थी। उस ने तय किया कि मुरादाबाद मे वह अख्तर को कतई याद नही करेगी। बलवन्त—उस के अपने बलवन्त के बारे मे भी उसे कोई जानकारी नही थी कि वह गोआ मे अभी और कितना रुकेगा, दिल्ली कब आएगा। जानकारी के इस कडवे अभाव को भी वह मुरादाबाद मे बिल्कुल भूल जाएगी।

“हैलो ! कौन, सईदाजी ? आप ने तो कहा था कि लच मे कही जा रही हैं ?” अख्तर अपनी कुर्सी की पीठ पर आराम से टिका हुआ इस लहजे मे फोन कर रहा था, मानो वह न केवल इस बार, बल्कि हर अगली बार सईदा के अधिकाश बहानो को रगे-हाथो पकड लेगा और इसी तरह फ़ोन करेगा।

“जी हा, ·बात यह हुई · ”

'आवाज से लगता है, आप घबरा गई है।"

"क्यो ? इस मे घबराने की क्या बात है ?"

"मै ने लच मे फोन जो कर लिया ?"

"तो ?"

"याने मुझे मालूम जो हो गया कि आप कही नही गई है।"

"जी हा, बेशक मै यही हू, लेकिन यह कोई चोरी तो नही ?"

"नही-नही, ऐसा भी कोई कह सकता है ? खैर, जाने दीजिए "

"जाने नही दीजिए, मिस्टर, मै आप से एक बात साफ-साफ कह देना चाहती हू ।"

"कहिए ?"

"बार-बार फोन करने का क्या मतलब है ?"

"आप मुझ से कह रही है या पूछ रही है ?"

"पूछ रही हू ।"

"लेकिन आप तो सिर्फ कहने वाली थी ?" वह हस पडा।

"हस क्यो रहे है ?" सईदा की आवाज तीखी हो उठी।

"आप को पता ही नही है कि इस तरह तो हमारी दोस्ती और पक्की हो रही है।"

"नानसेन्स !"

उधर से फोन रख दिया गया। अख्तर ने भी रख दिया। तुरन्त उसे लगा कि शायद जल्दबाजी हो गई है। फिर यह 'शायद' हट गया। जरूर उस ने जल्दबाजी कर दी है। थोडी देर बाद 'जल्दबाजी कर दी है', यह पूरा वाक्य उस के मन से निकल गया। नही। जल्दबाजी कतई नही हुई है। अख्तर की यह ढीठता ही उस की खूबी है, जो उसे कही भी खडा कर दो, अलग निखार देती है। अपनी ढीठता से वह लोगो को पहले चौकाता है, फिर एक छोटे अरसे के लिए नाराज-सा कर देता है। इस के बाद जो निकटता आती है, वह अनोखी होती है।

अख्तर ने यह ढीठता बचपन से आज तक ठीक उसी तरह कमाई थी, जिस तरह लोग प्रायमरी से हाई स्कूल मे और वहा से कालेज मे जा कर डिग्री कमाते है।

अपने बारे मे सब से पुरानी याद के अनुसार एक बार उस ने आगरा की सडक पर खुले आम पिटते हुए यह मजूर किया कि मैं ने अपने मालिक की घडी चुराई है—हालाकि उस ने नही चुराई थी।

नौ

डाक्टर सिंह ने ताजा अखबार सलूजा के पलग के पास रखी मेज पर फैलाते हुए कहा, "जिस पृथ्वी को आप धूल-कण कहते है, उस पर आज भारतीयो ने एक करिश्मा दिखाया है।"

"मैं समझ गया।" सलूजा बोले, "वही एवरेस्ट वाले समाचार होगे।"

रेडियो ने घोषित कर दिया था कि भारतीय पर्वतारोहियो का एक दल, जो लैफ्टिनेण्ट कमाण्डर एम० एस० कोहली के नेतृत्व मे एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने के लिए रवाना हुआ था, २० मई, '६५ की सुबह, साढे नौ बजे अपने उद्देश्य मे सफल हो गया है। साथ मे यह सूचना भी आई थी कि पर्वतारोहियो की एक और जोडी एवरेस्ट-विजय का दूसरा प्रयास करेगी।

"लीजिए," २४ तारीख की सुबह डाक्टर सिंह ने बताया, "दो और हीरो एवरेस्ट पर हमारा तिरगा और नेपाली राष्ट्र-ध्वज फहरा आए। दोनो वहा पचास मिनट तक रुके रहे। और सलूजा साहब, उन मे से एक की उम्र तो सिर्फ तेईस साल है। जीयो! खूब जीयो!"

"लेकिन जी कर क्या करो?" सलूजा ने भौंहे सिकोड कर पूछा था, "डाक्टर सिह, मैं ने नही सोचा था कि इन समाचारो से आप बच्चो की तरह खुश हो जाएगे। इस ब्रह्माण्ड मे जब पूरी पृथ्वी ही शून्य के बराबर है तो हिमालय की क्या हस्ती? आप वैज्ञानिक दृष्टि से क्यो नहीं सोचते?"

"डाक्टर, आप ने अति कर दी है।"

"कैसे?"

"और अति हर जगह नुकसान पहुचाती है। अगर सारी दुनिया आप

की तरह सोचने लगे तो तबाही मच जाए । मानव जाति सामूहिक आत्म-हत्या कर ले ।"

"वैज्ञानिक हो कर भी आप कितनी छोटी दृष्टि से सोचते है !" सलूजा के चेहरे पर कचोट उभर आई, "आकाश की ओर देखिए । सारी बात इस नए काण्टेक्स्ट मे सोचिए । हमारा सूर्य पीले रग का तारा है । याने वह तारा, जो बुझने की तैयारी कर रहा है, जो बूढा हो रहा है । ऐसे तारो मे कभी भी विस्फोट हो सकता है । सूर्य चाहे बुझे या फटे, दोनो स्थितियो मे पृथ्वी नष्ट हो जाएगी । आप न चाहे तो भी मानव जाति का विनाश जरूर होगा ।"

"मैं जानता हू ।"

"और आखे मूदे हुए हू !"

"नही, मानव के नाते मै अपनी सीमाए पहचानता हू ।"

"इसी लिए तो मैं कहता हू कि हम क्षुद्र हैं—कुछ भी नही है । जो भी है, प्रकृति है । चाहे तो इसी को ईश्वर कह लीजिए । चरम सत्य है आकाश । ब्रह्माण्ड । गति और गुरुत्वाकर्षण ।"

उसी समय टेम्परेचर लेने के लिए सिस्टर आ गई थी और बातचीत रुक गई थी । सिस्टर विदा लेती, इस से पहले डाक्टर सिंह कमरे से निकल आए थे और बाहर सोफे पर बैठ गए थे । वह नही चाहते थे कि बहस का सिलसिला आगे चले, क्योकि स्वास्थ्य काफी ठीक हो गया होने पर भी अभी सलूजा को तनावो से दूर रहना आवश्यक था । एवरेस्ट के समाचारो की एक-एक पक्ति उन्होने पढ डाली ।

अगले दिन दो पर्वतारोही और एवरेस्ट पर पहुच गए । यह तीसरी विजय थी, लेकिन वह इस लिए पर्याप्त रोमाचक नही थी कि १९६३ में अमरीकी पर्वतारोही भी तीन बार चढ चुके थे । 'शायद तहलका मचे !' डाक्टर सिंह ने सोचा, क्योकि चौथी विजय के प्रयास की घोषणा हुई थी ।

२६ मई, '६५ को एवरेस्ट चोटी चौथी बार हार गई। इतिहास मे पहली बार एक साथ तीन लोग चोटी तक पहुचे, वरना अब तक दो-दो जाते रहे थे।

अखबार मेज पर फैलाते हुए डाक्टर सिह ने इस नए विक्रम की घोषणा की, लेकिन सलूजा के चेहरे पर वही मनहूसियत छाई रही।

डाक्टर सिह अगले दिन दिल्ली लौट गए। उन्होने डाक्टर सलूजा को खुश देख कर ही दिल्ली जाने का अपना निर्णय छोड दिया था, क्योकि सलूजा की स्थिति उन्हे ऐसी लगी थी, जिस का फिलहाल शायद कोई उपाय नही था।

क

एक दिन उसे पता चला कि जिस घर से अभी-अभी फर्श की सफाई कर के वह और अम्मी बाहर निकले हैं, वहा एक कलाई-घडी गायब हो गई है ।



सुबह होते ही अम्मी काम पर निकल पडती । अम्मी आगे-आगे चलती और वह सिर झुका कर उस के पीछे । अम्मी का काम ऐसा नही था, जिस मे कोई पूजी लगाने की जरूरत हो । उस की कमाई हाथ की कमाई थी, इस लिए कम या ज्यादा, जितना भी मिलता, सारा ही अपना होता । अम्मी घर-घर जा कर फर्श की सफाई करती । पहले वह झाडू लगाती, फिर किसी गन्दे कपडे को पानी मे बार-बार भिगोती-निचोडती हुई सारा फर्श पोछती ।

लडके का अब्बा बहुत पहले मर गया था । कितना पहले, उसे अदाजा नही था, लेकिन वह जानता था कि वह उस का हुलिया बयान नही कर सकता । पूरा हुलिया तो दूर, वह उस के चेहरे के बारे मे भी नही जानता था । उस ने अम्मी से कई बार पूछा था कि अब्बाजान कैसे थे । अम्मी ने कई बार उसे बडे विस्तार के साथ बताया था, लेकिन उस की समझ मे कुछ न आता । तब अम्मी झुझला उठती और कहती, "सो जा अब, काफिर !"

शुरू-शुरू मे उसे 'काफिर' के मायने मालूम नही थे, लेकिन चूकि यह लफ्ज बतौर एक गाली के अम्मी अकसर इस्तेमाल करती, वह उस

से चिढने लगा था। बाद मे उसे बताया गया कि बगल मे वह जो रामू हलवाई है, वह काफिर है, । वह कृष्णा, जो रोज स्कूल जाती हुई उन के कच्चे मकान के सामने से गुजरती है, वह भी काफिर है। तब उस ने पाया था कि आधे से भी ज्यादा शहर काफिरो से भरा हुआ है। "क्या ये लोग हमे मार डालेगे ?" एक दिन उस ने बडे भोलेपन से पूछा था और अम्मी ने कहा था, "मारेगे तो हम भी इन्हे मार डालेगे।"

स्वभाव से लडका बहुत चुप रहने वाला था। वह इतनी देर तक लगातार नीचे देख सकता था कि लोग मजाक करते, "इसे सामने से आती गाडी भी जमीन मे से निकलती दिखाई देती है।" उस की सिर्फ यही एक आदत थी, जिस से लोग उस पर ध्यान देते थे। लडके ने गौर किया था कि उस के जितने बडे लडके-लडकियो की कई-कई खासियते है और लोगो को वे सब मालूम भी है। न केवल पैसे के लिहाज से, बल्कि खासियतो के लिहाज से भी वह अपने को गरीब महसूस करता। वह नही जानता था कि लगातार नीचे देखते हुए चलने की आदत उसे कब पडी, लेकिन जब से उसे मालूम हुआ था कि इस अनोखेपन को न केवल उस की अम्मी, बल्कि दूसरे लोग भी जानने लगे है और इस के बारे मे बाते भी करते है, उसे अच्छा-सा लगने लगा था। जब उसे सामने देखने की इच्छा होती, तब भी वह नीचे ही देखता हुआ चलता रहता।

स्कूल मे दाखिला लेने के बाद लडके ने देखा कि उस का शर्मीलापन बडी तेजी से कम हो रहा है। इस से उस की शख्सियत का वह नुक्ता गायब होने लगा, जिस के कारण लोग उस के बारे मे बाते करते थे। वह बेकल होता हुआ सोचता कि लोगो को किस तरह इतना चौंका दिया जाए, जिस से वे उस के—बस, उसी के बारे मे एक-दूसरे को बताने लगे।



कलाई-घडी गायब हुई, उस घर के लोगो ने अम्मी से काफी सख्ती

के साथ 'पूछताछ' की, लेकिन आखो मे आसू भर कर अम्मी इतना ही बोली कि मै कुछ नही जानती ।

लडके को अम्मी पर गुस्सा आ रहा था। उसे पूरा यकीन था कि घडी अम्मी ने नही ली है । वह समझ नही पा रहा था कि इस के बावजूद अम्मी को रोने की जरूरत क्यो पडी । रोने से तो सब का शक पक्का हो सकता था । यदि अम्मी की जगह वह होता तो उस ने साफ कह दिया होता कि कही और तलाश करिए, किसी और से पूछिए । हद-से-हद इतना होता कि कहते समय लडके की निगाहे झुकी रहती, क्योकि शालीन होने का यह तरीका उसे बहुत आसान लगता था ।

दूसरे दिन अम्मी को बुखार चढ आया। वह बहुत चाहती थी कि काम करने जाए, लेकिन न जा सकी । लडके को शक हो रहा था कि इस से अम्मी के बारे मे लोगो का ख्याल जरूर बिगड जाएगा । वे यही सोचेगे कि (काफिर कही के !) घडी अम्मी ने ही ली है और रातोरात मा-बेटे चम्पत हो गए है ।

अम्मी को कच्चे मकान मे अकेली छोड कर वह स्कूल की ओर चल पडा । झोला कन्धे से लटकाए वह दो-तीन मोड ही पार कर सका था कि सामने से उस ने उसी घर के एक युवक को आते देखा ।

"एय ! तेरी अम्मी आज काम पर क्यो नही आई ?" युवक ने कडकते हुए पूछा । लडके के पाव थम गए, "वह बीमार है ।"

"हु ! बीमार है । आज ही बीमार होना था उसे ! चल, बता, कहा है घर तेरा ?"

लडके ने निगाहे झुका ली और जवाब दिया, "मुझे स्कूल मे देर हो जाएगी ।"

"बडा आया पढाकू !" युवक ने उस की बाह पकड ली, "चल, बता ! बताता है या नही ?" कल की पूछताछ से उसे सन्तोष नहीं था और वह खुद जा कर अचानक तलाशी लेना और शायद अम्मी को धम-

काना चाहता था । लडके ने झटके के साथ अपनी बाह छुडा ली और आवेश से बुदबुदा कर कहा, "छोडिए !"

और युवक ने उसे तमाचा जड दिया ।

लडका हक्का-बक्का रह गया । युवक ने उस की बाह फिर दबोच ली । थैला जमीन पर गिरा और सारी पुस्तके धूल से सन गई । देखते-ही-देखते वहा काफी बडी भीड सिमट आई ।

अम्मी ने दूर से उतने सारे लोगो को आते देखा तो उस का माथा ठनका । बुखार होने पर भी वह बुरका डाल कर, दरवाजे की चिक हटाती हुई बाहर आई, "अरे, अख्तर बेटे !"

युवक ने तुरन्त ऐलान किया, "घडी इसी ने चुराई है । और जरूर तुम्हे भी इस की जानकारी है । मा के सिखाने से ही इस ने हिम्मत की होगी बता ! कहा है घडी ?" लडके का हाथ फिरसे ऐंठ कर उस ने पूछा ।

अम्मी सकते मे आ गई, "जी ? घडी इस ने चुराई है ?"

युवक कुछ कहता, साथ आ गई भीड कुछ कहती, इस से पहले ही लडका एकाएक कबूल करता हुआ बोल उठा, "हा, मैं ने चुराई है । बोलो ? क्या कर लोगे ? पुलिस मे दोगे ? दे दो दे दो पुलिस मे, लेकिन लेकिन मेरी अम्मी साथ चलेगी ।"

उस का बचा-खुचा सारा शर्मीलापन अचानक न जाने कहा सरक गया था ।

"क्यो नही ! वह भी चलेगी ! जरूर चलेगी !" युवक ने अम्मी की आखो के सामने ही उसे दो-तीन मुक्के मारे । वह रोने लगा । उस ने छुटकारा पाने के लिए अम्मी की ओर देखा, लेकिन वह गुस्से से लरजते हाथो के साथ आगे आ रही थी । उस ने अख्तर के बाल पकड लिए और झकझोरती हुई बोली, "तू ने ली है ? बदजात ! यही दिन देखना था मुझे ? इसी लिए तुझे पढा रही हू ?"

बीच का तरीका यह निकाला गया कि मा-बेटे को अभी पुलिस मे न दिया जाए, क्योकि तब घडी के मालिक को भी वहा के चक्कर कम नही लगाने पडेगे। अम्मी ने कहा, "मैं मार-मार कर इस से उगलवा लूगी कि कहा छिपाई है। जान निकाल लूगी इस की।"

और सारी रात अम्मी उसे पीटती रही। करीब चार बजे उस की जो पिटाई हुई, वह बहुत ज्यादा थी।

उस ने कहा, "अम्मी, घडी मैं ने नही चुराई।"

लेकिन बात इतनी आगे जा चुकी थी कि लडके का यह सच अम्मी को झूठ ही मालूम हुआ। वह उसे धुनती रही।

"यकीन करो, अम्मी, मैं ने घडी नही चुराई। मै ने वैसे ही कह दिया था।"

"मुझे बेवकूफ समझता है? इतनी मार तू वैसे ही खा रहा है, क्यो? बेवजह ही तू रास्ते भर पिटता हुआ घर आया? बता, कहा है घडी?"

"मुझे नही मालूम। मै ने नही ली। यकीन करो या न करो, तुम्हारी मरजी।" वह रोता हुआ बोला।

वह जानता था कि कल सारे मुहल्ले मे उसी के बारे मे बाते हो रही होगी। ये बाते बढती और फैलती जाएगी, क्योकि जल्दी ही भेद खुल जाएगा कि लडके ने सारा कसूर अपने पर खामखाह ओढ लिया था। कैसे चुटकियो मे वह अपना नाम फैला देगा!

जल्दबाजी से काम करने की आदत उसे शायद यही से पडी। 'मुझे लाल रग की कमीज चाहिए।' "मुझे जूतो का एक और जोडा चाहिए।" "मुझे इसी वक्त जेबी कघा ला दो।" "आज, अभी, इसी वक्त मुझे हलुआ बना कर खिलाओ। बाजार से खरीद कर नही, अपने हाथ से बना कर खिलाओ।" "अभी चाहिए, मुझे अभी चाहिए—नई किताब इसी समय ला कर दो।" उस की जिदो से अम्मी तग आ जाती।

ख

इसी समय उसे सईदा से मिलने की कोशिश करनी चाहिए ।— अख्तर ने महसूस किया । साढे चार बजे थे । उस की ड्यूटी पाच बजे तक थी । "यार, मेरा भी काम देखते रहना ।" उस ने अपने एक साथी से कहा, ' मुझे एक जरूरी काम से कही जाना है ।" कुर्सी छोड कर उस ने बाहर की ओर कदम बढा दिए । आज शुक्रवार था और उसे अपने नियमानुसार नमाज पढने के लिए जामा मस्जिद जाना चाहिए था, लेकिन नही, आज वह सईदा से मिलने जाएगा ।

रेडियो-स्टेशन के बस-स्टाप पर जब वह उतरा तो पाच बजने मे अभी पन्द्रह मिनट बच रहते थे । कनाट-प्लेस से यहा तक बस का सफर मुश्किल से दो मिनट का रहा होगा । इतने मे ही उस ने गणना कर ली थी कि उसे रेडियो-स्टेशन मे दाखिल होने के लिए काफी दिक्कत उठानी पडेगी । रिसेप्शन मे यही कहा जाएगा कि पाच बजने वाले है—सब के जाने का समय हो गया है । दिक्कत उठाने के लिए वह तैयार था, लेकिन सफलता की गुजाइश होती तब तो ! सफर के दो मिनटो मे उस ने तय कर लिया कि दाखिले की कोशिश करने की बजाय बाहर सईदा का इन्तजार करना बेहतर रहेगा—जैसा कि वह पहले भी एक बार कर चुका था। ये छोटी-छोटी बाते थी, जिन्हे तय करने मे उसे कोई समय नही लगता था । आठ साल की उम्र मे ही उस ने कैसे चुटकियो मे तय कर लिया था कि घडी किस ने चुराई है । अख्तर को याद आया । उसे अच्छा लगा । बस से उतर कर रिजर्व बैक के सामने खडे होते समय उस ने अपने को बहुत हल्का महसूस किया ।

यह एक जुआ ही था कि वह सईदा के इन्तजार के लिए पाच बजे का समय चुने, क्योकि आज सईदा की ड्यूटी पाच बजे खत्म हो जाएगी और वह कैफे मे सहयोगियो के साथ बैठी न रह कर पाच बजे ही रेडियो-स्टेशन से निकल आएगी, इस की कोई गारण्टी नही थी । वह केवल

अनुमान, आशा और सयोग के आधार पर इन्तजार करने आया था। इन्तजार वह छह बजे तक करेगा या उस से भी बाद तक, वह नही जानता था, लेकिन जितनी भी देर वह यहा खडा रहेगा, समय अच्छा ही बीतेगा, इस मे उसे शक नही था। सईदा दिखाई न पडे तो भी वह जब भी मिलेगी, कहने के लिए तो हो जाएगा कि फला-फला दिन मै ने इतने बजे से इतने बजे तक आप का इन्तजार किया था।

करीब सवा पाच बजे उस ने सईदा को अकेली बाहर निकलते देखा। तुरन्त सडक पार करता हुआ वह उस की ओर बढा। सईदा की ड्यूटी खत्म होने के समय का अन्दाजा सही निकल आया, इस की उसे कम खुशी नही थी, लेकिन उस की आखो मे चमक पैदा न हो सकी। उसे तुरन्त अहसास हो गया था कि जबरन थोपी जा रही इस मुलाकात से तनाव ही बढेगा। जब तक वह सडक पार करता, वह एक और निर्णय ले चुका था—वह सईदा से कोई बात नही करेगा। सईदा को वह सिर्फ दिखाई पडेगा, लेकिन उस से बोलेगा कुछ नही।

सईदा शीघ्रता से नौ नम्बर के बस-स्टाप की ओर बढ रही थी। रेडियो-स्टेशन की एक सहेली के साथ आज उस ने 'गोलचा' मे शाम की फिल्म देखने का कार्यक्रम बनाया था। सहेली आज ड्यूटी पर नही पहुची थी, क्योकि अचानक उस के यहा कुछ रिश्तेदार आ गए थे। उस ने सईदा को फोन कर दिया था कि तुम सीधी 'गोलचा' चली आओ, मै तुम्हे वही मिल जाऊगी। फिल्म साढे छह बजे शुरू होने वाली थी। सईदा सोच रही थी, 'बीस-तीस मिनट पहले ही पहुचना चाहिए। थियेटर की हलचल तो महसूस हो। वरना यह क्या कि साढे छह से ऐन एक सेकण्ड पहले आप दनदनाते हुए पहुच रहे है और सीट मे बैठ भी नही पाए है कि फिल्म शुरू हो गई है।' वह बहुत लम्बे अरसे बाद हिन्दी फिल्म देखने जा रही थी। लोगो ने उस के निर्देशन की तारीफ तो बहुत की थी, लेकिन हिन्दी की अच्छी फिल्मो मे भी कोई-न-कोई बेहूदगी अवश्य होने का उस

का अनुभव रहा था। सहेली के आग्रह के सामने उसे झुकना पडा था, वरना उस का विशेष मन नही था।

समय मालूम होने पर भी सईदा ने यन्त्रवत् अपनी कलाई-घडी मे देख लिया सवा पाच बल्कि पाच बज कर सत्रह मिनट स्टाप पर पहुच कर उस ने दाहिनी ओर निगाह फेकी, जिधर से बस आने वाली थी। आज वह शलवार-कमीज मे थी। जब दुपट्टा सम्भालते हुए उस ने सामने देखा, अख्तर आधी सडक पार कर चुका था। वह तुरन्त चौकन्नी हो गई। हु तो जनाब आ पहुचे सावधानी के साथ वह दूसरी ओर देखने लगी।

न चाह कर भी अपने-आप उसे अन्दाजा लगता रहा कि अख्तर (शायद) पूरी सडक पार कर चुका होगा, अब (शायद) सई की ओर देख रहा होगा, और अब (शायद) सईदा की ओर कदम भी बढा रहा होगा। अब वह कुछ कहने ही वाला होगा कि—

सईदा ने पलट कर देखा।

अख्तर पास ही खडा था।

लेकिन वह बोलने के लिए उत्सुक नही था। वह दाहिनी ओर देख रहा था ताकि बस दूर से ही नजर आ जाए।

सईदा ने गौर से देखा कि धोखा तो नही हो रहा? नही। वह अख्तर ही था। गौर से देखते समय यह भय लगातार बना हुआ था कि यदि अख्तर इसी समय पलट जाए तो सईदा को वह स्वय की ओर ताकते देख लेगा।

लेकिन अख्तर नही पलटा।

सईदा ने उस मे जरा परे हट जाना चाहा।

लेकिन वह खडी रही। क्यो हटे वह? न अख्तर उसे पहचानता है, न वह अख्तर को। फिर क्यो उसे किसी भी रूप मे अपनी प्रतिक्रिया दिखानी चाहिए? वह तय न कर सकी कि अख्तर का इस समय इस

बस-स्टाप पर होना महज एक इत्तफाक है या ऐसा उस ने जान-बूझ कर किया है ? दोनो सम्भावनाओ मे एक जैसा वजन था।

कौन-सी सम्भावना सही मानी जाए, यह उस ने इस पर छोड दिया कि अख्तर भी क्या उसी बस मे चढता है, जिस मे सईदा चढ रही हो ? फिर लगा कि सही सम्भावना का चुनाव इस तरह नही हो सकता। यहा अधिकाश लोग दरियागज की दिशा मे जाने वाले है। अजमेरी गेट जाने वाले भी होगे, लेकिन कम। यदि अख्तर को अपने किसी काम से दरिया-गज ही जाना होगा तो वह उसी बस मे चढेगा, जिस मे सईदा—बशर्ते उस मे इतनी भीड न हो कि उन दो मे से कोई एक ही घुस पाए।

लेकिन अख्तर चुप क्यो है ?

इस की बजाय उसे सईदा के पास आ कर माफी मागनी चाहिए। उस दिन फोन पर हुई बातचीत मे जो तल्खी आई थी, उस का कारण अख्तर ही तो था!

उस ने फिर से अख्तर की ओर देख लिया।

वह 'ईवनिग-न्यूज़' पढने मे व्यस्त था। सईदा को बौखलाहट हुई। वह चुप रह कर, दूसरी ही ओर देखता रह कर भी सईदा को अपने बारे मे सोचने के लिए मजबूर कर रहा था।

हु! होगा कोई अख्तर-सख्तर! सईदा नही सोचेगी उस के बारे मे। उस ने फुटपाथ के किनारे पहुच कर जरा झुकते हुए बस के आने की दिशा मे देखा। एक आ तो रही थी, लेकिन वह पटेलनगर की होने के कारण दूसरे ही स्टाप पर रुकी और कुछ सवारियो को ले कर चली गई।

एक और आ रही है

उस ने बोर्ड पढा—अजमेरी गेट। ज्यादा भीड नही थी। अजमेरी गेट जाने वाले जितने भी थे, सारे उस मे आ गए। नीला धुआ उगलती हुई वह चली गई।

अख्तर नही गया।

जरूर उसे दरियागज जाना है । याने वह उसी बस मे चढेगा, जिस मे बला से ! चढे किसी भी बस मे ! या आ जाए बस के नीचे ही— मुझे क्या !

लेकिन मन मे कुरेदन-सी हो रही थी । दरियागज की बस मे दाखिल होने की पहली कोशिश सईदा नही करेगी । यदि अख्तर का इरादा ऐसा नही है कि सईदा वाली ही बस मे जाए तो वह दरियागज की जो भी बस पहले आएगी, (जगह मिलने पर) उसी मे चला जाएगा । बाद मे जो दूसरी बस आएगी, सईदा उस मे बैठ जाएगी ।

लेकिन उसे सही समय पर, बल्कि सही समय से पहले ही 'गोलचा' पहुँच जाना है । दिल्ली की बसो का वैसे ही कोई ठिकाना नही । एक बस खामखाह इस लिए क्यो मिस कर दी जाए कि उस मे अख्तर जा रहा है ? कौन अख्तर ? कैसा अख्तर ? नही, जी, नही, मै नही जानती किसी अख्तर-सख्तर को ! जो भी बस पहले मिलेगी, सईदा तो उसी मे जाएगी । बला से ! वह आ कर बगल की सीट मे ही बैठ जाए तो भी मुझे क्या ?

बस आ रही थी । दूर से ही देखा जा सका कि उस मे काफी जगह है । अब वह रुक रही थी सईदा आगे न बढ सकी । अख्तर को चले जाने दो इस मे । न होगा, सईदा 'गोलचा' के लिए स्कूटर कर लेगी। कुछ पैसे ज्यादा खर्च हो जाएगे, यही न ?

लेकिन अख्तर अपनी जगह से हिल क्यो नही रहा ? सईदा और अख्तर के अलावा अब दो ही मुसाफिर बच रहते है । उन के अन्दर जाते ही बस चल पडेगी—अख्तर आराम से 'ईवनिग-न्यूज' पढने मे मशगूल है। वह मशगूल है भी या वैसे ही ? यदि वह नही जा रहा है तो सईदा ही इस मे चली जाए वह आगे बढने ही वाली थी कि लगा, अख्तर पीछे आ रहा है । वह ठिठक गई । न रहा गया—उसे अख्तर पर उडती निगाह डालनी ही पडी । वह अखबार मे उसी तरह डूबा हुआ

था। फिर इसे मालूम कैसे है कि सईदा इस बस मे नही जा रही ? अगर इसी समय वह पलट कर देखे तो जरूर दोनो की निगाहे टकरा जाए—सईदा तुरन्त दूसरी ओर देखने लगी। तो यह इरादा है ! (वह बस तब तक रवाना हो चुकी थी।) जनाब उसी बस मे चलने की जिद पकडे हुए है, जिस मे सईदा हो। न मालूम कब से यहा इन्तजार कर रहे ह ! बेचारा ! हुह ! सईदा वस मे जाएगी ही नही। उस ने कलाई-घडी मे देखा। साढे पाच से ज्यादा ही उस ने करीब से गुजर रहे एक थ्री-व्हीलर स्कूटर को आवाज लगा दी स्कूटर रुका और वह फुरती से उस मे बैठ गई। स्कूटर झटके के साथ चल पडा। जाते-जाते सईदा एक व्यग्य-भरी निगाह अख्तर पर डाल लेना चाहती थी—लेकिन क्यो ? क्यो वह अख्तर का जरा भी नोटिस ले ?

शक !

कही अख्तर भी किसी स्कूटर मे पीछे-पीछे न आ रहा हो !

नही। वह मुड कर नही देखेगी। आ रहा है तो आने दो। पीछे न जाने कितने स्कूटर आ रहे होगे। सब को रोकने का सईदा ने ठेका तो नही ले रखा ?

लेकिन वह अपने को रोक पाती, इस से पहले ही उस ने स्कूटर की सिनेमास्कोप खिडकी का परदा हटा कर पीछे निगाह दौडाई।

पटेलनगर की एक बस आ रही थी। एक टैक्सी भी थी, जिस मे चार लोग बैठे थे। (याने टैक्सी मे वह नही था।) एक साइकल वाला। फुटपाथ पर तीन चार लडकियो की उन्मुक्त हसी। सडक के बीच मे बनी, जगह-जगह टूट रही वह मोटी, सफेद लकीर चको के नीचे से सरकती जा रही थी। स्कूटर एक भी नही था। सईदा ने अपने होठ एक-दूसरे पर दबा लिए। एक भी नही। न उस का, न किसी और का।

गं

एक दिन अम्मी ने ऐलान किया कि वह लाहौर चली जाएगी। अख्तर के चचाजान वही थे और उन्होने लाहौर तक के टिकट के पैसे अम्मी को भेज दिए थे। प्रसव मे उन की बीवी का इन्तकाल हो गया था और दो सालो से वह निपट अकेले थे। अम्मी ने लडके को बताया, "वहा तू ज्यादा ऊधम मचाएगा तो चचाजान बडे सख्त है—ऐसे कान उमेठेंगे कि याद रखेगा।"

गर्मी की छुट्टिया आधी बीती थी और वे दोनो लाहौर पहुच गए थे।

"सो जा! तुझे नीद नही आती ?" अभी मुश्किल से रात हुई होती और चचाजान खीझना शुरू कर देते। तब अम्मी बताती कि आगरे मे इसे रात को देर से सोने की आदत थी—एकाएक जल्दी कैसे सोने लगेगा। तब चचाजान हुक्का गुडगुडाने लगते और अम्मी के चेहरे पर मुस्कान आ जाती। वह कुछ न समझता हुआ बारी-बारी से उन दोनो को देखता रहता। दिन को चचाजान किसी दफ्तर मे बतौर टाइपिस्ट काम करते थे, लेकिन कभी-कभी वह सुबह से ही जम्हाइया लेने लगते और कहते, "भई, आज तो नही जाएगे।" उस दिन अगर स्कूल मे छुट्टी होती तो चचाजान उस से कहते, "क्या दिन भर घर मे घुसा रहता है! हर समय काव-काव! जा! खेल बाहर!" वह जबरन खेलने चला जाता। लौटता तो घर का दरवाजा भडभडा कर ही खुलवाना पडता।

उस दिन अम्मी ने कहा, "सुन, बेटे तू बहुत तरक्की कर सके, बहुत सारे रुपए कमा सके, इस का हम ने एक उपाय सोचा है।"

"क्या ?"

"पढाई के लिए हम तुझे रावलपिडी भेज देते है।"

वह चौंक गया, "क्यो ?"

"वहा की पढाई की इज्जत ज्यादा है," अम्मी ने बहाना बनाया,

फिर असलियत सामने रखा, "जान-पहचान निकल आई होने से वहा तेरी फीस माफ हो जाएगी ।"

"तो साफ-साफ यू कहो न कि मै चचाजान को भारी पड रहा हू ।" उस ने मुह फेर लिया ।

"तेरे चचाजान ने सारा इन्तजाम कर लिया है । वहा न केवल तेरी फीस माफ हो जाएगी, हास्टल मे मुफ्त रहने की जगह भी मिलेगी । खाने-पीने का भी तुम से कुछ नही लेगे । बदले मे तुम्हे हास्टल के कुछ काम कर देने होगे ।"

रावलपिडी मे पहले साल उस का मन न लगा । तीन माहो मे ही ऊब कर वह खत-पर-खत लिखने लगा कि मुझे बुला लीजिए, लेकिन लाहौर से कोई जवाब न मिलता । उसे सख्त हिदायत दी गई थी कि जब तक लाहौर आने वाला कोई जान-पहचान का शख्स न मिले, वह रावलपिडी न छोडे, क्योकि हालाकि वह काफी बडा हो गया है, अकेले सफर करने के लिए अभी काफी छोटा है । छह माहो बाद एक जान-पहचान वाला मिल गया और वह पहले से इत्तला दिए बगैर लाहौर आ पहुचा । वह एकाध सप्ताह साथ रहना चाहता था, लेकिन अम्मी ने उसे काफी डाटा कि पढाई इस तरह नही हुआ करती । लाहौर आने-जाने मे जो रेल-भाडा खर्च होता है, वह भी कम नही । मकसद यह कि रुपयो-पैसो की बात बार-बार उस के सामने आया करती । उसे बडी झुझलाहट होती, क्योकि वह देखता कि दुनिया मे बहुत सारा रुपया है, लेकिन उस के पास नही आता है । उसे सूझ न पाता कि क्या करे । रावलपिडी लौटते समय उस ने तय किया कि अब लाहौर तभी आएगा, जब गर्मी की छुट्टिया होगी ।

लेकिन वह छुट्टियो मे भी घर न आया । चचाजान को वह चचा-जान ही कहता था, लेकिन वह जानता था कि वह क्या है । अम्मी के प्रति उस का लगाव कम होता जा रहा था और इस का उसे कोई गम

नही था । दूसरे साल भी गर्मी की छुट्टिया उस ने हेड-मास्टर से विशेष इजाजत ले कर हास्टल मे ही गुजारी । उस ने रावलपिडी के एक न्यूज-एजेण्ट के यहा शाम और सुबह के अखबार बाटने की नौकरी कर ली थी । उस की यह पहली नौकरी थी, जो हर माह उसे दस रुपए देती थी ।

अम्मी के लिए अजीब-सी नफरत तब पैदा हुई, जब उस ने सुना कि उस ने एक लडके को जन्म दिया है ।

रावलपिडी के उस हाई-स्कूल मे उस का दूसरा साल अभी शुरू हुआ ही था कि देश का विभाजन हो गया ।

वे खूनी दिन !

उस के कोमल मन पर वे हमेशा के लिए छप गए । अज्ञात रूप से वह सन्तुष्ट भी था कि खूनी दिनो मे भी वह रावलपिडी मे अपने दोस्तो के साथ था, न कि अम्मी और चचाजान के साथ । चचाजान से जान-पहचान होने के नाते हेड मास्टर ने उसे हास्टल से निकाल कर अपने ही घर मे रख लिया था ।

फिर एक दिन गीली आखो के साथ उन्होने ही बताया था कि लाहौर के दगो मे उस मुहल्ले के सारे मुसलमान मारे गए—अम्मी, चचा-जान, वह नन्हा-सा बालक सब !

"काफिर यही कर सकते थे ।" देर तक रोने के बाद वह बुदबुदाया था ।

कुछ दिनो बाद चचाजान के दोस्त हेड-मास्टर महोदय एक बीमारी मे चल बसे । जो नए हेड-मास्टर आए, वह उसे उतनी सहायता व सहानुभूति न दे पाए, जितनी पहले मिलती रही थी । लिहाजा उस पर हाई-स्कूल की पुस्तको तथा दूसरी जरूरतो का काफी खर्च एक-साथ आ पडा ।

तब लतीफ मिया उस की मदद को आए ।

एक बार जब वह उन से अखबार का बिल उगाहने गया हुआ था, उन्होने पूछा, "क्या माजरा है ? बडे मायूस रहते हो ?"

"कुछ नही, यो ही ।"

"यो ही कैसे ! कुछ-न-कुछ बात जरूर है । सुना है तुम कालेज मे दाखिला लेना चाहते हो, लेकिन हाथ तग होने से "

वह नीचे देखने लगा ।

"फर्ज करो, मै तुम्हारे लिए माहवारी पचास या चालीस का इन्तजाम कर दू " फिर मानो 'पचास-चालीस' खुद को ही कम लगे हो, इस तरह झट उन्होने कहा, "पचास से ज्यादा का भी इन्तजाम हो सकता है । अरे, काम बढिया करोगे तो चादी-ही-चादी है, लेकिन शुरू मे ज्यादा नही मिलेगा "

अख्तर की आखो मे चमक आ गई, "कैसा काम, हुजूर ?"

"आज शाम का खाना तुम मेरे साथ खाओ । तब तक मै दरयाफ्त कर लूगा कि जगह है या नही । अगर आज न होगी, तो भी कल-परसो मे किसी-न-किसी तरह खाली करवा ही ली जाएगी । बेफिक्र रहो । यू समझो कि काम हो ही गया है । मेरा नाम है अब्दुल लतीफ—और लतीफ आज तक जिन्दगी मे कभी फेल नही हुआ । इस के अलावा, तुम्हे तो अभी मेरा एक ही नाम मालूम है । मेरे कई नाम है ।"

"कई ?"

"हा । लेकिन पूछना मत । मै अपनी बीवी को भी नही बताता ।"

होटल मे अपने साथ उसे बढिया खाना खिलाते वक्त उन्होने कहा, 'देखो, सब से पहले तो यह अल्लाताला का काम है । उस की मरजी है कि तुम इसे करो । शायद इसी लिए तुम्हारी-मेरी मुलाकात हुई है । आम तौर पर मैं किसी को नौकरी दिलवाने मे दिलचस्पी नही लेता, लेकिन तुम्हे देखते ही न जाने क्यो मुझे ऐसा लगा कि काम तुम्हारे ही इन्तजार मे है और यह सब मेरे जरिए होने जा रहा है ।"

वह नीचे देखने लगा, क्योकि लतीफ मिया की बात के पीछे छिपी बात का जरा भी अन्दाजा न लगने से वह अकुला उठा था ।

"जो शख्स इस्लाम मे थोडा-बहुत भी यकीन रखता है, उस का फर्ज है कि उस हरेक इलाके को आजाद कराए, जहा मुसलमान बसते हो । तुम्हे मौका दिया जाएगा कि तुम इस्लाम पर अपने यकीन का पूरा सबूत दे सको ।"

अकुलाहट बढ गई । अख्तर नीचे देखता रहा ।

"चुप क्यो हो ?"

"कुछ नही, यो ही " अख्तर ने सिर उठाया ।

"मै दरअसल कश्मीर की ओर इशारा कर रहा हू । जैसा कि तुम जानते ही होगे, बटवारे के बाद अंग्रेजो ने कुछ रियासतो को इस का हक दिया था कि वे पाकिस्तान या हिन्दोस्ता मे से जिस मे चाहे, शामिल हो जाए । कश्मीर के सदर ने अभी फैसला भी नही किया था कि वह किस तरफ जाए और पाकिस्तान को एक साजिश का पता चल गया—भारत कश्मीर को अपनी तरफ मिलाने के लिए जोर डाल रहा था । लिहाजा, हम ने कश्मीर के अवाम को सही राह पर लाने के लिए अपने पाच हजार लोग भेजे । सुन रहे हो न ?"

"जी हा, मुझे मालूम है । उस समय मैं काफी छोटा था, तो भी आज इस बारे मे मेरी जानकारी अप-टु-डेट है ।" अख्तर बोला ।

"ज्यो ही हमारे लोग गए, कश्मीर का महाराजा एक बेवकूफी कर बैठा । उस ने बजाय इस के कि उन लोगो की अगवानी करता, उल्टे हिन्दोस्ता से अर्ज की कि हमारी मदद करो ।" लतीफ मिया कहते रहे, "हिन्दोस्ता की फौजे घात लगा कर ही बैठी थी । तुरन्त कश्मीर मे आ घुसी । मुजाहिदो के साथ उन की घमासान जग छिड गई ।"

लतीफ मिया ने यहा कुछ रुक कर पानी पिया, एक डकार ली, फिर कहा, "युनाइटेड नेशन्स की अपील के कारण यह जग बीच मे ही रोक

दी गई और हम कश्मीर का काफी बडा हिस्सा आजाद न करा सके।"

"जी "

"जब तक पूरा कश्मीर आजाद नही हो जाता, हम अपने को सच्चे मुसलमान कैसे कह सकते है ?"

अख्तर चुप रहा।

"तुम्हे कश्मीर की—समूचे कश्मीर की आजादी के लिए काम करना है। बोलो, हो तैयार ?"

"जरूर ! लेकिन मुझे करना क्या होगा ?'

"पहले तुम्हे कराची और दीगर शहरो मे ट्रेनिग लेनी होगी। उस दौरान तुम्हे ज्यादा तनख्वाह नही मिलेगी। ट्रेनिग पूरी होने पर तुम्हे काम शुरू करना होगा। कहा, कब, किस जगह और किस तरह, यह सब बाद मे तय होगा, लेकिन शुरू मे ही मालामाल हो जाने की ख्वाहिश मत रखना। तुम्हारा—या इस सरकारी काम मे दखल रखने वाले किसी भी शख्स का—पूरा इनाम तो तब मिलेगा, जब सारा कश्मीर आजाद हो जाए।"

"याने यह सरकारी काम हे ?"

"बिल्कुल—सेण्ट-पर-सेण्ट सरकारी। इनाम क्या मिलेगा, अभी कैसे बताऊ ! अभी तो खुद मुझे ही अपना इनाम नही मालूम। बहरहाल, अगर कुछ भी न मिलने वाला हो तो भी हमे इस्लाम की खातिर, कश्मीर के अपने भाइयो की आजादी की खातिर यह काम करना चाहिए।"

"हा," कहते समय अख्तर की निगाहे झुक गई और घुटने कुछ-कुछ हिलने लगे।

घ

'एयर-इण्डिया' मे एक सिक्ख ने प्रवेश किया। वह सधी हुई चाल से उस काउण्टर की ओर बढा, जिधर अख्तर बैठा हुआ कुछ कागजात की

चैंकिग कर रहा था। सिक्ख ने अख्तर को सडक पर से ही, काच की दीवार के आरपार देख कर पहचान लिया था। वह सीधा आ कर उस के सामने खडा हो गया और बोला, "एक्स्क्यूज मी "

अख्तर ने सिर उठाया, "यस ?"

सिक्ख काउण्टर पर झुका और बिना कुछ बोले मुस्कराने लगा। अख्तर को यह अजीब-सा लगा। उस ने फिर दोहराया, "यस, प्लीज ?'

"पहचाना नही शायद।" सिक्ख धीमे से बोला।

अख्तर ने याद करने की कोशिश की—यह आवाज पहले कहा सुनी है ? उस की निगाह सिक्ख के चेहरे पर सरकती हुई आखो मे रुक गई। बाई आख जरा भेंगी थी इतनी कम कि ध्यान से देखने पर ही पता चले अख्तर मुस्कराया। मुस्कराहट मे लेश मात्र भी चौकने का भाव न हो, इस के लिए वह पूरी तरह सचेत था। ज्यादा-से-ज्यादा चौकाने वाली स्थितियो मे भी सहज बने रहने का खासा अच्छा अभ्यास वह कराची मे कर चुका था।

सिक्ख कोई पूछताछ कर रहा है और अख्तर उसे सूचनाए दे रहा है, इस के अलावा दूर से और कोई आभास पाना मुश्किल था। करीब से भी हद-से-हद यही लगता कि दो परिचितो मे निजी बातचीत हो रही है—वे कुछ तय करना चाहते है। तय—कोई दिन। कोई फिल्म। समय। कुछ भी।

"अभी कल तो मिले थे।" अख्तर हसा। (आदाब-अर्ज़ है ! बहुत दिनो बाद मुलाकात हुई। अब ?)

"फिर भी आज शाम का तय रखो।" (आज शाम कहा मिलना ठीक रहेगा ?)

"जैसा आप चाहे।" (जहा आप कहे।)

"तुम अपनी सहूलियत देख लो।" (नही, मैं नही बताऊगा।)

"लेकिन " (एक मिनट जरा सोच लू।)

अख्तर ने विचारमग्न होते हुए एक-दो कागजो को फाइल मे लगाया, फिर ड्रार खोल कर पेन्सिल निकाली और ब्लेड से उस की नोक बनाने लगा। बोला, "लेकिन यह तो बताइए, हालचाल क्या है ?" (कैसी तैयारी है ?)

"क्या होने है ! जैसे थे, वैसे ही।" (तैयारी उसी तरह जारी है।)

"फिर भी ?" (ज्यादा तैयारी कहा-कहा हे ?)

"सारी बाते इसी समय ? अभी ठीक से मिले भी नही है और तुम हो कि " सिक्ख हसा।

"शरबतीलाल दिल्ली मे ही है या ? वहुत दिनो से मुलाकात नही हुई।" (कुछ पीने-वीने का इन्तजाम भी है या यो ही ? बहुत दिनो से मौका नही मिला।)

"शरबती ? अभी कल तो मुलाकात हुई थी। कह रहा था, उस की सिस्टर की शादी होने वाली है। तुम्हे इनवाइट करेगा ही।" (इन्तजाम है। 'पीने' के अलावा भी दूसरे इन्तजाम है। तुम आमन्त्रित हो।)

"क्यो नही। और मैं जरूर जाऊगा।" (बहुत खूब ! फिर तो आज शाम जरूर मिले।)

"न जाने को कहू तो भी तुम मानोगे थोडे ही। मै तुम्हे अच्छी तरह पहचानता हू।" (मुझ से छिप थोडे ही पाओगे ! तुम बहुत जल्दबाज हो। अभी पहली ही मुलाकात हुई है और तुम हो कि सारे सौदे अभी से तय •)

"शादी अटैण्ड करने के मौके रोज-रोज थोडे ही आते है।" (आप से इतने दिनो बाद मुलाकात हुई है कि आज तो जशन होना ही चाहिए।)

"पेंसिल छीलने मे भी इतनी देर ?" (मुझे देर हो रही है। जल्दी तय करो।)

"मेरी छुट्टी पाच बजे हो जाएगी। किसी रेस्तोरा मे मिले या •"

अख्तर ने सिक्ख की ओर देखा ।

"ओह, नो ! नाट इन रेस्तोरा । पाच बजे छूटोगे ? ओके, देन, मै शार्प पाच बजे कार ले कर यही आ जाऊगा ।"

"कार लाए है ?"

"हा । 'सब है ।' जहा भी जाना होगा, सर्राटे से " (कार का इन्तजाम कर लिया है । 'सब' उसी मे मिल जाएगा । यहा से अपने किसी अड्डे पर)

"राइट, लेकिन पाच से सवा पाच नही होना चाहिए ।" (मैं अभी से बेकल हो रहा हू ।)

"तुम्हारी समय की पाबन्दी मै जानता हू ।" (जल्दबाजी की तुम्हारी आदत मुझे मालूम है ।)

अख्तर से हाथ मिला कर गम्भीर चेहरा लिए वह सिक्ख 'एयर इण्डिया' से बाहर निकला और एक ओर मुड गया ।

ड

ट्रेनिग का सिलसिला कराची के बाद कई शहरो मे चला । लतीफ मिया सभी जगह के ट्रेनिग देने वालो से अच्छी दोस्ती रखते थे । अख्तर जैसे रगरूट वह प्राय पकड लाते । यह उन के अनेक कामो मे से एक था—वे अनेक काम, जिन के बारे मे अटकले ही लगाई जा सकती थी । जब वह अच्छे मूड मे होते, उन के होठो से कोई अमेरिकी सिगार आ लटकता ।

अख्तर ने रामायण पढी । तब महाभारत व गीता । दूसरे भी कई पौराणिक ग्रन्थ । गाधी और नेहरू द्वारा लिखित अनेक पुस्तको का उस ने व उस के साथियो ने अध्ययन किया । कश्मीर के मामले को ले कर भारत क्या सोचता है, आदि सामग्री भी समय-समय पर दी जाती ।

भारत मे भेजे गए अनेक जासूस ऐसी सामग्री छपते ही बन्द लिफाफो मे रवाना कर देते । हिन्दू धर्म-ग्रन्थो की प्रमुख बाते उन्हे इस लिए समझाई जा रही थी कि मौका पडने पर वे हिन्दू होने का सफल ढोग कर सके । साथ-साथ उन्हे रायफल, रिवाल्वर, हथगोले आदि का प्रयोग भी नियमित रूप से सिखाया जाता । इम के लिए उन्होने कई छावनिया बदली। किस तरह अधेरे का लाभ उठा कर इधर-से-उधर सरक जाना, पीछा कर रहे शत्रु को कैसे झासा देना, बोलचाल मे और लिखित रूप से सदेश भेजने मे साकेतिक भाषा का इस्तेमाल कैसे करना, कैसे पहचानना कि फला आदमी पाकिस्तानी जासूस है या भारतीय खुफिया अधिकारी, छोटी-सी जगह मे कैसे दुबक जाना या जरा-से छेद मे से निकल कर कैसे चम्पत हो जाना—ट्रेनिग के अनेक अध्याय थे, जो शीघ्रता से पूरे हो रहे थे ।

कभी-कभार अख्तर व उस के माथियो मे फुसफुसाहट होती कि अनेक लडकिया भी जासूसी की ट्रेनिग पा रही है, लेकिन वे कहा है, किस की देख-रेख मे है, कितनी है, वगैरह जानकारिया नही मिलती थी ।

ट्रेनिग के बाद उन्हे जाली वीसा और दीगर सर्टिफिकेट दे दिए गए । वे चालाकी से भारत मे घुस आए ।

दिल्ली आने के बाद लगभग छह महीनो तक अख्तर को कोई काम न मिल सका और उस का माहवारी खर्च गुप्त रूप से पाकिस्तानी दूतावास देता रहा । सभी जासूसो को हिदायत थी कि जितनी जल्दी हो सके, वे भारत मे अपनी कमाई आप करना शुरू कर दे, ताकि पाकिस्तान सरकार पर आर्थिक बोझ कम पडे ।

दिल्ली रवानगी से पहले अख्तर से पूछा गया था कि ग्रेजुएशन के जाली सर्टिफिकेट मे वह अपना असली नाम चाहेगा या कोई हिन्दू नाम। अख्तर के एक साथी ने अपने लिए 'कृष्णबिहारी' नाम चुना था, लेकिन अख्तर ने कहा, "जाली सर्टिफिकेट अगर पकडा गया तो उस मे 'अख्तर हुसैन' लिखा है या 'रामकृष्ण तिवारी'—कोई फर्क नही पडता । पाकि-

स्तानी जासूस हिन्दू नामो के साथ आए होगे, यह तो कोई भी बिना बताए समझ सकता है।"

नागपुर विश्वविद्यालय से बी० ए०—अख्तर हुसैन ! सर्टिफिकेट हाथ मे आते ही वह मुस्करा दिया था।

सर्टिफिकेट मे हिन्दू नाम होता तो उस ने सईदा से बातचीत कैसे शुरू की होती ? वह तय न कर पाता। बहरहाल, सईदा से मिलने के बाद उस का सन्तोष और बढ गया था कि वह असली नाम के साथ ही आया था। छह महीनो की बेकारी के बाद उसे जामा मस्जिद के आस-पास जो छोटी-मोटी नौकरिया मिली, उन मे भी उस का असली नाम बहुत सहायक रहा था।

'एयर-इण्डिया' की नौकरी हाल-हाल मे लगी थी। पाकिस्तान दूतावास की ओर से मिलती आर्थिक सहायता अब रुक गई थी। जब नही रुकी थी, तब भी वह इतनी कम थी कि अख्तर पर काफी उधार हो गया था। उस ने रूपनगर मे जो छोटी-सी मियानी किराए पर ले रखी थी, उसे छोडने का कई बार इरादा कर के भी वह अभी तक उस मे था। शुरू के दो-चार महीने उधारी पटाने मे लग गए थे जिस के बाद उस ने कुछ कीमती कपडे सिलवाए थे। 'एयर-इण्डिया' के खूबसूरत माहौल मे खूबसूरत कपडो के साथ न बैठ कर उसे अपना व्यक्तित्व कितना उजाड सा लगता था, वही जानता था।

इस के बाद अख्तर ने सोचा कि बैंक मे दो-तीन सौ रुपए हो जाए, तभी किसी अच्छे कमरे मे जाया जाए। सिगरेटो की लत के कारण बचत ज्यादा नही होती थी जो उसे खलता तो बहुत था लेकिन वह मजबूर था। उस से सिगरेटो के बिना बिलकुल न रहा जाता। ज्यो ही उसे याद आता कि वह तीस साल का हो चुका है, उस की सिगरेट सुलग उठती। जासूसी-कला तथा अनिवार्य प्राथमिक सैनिक-शिक्षा के सिलसिले मे वह इतना व्यस्त या उखडा हुआ रहा था कि शादी या मुहब्बत की कोई गुजाइश ही नही थी।

वैसे भी लतीफ मिया ने एक दिन साफ-साफ कह दिया था कि इन 'पचडो' मे पडोगे तो सरकार 'नाराज' हो सकती है। "ऐश करो! ऐश करने से कोई नही रोकता, लेकिन तुम्हे कहीं बध कर नही रहना चाहिए।" उन्होने चुरुट की राख झाडते हुए अख्तर को 'समझाने-जैसी' जो कोशिश की थी, उस मे चेतावनी थी।

सईदा अख्तर उसे किस रूप मे पाना चाहता था? बीवी के रूप मे या सिर्फ ? नही! सईदा के बारे कोई ओछी बात सोची भी नही जा सकती सरकार भी इस शादी मे कोई रोडा न अटकाएगी पाकिस्तानी जासूस शादी न करे, इस का अस्पष्ट बन्धन तभी तक है न, जब तक समूचा कश्मीर आजाद नही हो जाता? और उस की आजादी मे अब भला कौन-सी देर है!

एक बार लतीफ मिया ने अख्तर के कन्धे पर हाथ मारते हुए कहा था, "तुम मुझ से भी अनोखे काम कर सकते हो, क्योकि तुम्हे आखो का आपरेशन नही करवाना।"

"मै आप का मतलब नही समझा।"

"ध्यान से देखो, मेरी आखो मे कोई खास बात है या नही?" लतीफ मिया बोले और चेहरा कुछ आगे कर दिया।

अख्तर चुप रहा। उस ने शुरू की तीन-चार मुलाकातो मे ही गौर कर लिया था कि लतीफ मिया की बाई आख जरा भेगी है।

"कई बार सोचा, इसे आपरेशन से ठीक करा लू। जासूसी के लिए मुझे कभी भी हिन्दोस्ता जाना पड सकता है—और किसी भी जासूस के जिस्म मे ऐसी खासियते नही होनी चाहिए, जिन से उस का हुलिया याद रखा जा सके। मैं दाढी बढा लू, पगडी लगा लू, कोई सिक्ख नाम रख लू तो भी इस भेगेपन के कारण परेशानी हो सकती है। तुम ऐसी खासियतो से परे हो।"

"अमरीका मे भेगेपन का बहुत अच्छा इलाज होता है।" लतीफ

मिया कुछ रुक कर बोले थे, "लेकिन वहा जाने के लिए वक्त किस के पास है ? रुपए-पैसो की तो खैर, कोई बात नही, हमारी सरकार आखिर कब काम आएगी—लेकिन वक्त कहा से लाऊ ? फिलहाल मै इसी तरह ठीक हू ।"

च

पाच बजे वह कार, जिसे एक महिला चला रही थी, 'एयर-इण्डिया' के सामने आ कर रुकी और जरा भेगी आख वाला वह सिक्ख नीचे उतरा । व्यस्त चाल से आगे बढ कर 'एयर-इण्डिया' का काच-दरवाजा खोलता हुआ वह अन्दर चला गया । अख्तर इन्तजार मे ही था । "हैलो " कहते हुए उस ने स्वागत किया और पूछा, "चले ?"

"बेशक !"

दोनो बाहर निकले । सिक्ख ने कार का पिछला दरवाजा खोला । 'शुक्रिया !" अख्तर ने कहा और चौकन्ना होता हुआ बैठ गया । उस का चेहरा निर्विकार रहा, लेकिन वास्तव मे वह कुछ शरमा गया था—पीछे की सीट पर एक विदेशी युवती बैठी थी । अख्तर ने उस के चेहरे को गौर से देखा । बिल्कुल अमेरिकी चेहरा । 'एयर-इण्डिया' मे इतने दिन काम कर के उस की आखे इतनी अभ्यस्त अवश्य हो चुकी थी कि देख कर ही किसी का अमरीकी, ब्रिटिश या जरमन आदि होना पहचान ले । पीला स्कर्ट उस पर खूब जच रहा था । कमर पर सफेद बेल्ट और सुडौल पिडलियो को और सुडौल बना रहे वे अदृश्य, नायलोनी मोजे अख्तर की ओर देख कर वह हल्के से मुस्कराई । उस के बाल बाब्ड थे और बिल्कुल अमरीकियो की तरह सुनहरे । अख्तर न समझ पाया कि बालो का यह सुनहरापन स्वाभाविक रूप से है अथवा 'ब्लीचिग' के कारण ।

अख्तर ने दूसरी युवती की ओर देखना चाहा जो कार ड्राइव कर

रही थी। पीछे से उस का चेहरा पूरी तरह निगाह मे न आ सका। अख्तर ने विडस्क्रीन के ऊपर लगे आयताकार, छोटे शीशे मे देखा, जिस मे पूरा चेहरा बिम्बित हो रहा था। यह युवती भी कम सुन्दर नही थी, लेकिन नाक-नक्श से वह भारतीय लगती थी। उस की लिपस्टिक उतनी गहरी-लाल नही थी, जितनी कि पहली की। उस का रग भी उतना खुला हुआ नही था, लेकिन आखे बहुत बडी व चचल थी। उस के काले बाल बाब्ड नही थे। उस ने उन का बहुत अच्छा जूडा बनाया था। वह स्लीवलेस ब्लाउज व साडी मे थी और उस की बगल मे बैठे लतीफ मिया चुप थे।

कार दो चौराहे पार कर चुकी थी। "हमे खामोश ही रहना है क्या ?" अख्तर ने अचरज से देखा कि यह वाक्य उस 'अमेरिकी' युवती का था। वह चौक-सा गया, जिस से वह हस पडी। उस ने बडी नजाकत से आदाब-अर्ज करते हुए कहा, "इस नाचीज को अमरीकी अग्रेजी मे किम विण्टर्स, इग्लिश अग्रेजी मे जून पामर, पजाबी मे अनीता कपूर, उर्दू मे शमीम बानो, इटालियन मे सोफिया बान्दिनि, हगेरियन मे जुत्का गाज, फ्रेंच मे मारतिनी रीस, जरमन मे इग्रिड शोलेर "

"बस-बस-बस !" लतीफ मिया जोर से हसे। कार ड्राइव कर रही महिला भी। अख्तर समझ गया कि ये दोनो लतीफ मिया की शिष्याओ मे से है।

"तो पजाबी मे अनीताजी ओर हगेरियन मे जुत्काजी आप ने अपना असली नाम तो ?" वह बोला।

"जाहिर है कि उर्दू वाला ही असली होगा, लेकिन आप मेरा गलत नाम याद रखिए। अमरीकी नाम—मिस किम विण्टर्स।" वह बोली।

"मिस किम विण्टर्स !" अख्तर ने हौले से दोहराया।

"और ये देवीजी, जो कार चला रही है, इन की खूबियो का जवाब नही।" लतीफ मिया ने विड-स्क्रीन मे से सडक को देखते

कहा, "इन के भी कई नाम है, लेकिन हम लोग इन्हे 'मिस चालीस' कहते है।"

"मिस चालीस ? यह कैसा नाम ?" अख्तर को आश्चर्य हुआ।

"ट्रेनिग के बाद मै ने कुछ लडकियो का इम्तहान लिया था। उन्हे पाकिस्तान के एक फौजी ठिकाने पर भेजा गया, जहा के ज्यादा-से-ज्यादा भेद उन्हे मालूम करने थे। फौजियो को पता नही था कि इस तरह लडकिया भेजी गई है। एक हफ्ते का वक्त दिया गया था। कोई लडकी तीन भेद लाई, कोई दस ले आई, कोई बारह या पन्द्रह ला सकी, लेकिन एक लडकी पूरे चालीस भेद लाने मे कामयाब हो गई। तब से उस का नाम ही मिस चालीस "

"ओह !"

"मिस चालीस मेरी फेवरिट स्टूडेण्ट है। हिन्दोस्ता मे यह बडे-बडे करिश्मे दिखाएगी। काफिरो की खैरियत नही।" एकाएक जोश मे आ कर लतीफ मिया ने चबाए हुए, धीमे स्वर मे नारा लगा दिया, "लालबहादुर शास्त्री—होशियार !"

पाकिस्तानी दूतावास के एक अधिकारी की जान-पहचान के कारण यह प्राइवेट कार इन्हे रात भर के लिए उधार मिल गई थी। लतीफ मिया मिस चालीस को पहले ही बता चुके थे कि कार किस अड्डे की ओर ले जानी है। वे लोग लिक रोड का चौराहा पार कर के बुद्ध-जयन्ती-पार्क की ओर बढ रहे थे। शाम अभी घनी नही हुई थी। सामने से एक फोर-सीटर किसी गेडे जैसी निर्भीकता के साथ आता दिखाई दिया। उस का सरदार चालक जोर-जोर से कोई पजाबी लोक-गीत गा रहा था। चार सवारियो मे से दो मर्द थे, दो औरते। चारो खामोश थे, लेकिन एक-दूसरे को देख-देख कर मुस्करा रहे थे। झाााप करता हुआ फोर-सीटर बहुत ही करीब से गुजरा। "कम्बख्त !" मिस चालीस ने गुस्से से कहा, "अभी टकरा ही जाता। दिल्ली के ड्राइवर तो बस, कमाल करते है।"

थोडी देर बाद लतीफ मिया बोले, "जानते हो, अख्तर, एक हफ्ते पहले मिस चालीस गोआ मे थी ?"

"नही, बिना बताए कैसे जान सकता हू ?"

"मुझे गोआ से एक दोस्त ने इत्तला दी थी कि यहा हिन्दोस्ता की एयर-फोर्स का एक रगीला जवान छुट्टिया मनाने आया हुआ है, शायद उस से कुछ खास बातो का पता चले। मिस चालीस तब बम्बई मे थी और लम्बे अरसे से कोई काम नही कर पाई थी। मै ने उसी को गोआ भेज दिया।"

"फिर ?"

"फिर क्या ? वही हुआ जो होना चाहिए। चालीस ने रगीले जवान के साथ रह कर जो राज मालूम किए, वे पिंडी ट्रासमिट हो गए है "

अख्तर गम्भीरता से चुप रहा। इस समय वह इन सारी बातो पर सोचना या बोलना नही चाहता था। किम उसे मिस चालीस से ज्यादा आकर्षक लगी थी, परन्तु वह नही जानता था कि लतीफ मिया की योजना क्या है। सहसा अख्तर को काफिरो का एक पुराना रिवाज याद आ गया

ग्यारह

बलवन्त ने तैरती हवाई-पट्टी पर से उडान का प्रशिक्षण काफी पहले लिया था, लेकिन सैनिक व्यस्तताओ मे वह उस के अभ्यास के अवसर बहुत कम निकाल पाया था। गोआ मे छुट्टिया बिता कर वह बम्बई चला आया था। आज अभ्यास का पहला दिन था। अपने पूरे दल के साथ उस ने तैरती हवाई-पट्टी पर से उडाने भरी थी, हवा मे कलाबाजिया खाई थी, समुद्र मे दुश्मन के कल्पित निशानो पर गोलाबारी की थी और अब थकान का आनन्द लेता हुआ वह जहाज के डेक पर खडा था।

दूर मछुआरो की कुछ किश्तिया अपने सफेद पाल उठाए हुए धीमे-धीमे सरक रही थी। इतनी दूर से उन का सरकना महसूस न होने के कारण वे तस्वीरो जैसी लग रही थी। उस ने फिर एक बार अपने नैट हवाई-जहाज पर निगाह डाली। नैट के पास ही मिग-२१ खडा था। डेल्टा आकार के उस के मजबूत पखो पर सूर्य की किरणे तिरछी पड कर कौध रही थी। रूस से खरीदा गया, सिर्फ एक फाइटर पायलट द्वारा सचालित घोर विध्वसक ! अमेरिका के स्टार-फाइटर्स, थण्डरचीफ्स और सैबर जेट्स की तुलना मे ये मिग-२१ किसी तरह कम नही थे, लेकिन भारत मे उत्पादित नैट के बारे मे भी बलवन्त पूरी तरह आश्वस्त था। किसी वास्तविक युद्ध मे नैट ने अमेरिकी हवाई-जहाजो से टक्कर तो ले कर नही देखी थी, लेकिन जब भी ऐसा अवसर आएगा, अपने छोटे आकार और कम वजन के कारण नैट ज्यादा ही स्फूर्तिवान सिद्ध होगा, इस मे बलवन्त को सन्देह नही था।

गहरी सास लेते हुए उस ने स्वय को रेलिग पर टिका दिया। गोआ ! अभी सप्ताह भर पहले वहा के एक पार्क मे उस की एक खूब-

सूरत लेडी प्रिंसिपल से मुलाकात हुई थी कितनी तेजी से वे एक-दूसरे के करीब आ गए थे ! बेला दुग्गल

उस की बगालन मा ने एक पजाबी युवक से प्रेम-विवाह किया था। पहली सन्तान हुई बेला, जिस के बाद न जाने कैसे दोनो का मनमुटाव बढता गया और एक दिन ऐसा भी आया, जब वे तलाक ले कर अलग-अलग राहो पर चल पडे। बेला की मा को यक्ष्मा ने आ घेरा। बेला ने उस की मृत्यु की सूचना भी अपने पिता को न भिजवाई। वह दूसरा विवाह कर के अपनी नई दुनिया बसा चुका था और बेला उस के प्रति घोर वितृष्णा से भरी हुई थी।

बेला की मा ने तलाक लेने के बाद बम्बई मे एक प्राइवेट कोचिंग कालेज खोल लिया था, जो बहुत सफलता से चल निकला था। मा के पीछे बेला ने उस की बागडोर अच्छी तरह सम्भाल ली।

तीसरी या चौथी मुलाकात मे अपनी यह सारी कहानी बताते समय बेला कैसी भावुक हो उठी थी "नही !" उस ने कहा था, "मै शादी करना नही चाहती। मुझे किसी पर विश्वास नही है।"

उस के स्वर मे ईमानदारी का कुछ ऐसा पुट था कि बलवन्त ने उसे शाम का खाना अपने साथ लेने का आमन्त्रण दे दिया था। "आफकोर्स, मै जरूर आऊगी। थैक्यू वेरी मच ! आई हैव लाइक्ड योर कम्पनी जस्ट ट्रेमेण्डस्ली !" बेला ने कहा था और उस के खूबसूरत होठ मुस्कान के कारण अधिक मासल व चिकने लगने लगे थे।

खाना खाते समय उस ने एकाएक पूछा था, "इस से पहले आप की किसी कुवारी लडकी से मुलाकात हुई है ?"

"जी ? जी हा मै जल्द ही किसी से लव-मैरिज करने वाला हू।" बलवन्त ने कहा था।

उस की बात बिल्कुल न सुनी हो, इस तरह वह बोली थी, 'किसी ऐसी कुवारी लडकी से जिस का शादी करने का कोई इरादा भी न

हो ?"

"नही, ऐसी तो कोई "

"याने उस तरह की मै पहली लडकी हू ।"

बलवन्त मुस्करा दिया था।

"ऐसी लडकियो की अपनी अलग नैतिकना होती है पुराने ख्याल के लोगो को वह अश्लील भी लग सकती है "

"आप बहुत अच्छी हिन्दी बोलती है ।"

"हा !" बेला हस पडी थी, "यही तो विडम्बना है। बगालन मा ने मुझे बगाली न सिखाई, पजाबी पिता ने मुझे पजाबी न सिखाई। शुरू से ही मै हिन्दी बोलने वालो के साथ रही हू। हिन्दी की कहानिया-उपन्यास पढने की मुझे ऐसी लत है कि क्या कहू ! मेरे कालेज की लाइब्रेरी बहुत रिच है।" फिर अचानक उस ने पूछा था, "अभी खाना खाने के बाद आप का क्या प्रोग्राम है ?"

'कुछ नही। क्यो ?"

"मुझे होटल तक छोडने तो चलेगे न ?"

"श्योर !" बलवन्त ने तुरन्त कहा था, "आप मना करती तो भी मै चलता "

"मै यहा पन्द्रह-बीस दिनो की छुट्टिया मनाने आई हू। मुझे कमरो की सजावट करने का बडा शोक है। होटल के कमरे को भी मैं ने इस तरह सजाया है, जैसे हमेशा के लिए यही रहना हो।"

"अच्छा ?"

"चलिए, दिखाऊगी।"

"जरूर।" कहते समय बलवन्त की आवाज कुछ लरज गई थी—सकेत !

यदि सचमुच इन सकेतो का वही अर्थ था तो बलवन्त को कोई एतराज नही हो सकता था। पायलट होने के नाते वह हर क्षेत्र मे रोमाच

ढूढता था। सेना के वातावरण मे उस की नैतिकता के मानदण्ड बहुत बदल गए थे—उसी तरह, जैसे अभी-अभी बेला ने कहा कि आजन्म कुवारी रहने की इच्छुक लडकियो की अलग ही नैतिकता होती है किसी भी क्षण अपने लडाके हवाई-जहाज के साथ स्वय भी ध्वस्त हो जाने की सम्भावना ने बलवन्त को क्षण-जीवी बना दिया था। जो आज है, जो अभी है, जो इस क्षण है, वही सत्य है—उसे भोगो, कल का कोई भरोसा नही। क्षण-जीवी होने के इस आग्रह के सामने वह कभी इस का भी ख्याल न रखता कि सईदा के साथ वह कब-कब अन्याय कर जाता है।

"सब गलत है।" बेला ने अपने कमरे मे प्रवेश करते हुए कहा था, "नैतिकता-अनैतिकता, श्लील-अश्लील के बारे मे हम ने जो भी नियम बिना रखे है, सब आउट-आफ-डेट हो गए है।"

"आप की फिलासफी खासी दिलचस्प है।" कुर्सी मे बैठते हुए बलवन्त ने भौहे उठा कर, तिरछी दृष्टि से बेला को पहली बार उतनी देर तक घूरा। "हा।" वह बोली थी, "लेकिन मै आप को प्राचीन वेदान्तो या धर्म-ग्रथो के उदाहरण दे कर बोर नही करूगी।"

दोनो हसने लगे। बैरा काफी रख गया। उस के जाने के बाद बेला ने दरवाजे का परदा गिरा दिया। रात के नौ बजने वाले थे और ठण्डी हवा के झोके आ रहे थे। वे काफी पीते रहे।

"सेना—चाहे वह किसी भी मुल्क की हो—दूरदर्शी होती है और नही भी होती।"

"मेरी बजाय फिलासफरो जैसी बात आप ने शुरू कर दी!" बेला हसी।

"वह इस तरह कि सेना हमेशा फ्यूचर के बारे मे सोचती है—उस की सारी प्लानिग बहुत एडवान्स मे होती है, लेकिन लेकिन सेना के लोगो को अलग-अलग, आई मीन, इण्डिविड्युअली देखा जाए तो—हर आदमी सिर्फ आज की बात सोचता है। उस का कल इतना, यू कहिए,

घुधला होता है कि उस के पास और कोई चारा भी नही।"

"सिर्फ आज !" बेला उस की ओर अद्भुत तन्मयता के साथ देख रही थी, " और आज आप मेरे साथ है "

इस के बाद दरवाजा प्राय दो घण्टो के लिए बन्द हो गया था। पहला उबाल शान्त होने के बाद वे अगल-बगल तसल्ली से लेट रहे थे। बेला ने पूछा था, "आप ने 'मिग' भी उडाए होगे ?"

"हा।"

"कभी मुझे भी अपने साथ बिठा कर "

"ओह, नही ! दैट्स इम्पासिबल। मिग मे एक ही सीट होती है। आप तो एयर-वार-फेयर के बारे मे कुछ भी नही जाननी।"

"फिर नैट मे "

"उस मे भी एक सीट होती है।"

"मै क्या जानू ! ये नेट तो बगलौर मे बन रहे है न ?"

"हा। सभी कुछ हिन्दुस्तानी टैक्निशियनो के हाथ मे है। नैट का टरबो-जेट एञ्जिन भी 'हैल' ने प्रोड्यूस किया हे।"

" 'हैल' क्या ?"

" 'हैल'—एच-ए-एल 'हैल'—हिन्दुस्तान एयरक्राफ्ट लिमिटेड • उस ने यू०के० की एक फर्म 'ब्रिस्टल मिडेले एञ्जिन्स लिमिटेड' से टरबो-जेट के प्रोडक्शन का लाइसेन्स लिया हुआ है।"

"मुझे सिक्ख बडे रोमाचक लगते है।" बेला ने एकाएक बात पलट दी थी।

अब तक बलवन्त ने जो भी बाते बताई थी, उन मे अधिकाश बेला दुग्गल को पहले से ज्ञात थी। घुमा-फिरा कर वह 'कुछ और' मालूम करना चाहती थी।

बहुत महत्व की कोई जानकारी वह प्राप्त न कर सकी थी। वह समझ न पाई थी कि इस का कारण क्या है। क्या बलवन्त इतना घाघ

है कि कोमल क्षणो मे भी अपना होश पूरी तरह खो देने से बचा रहना है ? या, सचमुच उसे सेना के नाजुक रहस्य ज्ञात नही है ? 'निजी और भिन्न' नैतिकता के लगभग डेढ सप्ताह मे वह छोटे-छोटे जितने भी रहस्य इकट्ठे कर पाई थी, उन के साथ अब वह दिल्ली लौट जाना चाहती थी, क्योकि लतीफ मिया का खत आया था कि दिल्ली मे जासूसी का जाल जितनी जल्दी हो सके, ज्यादा मजबूत कर देना है ।

"सारी दुनिया की नैतिकता बच्चो के आस-पास घूमती है," उस ने आखिरी 'मुलाकात' के समय बलवन्त से कहा था, बच्चो के साथ उन के लालन-पालन का सवाल जुडा है । नैतिकता के बन्धन लगा कर इस लालन-पालन का इन्तजाम कर दिया गया, लेकिन आज हम संतति-नियमन के युग मे है । हम यौन का आनन्द मा-बाप हुए बिना भी उठा सकते हैं। अब बच्चे बाद मे है, यौन-आनन्द पहले । बल्कि यह आनन्द एक अलग ही इकाई बन गया है । उसे उमी रूप मे लेना भी चाहिए ।"

"हु " बलवन्त कुछ उखडा हुआ था, क्योकि बेला उसे बता चुकी थी कि वह कल विदा ले रही है । उम के कालेज के टीचिंग-स्टाफ मे हडताल हो गई थी । मामले को सुलझाने के लिए उस का बम्बई पहुचना अनिवार्य था । बलवन्त ने उस का बम्बई का पता पूछा था, तो उस ने साफ इन्कार करते हुए कहा था, "क्या करेंगे जान कर ? हमे एक-दूसरे को भुला देना चाहिए । आप किसी को शादी का वादा दे चुके है और मुझे आजन्म कुवारी रहना है । भूल जाना ही ठीक रहेगा । "

लेकिन उतने दिनो मे बलवन्त ने वातो-ही-बातो मे इतना तो मालूम कर ही लिया था कि बेला का कालेज खार मे है । उम ने तय किया था कि खार जा कर वह एक-एक प्राइवेट कालेज का चक्कर लगाएगा और बेला का पता निकालेगा

तैरती हवाई-पट्टी पर से उडान भरने और पानी मे बनाए गए कल्पित निशानो को साधने के अभ्यास ने उसे थकाया तो था, लेकिन नहा कर

ज्यो ही वह बाहर निकला, उस मे वही उत्साह पैदा हो गया, जो उस ने कुछ घण्टे पहले समुद्र के नीलेपन मे गोलाबारी करते समय अनुभव किया था। इलैक्ट्रिक-ट्रेन ने खार के रेलवे-स्टेशन पर उतारा तो उस ने सोचा, 'पता नही, आज की रात कैसी बीते!' उस ने एक पान वाले से पूछा, "क्यो जी, यहा आस-पास कोई प्राइवेट कालेज है ?"

पान वाले ने खामोशी से एक ओर इशारा कर दिया। वह कालेज बेला का ही हो, ऐसी सम्भावना नही थी, लेकिन वहा से खार के दूसरे कालेजो का पता चल जाएगा।

"नो, सर," कालेज की प्रिसिपल थी तो एक महिला ही, लेकिन वह बेला दुग्गल नही थी। उस ने बताया, "ऐसा कोई कालेज खार मे नही है।"

"जरूर होना चाहिए। मुझे अच्छी तरह याद है कि "

"खार नही, किसी और कालोनी मे होगा।"

"नही, उस की प्रिसिपल ने खार ही कहा था।"

"आप ने कालेज का नाम नही पूछा ?"

"नाम भी उन्होने बताया था, लेकिन मै भूल गया हू। हा, प्रिसिपल का नाम मिस बेला दुग्गल है।"

महिला ने बहुत सोचने की कोशिश की, फिर कहा, "सॉरी, जेण्टिल-मैन, खार मे इस नाम की कोई प्रिसिपल मेरे ध्यान मे नही है।"

बलवन्त बाहर निकल आया। काफी देर तक घूमते रहने के बाद उसे एक और कालेज नजर आया, लेकिन वहा भी किसी को बेला दुग्गल की जानकारी नही थी। निश्चय ही बेला झासा दे गई थी। उस ने कहा था, "मेरा कालेज बहुत लोकप्रिय है।" लोकप्रिय कालेज इस तरह छिपा कैसे रह सकता था ? जरूर बेला ने कालोनी का नाम गलत बताया है

बलवन्त एक रेस्तोरा मे चला गया और 'एस्प्रेसो' पीता रहा।

जब वह बिल अदा कर रहा था, एकाएक उस के मन म कौंध-सी

हुई। उसे याद आया, बेला ने घुमा-फिरा कर कुछ ऐसी बाते बार-बार पूछी थी, जो सैनिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण थी। "मुझे नही मालूम।" बलवन्त प्राय हर बार उसे टालता रहा था और इस से पहले कि वह किसी साजिश का आभास पा सकता, बेला ने हर बार उसे अपने पाश मे बाध लिया था। सेना के बारे मे उस की उत्सुकता बलवन्त को बाल-उत्सुकता जैसी ही भोली और निरापद लगी थी।

बलवन्त का आक्रोश क्षण-क्षण बढने लगा। 'एक लौडिया मुझे बेवकूफ बना गई!' सोचते ही उस की मुट्ठिया भिच आई। रेस्तोरा से निकल कर वह खार की अनजानी सडको पर देर तक घूमता रहा।

रात को प्राय दस बजे वह बम्बई की एक इमारत मे बेला का हुलिया दर्ज करा रहा था। नागरिक पोशाक मे खुफिया विभाग का वह अधिकारी एक सजीला युवक था। उसके होठो पर बार-बार मुस्कान छन आती। बलवन्त को इस से जो अकुलाहट हो रही थी, उसे छिपाने के लिए वह अपनी मूछो पर हाथ फेरने लगता।

उस रात उस से खाना न खाया गया।

बारह

"सर्वनाश !"

हीरेन्द्रजी प्रवेश करते ही बोले । उन के हाथ मे ताजा अखबार था, जिस मे कच्छ-समझौते पर आज होने जा रहे सयुक्त-हस्ताक्षरो के विस्तृत समाचार छपे थे । "भार्गवजी ! यह क्या हो रहा है ? इस तरह तो सारा देश नष्ट हो जाएगा । दुश्मन हमारे घर मे घुसा आ रहा है और हम हैं कि उसे गले से लगा रहे है ।"

भार्गव दाढी बना रहे थे । ठुड्डी के नीचे ब्रश रगडते हुए उन्होने कहा, "आप बैठिए तो सही ।"

हीरेन्द्रजी बैठे और बोले, "क्या बैठे खाक ! यह सारे देश के सम्मान का प्रश्न है । समझौता करने से पहले शास्त्रीजी को विरोधी दलो से भी पूछना चाहिए था । उन्होने तो उन का अस्तित्व ही नकार दिया है । यही रवैया रहा तो उन्हे गद्दी छोडनी पडेगी ।"

"अरे, भई सुनो," भार्गव ने रसोईघर की ओर आवाज दी, "चाय ज्यादा रखना । अग्रवालजी आए है ।"

"जी, अच्छा ।" लक्ष्मी ने उस तरफ से उत्तर दिया ।

भार्गव भी उलझे हुए लगे । शीशे मे देखते हुए उन्होने सावधानी-पूर्वक रेजर चलाया ।

"भला कोई तुक है ?" हीरेन्द्रजी फिर बोले, "सरदार पोस्ट और विगोकोट से हमारी फौजे पीछे क्यो हटे ? कहा तो शास्त्रीजी ने कहा था कि एक इच जमीन नही देगे और कहा बीस मील लम्बी भारतीय सरहद पर उन्होने पाकिस्तानी गश्त की इजाजत दे दी !"

"मैं भी इस समझौते से सन्तुष्ट नही हू, लेकिन विरोधी दलो को अभी कोई कार्रवाई नही करनी चाहिए।"

"क्यो ? डीग से लेकर सुराई तक पाकिस्तानियो ने सडक बना ली—हमारे अपने इलाके मे बना ली—इस का मतलब यह थोडे ही है कि वहा उन का अधिकार हो गया ? जनसघ ने घोषणा की है कि वह शास्त्री सरकार का कडा विरोध करेगा।" हीरेन्द्रजी उत्तेजित हो गए।

भार्गव ने इस सारी उत्तेजना पर यह कह कर पानी डाल दिया, "सुनाइए, वीरेन्द्र के क्या हाल है ?"

हीरेन्द्रजी का चेहरा बुझने लगा। क्षण भर वह नीचे देख गए। बोले, "अजी साहब, क्या जमाना आया है। वीरेन्द्र से मैं ने ज्यादा ही आशाए रखी थी। यह मेरी भूल थी।"

'क्यो ? क्या हुआ ?" सब मालूम होने पर भी भार्गव ने अनभिज्ञता दिखाई।

"जब वह सयम रख ही नही सकता था तो कहा किस ने था कि मेरी बात माने ? साफ कह देता कि मुझ से यह नही होने का। इस की बजाय, मेरे सामने तो वह हिमालय जैसी दृढता दिखाता रहा और मेरी अनुपस्थिति मे छिप-छिप कर अब क्या बताऊ ! अभी चार दिन पहले छोटे पप्पू ने बात बताई तो सच कहता हू, खून खौल गया। वीरेन्द्र को बुला कर खूब डाटा कि शर्म नही आती लुगाई की गुलामी करते ? चोरी-चोरी मिलते हो ? उस ने भी जवाब देने शुरू कर दिए। भार्गव साहब, जीवन मे यह पहला मौका था, जब वीरेन्द्र ने मेरे सामने जबान चलाई। शादी के बाद सचमुच लोग कितने बदल जाते हे। नारी मनुष्य को अन्धा कर देती है।"

"अरे ! इतना कुछ हुआ ? मुझे पता ही नही था।"

"कहा से होता ? आप इतने व्यस्त रहते है कि पडोसियो के सुख-दुख का साथ कैसे निभाए ?"

"नही, नही, अग्रवालजी, असल मे हुआ यह कि मै " भार्गव ने वाक्य आधा ही छोड दिया और उठ कर वाश-बेसिन के पास पहुचे, ब्रश, रेजर वगैरह धोने लगे।

"आप का मत है कि " हीरेन्द्रजी ने अपना प्रश्न दोहराया, "विरोधी दल अभी खामोश रहे। लेकिन क्यो ?"

"इस लिए कि अभी सरकारी प्रवक्ता ने समझौते को विस्तारपूर्वक सामने नही रखा।"

"तब भी, भाई साहब, देख लीजिएगा, बात वही-की-वही रहेगी। हमारी फौजो को दो ऐसी चौकियो से हट जाना है, जो विशुद्ध रूप से भारतीय हैं—इस कटु सत्य को किसी तरह न छिपाया जा सकेगा।"

"फिर भी सरकार के मत को पूरी तरह समझे बिना एकाएक विरोध प्रकट कर देना "

लक्ष्मी चाय रख गई।

"सरकार ? इसी को सरकार कहते है ? इतनी अस्थिर नीति रखने वाली सरकार सरकार नही, एक मजाक है। शास्त्रीजी का देशव्यापी विरोध होगा। समझ मे नही आता, ऐसे अपमानजनक प्रस्ताव की स्वीकृति शास्त्रीजी ने दे कैसे दी। ब्रिटेन शुरू से ही अपने शान्ति-प्रस्तावो मे ऐसे परिवर्तन करता रहा है कि पाकिस्तान को लाभ हो।"

"अग्रवालजी, जब तक सरकारी प्रवक्ता की ओर से डीटेल्स • "

" 'डीटेल्स' ? इस की जगह आप 'बारीकिया' नही कह सकते ?"

"समझौते की बारीकियो का अध्ययन कर के ही कहा जा सकता है कि शास्त्रीजी की भूल है या नही।"

दोपहर तक विजय चौक पर जनसघ के पाच सौ प्रदर्शनकारी जमा हो चुके थे। जनसघ के सदस्य न होने पर भी हीरेन्द्रजी एक 'सामान्य

नागरिक' की हैसियत से भीड मे मौजूद थे।

नारे लगने लगे—

"कच्छ-समझौता—?"

"रद्द करो!"

"लालबहादुर शास्त्री—?"

"गद्दी छोडो!"

सचिवालय के पहले प्रवेश-द्वार पर मजबूत पुलिस जत्था तैनात था। अतिरिक्त जिला न्यायाधीश ने प्रदर्शनकारियो से, जिन की सख्या तब तक प्राय एक हजार हो चुकी थी, वापस लौट जाने को कहा, जिस के जवाब मे हीरेन्द्रजी ने दोनो हाथ उछालते हुए नारा लगा दिया, "कच्छ-समझौता—?"

"रद्द करो!"

पुलिस-चुनौती ने प्रदर्शनकारियो की उत्तेजना दोहरी कर दी थी, इस के बावजूद जनसघ का लाक्षणिक अनुशासन प्रत्येक मे देखा जा सका। पुलिस ने रस्सो और लाठियो से प्रवेश-द्वार बन्द कर दिया था। लोगो का दबाव पडने से एकाध बार रस्सो-लाठियो का यह व्यूह टूटने-सा लगा, लेकिन लोगो को तुरन्त पीछे धकेल दिया गया। फिर नेताओ और प्रमुख प्रदर्शनकारियो की धरपकड शुरू हुई। जब ससद-सदस्य श्री अटलबिहारी वाजपेयी की गिरफ्तारी हो रही थी, हीरेन्द्रजी ने देखा कि भार्गव आ पहुचे है और फोटो खीच रहे है। हीरेन्द्रजी ने अपने होठो पर उभर रही मुस्कान को बडी मुश्किल से रोका। वह वाजपेयीजी के पीछे खडे थे, फोटो मे अवश्य उन का चेहरा आ गया था। कल 'प्रभात' के सभी पाठको के सामने हीरेन्द्रजी भी भार्गव की दृष्टि जब तक उन पर पडती, पुलिस उन्हे भी हिरासत मे ले चुकी थी।

गिरफ्तारी के समय वाजपेयीजी ने घोषणा की थी कि आज से चौथे दिन, याने चार जुलाई १९६५ को सपूर्ण देश मे जनसघ की ओर

से 'कच्छ-समझौता-विरोध-दिवस' मनाया जाएगा ।

समझौते के अनुसार दोनो देशो की सेनाओ को पहली जनवरी १९६५ की 'जैसे थे' वाली स्थिति मे ग्रा जाना था । सरकारी प्रवक्ता के अनुसार चूकि पाकिस्तान ने ऐसे ग्रनेक प्रमाण जुटा लिए थे, जिन से यह साबित होता था कि पाकिस्तान पहली जनवरी से भी पहले से सुराई-डीग सडक तक गश्त लगाता रहा है, इस लिए भारत ने फिलहाल यह सुझाव मान लिया था कि भारत के साथ-साथ पाकिस्तान भी इस इलाके मे गश्त लगाने का अधिकार रखे—लेकिन प्रवक्ता ने जोर दे कर कहा कि यह अस्थायी प्रबन्ध है । समझौते के ग्रनुसार पाकिस्तान को अपनी पूरी आक्रामक घुसपैठ वापस ले लेनी है । कच्छ-सिन्ध की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर यदि दोनो देशो मे राजनीतिक विचार-विमर्श से समझौता न हो सके तो सीमा से सम्बन्धित तथ्यो पर विचार करने के लिए तीन व्यक्तियो की एक समिति बनाई जाने वाली थी । तब उन तीन मे से एक प्रतिनिधि भारत का होता, एक पाकिस्तान का ग्रौर तीसरा किसी तटस्थ देश का । सीमा के तथ्यो की जाच होते ही पाकिस्तान को अपनी गश्त वापस ले लेनी होगी, क्योकि भारत के पास ऐसे ग्रनेक प्रमाण है, जिन से सिद्ध किया जा सकता है कि सन् ४७ से ही कच्छ गुजरात के अन्तर्गत है और गुजरात-सिन्ध-सीमा कभी किसी रूप मे विवादास्पद नही रही ।

जनसघ का विरोध यह था कि कारण चाहे जो भी हो, लेकिन अपने प्रदेश मे शत्रु की गश्त का अधिकार मान लेना राष्ट्रीय सम्मान की दृष्टि से अत्यन्त आपत्तिजनक है ।

इस दौरान भारत ने कारगिल की दो चौकिया भी खाली कर दी थी । कश्मीर मे युद्ध-विराम-रेखा की इन दो चौकियो पर शत्रु ने ग्रपनी सैनिक कारवाइया इतनी बढा दी थी कि श्रीनगर-लेह सडक के लिए बहुत खतरा पैदा हो गया था । इसी सडक से चूकि भारतीय सेना को लद्दाख मे रसद पहुचाई जाती है, जहा वह चीनियो के सामने डटी हुई

है, इस लिए सडक की सुरक्षा के लिए कारगिल की चौकिया अपने अधिकार मे करना अनिवार्य हो गया था। सयुक्त-राष्ट्र-सघ के निरीक्षक न होने से शत्रु ने इस क्षेत्र मे कश्मीर पर हमला भी कर दिया था। जवाबी हमले मे भारतीय जवानो ने अभूतपूर्व वीरता और बलिदान का परिचय देते हुए पाकिस्तानी क्षेत्र मे घुस कर दोनो चौकियो को जीत लिया। अब चूकि सयुक्त-राष्ट्र-सघ के निरीक्षक आ गए थे और उन्होने श्रीनगर-लेह सडक की पूर्ण सुरक्षा का आश्वासन दिया था, भारतीय सेनाओ ने वापस अपने क्षेत्र मे आ जाना ही उचित समझा था। इस का भी विरोध करने वालो की कमी नही थी।

"नही !" लतीफ मिया बोले, "यह धोखा है। मैं जानता हू कि यह एक धोखा है। दस्तखत करने के बावजूद पाकिस्तान ने हिन्दोस्ता के साथ कोई समझौता नही किया है। इस्लाम के बन्दो को पूरा हक है कि वे काफिरो को धोखा दे। कहावत है कि मुहब्बत और लडाई मे हर गुनाह माफ होता है। हम हिन्दोस्ता से लड रहे है। लड रहे है और लडते रहना है।"

अख्तर, मिस किम विण्टर्स और मिस चालीस उन्हे घेर कर बैठे थे। अख्तर सिगरेट-पर-सिगरेट पी रहा था। लतीफ मिया के पास आज केवल तीन अमरीकी चुरुट बचे थे, जिन मे से एक भी वह अख्तर को देना नही चाहते थे।

चुरुट बुझ गया। उसे लौ दिखाते हुए उन्होने कहा, "दस्तखत के बाद भी हम त्रिपुरा मे लगातार फायरिंग कर रहे है। हमारा यह इशारा हिन्दोस्ता शायद नही समझेगा। वह अचरज ही करता रह जाएगा। उस की हालत खस्ता तो तब होगी, जब " और अपनी बात अधूरी ही रहने दे कर वह हँसने लगे। शेष तीनो के चेहरो पर भी मुस्कान आई।

खुली खिडकी मे से जामा मस्जिद के गुम्बद का एक हिस्सा दिखाई दे रहा था। शाम धुधली होती जा रही थी। मछली बाज़ार दूर होने से उस की बदबू यहा तक नही आती थी। नीचे की सकरी गली मे उठता लोगो, रिक्शो, स्कूटरो आदि का आवारा शोर बार-बार झाक जाता।

यह कमरा, जो दो सप्ताह पहले किराए पर लिया गया था, दूसरी मजिल पर था। उस का जीना बिल्कुल अलग था और ऊपर भी किसी तरह की रोकटोक नही थी। मकान-मालिक दूर, नई सडक पर कही रहता था। तीन महीनो का किराया एकमुश्त मिल जाने से वह बहुत सन्तुष्ट था। लतीफ मिया, अख्तर या दोनो महिला जासूसो मे से कोई यहा रहता था। इस का इस्तेमाल कभी-कभार मिलने-बैठने के लिए हुआ करता।

चीन से छप कर आए सौ-सौ के नोटो के कुछ बण्डल उन्हे आज ही दिए गए थे। ये नोट जनता मे जारी कर देने थे। "डम्पिग का इन्तजाम दूसरे बडे शहरो मे भी हो गया है।" लतीफ मिया ने बताया, फिर अख्तर की ओर देखा, "मैं ये नोट तुम्हे नही दूगा। 'डम्पिग' मिस चालीस और मिस किम विण्टर्स को करनी है, तुम्हे नही। फिलहाल तुम्हारा काम है अफवाहे फैलाना "

अजमलखा रोड की कपडो की एक दूकान मे उन्होने सौ का एक नोट 'खर्च' किया। कपडो का बण्डल उठा कर वे बाहर निकली। नजदीक ही टैक्सी-स्टैण्ड था।

"आइए, मेम सा'ब !" एक सरदार ने आगे बढते हुए कहा।

"वैल, डार्लिङ्ग, वी विल नाऊ गो टु चादनी चौक।" मिस चालीस ने किम का हाथ आत्मीयता से पकड लिया। दोनो टैक्सी मे बैठी। मिस चालीस ने टैक्सी-ड्राइवर को चांदनी चौक चलने का निर्देश दिया।

"मेम सा'ब, इस का चेञ्ज तो मेरे पास नही है ।" टैक्सी का बिल अदा करते समय सौ का नोट पकडा दिया गया तो ड्राइवर बोला ।

"नही है तो ले आओ कही से ।" मिस चालीस ने साधिकार उत्तर दिया । सरदार चला गया । उस की आखो मे चमक आ गई, क्योकि खासी अच्छी 'टिप' पाने की उसे पूरी उम्मीद थी । खुले नोट ले कर आने मे उसे करीब पन्द्रह मिनट लगे, जिस दौरान किम और चालीस ने तय किया कि सौ का एक नोट यहा टैक्सी मे भी गिरा दिया जाए । टैक्सी मे जो भी आ कर बैठेगा, चुपचाप उसे जेब मे रख लेगा । ग्राहक न सही, अगर खुद टैक्सी-ड्राइवर की निगाह पडी तो उस की भी बाछे खिल जाएगी ।

किम ने नोट अपने पैरो के पास गिरा दिया । वह स्कर्ट पहने हुए थी, जिस का घेर घुटनो तक ही होने के कारण नोट दूर से दिखाई पड सकता था । मिस चालीस ने झुक कर उसे अपने पैरो के पास खीच लिया और ऊपर से साडी फैला दी ।

ड्राइवर को उन्होने पूरे तीन रुपयो की टिप दी । बाजार मे पन्द्रह-बीस मिनट चक्कर लगा कर उन्होने एक जौहरी की चमचमाती दूकान मे प्रवेश किया । जौहरी के प्रतिनिधि ने तुरन्त आगे आ कर उन का स्वागत किया । वह बहुत अच्छी अग्रेजी बोलता था । उस ने बताया कि 'टिपिकल ओरिएण्टल स्टाइल' के कुछ नए ही गहने उस के पास हैं—ऐसे गहने, जो पूरी दिल्ली क्या, पूरे देश मे कही और न मिलेगे ।

"रीयली ?" किम ने उत्साहित होते हुए कहा, "आय विल बी ट्र ग्लैड टु हैव अ लुक ।"

"प्लीज कम दिस साइड " वह उन्हे एक कोने मे ले गया ।

उन्होने लगभग पाच सौ का माल खरीदा । दिखावे के लिए उन्होने मोल-भाव भी किया । सौदा पौने पाच सौ मे तय हो गया ।

वे जानती थी कि उन्हे एक ही इलाके मे ज्यादा समय तक नही

रुकना चाहिए। तुरन्त एक टैक्सी मे वे डिफेन्स कालोनी की ओर रवाना हो गई।

अख्तर रूपनगर की बजाय तिलकनगर की बस मे बैठ गया। रात अभी-अभी हुई थी। छह नम्बर की डबल-डेकर बस हर मोड पर अपनी चाल धीमी कर लेती। अख्तर ऊपर के डेक से सडक के लोगो पर निगाह डालता तो वे उसे कुछ नाटे नजर आते। वह अपने अखबार पर निगाह फेरने लगा। 'बृहस्पतिवार, आठ जुलाई, '६५ नागपुर-हैदराबाद के तीन दिनो के सफर के बाद प्रधान-मत्री शास्त्री आज शाम राजधानी लौट आए। उन्होने कच्छ-समझौते पर बोलते हुए नागपुर की एक 'न्यूज-कान्फ्रेन्स' मे कहा कि कच्छ का मामला 'पचो' को 'सौपा' नही जाएगा। समझौते मे केवल इतनी बात मजूर की गई है कि कच्छ-सिध-सीमा से सम्बन्धित प्रमाणो की जाच तीन व्यक्तियो की एक 'समिति' या 'ट्रिब्यूनल' करेगी। 'समिति' केवल जाच कर सकेगी, फैसला देने का अधिकार उसे न होगा।'

"बताइए साहब," उस ने बगल मे बैठे युवक से कहा, "यह लफ्जो की जादूगरी नही तो क्या है ?"

"जी ?"

"शास्त्रीजी ने नागपुर मे क्या कहा है—देखिए! जब सबूतो की जाच दूसरो द्वारा होगी तो फैसला कैसे उन के द्वारा नही होगा ? बिल्कुल साफ है कि फैसला भी वे ही करेगे।"

ऊपर के डेक पर चूकि एजिन का शोर बहुत कम था, उस की आवाज काफी दूर तक सुनी जा सकी।

"देख लीजिएगा " समूचे डेक को सम्बोधित-सा कर रहे अख्तर का स्वर और तेज हो उठा, "कच्छ-समझौते के भला क्या मायने है, जब··· जब हमारी दूसरी सरहदो पर फायरिग हो रही हो ? पाकिस्तानी

फायरिग ? लगता है, जल्दी ही पाकिस्तान फिर से कही हमला करेगा।"

सुन कर कठोर आघात पहुचा हो, इस तरह वह युवक अख्तर की ओर ताकने लगा। अख्तर ने यहा क्षणिक मौन कायम रखा, जिस से लोग कुछ-कुछ आतकित हो गए। या, कम-से-कम उस की भाषण-प्रतिभा का लोहा तो मान ही गए। उस ने आगे चलाया, "हमारे पास क्या है ? एक-एक बीते जितने नैट ! वे अमरीकी स्टार फाइटर्स और सैबर जेट्स के सामने कैसे टिकेगे ? हमारे टैक है पुराने माडल के। हमारे हथगोले भी माडर्न हथगोलो के सामने बिल्कुल बेकार रहेगे। हमारे पास् अच्छी गाइडेड मिसाइल्स नही है। हम यो कहिए बिल्कुल निहत्थे है—और—और घिरे हुए है चीन-पाकिस्तान जैसे दुश्मनो से। बताइए, साहब, क्या होगा इस देश का ?"

वह लोगो की स्वीकारात्मक फुसफुसाहटे सुन सका।

"वैसे बताना तो नही चाहिए, लेकिन मेरे कुछ रिश्तेदार डिफेन्स मे हे। उन्होने खुद मुझे बताया है कि छोटे हमलो की बात जाने दीजिए, उन का सामना कर लेने मे कोई करामात नही, लेकिन अगर बडा हमला हुआ तो तो हमारे पास, सच कहता हू, कुछ नही है। हमारी सरकार बाते बनाना जानती है—सिर्फ बाते।"

"और आप भी सिर्फ बाते करते है।" वह युवक तो कुछ न बोला, लेकिन तीन सीटे दूर बैठा, विद्यार्थी-सा लगता एक लडका तैश मे आ गया। चूकि अख्तर उस से दूर था, लडके की आवाज तेज हो उठी, "आप के रिश्तेदार फौज मे है तो होगे। उन्होने आप को कुछ फौजी भेद दे दिए हे तो यह उन की गलती है। उन से भी बडी गलती आप कर रहे है—आप अफवाहे फैला रहे है। आप को इस का हक नही है।"

"अफवाहे ? सच बोलने को आप अफवाहे फैलाना कहते हे ? खूब !" अख्तर हसा।

बस पूसा रोड के स्टाप पर रुकी और चल पडी। ऊपर के डेक पर

केवल एक सीट खाली थी, जिस मे एक मोटा आदमी आ कर आराम से बैठ गया। वह पान चबा रहा था। उस की आखो के नीचे चरबी की झुर्रिया थी।

"ठहरिए! आप इन से पूछिए। ही इज ए थर्ड मैन। क्यो, साहब?" अख्तर उस मोटे आदमी से मुखातिब हो गया, "सच बोलने और अफवाहे फैलाने मे फर्क है या नही?"

"है। है क्यो नही!" मोटे ने उत्तर दिया।

"देखिए! यह भी कहते है कि फर्क है! फर्क क्यो नही है जी?" अख्तर ने विद्यार्थी को चुनौती दी। विद्यार्थी तिलमिला गया, "लीजिए! लोगो को यही नही मालूम कि अफवाह फैलाना और सच बोलना किसे कहते है। इन के रिश्तेदार फौज मे है या नही, कौन जानता है? लेकिन इस वक्त यह हीरो बने हुए ह। हम स-ब इन की बाते सुन रहे है, इन्हे होशियार समझ रहे हे। हीरो बनने के लिए तो यह अपने को एयर-मार्शल अर्जुनसिह का बेटा भी कह सकते है!"

अख्तर ने सख्त एतराज उठाया, "जबान सम्भाल कर बात करिए, मिस्टर!"

विद्यार्थी के चार-पाच दोस्त अगल-बगल की सीटो मे बैठे थे। उन्होने हल्ला मचा दिया, "जबान सम्भाल कर आप बात करिए, मिस्टर! आप होते कौन है!"

सारी बहस का तटस्थ दर्शक बना कण्डक्टर लपक कर आया और बीचबचाव करने लगा।

मोटा आदमी अख्तर को गौर से देख रहा था।

विद्यार्थी और उस के दोस्तो ने टिकटे नही खरीदी थी। उन का ध्यान कण्डक्टर को पैसे देने मे बट गया। बस रुक रही थी।

अख्तर की बगल मे बैठा वह युवक उठा और डेक की सीढिया उतरने लगा। तुरन्त वह मोटा आदमी अख्तर की बगल मे आ बैठा और बोला,

"आप भी क्या इन लडको से उलझने लगे ! आजकल के विद्यार्थी आप जानते ही है, कैसे होते है।"

अख्तर मुस्कराया। कुछ देर बाद वह बोला, "हम कहते है कि भारत मे प्रजातन्त्र है, तानाशाही नही, लेकिन यह तानाशाही नही तो क्या है ? प्रजातन्त्र मे आप किसी को अपना मत जाहिर करने से रोक नही सकते, लेकिन जनसघ ने कच्छ-समझौते के खिलाफ आवाज उठाई तो झट से उस के नेताओ को गिरफ्तार कर लिया गया। यह कहाँ का प्रजातन्त्र है ?"

"मैं आप की बात मानने के लिए तैयार नही हू।" मोटे ने कहा, "प्रजातन्त्र के मायने यह भी नही है कि जो जैसा जी मे आए, वैसा करता रहे। इस तरह तो भयानक अराजकता फैल जाएगी। प्रजातन्त्र के भी कुछ नियम होते है, जिन मे सब को बधना पडता है। बिना नियम के कोई शासन नही चल सकता।"

"नियम तो पाकिस्तान मे भी है। और वहा तानाशाही भी उस तरह की नही है, जैसी कि हिन्दुस्तान के लोग समझते हैं। पाकिस्तान मे मूल-भूत प्रजातन्त्र याने 'बेसिक डैमोक्रेसी' है। वहा भी प्रेसीडेण्ट का चुनाव 'निर्वाचन मण्डल' द्वारा होता है।"

"मैं जानता हू।" मोटा मुस्कराया, "लेकिन प्रेसीडेण्ट के चुनाव मे खडे होने के लिए वहा मुसलमान होना एक लाजिमी शर्त है। 'बेसिक डैमोक्रेसी' कह देने से ही कोई तानाशाही प्रजातन्त्र नही हो जाती। बताइए, सन् ४७ से ले कर आज तक पाकिस्तान मे एक भी आम चुनाव हुआ है ?"

"मैं नही समझता कि इस से कोई फर्क पडता है।"

"फर्क क्यो नही पडता ?"

दोनो की बातचीत अब सामान्य स्वर मे हो रही थी। आसपास के दो-चार लोग ही उस मे मूक दिलचस्पी ले रहे थे। दूसरे अधिकाश खामोश

बैठे थे। अख्तर ने उत्तर दिया, "इस लिए कि आम जनता कभी सही मायनो मे चुनाव नही करती। उस मे इतनी सूझबूझ ही नही होती कि अपने असली शासक को पहचान सके। हमेशा वह गलत शख्स को वोट देती है। हिन्दुस्तानी डैमोक्रेसी की बजाय पाकिस्तानी डैमोक्रेसी वही अच्छी है। रही तानाशाही की बात, उस से तो, जैसा कि मै ने अभी कहा, भारत भी छुटकारा नही पा सका है।"

"उन की तानाशाही अच्छी है या हमारा प्रजातन्त्र, इस का सबूत तो वे लोग है, जो पाकिस्तान से भाग-भाग कर यहा आ रहे है—रोज ! मालूम है ? पाकिस्तान बनने के बाद नब्बे लाख शरणार्थी भारत आ चुके है। यह सख्या आस्ट्रेलिया की पूरी आबादी से ज्यादा है।" मोटे ने कहा। उस का चेहरा बस की छत की ओर उठ गया और ठुड्डी आगे निकल आई। निश्चय ही उस ने निचले होठ और मसूढो के बीच तम्बाकू दबा रखा था।

"शरणार्थी आने के दूसरे कारण होगे।"

"क्या हो सकते है ? बेकारी और गरीबी ने पाकिस्तान को पीस डाला है। दूसरी तरफ भारतीय लोकतन्त्र दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की कर रहा है।"

"खैर अपना-अपना मत है।"

बस वैस्ट पटेल नगर पार कर चुकी तो मोटे आदमी ने एकाएक पूछा, "आप कहा जा रहे है ?"

"जी ?" अख्तर चौक गया।

"मै ने पूछा, आप कहा जा रहे है ?"

"मोती नगर।" अख्तर ने कहा। उस ने टिकट भी वही का लिया था। मोतीनगर से वह सब्जी मण्डी की कोई बस पकड लेगा, जहा से वह आसानी के साथ रूपनगर पहुच कर अपनी मियानी मे जा सकता था।

"मोतीनगर मे ही रहते है क्या ?" मोटे ने फिर पूछा।

"जी हा।" अख्तर ने टालने के लिए कहा। 'रूपनगर मे रहता हू' कहता तो शायद यह पूछा जाता कि फिर आप इस वक्त मोतीनगर क्या करने जा रहे है ? कुछ लोगो को खामखाह सभी-कुछ पूछ लेने की आदत होती है। "जी हा" कह कर वह खिडकी से बाहर देखने लगा, ताकि कुछ और न पूछा जाए, लेकिन मोटा तुरन्त बोला, "खूब ! मैं भी वही रहता हू।"

"अच्छा ?" अख्तर ने उस की ओर एक औपचारिक मुस्कान फेकी।

"कौन-से ब्लाक मे है आप ?"

इस का उत्तर देना टेढी खीर थी। उत्तर न देना भी ठीक नही था। "तेरहवा ब्लाक।" कहते समय उस ने बौखलाहट अनुभव की।

"तेरहवे मे ? कभी नजर नही आए ? मैं चौदहवे मे हू।"

अख्तर ने रूखेपन से उत्तर दिया, "जी हा, मेरी बहुत कम मिलने-जुलने की आदत है।"

"कहा काम करते है ?"

अख्तर को बडी कुढन हुई। उस ने मोटे को सीधे-सीधे देखा और लहजे को चबाते हुए कहा, "औ-र आ-प क-हा का-म क-र-ते है ?"

"कोई बात नही, नही बताना चाहते तो !" मोटा झेप गया। मोतीनगर आने पर वह तुरन्त उतर गया।

अख्तर का मन हुआ, यहा उतरे ही नही। आगे रजौरी-गार्डन या तिलकनगर चला जाए। सब्जी मण्डी की बसे वहा से भी मिल जाएगी। मोटे ने सचमुच उसे बोर कर दिया था। लेकिन वह उतर पडा—सामने 'ज्योति-रेस्तोरा' का चमकता बोर्ड नजर आया था। बस मे उन विद्यार्थियो से हुई छोटी-सी झडप ने उसे इतना बोर कर दिया था कि उस ने सोचा—'एस्प्रेसो' पी कर राहत मिलेगी। आगे कोई अच्छा रेस्तोरा नही है।

बस चली गई। उस ने दाए-बाए देख कर सडक पार की।

लगभग आधे घण्टे बाद वह रेस्तोरा से काफी पी कर बाहर निकला और सोलह नम्बर के बस-स्टाप पर खडा हो गया। इत्तफाक से सोलह नम्बर जल्दी ही आ गई और उस मे उसे जगह भी मिल गई।

बस धीमी गुर्राहट के साथ चल पडी।

बस के पीछे-पीछे एक टैक्सी आ रही थी और उस मे वही मोटा आदमी बैठा हुआ था, जो 'चौदहवे ब्लाक मे रहता' था।

बम से उतर कर वह दूर, एक पान की दूकान पर खडा हो गया था। अपनी गिद्ध-दृष्टि से उस ने अख्तर को 'ज्योति-रेस्तोरा' मे प्रवेश करते, फिर बाहर निकलते देखा था।

टैक्सी पीछा करती रही •

तेरह

किम के साथ पिछले दिनो बिताए गए आत्मीय क्षणो ने अख्तर मे बहुत बडा अन्तर ला दिया । एकाएक उस ने महसूस किया कि सईदा के प्रति उस के मन मे आकर्षण का जो उबाल आया था, वह खत्म हो गया है । उसे आश्चर्य हुआ कि क्या यह वासना ही थी, जो उसे सईदा की ओर खीच रही थी ? यदि किम कही चली जाए, क्या फिर से वह सईदा के प्रति वही उबाल अनुभव करेगा ?

सईदा के साथ तनावपूर्ण सम्बन्धो मे अनोखापन उसी दिन से आ गया था, जब वह पहली बार बस के इन्तजार के बहाने उस के पास खडा हुआ था और उस से बिल्कुल नही बोला था ।

दो-एक दिनो की आड मे वह इस प्रसग को दोहराता रहा था । तब सईदा ने स्कूटर मे बैठ कर वहा से चले जाने मे समस्या का हल नही देखा था । ढीठता के उत्तर मे ढीठता ही हो सकती है, ऐसा सोच कर वह अख्तर की उपस्थिति को पूरी तरह नकारती हुई निर्विकार खडी रहती । कई बार ऐसा भी हुआ था कि वह जिस बस मे चढती, उसी मे अख्तर चढता और उस की सीट के पास ही खडा हो जाता ।

पहली बार जब वह उस के बगल की सीट मे आ कर बैठा तो सईदा की बौखलाहट सीमा पार करने लगी, लेकिन उस ने किसी तरह अपने को सम्भाल लिया । सहजता के साथ वह या तो 'ईवनिंग-न्यूज' पढती रही या खिडकी से बाहर देखती रही । अपना स्टाप आने पर वह उतर गई और अख्तर आगे चला गया । एकाध बार अख्तर भी उसी स्टाप पर उतरा, जहा सईदा उतरी, लेकिन काफी दूर तक पीछे-पीछे आने के

बावजूद उस ने बातचीत करने का कोई प्रयास न किया।

लतीफ मिया ने अख्तर को एक बार टोका भी था कि वह अपना 'काम' का समय रेडियो-स्टेशन की एक मामूली लडकी के पीछे क्यो खराब करता है। अख्तर चौक गया था कि उन्हे इस का पता कब चला। मुस्करा कर उस ने सईदा का परिचय देते हुए कहा था, "मुझे उम्मीद है कि उस की मदद से रेडियो मे गडबडी फैलाई जा सकेगी।" तब लतीफ मिया की आखो मे सन्तोष झलक आया था।

सईदा को अख्तर की हरकते बचकानी लग रही थी, लेकिन वह इस से भी इन्कार नही कर सकती थी कि हर बार उसे प्रकट या अप्रकट रोमाच अनुभव हुआ था। बडा आत्म-सन्तोष मिला था उसे कि उस के कारण कोई इतनी जहमत मोल लेने के लिए मजबूर है। अख्तर हर बार न जाने कितना लम्बा इन्तजार करता होगा! ऊब न जाता होगा? कहा किस ने है जनाब से कि बस-स्टाप पर अकसर आ कर इतजार करे? खडे रहे अपनी बगुले जैसी दो सीकिया टागो पर! और—थकते-रहे-थकते-रहे-थकते-रहे हुह!

पहले ड्यूटी समाप्त होने के बाद उसे रेडियो-स्टेशन से बाहर निकल आने की कोई जल्दी नही होती थी। अब? ड्यूटी खत्म होते ही उसे यह कौतूहल कुरेदने-सा लगता कि अख्तर बस-स्टाप पर उस के इतजार मे है या नही? मन करता, अभी निकले बाहर—और देखे •

यदि वह बस-स्टाप पर नजर आ जाता, सईदा को अबूझा सतोष मिलता। यदि न आता, उसे तसल्ली तो मिलती, लेकिन

अकेले क्षणो मे उस से यह सोचे बिना न रहा जाता कि बलवन्त के मन मे भी अख्तर जैसी जिद कभी पैदा हो सकती थी या नही। कई बार उसे यहा तक लगता कि खुद उसी ने बलवन्त मे रुचि लेना शुरू किया था—उसे 'लिफ्ट' देने मे खुद उसी ने ज्यादा तेजी दिखाई थी। बलवन्त के शौर्य से वह चकाचौध हो गई थी, लेकिन लेकिन यदि उस ने बढावा

न दिया होता ? क्या फिर भी बलवन्त उस के पीछे आया होता ? उसी जिद के साथ, जिस जिद से अख्तर आ रहा है ? नही, नही, सईदा को इस तरह नही सोचना चाहिए। ऐसा सोचना ही बलवन्त के साथ अन्याय है। लेकिन सोचे बिना रहा क्यो नही जाता ? वह जितना सघर्ष करती, उतना ही अख्तर उसे निरपराध लगने लगता। अख्तर के साथ कही वह ज्यादती तो नही कर रही ? बार-बार वह तौलने की कोशिश करती। पहली आवश्यकता यही थी कि सईदा बलवन्त की हो चुकी है, यह अख्तर को बता दिया जाए। उसे शायद आघात पहुचेगा, लेकिन ऐसा जितनी जल्दी हो सके, उतना अच्छा। जितनी देर होगी इस मे, अख्तर के लिए यह उतना ही असहनीय होता जाएगा ओह ! कैसी बेवकूफी-भरी बाते ! सईदा झुझलाती आखिर वह यही कैसे जानती है कि अख्तर को उस से प्यार या 'प्यारनुमा' कुछ हो गया है ? अख्तर ने कभी उस से 'ऐसी' कोई बात नही कही। केवल उस की जिद से, बस-स्टाप पर अकसर किए जाते इतजार से इतनी बडी बात का अन्दाजा कैसे लग सकता है ? नही अख्तर अलग ही तरह का युवक है। वह बहुत जिद्दी है। अपनी जिद मे ही वह पीछे लगा हुआ है, वरना उस का इरादा दोस्ती के अलावा और कुछ नही हो सकता।

शायद ऐसा बीस-पच्चीस बार हो चुका था· कैसा रोमाचक, कैसा 'डिफरेण्ट' इतजार जब वे एक-दूसरे को बिल्कुल न पहचान रहे होते और एक ही बस की अगल-बगल की सीटो मे बैठ जाते उस दिन अख्तर पच्चीसवी से भी शायद ज्यादह-वी बार अपनी 'सीकिया टागो पर थकता-थकता-थकता-थकता' नजर आया तो सईदा की मुस्कराहट न रुक सकी।

अख्तर की निगाह किसी और दिशा मे थी, लेकिन ज्यो ही सईदा के चेहरे पर 'मैं आप को पहचानती हू' वाला भाव उभरा, तुरन्त उस ने पलट कर देखा। 'वाह !' सईदा ने सोचा, 'किसी को पता न चले, ऐसी

निगाह से देखना मर्दो को भी खूब आता है !'

अख्तर कह रहा था, "हुजूर की खिदमत मे आदाब बजा लाता हू "

कितने दिनो बाद उस ने अख्तर की आवाज सुनी थी ! सईदा ने पाया कि वह दृढ, औपचारिक स्वर मे कह रही है (या पूछ रही है ?) "कब से खडे है ?"

"कई हफ्तो से ।" अख्तर हसा ।

स्टाप पर ज्यादा भीड नही थी । सईदा आज पाच बजे से पहले ही निकल आई थी । भीड होने लगती है पाच के बाद । होठो पर उभरती मुस्कान को सईदा ने झट रोक लिया । साहस के साथ अख्तर की ओर सीधे देखती हुई बोली, "कई हफ्तो से ! आप से कहा किस ने था ?"

"किसी ने नही ! कहने वाला कोई हो, तब तो !" अख्तर फिर से हसा । उस की निगाह झुकी हुई थी ।

"कोई नही है इस लिए आप जबरन—"

"जी हा ।" अख्तर ने सिर उठाया ।

"कोई तुक है ?"

"जी नही—लेकिन इस मे भी कौन-सी तुक हे कि आप फोन पर कही गई छोटी-सी बात से इतनी नाराज हो जाए कि "

"किस ने कहा, मै नाराज हू ?"

"इतने दिनो मे आप ने मुझे पहली बार पहचाना ? नाराजगी नही तो क्या ?"

"अच्छा खैर आप से एक बात पूछना चाहती हू ।"

"बेशक, लेकिन मैं आप से कुछ नही पूछना चाहता " वह उसी ढीठता के साथ मुस्कराया और पल-दो-पल के लिए फिर नीचे देख गया ।

अब तक वे बस-स्टाप से जरा हट कर खडे हो गए थे, ताकि उन की बाते उन्ही तक रहे । सईदा को अचानक ही पता चला कि वे हट

गए हैं—लेकिन कब ? सचमुच उसे मालूम नही हो सका था और उस ने बिल्कुल नही चाहा था, तो भी याद आ गया—बलवन्त की चिट्ठी आए आज कितने दिन बीत रहे है ? कई दिन—बहुत सारे दिन । गोआ मे कभी एक अन्तर्देशीय पत्र आया था । जल्दबाजी मे बिगड गए अक्षरो मे उस ने लिखा था कि वह बम्बई जाएगा—तैरती हवाई-पट्टी पर से उडान के अभ्यास के लिए उस के बाद ? क्या अभी तक वह बम्बई मे है ? या कही और ? उसे सूचना तो देनी चाहिए । शुरू से ही बरती जा रही यह लापरवाही

और यह जिद्दी अख्तर·

यदि बलवन्त अभी यहा से गुजरे तो उसे अख्तर के पास खडी देख कर क्या सोचे ? हद-से-हद यही कि रेडियो-स्टेशन का कोई परिचित होगा बलवन्त के ईर्ष्यालु हो जाने की गुजाइश नही के बराबर थी लेकिन उस की जगह अख्तर हो, तब ? जरूर अख्तर ईर्ष्यालु हो उठे । फौरन जिद पर अड जाए कि सईदा फला-फला से बात नही करेगी । नही करेगी क्योकि नही करेगी, बस । ओह ! सईदा फिर उसी बेवकूफी-भरे ढङ्ग से सोचने लगी ?

"बेशक पूछिए—क्या पूछना है ?"

"दिस इज आलमोस्ट सिली । आप ऐसा क्यो करते है ?"

"कैसा ?"

"इस तरह इतजार कर के आप ने अपना कितना वक्त "

"जैसे कि मेरे वक्त का ख्याल आप वाकई रखती हो !"

सईदा ने सोचा था कि यहा अख्तर के चेहरे पर मुस्कान आएगी (औपचारिक बाते करते समय कैसे बार-बार मुस्कराना पडता है !) लेकिन उस के मुस्कराने, न मुस्कराने का पता न चल सका । वह सिर झुका कर अपने जूते की नोक जमीन पर रगड रहा था हल्के-हल्के

"मै ने आप को कभी वक्त जाया करने के लिए नही कहा। हमारे रिश्ते ऐसे नही है—न है, न हो सकते है—कि खैर, जाने दीजिए "

"मुझे इसी की बेहद खुशी है कि आप इतनी बाते तो कर रही है।"

वह बोली, "आप से कुछ और भी बाते मै कम-से-कम आज तो जरूर कर सकती हू। आगे की नही जानती।"

"चलिए, कही बैठे।"

"हा, अभी मै खुद कहने वाली थी। यहा खडे-खडे कब तक ?" सईदा ने उत्तर दिया, "कनाट-प्लेस कौन-सा दूर है? आइए, पैदल चलते है। रास्ते मे बाते भी होती रहेगी।"

दोनो चल पडे।

पार्लियामेट स्ट्रीट के थाने तक वे चुप रहे। आज 'फैसला सुनाने जैसी' स्थिति का सामना करना पडेगा, यह दोनो ने नही सोचा था। इस से उन की गम्भीरता उदासी जैसी लग रही थी। चलते समय उन मे ज्यादा फासला नही था। दूर से यही लगता कि दो ऐसे पुराने परिचित थके हुए कही जा रहे है, जो आदतन बहुत कम बोलते है। स्कूटरो, कारो, बसो वगैरह की आवाजो मे इतनी क्षमता नही थी कि इन्हे चौका दे। वे अत्यन्त सवेदनशील हो कर जैसे हर क्षण प्रतीक्षा करते हुए चल रहे थे कि अभी पीछे से कोई हार्न सुनाई देगा। अभी-अभी-अभी एक और, एक और •

"मुझे आप से पूरी सहानुभूति है।" वह उकता कर बोली।

वह चुप रहा।

"हालाकि उस दिन आप ने फोन पर जैसी बाते की थी, उस से बहुत बुरा 'इम्प्रेशन' पडा था।"

"मैं नही सोचता कि मैं ने कोई गलत बात कही थी।"

"जो भी है "

यदि अख्तर यहा माफी माग लेता तो शायद उन की बातचीत

आसानी से आगे चल पडती । सईदा कहती कि नही-नही, माफी मागने की जरूरत नही है अख्तर दोहराता कि उसे वाकई खेद है लेकिन उस के कठोर जवाब ने सईदा को उलझा दिया फिर से उन मे एक अप्रिय चुप्पी कायम हो गई जो बहुत देर तक न टूटी ।

उन से काफी परे रह कर एक मोटा आदमी पीछे-पीछे चल रहा था ।

'जन्तर-मन्तर' आ गया ।

"कहा बैठेगे ?" सईदा ने पूछा ।

"जहा आप चाहे ।"

" 'स्टैण्डर्ड' मे ?"

"वहा ज्यूक-बाक्स का इतना शोर होता है कि

"फिर ?"

"मुझे 'टी-हाउस' सब से अच्छा लगता है ।" वह बोला ।

"वहा भी कम हल्ला नही "

"लेकिन 'टी-हाउस' का हल्ला हल्की गूज जैसा होता है । उस मे बातचीत करना मुश्किल नही लगता । 'स्टैण्डर्ड' का ज्यूक-बाक्स तो इतनी जोर से गरजता है कि "

"चलिए, वही सही ।"

उन्होने 'टी-हाउस' के उस दरवाजे से दाखिला लिया, जो किताबो के काउण्टर की तरफ से था । वहा से परिवारो के लिए सुरक्षित सोफे सब से करीब पडते थे । दोनो ने पाया कि सभी सोफे खाली है । सईदा एक पर बैठ गई । अख्तर ने तय कर लिया था कि उसे उस के सामने नही, बगल मे बैठना है । सईदा ने सोचा था कि वह सामने बैठेगा । जब वह बगल मे बैठने लगा तो वह कोने की ओर सरक गई ।

पीछे-पीछे आ रहा वह मोटा आदमी भी 'टी-हाउस' मे दाखिल हुआ । उन से काफी दूर की एक गार्डन-चेयर मे बैठ कर उस ने अपने चेहरे का अधिकाश हिस्सा अखबार की आड मे कर लिया । न वह पीछे

आते समय इन की बाते सुन सका था, न यहा से सुन सकता था ।

कुछ देर मे उस की निगाह एक ऐसे युवक पर पडी, जो किसी पत्रिका के पन्ने उलट रहा था । उस ने बिल्कुल काली पेंट और बिल्कुल लाल कमीज पहन रखी थी । बाल भी हीरो-स्टाइल मे कोरे हुए थे । मोटा आदमी उठा और उस के सामने बैठ गया । दोनो ने एक-दूसरे को नमस्ते नही की । उम्र मे काफी फर्क होने पर भी उन की दोस्ती इतनी गहरी मालूम पडी, जैसे वे बचपन से ही लगोटिए यार रहे हो ।

ज़ब मोटे आदमी ने, जिस की पीठ सईदा और अख्तर की ओर थी, बोलने का प्रयास किया तो उस का चेहरा कुछ ऊपर उठ गया और ठोढी आगे निकल आई । लाल कमीज वाले युवक ने झुकते हुए अपनी दोनो कोहनिया मेज पर टिका दी और धीमी आवाज मे पूछा, "कोई खास बात, मिस्टर हाक ?"

विशिष्ट व्यक्तित्व, चातुर्य व लोकप्रियता के आधार पर अपने विभाग मे वह मोटा आदमी 'हाक' कहलाता था । लाल कमीज वाला युवक 'ऐरो' के नाम से प्रख्यात था । बाज और तीर !

हाक ने कहा, " 'फेमिली कारनर' मे एक जोडा बैठा हुआ है । ठीक मेरे पीछे "

"हा ।"

"मुझे उन की बाते मालूम करनी है, लेकिन मैं उन के पास नही बैठ सकता । युवक के साथ मैं अभी हाल-हाल मे काफी बाते कर चुका हू । वह मुझे पहचान सकता है ।"

"क्या उसे मालूम है कि आप डी० है ?" (डी० =डिटेक्टिव=मेरे सहयोगी ।)

"नही ।"

"मैं उन के पास जाता हू ।"

"शायद वे इशारो मे बोल रहे हो ।"

"मैं प्ूरे ध्यान से सुनूगा। वे कौन है ?"

"मै लडकी के बारे मे नही कह सकता, लेकिन लडका पी० डी० है।" हाक ने कहा। (पी० डी०=पाकिस्तानी जासूस।)

"हु ..." ऐरो उठने लगा, लेकिन हाक ने रोकते हुए पूछा, "क्या ऐसा हो सकता है कि तुम ठीक उन के पीछे बैठ जाओ ? लेकिन वे सोफे परिवार के लिए है। तुम्हारे साथ कोई लडकी होनी चाहिए, तभी तुम ..."

"मै अभी जुगाड करता हू।"

"यू आर वण्डरफुल ! कहा से करोगे ?"

"इसी इमारत मे एक टाइपिस्ट से मेरी जान-पहचान है और उस का आफिसर मेरा दोस्त है। वह जानता है कि मै डी० हू। वह उसे इजाजत दे देगा।"

"वेरी गुड। हरी अप !"

"मैं अपनी काफी का आर्डर दे चुका हू।" ऐरो ने जाते-जाते बताया, "यू इन्ज्वाय दैट।"

"थैंक्यू !" हाक न मुस्कराया। उस की निगाह अपने अखबार पर घूमने लगी थी।

थोडी देर मे बैरा आया। जिस ने काफी मंगाई थी, उसे नदारद देख कर वह चक्कर मे पड गया। हाक ने कहा, "बाबू साहब अभी आ रहे है। उन की काफी मुझे दे जाओ।"

बैरे ने प्याला रख कर विदा ली। पानी का गिलास वह पहले ही रख चुका था। हाक ने दो-तीन घूट लिए। फिर काफी मे चीनी मिलाते हुए उस ने हल्की निगाह 'परिवार-सोफो' पर डाली।

सईदा-अख्तर के पास एक बैरा आ गया था और आर्डर ले रहा था। जल्द ही वह चला गया और हाक उन दोनो की गम्भीरता देख सका।

लगभग पाच मिनट बाद बैरा फिर से उन के पास आया और पकौडो की एक प्लेट व सास की बोतल रखने लगा । काफी के दो कप भी उस ने रखे, फिर चला गया ।

इस के प्राय एक मिनट पश्चात् हाक ने देखा कि क्रिश्चियन-सी-लगती एक युवती के साथ ऐरो 'टी-हाउस' मे दाखिल हुआ । युवती स्कर्ट मे थी ।

अब वे ठीक उस सोफे पर बैठ रहे थे, जिस की पीठ-से-पीठ लगे सोफे पर अख्तर-सईदा बैठे थे ।

"देखिए, पहली बात यह है कि मै आप को किसी भी तरह आई मीन •चोट पहुचाना नही चाहती । अगर फिर भी वैसा लगे तो माफ कीजिएगा ।" सईदा की आवाज ऐरो ने सुनी ।

ऐरो और स्कर्ट बिल्कुल चुप थे । यही लग रहा था कि वे पति-पत्नी है और किसी मनमुटाव की खिन्नता को मौन से पाटना चाहते है । वे तल्लीनता के साथ प्राय सट कर बैठे थे । उन्होने काफी का आर्डर दे दिया था और अब बैरे के लौटने के इतजार मे थे ।

"ऐसा न कहिए, आप की किसी भी बात से मुझे चोट नही पहुच सकती ।"

"मुमकिन है, मेरा अदाजा बिल्कुल गलत हो । गलत होने की गुजाइश कम नही है, लेकिन जो लगा है, मै साफ-साफ कह देना चाहती हू । साफगोई से थोडी रजिश भले ही पैदा हो, लेकिन • "

"जो कहना हो, कहिए ।"

"आप मुझ से दोस्ती करने के लिए इतने बेताब क्यो है ?"

"मै बता चुका हू ।"

"आप को दूसरे कई दोस्त मिल जाएगे ।"

"सब की अपनी-अपनी पसन्द होती है ।"

"मुझे लगता है "

"रुक क्यो गई ?"

"आप के दिल मे दोस्ती के अलावा भी कोई बात है।" उस ने आखिर कहा, "औरतो को निगाह का पता बहुत जल्दी चल जाता है। धोखा हमे भी हो सकता है, लेकिन अकसर नही होता। मै आप की आखो को पढ सकती हू। इसी लिए मुझे एक बात जितनी जल्दी हो सके, साफ कर देनी चाहिए। मै नही चाहती कि मेरे कारण किमी को बेवजह तकलीफे उठानी पडे।"

"मै आप से सिर्फ दोस्ती चाहता हू।"

"लेकिन आप की जिद इतनी ज्यादा और इतनी 'टिपिकल' है कि "

अख्तर खामोश रहा।

"खैर तो मै कहना यह चाहती थी कि मै किसी और को वादा दे चुकी हू। प्लीज ट्राई टु अण्डरस्टैण्ड मी।"

अख्तर नीचे देखने लगा। उम के घुटने हिल रहे थे। उस के लिए यह सचमुच असहनीय था कि सईदा सोचे, 'अख्तर मैदान छोड कर भाग गया।' वह चाहता था कि प्राय रोज किए जाते इन्तजार का सईदा पर कोई-न-कोई असर जरूर हो। बातचीत वह अपनी ओर से शुरू नही करना चाहता था। उसे पूरा यकीन था, एक दिन खुद सईदा ही बोले बिना न रह सकेगी। एक-दूसरे के नजदीक सिर्फ खडे रह कर भी उन का परिचय पहले से ज्यादा हो गया था। सईदा ने भी यह महसूस किया होगा—वह जानता था।

आज जब सईदा उस के साथ काफी पीने और बातचीत करने पर मजबूर थी, उसे लग रहा था कि वह जीत गया है—और अब वापम जा सकता है। वह 'वैसा' इन्तजार करता हुआ' नजर न आएगा तो कभी सईदा झुझलाएगी। वह अख्तर के बारे मे सोचेगी-सोचेगी-सोचेगी और सोचती जाएगी। अन्त मे उसे यही लगेगा कि वह हार गई।

लेकिन ज्यो ही सईदा ने बताया कि वह किसी को वचन दे चुकी है, अख्तर को लगा कि उसे हार महसूस न होगी, उसे तो राहत मिलेगी।

नही नही

उसे जरूर लगेगा कि वह हार गई है क्यो न लगेगा ? ये होती ही ऐसी है। ये आसानी से नही सह पाती कि कोई उन के आकर्षण मे एक बार फस कर झटपट छूट जाए। ये लोगो को तडपते देखना चाहती है—उन को, जिन्हे वे नापसन्द करती हे और उन को भी, जो उन्हे पसन्द आ जाते है। सईदा को जरूर ऐसा लगेगा कि वह हार गई अख्तर के चेहरे पर सन्तोष की मुस्कान आने वाली ही थी कि वह उसे घोट गया।

उस ने सिर उठाया और गम्भीरता मे कहा, "यस आई अण्डर-स्टेण्ड, लेकिन आप ने मुझे गलत समझा।"

"कैसे ?"

"मेरे मन मे वैसे जज्बात कभी पैदा नही हुए। मुझे शादी ही करनी हो तो मै अपने भाईजान मे कह सकता हू। मैं ने आप को बताया ही था कि वह नागपुर मे रहते है और उन की जान-पहचान की कमी नही। कुछ खास वजहे है, जिन से मैं हमेशा के लिए कुवारा रहना चाहता हू।"

"खास वजहे ?"

"हा, फिर कभी बताऊगा।"

"मेरे ख्याल मे तो अब आप को शादी जरूर कर लेनी चाहिए।" सईदा ने सच्ची सहानुभूति से कहा, "तभी आप का अकेलापन दूर होगा। खाने-पीने की सहूलियते भी "

"सलाह के लिए शुक्रिया, लेकिन अभी मै अकेला ही ठीक हू।"

"कहा ठीक है ? उम दिन रेडियो-स्टेशन के केण्टीन मे आप ने अपनी उम्र तीस बताई थी।"

"जी हा ! उतनी है।"

"कोई कम तो नही ? सही उम्र मे शादी न हो तो शख्सियत मे कई अटपटेपन आ जाते है । मसलन आप जितनी जिद के साथ मुझ से दोस्ती करने पर आमादा है—या आमादा थे—शादीशुदा होते तो आप को इस की जरूरत ही न पडती ।"

वह चुप रह कर नीचे देखने लगा । सईदा एक छोटे मौन के बाद बोली, "मुझे भी वाकई खेद है कि आप को समझने मे ऐसी भूल हुई, लेकिन मेरी जगह आप होते "

"तो शायद मै भी वही समझता जो आप ने "

"इत्तफाक ही समझिए कि मै रेडियो-स्टेशन मे काम करती हू । वहा के माहौल ने मुझे बहुत 'फ्रैंक' बना दिया है । मै ही हू, जो आप के साथ यहा बैठ कर ऐसी साफ बाते कर रही हू वरना·· "

" वरना मुझे गालिया सुननी पडती ।"

"एग्जैक्टली !"

दोनो हसे । उन्हे हसने की जरूरत थी और वे इस के लिए बहाना ढूढ रहे थे । उन के कपो मे थोडी-थोडी काफी बची हुई थी, जिसे वे इस लिए नही पी रहे थे कि पी लेने के बाद क्या करेगे । पकौडो की प्लेट खाली हो चुकी थी ।

अख्तर की आँखो के सामने किम विण्टर्स का चेहरा तैर गया । सईदा से निश्चय ही अनेक गुना खूबसूरत किम । सईदा उस के सामने एक निहायत मामूली लडकी है, लेकिन नही, उसे छोडा नही जा सकता । उस का उपयोग होना चाहिए । कोई छोटा-सा उपयोग ही सही, मुसलमान होने के नाते वह इस्लाम के लिए जरूर काम करेगी । आज न करेगी तो कल करेगी । उसे तैयार किया जा सकेगा मनाया जा सकेगा । उस के साथ इस मामले मे थोडी जबरदस्ती भी चल जाए शायद जो काम वह इस्लाम के लिए मजबूरन करेगी, बाद मे उसी को शौक से करने लगेगी·

"क्या सोचने लगे ?"

वह चौक गया। सईदा मुस्करा रही थी।

"जी ? कुछ नही।"

"आप की काफी ठण्डी हो चुकी।"

"ओह !" उस ने ठण्डी काफी एक सास मे पी ली।

"अब क्या प्रोग्राम है आप का ?"

"कुछ खास नही। आप का ?"

"कुछ खास नही।" सईदा ने दोहरा दिया। वे हसने लगे। सईदा ने उसे हसाने के लिए ही दोहराया था। वह उसे बहुत भली लगी। अख्तर को वह ईमानदार भी बहुत लगी—कितनी सफाई से उस ने बता दिया, कितने सही समय मे बता दिया कि वह किसी और से वादा

"काफी और मगाऊ ?"

"नही। दो कप पीने पर रात को नीद नही आती।" अख्तर ने कहा।

"आप रहते कहा है ?"

"छोडिए।" अख्तर अपने घुटने हिलाने लगा, "क्या करेगी जान कर ? आप को कभी आना तो है नही।"

सईदा दो-चार क्षण अपलक उस की आखो मे देखती रही, फिर बहुत ही आजिजी से बोली, "प्लीज, अख्तर साहब, मुझे वाकई बहुत खेद है, लेकिन आय आम रियली सॉरी फॉर यू।"

"मैं सोचता हू, हमारा तनाव अब खत्म हो गया है और हमे नए सिरे से ताल्लुकात बनाने चाहिए।"

"बेशक !" सईदा ने हामी भरी और सोचा कि हा, यही होना चाहिए। कसूर न सईदा का था, न अख्तर का—फिर क्यो किसी परिचय का गला बेवजह घोट दिया जाए ?

बैरा बिल ले आया। सईदा ने तुरन्त पाच का नोट तश्तरी मे रख

दिया। अख्तर देना चाहता था, लेकिन सईदा ने साधिकार कहा, "रेडियो के केण्टीन मे आप ही ने दिया था। अब मेरी बारी है।"

"अच्छा—चलिए, दोस्ती की खातिर माने लेता हू।"

"अगली मुलाकात कब ?" 'टी-हाउस' से बाहर आ कर अख्तर ने पूछा।

"जब आप चाहे।"

"ऐसा करिए—हम कल नही मिलते। एकाएक बहुत करीब भी नही आना चाहिए। परसो शाम को काफी पिलाने का जिम्मा मेरा।" अख्तर ने सुझाव रखा।

"परसो ?" सईदा ने याद करना चाहा कि उस दिन कही जाना तो नही ? "ठीक है।" वह बोली, "परसो—लेकिन कहा मिलेंगे ?"

"आप की ड्यूटी कब आफ होगी ?"

"साढे पाच।"

"मै साढे पाच बजे गेट पर मिल जाऊगा।"

"याने पुरानी आदत से बाज नही आएगे !"

ऐरो और स्कर्ट भी बाहर निकल आए थे और उन के पास चुपचाप खडे पान चबा रहे थे।

"वैल, देन, मे आई गो नाउ ?" स्कर्ट ने पूछा।

"अफकोर्स। आई विल रिंग यू अप।" ऐरो ने कहा। स्कर्ट चली गई।

अख्तर ओर सईदा भी जुदा हो चुके थे।

ऐरो ने 'टी-हाउस' मे प्रवेश किया। हाक के सामने बैठते हुए उस ने कहा, "दोनो अलग-अलग चले गए।"

बिल पे कर के वे बाहर आए और कनाट-प्लेस के पार्क मे एकान्त ढूढ कर टहलते रहे।

"कैसी बाते हो रही थी ?" हाक ने पूछा।

"शक करने लायक कुछ नही था ।"

"तो भी ?"

"शायद उन मे कोई झगडा हुआ था । उसी की सफाइया दी जा रही थी । लडकी ने कहा कि वह किसी और को वचन दे चुकी है ।"

"ओह, आई सी, लवर्स क्वारल !"

"नही । वे लवर्स नही है । आज उन्होने तय किया कि वे दोस्त बने रहेगे ।"

हाक विचारमग्न होता हुआ बोला, "लेकिन लडका जरूर पी० डी० है । मेरे पास इस के कई सबूत है । हमे लडकी पर भी निगाह रखनी चाहिए ।"

"मुझे वह निर्दोष लगती है ।"

"यह भी तो हो सकता है कि उन्होने सारी बातचीत कोड-लैंग्वेज मे की हो ।"

"तो ?"

"शक करने मे खतरा नही है लेकिन न करने मे है । लडकी पर निगाह जरूर रखनी चाहिए । शायद लडका उसे 'शामिल' करना चाहता है । लडकी मुसलमान है और लडका उससे प्राय हर शाम मिलता रहा है । उन मे बातचीत नही होती, लेकिन वे अकसर साथ-साथ ही सफर करते है । शायद वे बिना बोले ही कुछ इशारे कर लेते हो या बाद मे कही बैठ कर योजनाए बनाते हो । या, जैसा कि तुम ने कहा, सचमुच किसी झगडे के कारण उन की बोलचाल बन्द रही हो "

ऐरो और हाक मे काफी देर तक जानकारियो का आदान-प्रदान होता रहा । जुदा होते समय हाक ने कहा, "अब ये दोनो तुम्हें सौपे जाते है । मै दूसरो की टोह लूगा ।"

उन्होने जिन जासूसो को पहचान लिया था, उन्हे गिरफ्तार कर लेने की बजाय अभी वे केवल पीछा कर रहे थे, ताकि जहा-जहा भी अड्डे या ताल्लुकात बनाए गए हो, सब का पता चल जाए ।

चौदह

इडिया गेट के पास उस नहरनुमा लम्बोतरे सरोवर मे लोग नौका सैर कर रहे थे। अख्तर ने सईदा से आग्रह किया था कि आइए, हम भी कोई नाव किराए पर ले, किन्तु सईदा इन्कार कर गई थी। सरोवर के किनारे-किनारे वे बेफिक्री से टहल रहे थे। यह उन की तीसरी मुलाकात थी और सईदा ने अनुभव किया था कि ऐसी मुलाकाते प्राय होती रहे, तो भी हर्ज नही है।

"पाच नम्बर! टेम खतम! पाच नम्बर—टेम खतम!" नौका-व्यवस्था का कर्मचारी सरोवर के किनारे आ कर चिल्ला रहा था। पाच नम्बर की नाव वापस जाने लगी। उसे दो युवक खे रहे थे। उन्हे खेना नही आता था, जिस से कई बार नाव गोल-गोल घूमने लगती। तब उन के चेहरो पर झेप-भरी हसी आ जाती।

"आठ नम्बर! बारह नम्बर! वापस आइए—जल्दी।" कर्मचारी की बूढी आवाज सरोवर की लम्बाई नाप रही थी, "आठ नम्बर! बारह नम्बर!"

"आज आप कुछ ज्यादा ही खुश है।" अख्तर ने कहा।

"ओह, हा।" सईदा का चेहरा खिल उठा। शाम काफी घनी हो चुकी थी।

"वजह?"

"बता दू?"

"इसी लिए तो पूछ रहा हू।"

"आज बम्बई से खत मिला है—परसो सुबह मेरे 'पायलट साहब दिल्ली आ रहे है।" सईदा ने कहा और हसने लगी।

"अच्छा, तो माजरा यह है।" अख्तर ने भी हसने की कोशिश की।

"करीब सात महीनो बाद हमारी मुलाकात होगी " सईदा की आवाज शर्मीली हो उठी, "बहुत कम ठहरने वाले है, फिर भी "

"किस सिलसिले मे आ रहे है ?"

"उन्होने यह लिखा नही है। किसी भी सिलसिले मे आ रहे हो, मुझे क्या ! मुझे तो बस एक बात मालूम है कि आ रहे है।"

"कहा ठहरेगे ?"

"कनाट-प्लेस मे उन के चाचा रहते है—डाक्टर सिह। शायद आप ने उन का नाम सुना हो।"

"नही तो। क्या करते है ?"

"प्रयोग !"

अख्तर ने प्रश्नवाचक दृष्टि से सईदा की ओर देखा। वह हस कर बोली, "हिन्दुस्तान के बहुत बडे साइण्टिस्ट है। बलवन्तजी को उन्ही ने इतना आगे बढाया है।"

"अच्छा ? साइण्टिस्ट है ?"

"हा, और मुझे उन से डर लगता है। पता नही क्यो ! यहा तक कि उन्हे फोन करने मे भी मेरी जान सूखने लगती है।"

"दो नम्बर ! दो नम्बर वापस !" बूढे कर्मचारी की हाक सुनाई।

एक-दो बार बारिश हो चुकी थी, अत गर्मी से कुछ छुटकारा मिला झोको मे ठण्डक और नमी थी। दूर इण्डिया गेट—भव्य, ठोस। घास के मैदान का फैलाव · केन्द्रीय सचिवालय और राष्ट्रपति-भवन ाल इमारतें ·स्वच्छ सडको की लम्बी-लम्बी बाहे···

े काफी आगे निकल आए थे। वापस लौटने लगे।

मैं इस का कारण बता सकता हू।"

"किस का ?"

"आप को डाक्टर सिह के सामने हिचक क्यो महसूस होती है—हिचक कहिए या डर—या जो भी आप चाहे ."

"बताइए। देखे, आप क्या सोचते है।" सईदा के कपार पर दो-तीन लटे आ कर ठण्डे झोको मे कापने लगी थी।

"शायद आप मेरी बात एकाएक मजूर न करे—लेकिन वह सच है। पहले यह बताइए, क्या डाक्टर सिह को आप के और पायलट साहब के बारे मे सब मालूम है ?"

"वह समझ गए होगे। बलवन्तजी के साथ मै कई बार उन के यहा गई हू। दो-एक बार उन की प्रयोगशाला भी देखी है।"

'प्रयोगशाला उन के घर मे ही है ?"

'हा—लेकिन आप अभी कौन-सी बात कह रहे थे ?"

"आप की झिझक का कारण है देखिए, बुरा न मानिएगा, लेकिन मुझे लगता है कि उन का सिक्ख और आप का मुसलमान होना "

"अजी नही !" सईदा खुल कर हस पडी, "आप ने भी क्या दूर की सोची !"

"मैं ने पहले ही कहा था कि आप इसे एकाएक मानेगी नही—लेकिन यह सच है।"

"डाक्टर सिंह है साइण्टिस्ट। उन के लिए सभी बराबर है—हिन्दू-मुसलमान या सिक्ख-ईसाई वगैरह के छोटे दायरो मे वह कभी न सोचते होगे। आप भी क्या " वह फिर हसने लगी।

"हस लीजिए, तब आगे कहू।"

"आप तो हसने पर पाबन्दी लगाने लगे।"

"पाबन्दी की बात नही है, लेकिन अगर आप मेरी हर बात को हसी मे ही उडाने के मूड मे हो तो बेहतर है, अभी मैं चुप रहू।"

"अच्छा, नही हसूगी—बस ? कहिए।"

"कह तो दिया ।"

"क्या ?"

"अगर डाक्टर सिह मुसलमान होते—जैसे कि मै और आप है—आप को डर या झिझक कतई न होती । हम लोग चाहे कितने भी माडर्न हो जाए, साइण्टिस्ट बन जाए या डाक्टर, हम सभी के भीतर एक पुराना आदमी जिन्दा होता है । वह तरह-तरह की उलझने पैदा करता है । विचारो मे तो हम बहुत आगे निकल जाते है, जिन्दगी मे उतने नही ।"

सईदा चुप रही । किसी नाव मे अनाडी ढग से चलाई गई पतवार के कारण सरोवर की सीमेंटी कगार पर खडी सईदा के चेहरे पर कुछ छीटे उडे । "सॉरी ! वी आर सॉरी !" नाव मे से एक युवक ने चिल्ला कर कहा, लेकिन सईदा चुप ही रही ।

"जरा सोचिए पायलट साहब से आप का निकाह हो जाए उस के बाद "

सईदा ने तीखी निगाह से अख्तर की ओर देखा ।

"आप को शायद बुरा लग रहा है, लेकिन ठण्डे दिल से सोचिएगा । अभी नही—हास्टल जा कर ।"

"प्लीज किसी और टापिक पर बात करिए ।" सईदा ने स्पष्ट कहा, "मैं ने हिन्दू-मुसलमान वाली ऐसी कोई बात महसूस नही की है । न की है, न करूगी । मैं डाक्टर सिह की बहुत इज्जत करती हू । इसी लिए मुझे उन से कुछ घबराहट होती है । आप न जाने क्या समझ बैठे ।"

"आय एम सॉरी ।"

"नेवर माइण्ड· लेकिन मैं पहले भी एक-दो बार नोट कर चुकी हू । आप मजहब को ले कर · खैर, छोडिए · "

किनारे से गुजरती नाव मे बैठी किसी लडकी ने झुक कर पानी मे हाथ डाला और पतवार की तरह चलाने लगी ।

"तीन नम्बर ! तीन नम्बर टेम खतम ! टेम खतम्रम !"

एक नाव वापस जाने लगी ।

"आइए । काफी पीए ।"

अख्तर उसे बिगडे हुए बच्चो की सुधार-सस्था 'बाल-सहयोग' द्वारा सचालित केण्टीन की तरफ ले गया । खुले मैदान मे दूर-दूर रखी कुर्सिया और मेजे देखी जा सकी । सभी मेजो पर कोई-न-कोई था—सिवा एक मेज के । वे स्फूर्ति से उस की ओर बढे, ताकि उन से पहले कोई और वहा अधिकार न कर ले । कुर्सियो मे बैठ कर उन्होने अपनी कोहनिया मेज पर टिका दी ।

आठ बजे नौका-सैर खत्म हो जाएगी । वह बूढा कर्मचारी जोर-जोर से आवाजे लगाएगा, "वापस ! सब वापस ! टेम खतम !" अभी करीब साढे सात हुए है—अख्तर ने कलाई-घडी मे गौर से देखा । उसे देखते देख सईदा ने भी अपनी घडी मे निगाह डाली । दोनो चुप थे और चुप रहे । दूर के लैम्प-पोस्टो मे लगी ट्यूब-लाइट्स की दूधिया, मुलायम रोशनी ने शाम के साथ घुल-मिल कर उसे रहस्यमय बना दिया था ।

अख्तर की भौंहो पर बल न पडे । उसे ट्रेनिग आखिर किस लिए दी गई थी ? क्या भौहो को सिकोडे बिना वह किसी की ओर ध्यान से नही देख सकता ? उस अकेली युवती को वह पहचान गया था—मिस चालीस !

वह यहा क्या कर रही है ? और वह अकेली क्यो है ? किम कहा है ?

मिस चालीस मैदान मे रखी मेज-कुर्सियो के बीच की फैली-फैली जगह मे घूम रही थी । अधेरे-उजाले की मिली-जुली रोशनी मे अख्तर इतना तो आभास पा सका कि वह घबराई हुई नही है, लेकिन घबराहट उस की चाल मे न होने के बावजूद इस का क्या तय कि मन मे भी नही है ? अख्तर उस के सामने अपनी मौजूदगी जाहिर करना चाहता था, ताकि सकेतो मे कुछ पूछा-कहा जा सके, लेकिन सईदा के होते हुए यह

कैसे ? एक और भी तो खतरा था—मान लो, मिस चालीस के पीछे इस वक्त खुफिया पुलिस लगी हो । उस से बात करने पर अख्तर के पीछे भी पुलिस

वह असमजस मे ही था कि उस ने मिस चालीस को मुड कर अपनी मेज की तरफ ही आते देखा । वह चौकन्ना हो गया ।

"हा, सा'ब, क्या लाऊ ?" बैरा आ कर पूछ रहा था ।

"दो काफी । एस्प्रेसो ।" उस ने कहा ।

मिस चालीस अख्तर के बहुत पास से गुजरी । उस ने अख्तर को देख लिया था, लेकिन उसे पहचाने बिना वह एक ओर चली गई । आखो के बहुत हल्के सकेत से उस ने कह दिया कि तुम भी मुझे मत पहचानो । अख्तर कुछ आशकित हो आया । उस ने सईदा की तरफ मुस्कान फेक कर कुछ पूछा और सईदा ने उस का जवाब दिया, लेकिन उस का अधिकाश ध्यान इस ओर ही था कि मिस चालीस कहा जा रही है ।

'बाल-सहयोग' के अण्डरग्राउण्ड केण्टीन की सीढिया उतर कर वह निगाहो से ओझल हो गई ।

बैरा अभी काफी नही लाया था ।

'चुप क्यो हे ?" अख्तर ने हल्की मुस्कान के साथ सईदा की आखो मे देखा । सईदा की दोनो पुतलियो मे दूर की एक ट्यूब-लाइट फीकी-फीकी बिम्बित हो रही थी ।

एक जीप और दो-तीन कारे इण्डिया गेट की ओर से आ रही थी । प्रत्येक की एक-एक जोडा गोल आखे जल उठी थी और धुधली शाम मे चमक रही थी । केन्द्रीय सचिवालय की ओर से भी कुछ कारे व जीपें आ रही थी । अख्तर सिहरा—मिस चालीस का चौकन्ना व्यवहार • कही ये पुलिस-कारे तो नही ? उसने सरोवर की दिशा मे मिस चालीस को ढूढने की असफल कोशिश की ।

अचानक चारो तरफ से सीटियो की उत्तेजक व तीखी आवाजें सुनाई

पडी—रेलवे-गार्ड की सीटी जैसी आवाजे

"अरे !" सईदा चौक गई।

अख्तर ने कुर्सी से उठते हुए चारो ओर देखा। वे कारे और जीपे इधर-उधर खडी हो गई थी। उन मे से अनेक लोग, जो नागरिक या पुलिस पोशाको मे थे, निकल कर तेजी से पूरे सरोवर तथा आसपास के इलाके को दूर-दूर से घेरने लगे। अधेरे-उजाले मे उन की स्फूर्त्ति उसे डरावनी लगी।

लाउड-स्पीकर पर करारी आवाज सुनाई दी, "रिमेन व्हेयर यू आर। जहा है, वही रहिए। पुलिस को सहयोग दीजिए—जहा है, वही "

"क्या माजरा है ?" सईदा भी असमजस मे पडती हुई उठी और चारो तरफ देखने लगी।

"पता नही " अख्तर बुदबुदाया। उस ने सब ओर देखा—मिस चालीस कही नजर न आई।

पुन लाउड-स्पीकर पर आवाज गूज उठी, "कृपया पुलिस को सहयोग दीजिए। रिमेन व्हेयर यू आर "

देखते-ही-देखते नौका-सैर कर रहे सैलानियो तथा दीगर सभी लोगो को घेर कर एक जगह खडा कर दिया गया। केण्टीन के ग्राहक भी इसी भीड मे शामिल कर दिए गए। बैरा काफी ले कर आ रहा था। वह दूर ही थमा रह गया।

अख्तर और सईदा एक-दूसरे से प्राय सटे हुए भीड मे खडे थे। "पता नही, क्या बात है ?" सईदा उत्तेजित स्वर मे बोली।

"खुदा जाने " अख्तर बुदबुदाया।

लोगो मे फुसफुसाहटे होने लगी थी और बच्चे सहम गए थे। सब की निगाहे उस प्रभावशाली युवक पर टिक गई, जो इस छापे का निर्देशक लगता था। वह सामने आता हुआ कह रहा था, "आप लोगो मे कोई जासूस छिपा हुआ है। अच्छा हो, वह खुद बाहर आ जाए।"

सईदा अख्तर की तरफ देखती हुई फुसफुसा सठी, "जासूस !"

उसी समय मिस चालीस भीड मे खडी नजर आई।

अख्तर को एक और शक हो रहा था। कही ऐसा तो नही कि पुलिस को मिस चालीस के साथ-साथ अख्तर की भी तलाश वह तेजी से सोचने लगा।

खामोशी।

"फिर से कहता हू, वह खुद बाहर आ जाए।"

वही खामोशी।

"मैं पाच तक गिनूगा। इस के बाद दूसरी कार्रवाई की जाएगी। एक ?"

अख्तर को झुरझुरी हुई। क्या मिस चालीस की गिरफ्तारी नही रोकी जा सकती ? किसी भी तरह नही ?

"दो ?"

क्या होगा ? क्या वह आत्म-समर्पण कर देगी ?

'तीन ? चार ?"

नही। अख्तर जहा तक उसे पहचानता था, वह ऐसा नही करेगी। वह कोई उपाय सोच रही होगी और आखिरी घडी तक सोचेगी। उन सब को सिखाया गया था, खुद कभी सामने मत आओ—लेकिन सिखाया हुआ सब साथ कहा निभाता हे ?

"पाच।"

भीड मे से कोई बाहर न आया।

रोबीले युवक ने एक-दो से सलाह की, फिर कहा, "मर्द और औरतें अलग-अलग हो जाए। बच्चो को मर्द सम्भालें। जल्दी।"

कुछ क्षणो के लिए सैलानियो की भीड मे कोई हरकत न हुई, लेकिन युवक का करारा हुक्म जब फिर से सुनाई दिया तो लोग हिलने-डुलने लगे। कोई बच्चा रो उठा। उस का पिता उसे मनाता हुआ बोला,

"मम्मी अभी आती है, अच्छा ? अभी "

पुरुषो की भीड मे से अख्तर ने देखा कि महिलाओ के झुण्ड मे सईदा और मिस चालीस काफी पास-पास खडी है।

एक जीप करीब आ कर रुकी। उस की तेज रोशनी दूर-दूर तक वातावरण को भेद रही थी। सईदा ने एक महिला को उतरते देखा। वह पुलिस-वर्दी मे थी। उस ने तीखी आवाज मे कहा, "कौन है लेडी-जासूस ? जल्दी बाहर आए। क्विक ! क्विक ! वरना "

सईदा को रोमाच हो आया। भीड मे प्राय तीस महिलाए थी। उन्ही मे से कोई जासूस है ! पाकिस्तान जासूस ! ऐन बगल मे या ऐन पीछे या आगे खडी महिला जासूस !

"ठीक है। मै सब की जाच करूगी।" महिला ने अपनी छडी घुमाते हुए कठोरता से कहा, "पूरी जाच "

फिर वह उस रोबीले युवक से बोली, "सब को कतार मे खडी कर दीजिए और एक-एक कर जीप मे भेजिए।"

सईदा कतार मे काफी आगे खडी थी। उस के पीछे तीन महिलाओ के बाद मिस चालीस

अख्तर के पास खडा एक युवक कह रहा था, "खूब ! पाकिस्तान से जासूस औरते भी आई है ? वल्लाह ! क्या बात है !"

"समथिंग वेरी सीरियस।" किसी की बुदबुदाहट सुनाई दी।

"सीरियस क्या ? जासूस आना या उन का पकडे जाना ?" किसी ने ऊची आवाज मे पूछा। सब हसे।

अख्तर ने पेट की जेब मे हाथ डाल कर गहरी सास ली। कतार की दो महिलाए जीप मे जाने के बाद बाहर आ चुकी थी और जरा दूर हट कर खडी थी। मिस चालीस यदि किसी तरह जाच-की-जा-चुकी महिलाओ मे शामिल हो जाए तो बच सकती है लेकिन यह असम्भव था। जाच-की-जा-चुकी महिलाओ और कतार के बीच पुलिस खडी

थी। गहराती शाम की हवा मे पुलिस की जीपो और कारो ने जगह-जगह रोशनी की सलाखे तैनात कर दी थी।

"बताइए साहब ? शास्त्रीजी को अभी युगोस्लाविया जाने की क्या जरूरत थी ? अभी देश पर सकट-काल छाया हुआ है और शास्त्रीजी है कि ·" किसी ने कहा। साथ ही किसी ने विरोध किया, "कमाल करते है आप भी। सकट-काल तो रहेगा। चीन और पाकिस्तान हमे कभी चैन थोडे ही लेने देगे। इस का मतलब यह तो नही कि हमारे नेता कभी विदेश न जाए ?"

"एक और बात है।" किसी ने सहमत होते हुए कहा, "शास्त्रीजी का विदेशो मे जाना इस लिए भी जरूरी है कि नए नेता को अपने अन्तर्राष्ट्रीय सबध नए ही सिरे से बनाने पडते है।"

बात की शुरूआत जिस ने की थी, उसी का जवाब सुनाई दिया, "शास्त्रीजी कौन-सा तीर मार लेगे विदेशो मे ? उन का व्यक्तित्व ही ऐसा है कि· "

"मत भूलिए कि नैपोलियन भी छोटे कद का था।" किसी ने जोर से कहा।

सईदा जाच के लिए जीप मे दाखिल हो, इस मे अब देर नही थी। दो महिलाओ के बाद उसी की बारी थी। मिस चालीस इधर-उधर देख रही थी ·रह-रह कर वह अपने शरीर का भार एक पैर से दूसरे पैर पर ले जाती।

कतार आगे चल रही थी। जीप के पीछे लगा परदा हटा कर सईदा भीतर गई। उस के बाद तीन महिलाए—तब मिस चालीस की बारी ·

इस के पश्चात् उन का सारा काम बहुत तेजी से हुआ। कुछ ही घण्टो मे उन की सभी योजनाए बदल गई। पहला फैसला यह रहा कि अख्तर 'एयर-इण्डिया' से गायब हो जाए और वेश बदल ले।

अख्तर रूपनगर की अपनी मियानी मे एक भी बार न जा पाया। उस के कपडे व अन्य सामान वही छोड दिया गया। उस ने लतीफ मिया और किम को पूरा यकीन दिलाया कि मियानी मे ऐसे कोई कागजात या सबूत नही हे, जिन से किसी पर खतरा आने की गुजाइश हो। जामा मस्जिद के उस कमरे मे से मार्म-प्रणाली से सकेत भेजने के उपकरण तुरन्त हटा दिए गए। इस के प्राय आधे घण्टे बाद ही वहा पुलिस ने छापा मारा, लेकिन कमरा खाली था। होटल के मालिक को गिरफ्तार कर लिया गया।

जब यह धरपकड हो रही थी पास के ही एक सैलून मे लतीफ मिया अपनी दाढी-मूछ उतरवा रहे थे। किम विण्टर्स पजाबी पोशाक और धोखा देने वाले नए मेक-अप मे दो-तीन बार उम गली के चक्कर काट चुकी थी। यह उन की बहुत सनमनीखेज चाल थी। पुलिस को शक होना नामुमकिन ही था कि वह जिन की खोज कर रही है, वे आसपास ही मौजूद है।

सईदा को हास्टल तक छोडने के पश्चात् अख्तर ने तुरन्त एक टैक्सी की थी और अपने गुप्त अड्डे की ओर रवाना हो गया था। वह बहुत चौकन्ना था कि उस का पीछा तो नही किया जा रहा ? अन्य दो-एक जासूसो के साथ लतीफ मिया भी सयोगवश वही मिल गए थे। मिस चालीस की गिरफ्तारी के समाचार ने सब को चौका दिया था।

"इस का मतलब तो यह हुआ कि हमारे पीछे कई दिनो से जासूसी हो रही है आर हमे पता तक नही ।" उन्होने सिगार सुलगाते हुए कहा। मेज के नीचे अख्तर के घुटने हिलने लगे ।

थोडी देर मे किम विण्टर्स भी आ पहुची। मिस चालीस की हिरासत से उस के हौसले पस्त होने लगे थे, लेकिन वह जल्द ही सम्भल गई। आज पहला ही मौका था जब वे दोनो अपना 'फर्ज निभाने' अलग-अलग निकला थी और आज ही मिस चालीस

"गनीमत समझो," लतीफ मिया ने कहा, "कि तुम साथ नही थी, वरना तुम्हे भी सीखचो के पीछे "

"हम दोनो मिल कर कोई ऐसा तरीका निकालती कि गिरफ्तारी ही न होती ।" किम बोली ।

"बहरहाल वे लोग मिस चालीस मे कही हमारे भेद न उगलवा ले ।"

"नही, वह कुछ नही बताएगी । मर जाएगी तो भी नही। हम ने कुरान-शरीफ की कसम खाई है ।"

"वे हिप्नोटाइज या नरवस कर के भेद ले सकते हे ।"

कई दिनो से मिस चालीस और किम के सोने का इन्तजाम इसी अड्डे मे था, जिस से उन के कपडे व प्रसाधन के सारे सामान यही थे। किम ने तुरन्त अपनी हेयर-स्टाइल बदल ली ।

"तुम भी हुलिया बदल लो ।" लतीफ मिया ने अख्तर से कहा।

अख्तर ने अपनी बारीक, घनी मूछे बिल्कुल निकाल दी । बन्द कमरे मे लतीफ मिया ने खुद अपने हाथो से उस के घुघराले बालो पर कैची चलाई। "बहुत खूब ! आप के हाथ तो यू चलते है, जैसे खानदानी नाई के !" किम ने मजाक किया। लतीफ मिया हसे। कैची की आवाज जारी रही। बाल काफी छोटे हो जाने के बाद अख्तर ने आधुनिक डिज़ा-इन का एक चश्मा लगाया, जिस मे जीरो पावर के भूरे काच फिट थे।

दाहिने हाथ मे उसे एक कडा भी पहना दिया गया। वह चुस्त पेंट नही पहनता था। अब उस के नाप की बहुत ही चुस्त पेंट खोज निकाली गई। अख्तर उसे पहन कर कमरे मे चहलकदमी करने लगा। पेंट सुविधा-जनक नही थी, लेकिन जल्द ही उस की आदत पड जाएगी, वह जानता था। सोफे पर बैठने समय उसे डर लगा कि कही से सिलाई न उधड जाए, लेकिन ऐसा न हुआ। बैठते समय वह जिस तरह हिचक रहा था, उस से किम को हमी आ गई।

लतीफ मिया को अभी सन्तोष नही था, "कुछ रद्दोवदल और होना चाहिए। अभी भी तुम पहचाने जा सकते हो।"

"लेकिन उन्हे शायद मेरी जानकारी नही है। होती तो मिस चालीस की गिरफ्तारी के समय मुझे भी "

"लेकिन हमे अपनी ओर से कोई ढील नही रखनी चाहिए। किसी छोटी भूल से ही सारा गुड गोबर हो जाता है। पश्चिम बगाल के नदिया जिले मे हमारा सारा जाल तहसनहस हो गया, इस के पीछे भी कोई छोटी भूल ही रही होगी।"

"बताइए, और क्या रद्दोबदल करू ?" अख्तर ने शीशे मे देखते हुए पूछा।

उस के चेहरे पर दो बारीक झुर्रिया बनाने के बाद भी लतीफ मिया को पूरा सन्तोष न हुआ, लेकिन उन्होने कहा कि फिलहाल काम चल जाएगा।

सब की राय थी कि मिलने-जुलने या रिहायश के जितने भी अड्डे हैं, सब छोड कर नए सिरे से नए अड्डे बनाए जाए। पाकिस्तानी दूता-वास तथा उस के कर्मचारियो पर भारतीय खुफिया विभाग की कडी निगाह है, यह किसी को बताने की जरूरत नही थी। इस से वे कभी दूतावास के आसपास नजर न आते, न वहा के अधिकारियो से ही मिलते-जुलते। अधिकारियो से अधिकाश सम्पर्क फोन पर होता। तब साकेतिक

भाषा ही इस्तेमाल की जाती। दूतावास के अधिकारियो ने अपने यहा तो नही, हा, अपने परिचितो, मित्रो के यहा जरूर इस का इन्तजाम किया था कि मौका पडने पर पाकिस्तानी जासूस वहा पनाह ले सके। टैक्सी मे किम और अख्तर इसी तरह के एक व्यक्ति के घर की ओर रवाना हो गए। वे बिल्कुल इस तरह पहुचे, मानो कोई मेहमान आए हो। मेहमानो की तरह ही तपाक से उन का स्वागत भी किया गया। यह सब फोन पर तय हो चुका था।

रात के प्राय एक बजे लतीफ मिया वेश बदल कर पाकिस्तानी दूतावास के एक अधिकारी से मिले—किसी होटल के कमरे मे। अधिकारी को चुरुट पेश करते हुए वह बोले, "लगता है, दिल्ली मे खास कामयाबी नही मिलेगी। क्या यह बेहतर न होगा कि मै अपनी यूनिट के साथ कश्मीर चला जाऊ? वैसे भी, ये उस तरफ बढने के दिन है। वहा हमारी ज्यादा जरूरत है।"

दोनो के चेहरो पर एक कुटिल मुस्कान आ गई। कश्मीर की तरफ बढने के दिन अगस्त १९६५ के पहले सप्ताह मे पाकिस्तानी छापामारो का काफी बडा और सुनियोजित हमला होगा वे कश्मीर की युद्ध-विराम-रेखा पार करेगे और इन के पास सारी सूचनाए पहले से आ गई थी। यह जुलाई का आखिरी दिन था शनिवार, ३१ जुलाई कल से वह महीना शुरू होगा, जिसे पाकिस्तानी सरकार कश्मीर के फैसले का महीना बना कर रहेगी ये सूचनाए अभी लतीफ मिया व एक-दो पाकी अधिकारियो के अलावा किसी को नही मिली थी, लेकिन वे सोच रहे थे कि सब को आज-कल मे बता दे, ताकि उन का उत्साह बढे।

"मैं नही चाहूगा कि सारी यूनिट कश्मीर चली जाए। किम विण्टर्स को यही रहना चाहिए।"

"हा, वह यही ठीक है।" लतीफ मिया ने स्वीकार करते हुए कहा।

"तब शायद अख्तर भी यही रहना चाहे।"

"लेकिन उसे होशियार करना होगा। उस का सारा ध्यान किम मे अटका रहता है।"

"दिल्ली मे हमारे पच्चीस-तीस लोग बचे है। उन मे से चाहे तो आधे ले जाइए। आधे यहा रहे, यह लाजिमी है।"

"मै कल ही रवाना हो जाता हू। हम कोई जगह तय कर लेगे, जहा सब आ कर मिले। कुछ बसो मे आएगे, कुछ ट्रेन से। मैं ट्रेन से जाऊगा।" लतीफ मिया की आखो मे चमक थी। अब कुछ ही दिन बकाया रहते थे हा, कुछ ही दिन, जब पाकिस्तान अपनी लम्बी योजना को साकार करेगा अगस्त कल से अगस्त शुरू और जल्द ही कश्मीर मे लपटे

दूसरे दिन जब अख्तर को बताया गया कि लतीफ मिया करीब पन्द्रह साथियो के साथ श्रीनगर की ओर चले गए है तो उसे बुरा भी लगा और अच्छा भी। बुरा इस लिए कि लतीफ मिया ने अपने साथ रखने के लायक न समझा और अच्छा इस लिए कि उसे किम विण्टर्स से बिछुडने की मजबूरी नही थी।

किम! पजाबी पोशाक मे वह कितनी सजती है! उसने नकली बरौनिया पहन कर अपनी आखे इतनी खूबसूरत बना ली है कि नकली बरौनिया, जो अमरीकी सौदर्य-विशेषज्ञो ने तैयार की हैं ऐसी बरौनिया कि एकदम नजदीक से देखने पर भी पता न चले। भौहो को आई-ब्रो-पेन्सिल से 'फिनिशिंग-टच' दे कर वह ऐसी सवारती है कि लगता ही नही, ये आखें किम की है अमरीकी लडकी किम विण्टर्स की आखें अब उन मे ऐसा पजाबीपन आ गया है कि महसूस होता है, अख्तर किसी नई लडकी के साथ है। नई लडकी, जो आत्मीय क्षणो मे किम से इतनी मिलती-जुलती है कि बिल्कुल किम जैसी लगे

अख्तर ने फोन कर दिया था, "हैलो! सईदा जी? मैं अख्तर बोल रहा हू सुनिए? मै अचानक नागपुर जा रहा हू। भाईजान बहुत बीमार

है जी नही, यह तो नही मालूम । जाने पर ही पता चलेगा कि क्या हुआ है वैसे भी, काफी छुट्टिया जमा हो गई थी, इस लिए जाने की सोच रहा था । जी ? जी हा, अब कई दिनो तक हमारी मुलाकात न होगी वैसे भी, आप बहुत बिजी होगी आप के 'वो' आने वाले है न ? कल ? कल सुबह आएगे ? विश यू बेस्ट आफ टाइम ! बेस्ट आफ एव्रीथिग ! देखिए, कैसे कहा जाए ? हा कई दिनो बाद ही मिलेगे अब "

फोन रखते समय वह उदास होने लगा । समझ न सका कि उदास क्यो होना चाहिए ? उस की किम उस के साथ है ही सईदा तो [illegible] से पहले था···

कल सईदा को कितना अचरज हुआ था ! वह जासूस भारत मे कब आई होगी, इस बारे मे उस ने कई अटकले लगाई थी—अख्तर मन-ही-मन बेहद कुढ गया था । "लगता है, आप डर गई है ।" उस ने कहा था, "ऐसी गिरफ्तारिया तो होती ही रहेगी ।"

लाजपतनगर की उस खूबसूरत इमारत मे अख्तर और किम को एक कमरा उन्ही के लिए दे दिया गया था । यहा से वे प्राय साथ-साथ बाहर जाते । पडोसियो को उन का परिचय रिश्तेदारो के रूप मे देने के अलावा यह कहा गया था कि इन की नई-नई शादी है, इस लिए दिल्ली देखने के लिए घर से अकेले ही निकलते है ।

सोलह

हीरेन्द्रजी तिहाड जेल से छूट कर आ गए थे। नहा-धो कर भार्गव के यहा पहुचे। उन का स्वास्थ्य कुछ गिर गया था, लेकिन भार्गव साहब ने तुरन्त कहा, "जेल का खाना आप को, लगता है, बडा माफिक आया। स्वास्थ्य पहले से बेहतर है।"

वह मुस्कराए, "मै वहा देश के सम्मान के लिए गया था। खाना बिल्कुल न मिलता तो भी मेरे चेहरे पर आप यही चमक देखते।"

"क्यो नही! मुझे आप पर पूरा विश्वास है। इन दिनो तो राजधानी की गली-गली मे जनसघ के पोस्टर लगे है।—सोलह अगस्त के जुलूस के पोस्टर। उन्हे पढने के किए जगह-जगह बाकायदा भीड जमा हो जाती है। आप ने सच ही कहा था कि कच्छ-समझौते का देशव्यापी विरोध होगा।"

"धन्यवाद, लेकिन आप को 'पोस्टर' की बजाय 'प्रचार-पत्र' कहना चाहिए। हम लोग यदि सचेष्ट हो कर हिन्दी का प्रयोग न करेंगे तो वह कभी लोकप्रिय न होगी।" हीरेन्द्रजी ने गम्भीरता से कहा।

भार्गव साहब कट तो गए, लेकिन मुस्कराते रहे। बोले, "आज आप बडे मौके से आए।"

"कैसे?"

"अभी मेरे यहा एक फाइटर पायलट महोदय आने वाले है। उन से मिल कर आप को अत्यन्त खुशी होगी। सरकार ने उन्हे वायु-सेना पदक भी दिया है।"

"अहोभाग्य! मैं वास्तव मे अपने को धन्य समझूगा।" उन के होठो पर ईमानदार मुस्कराहट छन आई। दोनो हाथो को छाती पर बाधते

हुए उन्होने पूछा, "आप को आफिस जाने की जल्दी तो नही ?"

"आज मै ने छुट्टी ले रखी है। यह फाइटर पायलट मेरे गहरे दोस्त हैं। उन का नाम है बलवन्तसिह लेकिन आप को उन्हे एक रियासत देनी होगी। फौजी लोगो की भाषा मे अग्रेजी काफी होती है। यदि आप अग्रेजी के हिन्दी शब्द सुझाते रहे तो बातचीत बिल्कुल रुक जाएगी।"

"ओह, नही। आप ने मुझे बिल्कुल न जाने क्या आप से तो इस लिए कहता रहता हू कि आप अपने ही है। उन के साथ मैं पहले परिचय मे थोडे ही " हीरेन्द्रजी झेप गए।

"नमस्ते।" लक्ष्मी हाथ जोडती हुई सामने आई।

"नमस्ते, भाभीजी ! कहिए, मब ठीकठाक ?"

"आप सुनाइए। जेल मे कैमी कटी ?"

"अरे, बहुत मजा रहा। देश के सम्मान के लिए मैं जेल क्या, मोर्चे पर भी जा सकता हू।"

"चाय बनाऊ ?"

"नही, नही, अभी नही " हीरेन्द्रजी ने भार्गव की ओर देखा, "अ· आप ने क्या नाम बताया उन का ? जो अभी आने वाले है ?"

"बलवन्तसिह।"

"हा, फाइटर पायलट बलवन्तसिह। उन्हे आने दीजिए, फिर साथ-साथ पीएगे।"

"तो ऐसा करिए न ?" लक्ष्मी ने आग्रह से कहा, "उन का तो आज हमारे यहा भोजन है। आप भी साथ रहिए। पहले चाय का दौर चलेगा। उस के बाद थोडी देर मे खाना।"

"क्यो नही ! क्यो नही !" हीरेन्द्रजी पुलक उठे, "आप जैसो की सगत का यही तो लाभ है। वरना कहा मै और कहा एक फाइटर पायलट ! एक मोटे गद्दो पर सोने वाला, दूसरा आकाश मे शत्रुओ से जूझने वाला। दोनो एक मेज पर भोजन करे ? असम्भव ! आप के

प्रताप से ”

“प्रताप-व्रताप कुछ नही।” भार्गव ने टोका, “आप इसे नितान्त सहजता से लीजिए। फाइटर पायलट के साथ ही क्यो, चाहे तो आप को देश के बडे नेताओ के साथ भी डिनर पर ले चलू !”

“अवश्य ! ऐसे अवसर का मै अवश्य लाभ उठाऊगा।”

लक्ष्मी रसोईघर मे लौट गई थी। पानी पीने के बहाने भार्गव उस के पास पहुचे और बोले, “तुम भी कमाल हो !”

“क्यो ?”

“इन को खाने पर बुला लिया ?”

“मुझे क्या मालूम था कि एकदम से मान जाएगे ! मैं ने यो ही कह दिया था।”

“मुसीबत !”

“बेचारे भले मानस है।”

“भले-बुरे की बात नही है। बलवन्त के साथ सईदा भी आएगी। अगर इन्हे पता चल गया कि मुसलमान के साथ बैठ कर खाना खा रहे हैं तो ”

“बताने की जरूरत ही क्या है ?”

“हु ”

लौट कर वह हीरेन्द्रजी के सामने बैठे। बातचीत कहा से शुरू करे, वह न समझ पाए, अत मुस्कराने लगे। हीरेन्द्रजी ने प्रोत्साहित हो कर कहा, “हो गया न हमला ? पाकिस्तान ने हमे कच्छ मे नीचा दिखाया। अब शास्त्रीजी कश्मीर मे भी कोई ऐसा प्रस्ताव मान लेगे, जिस से देश का सिर हमेशा के लिए झुक जाएगा ”

पाच अगस्त को जम्मू-कश्मीर मे लगभग डेढ हजार छापामार सैनिक घुस आए थे और नागरिक जीवन की शान्ति को भयकर क्रूरता से नष्ट कर रहे थे। हीरेन्द्रजी सीधे ही इस विषय पर आएगे, इस की भार्गव ने

काफी आशा रखी थी । वह चुप रहे । उन के बोलने के इन्तजार मे हीरेन्द्रजी भी पल-दो-पल चुप रहे, फिर कहा, "आज है दस अगस्त । छापामार पूरे पाच दिनो से सर्वनाश फैला रहे है और हमारी सुरक्षा सेना है कि लडने अब पहुची है । मै पूछता हू, डेढ हजार छापामार आप के देश मे घुस आए और आप को पता भी न चले ? हमारे इलाके मे इन्हे पाव ही क्यो रखने दिया गया ?"

"जानते है, जम्मू-कश्मीर की युद्ध-विराम रेखा कितनी लम्बी है ?"

"बहुत लम्बी, लेकिन इस से मतलब ?"

"पूरे पौने पाच सौ मील । इतने बडे विस्तार मे कब कहा से घुसपैठ होगी, आप कैसे कह सकते है ? एक-एक इच जगह पर आप सैनिक खडे नही कर सकते । घुसपैठ का दमन करना अत्यन्त मुश्किल काम है । उस के लिए समय चाहिए ।"

"आप हमेशा सरकार की तरफदारी करते है ।"

"नही, मै सरकार की कई नीतियो का कडा विरोधी हू । उस पर अपने अखबार मे लिखता भी रहता हू । ताजा उदाहरण दू । इन दिनो परिवार-नियोजन का प्रचार जोरो पर है । जगह-जगह 'लूप' के बोर्ड लगे है, लेकिन अधिकाश प्रचार हो रहा है शहरो मे । शहरो के लोग तो पहले से ही सतति-नियमन की आवश्यकता को समझते हे । बताइए भला ! प्रचार-प्रसार की आवश्यकता यदि है तो देहातो मे । इसी तरह एक और मसला लीजिए । सरकार अधिक अन्न उपजाने पर तो जोर डालती है, लेकिन चिडियो, चूहो या दीगर कीडो के नाश की ओर कितना ध्यान देती है ? कई बाते है, जिन से मैं असन्तुष्ट हू—असल शिकायत तो आप से की जानी चाहिए कि आप सरकार का मात्र विरोध ही करते हैं ।"

"सरकार का नही, किसी भी गलत बात का ।"

"अरे ! समाचारो का वक्त हो गया ।" भार्गव साहब ने विषयान्तर

के लिए कहा और रेडियो खोल दिया। दोनो मौन रह कर रेडियो के गरम होने का इन्तजार करते रहे।

आवाज किसी वाक्य के मध्य से शुरू हुई, " ोने कहा कि सयुक्त-राष्ट्र के महासचिव ऊ था को सूचित कर दिया गया है कि कश्मीर मे हुई पाकिस्तानी सशस्त्र घुसपैठ के परिणाम बहुत गम्भीर हो सकते है। आशा की जाती है कि अमरीकी और ब्रिटिश सरकारो द्वारा अपने प्रभावो का प्रयोग किया जाएगा—जैसा कि कच्छ-सीमा-विवाद के समय हुआ था। नई दिल्ली मे आज सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि कश्मीर मे घुस आए, आधुनिक शस्त्रो से लैस लगभग डेढ़ हजार छापामार सैनिको की अधिकाश शक्ति तहस-नहस कर दी गई है। अब तक सब से गहरी घुसपैठ युद्ध-विराम-रेखा से बयालीस मील अन्दर तक याने श्रीनगर से बाईस मील दूर तक रही है। भारतीय सुरक्षा सेना ने स्थिति को पूर्णतया काबू मे ले लिया है। कारगिल और जौरिया क्षेत्रो मे सुरक्षा सेना और सशस्त्र घुसपैठियो मे आमने-सामने मुठभेड हुई। पुछ क्षेत्र मे भागते घुसपैठियो ने दो स्कूलो मे आग लगा दी। उन्होने आग बुझाने के लिए आए ग्रामीणो पर गोलिया च "

हीरेन्द्रजी ने अचानक रेडियो बन्द कर दिया, "बस ! नही सुना जाता ! जहा मा सरस्वती की आराधना होती है, वहाँ आग ! घोर कलियुग !"

भार्गव ने रेडियो खोलने का प्रयास न किया। ये ही समाचार नवीनतम सशोधनों के साथ दिन मे कई बार प्रसारित होगे—कभी भी सुने जा सकते हैं। समाचारो की उत्तेजना से वह बरी हो चुके थे।

"आप का आना इस लिए भी मौके का रहा कि अब हमारी मुलाकातें अनिश्चित हो जाएगी।" भार्गव ने बताया, "परसो मैं कश्मीर जा रहा हू—'प्रभात' के प्रेस-फोटोग्राफर और न्यूज रिपोर्टर की हैसियत से।"

"अच्छा ?" हीरेन्द्रजी ने आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता व्यक्त की ।

"बलवन्तजी भी परसो रवाना हो जाएगे । उन्हे पजाब के किसी अग्रिम इलाके मे ड्यूटी ज्वाइन करनी है ।"

तभी बलवन्त ने प्रवेश किया । कीमती सूट मे उस का कद्दावर व्यक्तित्व चौध पैदा कर रहा था । साथ-साथ सईदा भी अन्दर आई । सवरी हुई । सजीली ।

"आज तो तुम दोनो ऐसे जच रहे हो कि कसम से " भार्गव झपाके के साथ उठे और बलवन्त का हाथ थामते हुए बोले ।

"कसम किस की ? भुट्टो की ?" बलवन्त ने हस कर पूछा । दोनो का ठहाका गूज उठा ।

"आप का परिचय कराऊ ।" भार्गव साहब ने हीरेन्द्रजी की ओर देखा, जो बहुत विनीत भाव से खडे हो गए थे । "आप है श्री हीरेन्द्र-कुमार अग्रवाल । हमारे पडोसी ।"

फिर उन्होने बलवन्त की ओर सकेत किया, "इन का परिचय तो आप को दे ही चुका हू । हा, इन देवीजी को आप ने न पहचाना होगा ।" कहते हुए भार्गव ने सईदा की आखो मे सीधे देखा । जिस तरफ हीरेन्द्रजी खडे थे, उस से दूसरी तरफ की आख को जरा-सा दबा कर उन्होने सईदा को न चौकने का सकेत दिया और कहा, "आप है कुमारी गीता अरोडा । शीघ्र ही ये दोनो जिस बन्धन मे—जिस पवित्र बन्धन मे बधने वाले है, उस की कल्पना आप स्वय कर लीजिए ।"

सईदा अपना नाम बदले जाने का अर्थ न समझी, लेकिन उस ने मुस्कान के साथ हीरेन्द्रजी की ओर हाथ जोड दिए, "नमस्ते ।"

सब बैठे । वातावरण फिर एक बार हास्य से गूज उठा ।

लक्ष्मी सईदा को अपने साथ रसोई मे ले गई ।

"इन्होने मेरा नाम 'गीता' क्यो बताया ?"

"पता नही ! इन के दिमाग मे कब क्या आ जाए, ईश्वर भी नही

जानता ।" लक्ष्मी ने असली कारण छिपा जाना ही उचित समझा । सईदा की कमर पर जोर की चुटकी काटते हुए उस ने पूछा, "अब तो वक्त गुजरने का तुम्हे पता भी न चलता होगा ।"

"उई !" सईदा हसने लगी, किन्तु जल्द ही उस की आखो मे उदासी घिर आई, "परसो 'यह' जा रहे है । दूसरे भी कई पायलट कल पजाब जाएगे—कश्मीर मे तनाव बढ रहा है । न जाने कब जरूरत आ पडे "

"सब्जी मे क्या-क्या पसन्द करोगी ?" लक्ष्मी बात दूसरे विषय पर ले गई ।

"अभी चाय पी ले ।" सईदा ने खौलते पानी मे पत्ती डालते हुए कहा, "सब्जी की बाद मे सोचेगे ।"

"नही, काटनी तो अभी है ।"

"आप जो खिलाएगी, खा लेगे ।"

दूसरे कमरे से भार्गव साहब और बलवन्त की जोर की हसी सुनाई दी । कुछ सेकण्ड के अन्तर से हीरेन्द्रजी का झेप-भरा हास्य भी सम्मिलित हुआ । "इन की चुटकुलेबाजी शुरू हो गई लगती है ।" लक्ष्मी ने कहा ।

एकाएक तीनो का हास्य रुक गया । लगा, जैसे कमरे मे किसी ने प्रवेश किया है । तुरन्त ही एक नारी-स्वर सुनाई पडा, "एक्स्क्यूज़ मी क्या मैं अन्दर आ सकती हू ?"

लक्ष्मी को स्वर पहचाना हुआ न लगा । उस ने झाक कर देखा । दरवाजे पर शलवार-कमीज पहने हुए, पीले दुपट्टे और मधुछत्ते जैसे केश-विन्यास वाली एक युवती खडी थी । लक्ष्मी को देखते ही वह भीतर आ गई और बोली, "नमस्तेजी । अगर आप मुझे दो मिनट का समय दे सके तो "

"कहिए ?" लक्ष्मी समझ गई कि कोई सेल्स-गर्ल है ।

"देखिए, हमारी कम्पनी ने फर्श साफ करने का एक नया पाउडर बनाया है । सस्ता भी है, मेहनत भी बचाएगा ।" युवती ने कहा । इस से

पहले कि लक्ष्मी कोई उत्तर दे पाती, वह उकडू बैठ गई। उस ने एक छोटी-सी पुडिया खोली और सफेद पाउडर फर्श पर बिखेर दिया। कन्धे से लटकते झोले मे से उस ने एक बोतल निकाली, जिस मे पानी भरा हुआ था। पाउडर पर पानी छिडक कर उस ने उगलियो से रगडा, फिर तौलियानुमा रूमाल से पोछ दिया। उतने हिस्से का फर्श अत्यन्त स्वच्छ लगने लगा। युवती ने उसी तरह बैठे रह कर लक्ष्मी की ओर आखे उठाई, "खुद देख लीजिए।" उकडू बैठने से उस की कमीज और कस गई थी। पाउडर घिसते-पोछने समय बार-बार उस का दुपट्टा गिर जाता था—सप्रयास, जिसे वह इस तरह कन्धो पर रखती कि फिर से गिर पडे। लक्ष्मी ने वितृष्णा से कहा, "जी नही, हमे जरूरत नही है।"

युवती ने वैसे ही बैठे रह कर तीनो पुरुषो की ओर देखा। वह अन्दाजा लगाना चाहती थी कि लक्ष्मी इन मे से किस की पत्नी है। अन्दाजा न लगने के कारण उस ने तीनो को ही बारी-बारी से कुछ इस तरह देखा, मानो कह रही हो कि आप की पत्नी भले ही मेहनत बचाने का ख्याल न करे, पर आप को तो करना चाहिए। उस ने शुरू किया, "देखिए जी, मै जो चीज दिखा रही हू, वह बिल्कुल लाजवाब है। सस्ती भी इतनी है कि "

हीरेन्द्रजी दीवार की ओर देखने लगे। युवती ने दुपट्टा गिराने-उठाने-गिराने मे फिर तेजी दिखाई थी। भार्गव को भी बुरा लगा। बोले, "देवीजी, आप को एक बार कह तो दिया कि नही है जरूरत! क्यो आप · ?"

युवती अपनी मुस्कान कायम रखती हुई उठी, "शायद मैं ने आप को डिस्टर्ब किया है। आय'म रीयली सॉरी। मैं फिर कभी आऊगी। हमारी कम्पनी ने घरेलू इस्तेमाल की और भी कई चीजे बनाई हैं। उन का डिमान्स्ट्रेशन बाद मे करूगी। थैंक्यू!" कहते समय वह दोनो हाथो से उन सिलवटो को दूर कर रही थी, जो उकडू बैठते ही कमीज का कसाव

ऊपर चढ जाने से बन गई थी। कमीज नीचे सरकाने के प्रयास मे उस का दुपट्टा फिर गिर गया, जिसे उस ने जरा विलम्ब से कन्धो पर रखा। जब वह कमरे से निकल रही थी, हीरेन्द्रजी ने सिर झुका कर गहरी सास ली।

लक्ष्मी रसोईघर मे लौट गई। सईदा ने उस के चेहरे के बदले रग को देख कर कहा, "क्यो ? कोई खास बात ?"

सईदा की आखो मे पल-दो-पल ताकते रह कर लक्ष्मी चबाए हुए स्वर मे बुदबुदाई, "औरतो मे अक्ल नही होती क्या ?"

"अरे ! ऐसी कौन थी वह ?"

"कोई सेल्स-गर्ल। जी तो हुआ कि पूछू, 'सामान बेचने आई हो या मुस्कान बेचने ? चुस्त कपडो मे अग-अग दिखाने ?' दो मिनट मे कम-से-कम दस बार दुपट्टा गिरा होगा साहबजादी का !"

"यह फैशन वाकई बहुत बढ गया है।" सईदा ने स्वीकारा।

"पता नही, शहरो की औरतो को क्या होता जा रहा है। दिनोदिन बेशर्म !"

"इस का कसूर औरतो से भी ज्यादा सरकार का है।" सईदा ने उस की ओर आखे उठाई, "फैशन उपदेश से नही रुकता, रुकता है कानून से। हमारी सरकार क्यो नही कानून बनाती ? चुस्त या ट्रान्सपेरेण्ट पोशाको पर कई मुल्को मे कानूनी रोक है। जब तक ऐसा नही होगा, औरतें बेशर्म होती जाएगी। इस लिए होगी कि सब हो रही हैं—वरना वे अपने को दब्बू महसूस करे।"

"खैर, छोडो। हम लोग चाय उन के साथ बैठ कर पं ए या नही ? मेरे ख्याल से तो "

"यही ठीक रहेगा।" सईदा ने वाक्य पूरा किया।

चाय-बिस्कुट की ट्रे ले कर लक्ष्मी जब ड्राइग-रूम मे आई, हीरेन्द्रजी भार्गव साहब से कह रहे थे, "आप ने मुझे गलत समझा। मेरा मतलब

यह नही कि आधुनिक हुआ ही न जाए। लेकिन आधुनिकता का अर्थ समझने मे हम भूल कर रहे है। आधुनिक होने के फेर मे हम भारतीय परम्पराओ को जिस तेजी से छोड रहे है, वह भयकर है।"

"मैं और सई—मै और गीता किचन मे चाय पी रही है। यहा आप लोगो के ठहाको मे हमारी प्राइवेट बाते न हो सकेगी।" लक्ष्मी लौटती हुई बोली।

बलवन्त को हीरेन्द्रजी की छेडखानी मे मजा आ रहा था। भार्गव भी चूकि बढावा दे रहे थे, रग और जम रहा था। हीरेन्द्रजी छेडखानी को पहचान नही पा रहे थे।

दाढी के कुछ बालो को जाली के नीचे व्यवस्थित करता हुआ बलवन्त बोला, "अग्रवाल साहब, आप सिर्फ अपने नजरिए से सोचते है। हमे दूसरो को भी समझने की कोशिश करनी चाहिए।"

"जैसे ?"

"क्या लडकियो मे खूबसूरत दीखने की हसरत नही होती ?"

"चुस्त पोशाके आरामदेह नही है। स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक हैं। इस लिए वे खूबसूरत भी नही है।"

"आप ने खुद कभी चुफ्त पेट पहन कर देखी है ?"

"जी ? जी नही।"

"मै ने देखी है। चुस्त पोशाक आदमी को वाकई चुस्त बना देती है। लगता है, वह सब से आगे निकल जाएगा—तीर की तरह। या कहिए, गाइडेड मिसाइल की तरह ! कसी हुई पोशाक मे जो स्मार्टनैस है, उस का जवाब नही। रही हैल्थ को नुकसान पहुचाने वाली बात। मै इसे मानने के लिए तैयार नही हू। चुस्त पोशाक पहनने वाले लडके-लडकिया खासे हैल्दी होते है।" बलवन्त ने रुक कर भार्गव से पूछा, "आप मुस्कराए क्यो ?"

"मैं ने अग्रवालजी को पहले ही सचेत कर दिया था कि बलवन्त

अग्रेजी शब्दो का खूब इस्तेमाल करेगा। अग्रवालजी कभी-कभी नाराज हो जाते है।"

"ओह !" बलवन्त ने हीरेन्द्रजी की ओर देखा, "माफ कीजिएगा खैर हा, तो मैं कह रहा था "

"मै आप का मतलब समझ गया। ठीक है, चुस्त पोशाक पहनने से चुस्ती आती होगी, लेकिन यह नकली चुस्ती है। व्यक्ति अगर ब्रह्मचर्य का पालन करता हो, रोज सुबह सूर्योदय से पहले उठता हो, प्राणायाम करता हो—फिर देखिए, उस मे चुस्ती कैसे नही आती। हमारे रक्षा-मन्त्री श्री चव्हाण क्या चुस्त पेंट पहनते है ?"

"ब्रेवो ! ब्रेवो ! बलवन्तजी, इस का जवाब दीजिए।" भार्गव साहब उछल पडे।

"अग्रवालजी, आप ने जिन का उदाहरण दिया है, वह आम जनता से बहुत ऊचे है। आम जनता के सोचने-समझने का तरीका और ही होता है। गाधीजी एक धोती पहन कर बडे-से-बडे फक्शन मे जा सकते थे, बडी-से-बडी पर्सनैलिटी से मिल सकते थे—लेकिन इस का मतलब यह तो नही कि आम जनता भी ऐसी हो जाए ? इम्पासिबल !"

"दुनिया मे असम्भव कुछ भी नही।" हीरेन्द्रजी ने दृढता से कहा।

"थ्योरी के मुताबिक आप सही है, लेकिन प्रैक्टिकल हो कर सोचिए। आप अपनी गलती खुद महसूस करेगे।"

"बलवन्तजी, मानना पडेगा कि आप तर्क करने मे बहुत तेज है।" हीरेन्द्रजी के स्वर मे झझलाहट थी, "दुनिया मे चूकि तर्क नाम की चीज है, आप हाथी को घोडा भी सिद्ध कर सकते है—लेकिन हाथी हाथी है और घोडा घोडा।"

"वण्डरफुल ! मुझे लगता है, जीत अग्रवालजी की होगी। लीजिए, पहले चाय पीजिए, बिस्कुट खाइए। इस के बाद इजाजत दीजिए, ताकि मैं भी आप लोगो के सामने कुछ बोल सकू।" भार्गव साहब ने दोनो की

ओर प्याले खिसकाए।

"अवश्य !" हीरेन्द्रजी ने चाय की चुस्की ली, "हमे आप की वाणी का भी लाभ मिलना चाहिए।"

"मुझे लगता है, हम भारतीय मानव-शरीर से बहुत डरते है। हमे अन्धा विश्वास है कि अगर अगर शरीर का कोई खास हिस्सा दिखाई पड गया तो अनर्थ हो जाएगा। वास्तव मे हम चुस्त पोशाक का नही, शरीर-दर्शन या प्रदर्शन का एक्जिबिटिज्म का विरोध करते है। शरीर न हम खुद देखना चाहते हैं, न यही सह सकते है कि दूसरे ही देखे-दिखाए। हम तुरन्त उन की कटु आलोचना करते है ताकि ताकि हम अपनी इन्फीरियारिटी—आई मीन वैसे, माफ कीजिएगा, अग्रवालजी, मुझे इन्फीरियारिटी की हिन्दी मालूम है—ताकि हम अपनी हीनता की भावना छिपा सके। जो खूबसूरत होता है, उसे खूबसूरत दीखने मे झिझक भी नही होती। मर्द पहले से ही औरतो की तुलना मे कम खूबसूरत, कम आकर्षक है—अब वे और ज्यादा पिछड गए है। इसी लिए·· इसी लिए वे औरतो मे चिढने लगे है और "

"कुछ भी कहिए, साहब," भार्गव द्वारा बढाई गई प्लेट मे से एक बिस्कुट उठाते हुए हीरेन्द्रजी बोले, "लेकिन इस बारे मे दो मत नही हो सकते कि चुस्त पोशाक मे नग्नता और कामुकता है। इस से हमारे युवको पर बुरा असर पडता है। पाउडर वाली देवीजी की हरकतो से मुझे ही नही, आप दोनो को भी अटपटा लगा था—लगा था या नही ?"

बलवन्त ने कहा, "क्योकि उन देवीजी ने अपना प्रदर्शन गलत मौके पर किया। हम तीनो ऐसे मूड मे नही थे कि उन की उस दिलेरी का स्वागत कर सकते।"

"आप इसे दिलेरी कहते है ?" हीरेन्द्रजी को घोर आश्चर्य हुआ, इस बेशर्मी को आप दिलेरी कहते है ?"

"आइए, पान खा आए।" भार्गव उठ खडे हुए, "ऐसी बहसो का

कोई अन्त नही । शायद हम व्यर्थ उलझ रहे है, क्योकि दुनिया जिधर जा रही है, उधर ही जाएगी ।" उन्होने रसोईघर की दिशा मे देखा, "सुना ? हम जरा घूम कर आते है । मामला कितनी देर मे तैयार हो जाएगा ?"

"बस, आधा घण्टा और ।" लक्ष्मी का उत्तर आया ।

"हम पन्द्रह-बीस मिनट मे लौटते है ।"

तीनो सडक पर आ गए । पान बाहर आने का एक बहाना ही था । भोजन से आधा घण्टा पहले पान खाने मे कोई तुक नही थी । बलवन्त अपनी पगडी सम्भालता और मूछो पर ताव देता हुआ इधर-उधर घूमती लडकियो-महिलाओ को देख रहा था । हीरेन्द्रजी को लगा कि ऐसा उन्हे चिढाने के लिए किया जा रहा है । वह चुप रहे । अभी तो भोजन होना है—कम-से-कम एक घण्टे का साथ अभी और

पान के बाद भार्गव की सिगरेट सुलग उठी । उन्होने हीरेन्द्रजी की तरफ देखा, "अग्रवाल साहब, मैं बहस फिर शुरू नही करना चाहता । बहस के लिए नही, आप को बताने के लिए कह रहा हू—दुनिया का शायद ही कोई देश ऐसा हो—बल्कि दुनिया का कोई देश ऐसा नही है, जहा भौतिक उन्नति हुई हो, लेकिन कामुकता न बढी हो । अमरीका सब से अमीर देश है—और सब से कामुक । पश्चिम के सभी देशो मे मानव-शरीर एक अनोखे सौंदर्य की इकाई है । वहा "

"शरीर-प्रदर्शन कर के वे अपनी वासना भडकाते है । हम कहते है, वासना पहले से ही भडकी हुई है—उसे शान्त करो, वश मे रखो ।" हीरेन्द्रजी बोले ।

"मैं आप से सहमत हू । प्रकृति ने मानव को वासना से ओतप्रोत कर दिया है, जरूरत-से-ज्यादा ही उसे लेकिन जो है, है । हम उसे नकार नही सकते । इसे मैं कायरता कहूगा । जबकि वासना को हम भारतीय नकारना चाहते है । हम वासना को न भडकाए, न सही, लेकिन हम उस

से डरते क्यो है ? उस से नफरत क्यो करते है ?"

"लीजिए, बहस फिर शुरू हो गई ।" बलवन्त ने टोका ।

"हा । शायद । दरअसल मै ने एक तथ्य सामने रखने के लिए शुरूआत की थी । मै बहस नही करना चाहता—सचमुच नही । लेकिन यह सब चौकाने वाला है । अच्छा है या बुरा, इस पर सोचने लगेगे तो फिर उलझ जाएगे—परन्तु तथ्य हमेशा तथ्य होता है ।"

"कौन-सा तथ्य ?" हीरेन्द्रजी की प्रश्नवाचक आखे उठी ।

"पूरी दुनिया मे, हीरेन्द्रजी, नग्नता दिन-ब-दिन लोकप्रिय हो रही है। पिछले वर्ष 'टापलेस बेदिग सूट' ने दुनिया भर मे तहलका मचा दिया था, लेकिन यह तो एक कार्मशियल याने एक व्यावसायिक सफलता थी । असल मे बिना ब्रेसियर की पोशाके पश्चिम के क्लबो, नाच-घरो वगैरह मे बहुत मामूली बात हो चुकी है। स्कैडिनेविया और उत्तर जरमनी मे युवक-युवतिया बिल्कुल नग्न हो कर सामूहिक स्नान कर लेते है और इस मे उन्हे कोई अजूबा नही लगता । यूरोप मे हजारो क्लब या द्वीप ऐसे है, जहा जाने से पहले सारे कपडे उतार देने होते है—ये क्लब अपने को सूर्य-पूजक कहते है ।"

"हा, मै ने सुना है ।"

"आप ने सुना है—मै ने देखा है ।"

हीरेन्द्रजी चौक गए, फिर हसने लगे, "क्यो मजाक करते है !"

"मजाक नही, मै सचमुच 'न्यूडिस्ट कैम्प' मे जा चुका हू । तीन वर्ष पहले इग्लैण्ड गया था तब 'फेडरेशन आफ ब्रिटिश सन-क्लब्स' की ओर से मुझे एक 'न्यूडिस्ट कैम्प' मे ले जाया गया । वहा मैं ने नग्न होने से इन्कार कर दिया तो उन्हे बडा आश्चर्य हुआ कि कि मुझे अपने ही शरीर से इतना भय क्यो लगता है । उन्होने कहा कि कपडे पहन कर तो आप 'सन-क्लब' मे न जा सकेगे । लिहाजा, मुझे नग्न होना पडा ।"

भार्गव रुके । हीरेन्द्रजी चकित भाव से उन्हे घूर रहे थे ।

"आप सोचते होगे, न्यूडिस्टो के नग्नतावादियो के इन क्लबो मे कामुकता का ताण्डव होता होगा, लेकिन हीरेन्द्रजी, ऐसा नही है। पूर्ण नग्नता तो यौन को समाप्त कर देती है, जबकि अर्द्ध-नग्नता उसे भडकाती है। आप दिल्ली से ही क्यो मेरा मतलब है—शिकायत करते है? सच मानिए, दुनिया के निन्यानवे प्रतिशत बडे शहर इसी अर्द्ध-नग्नता से पीडित है। आज से तीस वर्ष पहले 'स्ट्रिप-टीज क्लब' केवल पेरिस मे होते थे—आज वे लगभग सारी दुनिया मे है। ये क्लब क्या है, शायद आप जानते होगे।"

"जी हा," हीरेन्द्रजी सिर झुका कर बोले, "दुर्भाग्यवश जानता हू। वहा नर्तकी एक-एक कर सारे कपडे उतार देती है—कलियुग आने मे अब क्या कसर रह गई? हलाहल कलियुग!"

"मैं इस पर धार्मिक दृष्टि से विचार नही करना चाहता। मैं तो सिर्फ यह कह रहा हू कि युग बदल रहा है। हम उस से शिकायत करेंगे तो शिकायत ही करते रह जाएगे। हमे अपने को बदलना है। तभी इस नए युग मे हम हम एडजस्ट—फिट हो सकेंगे। भारतीय महिलाओ ने तो सजना-सवरना अभी शुरू ही किया हे, हीरेन्द्रजी, आने वाले वर्षों मे आप देखेंगे कि देश बहुत भौतिक तरक्की करेगा। यहा भी भयकर नग्नता छा जाएगी—जापान जैसा सास्कृतिक देश भी इस से नही बचा है। आप कहा तक शिकायत करेंगे? किस-किस से करेंगे?"

हीरेन्द्रजी का चेहरा बुझ गया था। वह नीचे देखते हुए खामोशी से चलते रहे। बलवन्त उन की ओर साकेतिक दृष्टिपात कर के मुस्करा दिया।

एकाएक हीरेन्द्रजी रुक गए। उन का चेहरा फक हो गया था।

'क्या हुआ, अग्रवालजी?' भार्गव आश्चर्य से पूछने ही वाले थे कि उन्होने कहा, "माफ कीजिएगा, भार्गव साहब, मेरे पेट मे बहुत तेज दर्द उठ रहा है। कभी-कभी अचानक ऐसा हो जाता है। कई डाक्टरो

को दिखाया लेकिन ओह !" उन्होने पेट पर हाथ रख कर दबाया और दोहरे होने लगे ।

भार्गव ने उन्हे थाम लिया । बलवन्त ने भी सहारा दिया ।

लगभग आधे मिनट मे वह कुछ स्वस्थ हुए और बोले, "मुझे इस वक्त का खाना नही खाना चाहिए । माफ कीजिए, मुझे अत्यन्त दुख है कि मैं मै आप के साथ भोजन करने का स्वर्ण अवसर खो रहा हू लेकिन मुझे घर जा कर आराम करना होगा ।"

सत्रह

लतीफ मिया चिन्तित थे। उन्हे इतना ग्रहसास तो था कि श्रीनगर तक पहुचने मे घुसपैठियो को बहुत दिक्कत होगी लेकिन उन का दमन करने मे भारतीयो को जो सफलता मिली थी, उस से वह चौक गए थे। अनेक इलाको मे सशस्त्र घुसपैठियो को भारतीय सुरक्षा सेना से बहुत तगडी मुठभेड लेनी पडी थी। कल श्रीनगर तक पहुचने की कोशिश मे लगभग सौ घुसपैठिए मौत के घाट उतर गए थे और लगभग पौने दो सौ घायल हो कर भाग रहे थे—छिपने की कोशिश करते हुए।

एक और बहुत बडी परेशानी कश्मीरी जनता थी। पाकिस्तानी ग्रधिकारियो द्वारा सौ फी सदी यकीन दिलाया गया था कि घुसपैठिए ज्यो ही कश्मीर मे घुस कर छापे मारेंगे, वहा के मुसलमान उन का साथ देगे और सारे राज्य मे बलवा हो जाएगा। इस्लाम के बन्दे कश्मीरी और हथियारो से लैस घुसपैठिए श्रीनगर को कब्जे मे कर लेगे व काफिरो की जायदाद तहस-नहस हो जाएगी।

लेकिन कश्मीरी मुमलमानो ने साथ नही दिया था। न केवल इतना, उन्होने घुसपैठियो को पकडने या मौत के घाट उतारने मे भारतीय फौजो को भरपूर सहायता दी थी।

ग्रखबारो मे उन घुसपैठियो के अनेक फोटो छपे थे, जिन्हे पकड कर पूछताछ के लिए दिल्ली ले जाया गया था। फोटो खीचने के लिए उन्हे आखो पर पट्टी बाध कर एक कतार मे खडा कर दिया गया था। सारे हथियार छिन जाने के बाद वे कैसे मासूम लग रहे थे—मानो भेडो पर से सारी ऊन उतार ली जाए।

रात का खाना एक होटल मे लेने के बाद उन्होने आपत्कालीन स्थिति के लिए कलेजी के बहुत-से टुकडे लिफाफे मे रख लिए। एक जेब मे यह लिफाफा और दूसरी मे भरा हुआ रिवाल्वर सोच भी कौन सकता था कि खुली सडक पर इतनी आजादी से घूम रहा यह आदमी पाकिस्तानी एजेण्ट है! उन्हे रोमाच हो आया।

अधेरा घिरते ही रिमझिम बारिश होने लगी और ठण्डक बढ चली।

पहले उन का इरादा था कि किराए की साइकल ले कर 'उधर' जाएगे, लेकिन जान-पहचान के बिना कोई भी दूकानदार उन्हे साइकल देने के लिए तैयार नही हुआ था। लाचारी मे उन्हे पैदल ही रवाना होना पडा। हा, नया छाता जरूर उन्होने खरीद लिया था—बारिश के आसार दोपहर से ही थे।

ठण्डी हवा मे मिट्टी की गन्ध थी। पहाडी इलाके का सौदर्य अधेरे ने ढक दिया था और वह छाता खोल कर चले जा रहे थे। उन का सिर झुका हुआ था और चेहरा गम्भीर। जिस हाथ मे छाता नही था, उसे उन्होने जेब मे डाल रखा था—रिवाल्वर! रह-रह कर उन्हे वे सैनिक दस्ते याद आ जाते, जो गुलमर्ग मे लगभग चौबीसो घण्टे दीखते रहे थे। स्ट्रेचर पर ले जाए जा रहे कई घायल सैनिक भी उन्होने देखे थे—घुसपैठियो के आधुनिक, अमेरिकी हथियारो से घायल काफिर! उन्होने बहुत सावधानी बरती थी कि मन का सन्तोष उन की आखो मे न झलक आए।

लगभग साढे नौ बजे वह दस किलोमीटर का फासला तय कर चुके थे। सडक के किनारे लगे पत्थर ने उन्हे बताया कि अब आगे जाने की जरूरत नही है। थकान के कारण दोनो पिडलिया दर्द कर रही थी। हवा मे कुछ ज्यादा ही ठण्डक महसूस हुई—वह मोटा स्वेटर और कोट पहने हुए थे तो भी। फुहार रुक गई। उन्होने आकाश की ओर देखा। बादल छट रहे थे। जमीन चिपचिपी हो चली थी। सडक के गढो मे पानी भर गया

था। बारिश रुकते ही झीगुरो ने तान छेड दी। आसपास कोई नही। ठीक सिर के ऊपर से जुगुनुओ का एक दल उडान भर रहा था। अंधेरे मे उन का वह बादल जलता-बुझता हुआ खामोशी के साथ आगे सरक गया। लतीफ मिया को उन के आने और सरकने का पता न चला। उन का सारा ध्यान कोई ऐसी झाडी ढूढने मे लगा हुआ था, जिस मे अपने छाते के नीचे वह आसानी से दुबक सके।

उन्होने एक झाडी के भीतर छाता डालते हुए कुरेदने जैसी कोशिश की।

फो!

कोई साप निकल आया, तो?

पर झाडी खामोश रही। वह उस के भीतर जाने लगे, लेकिन झाडी के गर्भ मे जगली गुलाब के पौधे थे। काटो ने उन के दोनो हाथो को नोच लिया। गाली बुदबुदा कर वह बाहर आ गए। कुछ झाडिया जरूरत से ज्यादा बडी थी। कुछ छोटी थी। कुछ इतनी घनी थी कि उन मे दाखिल होना मुश्किल था। कुछ के बारे मे लतीफ मिया बेवजह शक मे पड गए कि इस के भीतर कोई है। कोई भी—साप, बिच्छू, खरगोश।

अन्त मे एक झाडी जची और वह उस के अन्दर चले गए। छोटे लेकिन तेज चाकू से उन्होने उस की कुछ डालिया काट डाली, ताकि हिलने-डुलने मे आसानी रहे। झाडी की शाखाओ व पत्तियो मे पानी की बूदे अटकी हुई थी। काटने के प्रयास मे वे बरसने लगती।

रेडियम-डायल वाली कलाई-घडी मे उन्होने देखा—साढे दस। बारह के बाद यहा घटनाए शुरू होगी। तब तक उन्हे खामोश बैठे रहना है। उन्होने अपनी जेब मे से छोटा ट्रांजिस्टर निकाला। उस का इयर-फोन कान मे लगा कर उन्होने स्विच आन किया। इयर-फोन के कारण ट्राजिस्टर की आवाज अकेले वही सुन सकते थे।

आकाशवाणी से समाचार आ रहे थे, "जम्मू-कश्मीर की युद्ध-विराम-

रेखा पर सशस्त्र घुसपैठियो और भारतीय सुरक्षा सैनिको मे लगातार मुठभेडे होती रही। घुसपैठिए सामना करने की बजाय या तो हथियार छोड कर शरण मे आ रहे है या जान बचाते हुए पाकिस्तान की ओर भाग रहे है। श्रीनगर मे कल से पूर्ण शान्ति हे। गिरफ्तार हुए घुसपैठियो से पूछताछ करने पर पता चला है कि वे पाकिस्तान की 'जिब्राल्टर फोर्सेस' के सैनिक ह, जिस के हैड-क्वाटर मरी मे है। 'जिब्राल्टर फोर्सेस' मे छह यूनिटे रखी गई ह। हरेक यूनिट मे पाच कम्पनिया है और हर कम्पनी मे सौ से अधिक सैनिक। इस प्रकार पूरी 'जिब्राल्टर फोर्सेस' मे तीन हजार से ज्यादा सैनिक होने की सम्भावना है। अभी इन मे से आधे सैनिको ने ही कश्मीर मे घुसपैठ की है। जल्द ही बकाया सैनिक भी घुसपैठ करेगे, इस की आशका है। इस स्थिति के मुकाबले के लिए भारतीय फौजो ने पूरी तैयारी कर ली है। गिरफ्तार हुए एक पाकिस्तानी अफसर के पास से लगभग पाच हजार रुपयो के भारतीय नोट प्राप्त हुए है। दूसरे घुसपैठियो को भी नोट दिए गए है ताकि वे ग्रामीणो को फुसलाने के लिए घूस दे सके—यह आकाशवाणी है—प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री और रक्षा मन्त्री श्री चव्हाण ने इस पर बडा ही सन्तोष प्रकट किया है कि कश्मीरी जनता ने भारत के प्रति अपने विश्वास का पूरा परिचय दिया है और घुसपैठियो को मुह की खानी पडी है। अभी तक पाकिस्तान ने यह स्वीकार नही किया है कि कश्मीर की इस तोडफोड के पीछे उस का हाथ है। पाकिस्तानी रेडियो और अखबार लगातार यह प्रचार कर रहे है कि कश्मीर मे भारत सरकार के खिलाफ आन्तरिक विद्रोह हो गया है। एक सार्वजनि • "

लतीफ मिया ने ट्रांजिस्टर आफ कर दिया।

इन समाचारो के लिए उन्हे भारतीय रेडियो सुनने की जरूरत नहीं थी। उन्हे ज्ञात ही था कि 'जिब्राल्टर फोर्सेस' को मई महीने से ही बहुत ही तेजी के साथ ट्रेनिंग दी गई थी। घुसपैठियो को हुक्म मिला था कि

वे पुल और रेल लाइने तोडे, सडके काट दे, सैनिक अड्डे नष्ट करे और महत्वपूर्ण लोगो को मौत के घाट उतार दे। इस के लिए उन्हे रायफले, लाइट मशीनगने, स्टेनगने, हथगोले, टाइम-बम तथा अन्य विस्फोटक पदार्थ, डिटोनेटर्स, फ्यूज आदि अनेक आधुनिक अमेरिकी व चीनी हथियार दिए गए थे। कम्पनी-कमाण्डर्स के रूप मे उन के साथ मेजर, कैप्टन और जे० सी० ओ० आए थे।

घुसपैठियो के एक दल ने लतीफ मिया को सूचना दी थी कि वे उन से कब और कहा मिलेगे। तब लतीफ मिया ने पाकिस्तान को कुछ सकेत ट्रासमिट किए थे और उन का जवाब भी पा लिया था—जिस रात घुसपैठियो से मुलाकात होगी, उसी रात एक हवाई-जहाज आएगा। जमीन से सकेत पाते ही वह हवाई-छतरिया उतारेगा। हरेक छतरी अपने साथ भयकर शस्त्रो का अम्बार ले आएगी। रातोरात वे हथियार घुसपैठियो मे बट जाने है। हथियार बटेगे, यह सूचना ट्रासमिट कर दी गई थी।

इन घुसपैठियो के हथियार या तो छिन गए थे या भारतीय जवानो से लडने मे खत्म हो गए थे। पाकिस्तानी हवाई जहाज दवाओ की एक पेटी भी उतारने वाला था। कई घुसपैठिए बहुत बुरी तरह घायल हो गए थे, लेकिन उन के पास प्राथमिक दवाओ का भी इन्तजाम नही था।

अधेरे मे घूर-घूर कर देखने के कारण लतीफ मिया की आखो मे पीडा होने लगी थी, लेकिन उन्हे यह अच्छा लगा। यह पीडा इस का सबूत थी कि वह कुछ करने जा रहे है—कुछ करते रहे है।

बारह बजे के बाद उन का चौकन्नापन कई गुना हो गया। आकाश बिल्कुल साफ था। उस के नीले विस्तार मे तारे टिमटिमा रहे थे। बारीक, फीका चाद भी निकल आया था। लगता था, वह जरा भी सरक नही रहा।

दूर

धीमी गूज उभर रही थी दूर

'आ गया !' लतीफ मिया ने जेब से टार्च निकाल ली। काच पर रूमाल रख कर उन्होने उसे आकाश की ओर ताका और बटन को बार-बार दबा कर बन्द किया। रोशनी का वह फीका खम्भा निहायत खामोशी के साथ काली हवा को चीर देता और झप्प करता हुआ बुझ जाता। गूज करीब आ रही थी ड्रोओओ करीब और करीब लतीफ मिया ने दो-तीन बार और टार्च जलाई-बुझाई। वह झाडी से बाहर निकल आए, ताकि आकाश मे रोशनी और साफ जा सके हवाई-जहाज ! उस की लाल बत्तिया उन के सकेतो के जवाब मे एक बार जली और बुझ गई

अब वह ऐन सिर के ऊपर चक्कर काट रहा था ड्रोवोओओ

एक। दो। चार।

सात।

दस।

ग्यारह। बारह।

वापस।

बारह छतरिया उतार कर वह तीव्रता से लौट गया।

रूई के विशालकाय फाहे उतर रहे हो, धीरे-धीरे ऐसा लगा और लतीफ मिया के पीछे ठक्क-सी आवाज हुई। पहली पेटी जमीन पर आ लगी थी। शस्त्रो की पेटी ! छतरी के साथ-साथ वह कुछ दूरी तक घिसटती रही। खड-खड छतरी का फूला हुआ घेरा क्रमश दबता गया। वह किसी हवा-निकले गुब्बारे की तरह जमान पर फैल गई। यहा। वहा। दूर। पास। इधर। उधर। बारह छतरिया लतीफ मिया लपक कर सब से करीब की छतरी के पास पहुचे और

भागते बारहसिगे को गोली लगे और तत्काल उस की जान निकल जाए, इस तरह लतीफ मिया जमीन पर गिरे और दुबक गए—उन्होने सडक पर कोई मानव-आकृति उभरते देखी थी। सरकते हुए वह एक

झाडी की ओट मे हो गए। कौन है यह ? कोई जवान ? ग्रामीण ? खुफिया विभाग का कोई आदमी ? उन्होने आखे सिकोड कर देखा। क्या यह अकेला ही है ? या आसपास इस के साथी छिपे हुए है ? वह सिहर गए

मानव-आकृति ठिठक कर खडी रह गई थी। वह जिधर देख रही थी, उधर एक हवाई-छतरी रहस्यमय अधेरे मे सफेद-सफेद झलक रही थी। आकृति छतरी की ओर बढी उस के पहनावे से लतीफ मिया ने अन्दाजा लगाया कि कोई ग्रामीण है। आधी रात को यह इधर कैसे निकल आया ? कारण जो भी हो, लेकिन इस ने छतरी देख ली है और इस का एक ही इलाज है लतीफ मिया ने रिवाल्वर निकाला।

नही।

रिवाल्वर की आवाज रात के सन्नाटे मे दूर तक जाएगी। उसे जेब मे रख कर उन्होने चाकू पर उगलिया कस ली और आकृति की ओर सरके। आकृति छतरी के पास जा खडी हुई थी।

अब वह शस्त्रो की पेटी को टटोल रही थी। कुछ और झुक कर उस ने छतरी के रेशमी कपडे को छूना चाहा झुकते ही उसे दबोच लिया गया। अधेरे मे वह छुरा दो-तीन बार चमका। उस की चीख को ताकतवर हथेली ने घोट दिया। छाती भिद गई। हाथ-पैर ऐठे और शान्त।

उत्तेजना से लतीफ मिया तेज सासे ले रहे थे। कपडो मे जगह-जगह खून के दाग। उन्होने उन्हे छुआ और चेहरा एक तरफ करते हुए थूक दिया। टार्च के सामने रूमाल रख कर उन्होने बटन दबाया। अन्दाजा गलत नही था। कोई ग्रामीण ही था वह।

लाश घसीट कर उन्होने एक झाडी मे डाल दी। फिर वह छतरियो मे से पेटियो को अलग करते रहे। इस मे काफी समय लगा। वजनदार पेटियो को एक जगह इकट्ठा करने की कोशिश बेकार ही रहती। उन्होने

कोशिश ही नही की। घडी मे देखा। दो।

छतरियो के फैले हुए कपडे दूर से ही किसी का भी ध्यान आकर्षित कर सकते थे। उन्होने बारहो छतरिया समेट कर एक झाडी मे छिपा दी। यह जानते हुए भी कि ग्रामीण मर गया है, उन्होने लाश वाली झाडी मे एक बार और झाक लिया।

इस के बाद वह अपनी झाडी मे लौटे। छाता वही रखा था। ठण्ड कुछ और बढ गई थी। दूर आकाश के परदे के सामने कुछ पहाडियो की धुधली, काली चोटिया

उन्होने जेब से एक 'टिकटिकी' निकाली। छोटे मेढक जैसे इस बाजे मे लगा टिन का एक टुकडा दबाने पर 'टिक' की आवाज होती थी। मानो कही रात के कीडे बोल रहे हो।

लतीफ मिया ने 'टिकटिकी' बजाई और ध्यान से सुना। कोई जवाब न आया।

पन्द्रह मिनट बाद उन्होने फिर यही किया। टिक-टिक। एक बार और। फिर एक बार।

जवाब आया—हा, इस बार। दूर से, तीन-चार अलग-अलग 'टिक-टिकियो' की आवाजे। लतीफ मिया ने धोखे से बचने के लिए फिर 'टिक-टिकी' बजाई। हर बार जवाब आए। हर बार पहले से ज्यादा। ठीक है। घुसपैठिए आ पहुचे। या खुदा! हम तेरे ही बन्दे है। हमारी मदद कर! लतीफ मिया झाडी से बाहर निकल आए।

थोडी ही देर मे उन्हे घुसपैठियो ने घेर लिया। वे झाडियो की ओट से निकले, लताओ मे से निकले, तरह-तरह की आडो के पीछे से निकले। बहुत ही चौकन्नेपन के साथ वे छिप-छिप कर आ रहे थे। इक्के-दुक्के, तीन-तीन, चार-चार।

दवाओ की पेटी खुलते ही कुछ घायलों की मरहम-पट्टी मे जुट गए। शेष ने हथियारो, गोलो और कारतूसो आदि का एक तरफ ढेर लगा दिया।

जल्द ही बटवारा शुरू हुआ। किसी को कुछ हाथ लगा, किसी को कुछ। निहत्थे होने से बेहतर था कि पास मे कुछ तो हो। भागना भी सुरक्षित रूप से तभी हो सकता था, जब हथियार साथ हो। इस्तेमाल न होने पर भी हथियार कितने अनोखेपन के साथ हौसला बढा देते है।

वे लडना तो दूर, भारतीय इलाके मे ठहरने के लिए भी तैयार नही थे। कइयो को कई दिनो से भोजन के दर्शन तक नही हुए थे। एक ने लतीफ मिया से कहा, "मेरी सलाह मानिए और आप भी भागिए।"

"मेरी जान चली जाए, तो भी ऐसा नही होगा। मैं लडूगा। हमारी सरकार ने ये हथियार इस लिए नही भेजे कि उन्हे ले कर हम भाग सकें। इस लिए भेजे हैं कि हम लडे।"

"हम बहुत थोडे है। हमे हिन्दुस्तानी फौजो से ही नही, कश्मीर के मुसलमानो से भी बच कर रहना है। अभी मर जाने से बेहतर है, हम भाग जाए और अच्छा मौका देखकर काफिरो पर फिर कभी टूट पडे।"

इस तर्क ने लतीफ मिया को हचमचा दिया, लेकिन उन का चेहरा पथरीला बना रहा।

"नही!" वह बुदबुदाए, "तुम लोग गलत सोचते हो। अगर हर मुजाहिद इसी तरह सोचने लगे तो हो चुकी फतह—हम कश्मीर को कभी आजाद नही करा सकेगे। बल्कि जितना कश्मीर हमारे पास है, उस से भी हाथ धो बैठेगे।"

"खुद हमारी सरकार ही गलत ढङ्ग से सोचती है।" एक ऊंचे-पूरे घुसपैठिए ने आगे आते हुए कहा, "हम ने कश्मीर मे तोडफोड और आगजनी की है। क्या इस मे इस्लाम के बन्दो का भी नुकसान न हुआ होगा? क्या हम ने काफिरो के साथ-साथ मुसलमानो की जाने भी नही ली?"

"तुम लोगो ने अपनी बुजदिली छिपाने के लिए बाते बनाना खूब सीख लिया है!" लतीफ मिया व्यग्य से हसे।

"इसे आप बुजदिली नही कह सकते। आप ही बताइए, फिजूल

अपनी जान गवाने मे क्या तुक है ? हम लडेगे—लेकिन छापामार ढङ्ग से नही। हम तब लडेगे, जब हमारी सरकार हिन्दुस्तान पर खुला और भरपूर हमला करे—बाकायदा जग छेड दे।"

"तभी हम जीत सकते है।" किसी और ने कहा, "हमारे पास अमेरिकी हथियार है, जिन का कोई मुकाबला नही। हिदुस्तान के सारे हथियार पुराने ढङ्ग के है। हमारे पैटन टैको के सामने उन की फौजे नही टिक सकती—लेकिन छापामार जग मे पैटन टैको और सैबर जेटो का इस्तेमाल हम कैसे करे ? अभी तो हमारी सरकार ने यही मजूर नही किया कि हमे पाकिस्तान ने भेजा है।"

"हूँ " लतीफ मिया विचारमग्न होते हुए बोले, "मतलब यह कि तुम लोग जाना चाहते हो।"

"जी हा—वापस पाकिस्तान।"

"वहा तुम्हे सजा दी जायेगी।"

"कोई बात नही। यहा तो हम मौत की नीद सो जाएगे।"

तय किया गया कि सब एक साथ नही चलेगे। साथ होने पर सब के एक साथ पकडे जाने की गुजाइश बढती है। दो-दो, चार-चार के झुण्डो मे सब पाकिस्तान की ओर भागेगे।

"खुदा हाफिज़ ! फिर मिलेगे, अगर जिन्दा रहे !" इन शब्दो के साथ वे गले मिल कर चल पडे—अधेरे मे अलग-अलग खो जाने के लिए।

लतीफ मिया चुपचाप खडे रहे अकेले

"युद्ध !" डाक्टर सिंह बोले, "युद्ध एक माग है—सामाजिक या राजनीतिक से भी ज्यादा एक वैज्ञानिक माग। यह हमारी आदिम प्रवृत्ति है। युद्ध को शायद हम कभी नही जात सकेगे। वह हमेशा हमारे साथ रहेगा।"

दोपहर का खाना भार्गव साहब के यहा था और शाम का डाक्टर

सिह के यहा। सईदा के लिए यह पहला अवसर था, जब वह डाक्टर सिह के साथ बैठ कर भोजन कर रही थी। लक्ष्मी उस के दाहिनी ओर बैठी थी। बाई ओर बलवन्त था। लक्ष्मी के दोनो बच्चे भी साथ आए हुए थे। वे बडो की बातचीत मे बोर हो रहे थे, लेकिन चुप थे। दोनो के नैपकिन पर कुछ-कुछ सब्जी और दाल गिर चुकी थी। सईदा ने यह देखा। उसे बहुत प्यारा लगा। लक्ष्मी को यह अच्छा नही लग रहा था, लेकिन चूकि बच्चे शैतानी नही कर रहे थे, वह चुप थी। हजारे आवश्यकतानुसार कभी किसी को पानी देता, कभी सब्जी, कभी चावल। वह उदास था। परसो दोनो चले जाएगे—बलवन्त और डाक्टर सिह। बलवन्त कब लौटेगा, कहना असम्भव था। डाक्टर सिह एकाध सप्ताह मे लौट आएगे, ऐसी आशा थी। उन्हे कानपुर के विमान-निर्माण-कारखाने की ओर से विशेष सलाह-मशविरा के लिए बुलाया गया था। हफ्ते भर हजारे इस बडी-सी कोठी मे अकेला रहेगा। "क्या दू आप को ?" उस ने बलवन्त से पूछा।

"कुछ नही।" कहता हुआ बलवन्त भार्गव साहब से मुखातिब हो गया, "मै आप लोगो की तरह हाई लेवल के डिस्कसन्स नही कर सकता। मैं तो इतना जानता हू कि युद्ध मे बडा मजा आता है। उस से भी ज्यादा थ्रिल तब महसूस होती है जब आप युद्ध मे अपने एडवेंचर्स की बाते ऐसे लोगो को बताए, जिन्होने एक्चुअल फाइटिग कभी न देखी हो।" और बलवन्त ने कनखियो से सईदा की तरफ देखा। सईदा निगाहे चुरा गई। डाक्टर सिह ने इसे देख कर भी न देखा। सिवा उन के सब मुस्करा उठे थे।

उन के साथ भोजन करने का भार्गव के लिए भी यह पहला ही अवसर था। बडी गम्भीरता से वह उन की बाते सुन रहे थे। कई बार तो ऐसा लगता कि भार्गव साहब उन का इण्टरव्यू ले रहे है। लक्ष्मी चुप थी। सईदा की ओर देख कर कभी वह यो ही मुस्करा देती। सईदा बार-बार झेप

रही थी। बलवन्त को आज सईदा का चेहरा कुछ छोटा लग रहा था।

"आप युद्ध को वैज्ञानिक माग कहते है ? मै समझा नही " भार्गव साहब ने अपनी प्लेट मे दूसरी बार सब्जी लेते हुए कहा।

"युद्ध हम ने नही बनाया। युद्ध प्रकृति ने बनाया है और प्रकृति एक विज्ञान है। हम आदिम युग से ही युद्ध करते आ रहे है—अन्य जीव-सृष्टियो से, स्वय अपने से, यहा तक कि स्वय प्रकृति से। जब तक इस धरती पर जीवन है, युद्ध भी है। युद्ध हमारे पीछे या आगे नही, हमारे अन्दर है।"

"लेकिन इस से वह हमारी वैज्ञानिक माग कैसे हो गया ?"

"क्योकि प्रकृति चाहती है कि हम मरे। वह वैज्ञानिक ढङ्ग से चाहती है कि हम मरे। वैज्ञानिक ढङ्ग से ही हम ने भी मौत को पीछे धकेल दिया है। इसी लिए सारी दुनिया मे आबादी इतनी हो गई है कि अणु-बम से भी ज्यादा खतरा इस 'आबादी-विस्फोट' से है। युद्ध के बहाने प्रकृति हम से सामूहिक आत्महत्याए करवाती है। आप को खरगोशो का उदाहरण दू। शायद आप न जानते होगे कि खरगोश कभी-कभी झुण्ड बना कर पानी की दिशा मे चल पडते है और डूब मरते हैं। प्रकृति उन्हे ऐसा करने पर मजबूर तब करती है, जब किसी इलाके मे उन की आबादी जरूरत-से-ज्यादा हो जाए—इतनी ज्यादा कि सभी जीवो की आबादी का प्रकृति ने जो तराजू बनाया है, उस मे गडबडी आ जाए।" डाक्टर सिंह बोलने मे अत्यन्त मग्न थे और शायद यही भूल गए थे कि वह भोजन की मेज पर बैठे है। उन के हाथ रुक गए थे। उन का स्वर इतना गम्भीर था कि सईदा कुछ-कुछ सहम गई।

" • लेकिन मनुष्य ने इतनी तरक्की की है कि लोग मरते कम है, जन्म ज्यादा लेते हैं। आबादी के ऐसे सन्तुलन से प्रकृति घबरा जाती है और कुछ देशो या जातियो मे युद्ध का उन्माद पैदा कर देती है। ये देश सब से लडते है। वे दूसरो को लडने पर मजबूर करते हैं। दरअसल यह

प्रकृति की मानव को हराने की कोशिश है। युद्ध के पीछे बहुत बारीक विज्ञान छिपा हुआ है। आबादी के सन्तुलन का विज्ञान।"

"लेकिन आज के युद्ध मे लोग भेड-बकरियो की तरह नही मरते। आधुनिक युद्ध मशीनो का युद्ध है। लाखो या करोडो की तादाद मे जब तक मौते न हो, प्रकृति अपनी आबादी का सन्तुलन नही कर सकती।" भार्गव ने कहा।

"जी हा, लेकिन प्रकृति सन्तुलन की कोशिश अवश्य करती है। हम उस की एक कोशिश को नाकामयाब कर देगे तो वह कोई और कोशिश करेगी। यदि वह मानव-जाति से तग आ गई तो किसी उपाय से उस का सम्पूर्ण विनाश भी कर सकती है। सोचिए, अगर आज विश्व-युद्ध छिड जाए तो सम्पूर्ण मानव-जाति के विनाश की सम्भावना है या नही ? अणु-बम ! हाइड्रोजन-बम ! कोबाल्ट-बम ! कोई जीवित न रहेगा—और प्रकृति जीत जाएगी। वह हमे हमारी ज्यादतियो की सजा देगी।"

"इस का मतलब तो यह हुआ कि आप युद्ध की हिमायत कर रहे है ?"

"नही, आप गलत समझे। मै ने एक फिल्म देखी थी—'६३३ स्क्वाड्रन।' उस मे एक पात्र कहता है, 'मै मरना नही चाहता, लेकिन मौत आएगी जरूर। इसी प्रकार मै लडना नही चाहता, लेकिन युद्ध होगा जरूर।' मेरा भी यही उत्तर है।"

अठारह

"क्या कहते है !" बलवन्त ने सुनते ही एतराज उठाया, "आप को जरूर कोई धोखा हुआ है। मै इस लडकी को लम्बे अरसे से जानता हू ।"

"तो क्या हुआ ?" हाक सामने बैठा हुआ था, "ऐसे कई लोग है, जो लम्बे अरसे से हिन्दुस्तान मे रह रहे है। कई ऐसे भी है, जिन्होने यहा शादी कर ली है और उन के बच्चे भी है। लम्बे अरसे से जानने का मतलब यह तो नही कि आप सभी कुछ जानते है ?"

बलवन्त का चेहरा गुस्से से लाल पड गया, लेकिन हाक की उपेक्षा भी नही की जा सकती थी। दोनो ने कोठी के पिछवाडे की फुलवारी मे दो गार्डन-चेयर्स ले ली थी और बैठे थे। हजारे चाय की छोटी मेज अभी-अभी रख गया था।

"लेकिन आप को कौन-सी जानकारी चाहिए ?" बलवन्त कुछ तैश मे आ गया, "आप उस के पीछे शायद इस लिए लगे है कि वह मुसलमान है।"

"जी नही !" हाक मुस्कराया, "मुसलमान तो मै भी हू। मुसलमान होने और पाकिस्तानी होने मे बहुत बडा फर्क है। खैर · क्या आप जानते है कि यह लडकी एक युवक के साथ अकसर दिखाई पडती है ?"

"किस के साथ ?"

"है एक। वह 'एयर-इडिया' मे कुछ महीनो तक नौकरी करता रहा है, लेकिन पिछले कई दिनो से लापता है। 'एयर-इडिया' मे न तो उस की छुट्टी की दरख्वास्त आई है, न कोई समाचार। शायद आप समझ गए हो "

"क्या ?"

"वह पाकिस्तानी था। उन का पूरा दल यहा काम कर रहा है। उस के अधिकाश लोगो को हम ने गिरफ्तार कर लिया है, लेकिन कुछ हाथ से निकल गए है। वह अख्तर हुसैन के नाम से नौकरी कर रहा था। शायद वह अब भी दिल्ली मे हो कह नही सकता। बहरहाल, इन दिनो सईदा से उस का मिलना-जुलना बिल्कुल बन्द है। मुझे शक है कि सईदा ने उसे जासूसी करने या छिपने मे मदद "

"कोई सबूत है आप के पास ?"

"जी नही। हम सिर्फ निगरानी रख रहे है।"

बलवन्त का माथा तप आया था। क्या सचमुच ऐसा हो सकता है ? असम्भव तो नही नही 'सईदा ऐसी नही हो सकती लेकिन मिस बेला दुग्गल भी तो 'ऐसी' नही लगती थी पर सईदा ने आज तक उस से कोई सैनिक रहस्य जानने की कोशिश नही की। उसे सेना मे इतनी दिलचस्पी है ही नही कि लेकिन ओह, शक ! शादी के बाद वह मौके देख-देख कर रहस्य हासिल करेगी रहस्य पाकिस्तान पहुचते जाएगे और बलवन्त सईदा को प्यार करता रहेगा · ओह ! नही कभी नही।

दोनो कुछ मिनटो तक खामोश बैठे रहे। हजारे चाय रख गया। ताजा केक पीस भी थे।

कल कानपुर जाने का कार्यक्रम होने से डाक्टर सिह अपनी प्रयोग-शाला मे किसी प्रारूप को अतिम स्पर्श देने मे व्यस्त थे। सुबह के प्राय नौ बजे थे। आकाश मे सारी रात बादल घिरे रहे, लेकिन बरसे नही। बादल इस समय भी थे, लेकिन रह-रह कर सूर्य निकल आता। कच्ची धूप हरियाली पर फैल जाती।

फूलो पर तितली उड रही थी।

बलवन्त ने चाय ढाली। प्याला हाक की ओर बढाते हुए उस ने मुस्कराने की चेष्टा की। चाय ले कर हाक ने धन्यवाद दिया और कहा,

"आय एम सॉरी लेकिन मेरा फर्ज था कि आप को आगाह कर दू ।"

"शुक्रिया अच्छा होता यदि आप ने कुछ सबूत भी जमा कर लिए होते ।"

"इस मे आप को हमारी मदद करनी होगी ।"

"मुझे ?"

"आप सईदा से भापने की कोशिश करिए कि अख्तर कौन है, इस वक्त कहा छिपा हुआ है ।"

"हु "बलवन्त नीचे देखने लगा । काटे से उस ने केक-पीस का एक टुकडा काट कर उठाया ।

"मुमकिन है, सईदा को मालूम ही न हो कि जिस के साथ वह घूमती रही है—आप ने क्या नाम बताया उस का ?"

"अख्तर । अख्तर हुसैन । रिसेप्शनिस्ट इन 'एयर-इण्डिया' ।"

"हो सकता है, उसे अख्तर के जासूस होने का पता न हो ।"

"हा, असम्भव नही ।"

"शायद अख्तर सईदा का रिश्तेदार हो । वैसे •मेरे सामने सईदा ने कभी उस का जिक्र नही किया ।"

"आप मुझे सईदा के बारे मे सब ब्यौरेवार बता सकते है ?"

"बेशक, अगर बहुत जरूरी हो ।"

"अभी जरूरत न होने पर भी, आप चूकि कल जा रहे है, मैं सब जान लेना चाहूगा ।"

"यू आर राइट वैल सईदा मुरादाबाद से आई है । वहा उस का एक छोटा-सा पुश्तैनी मकान है, जिस की देखभाल के लिए उस की अम्मीजान वही रहती है । अम्मीजान बेवा है । वक्त काटने के लिए वह सिलाई का काम भी करती है । काम जमा हुआ होने से वह दिल्ली आने को तैयार नही है । मकान की देखभाल भी वह खुद करना चाहती है । इस लिए सईदा यहा वर्किङ्ग-गर्ल्स-हास्टल मे रहती है ।"

वह बताता रहा कि सईदा से उस का पहला परिचय कैसे हुआ और कैसे सईदा ने आज तक कोई सैनिक रहस्य नही जानना चाहा।

"मेरा ख्याल है, आज उस से आप की मुलाकात जरूर होगी ?"

"जी हा, आप का अन्दाजा सही है। कल मै रवाना हो रहा हू, इस लिए आज का दिन तो " उस ने कलाई-घडी मे देखा, "बल्कि एक ही घण्टे बाद हम जू की ओर रवाना हो जाएगे।"

"उस से कहा मिलेगे ?"

"हास्टल से पिक-अप कर लूगा।"

"कार आप ही ड्राइव कर रहे होगे ?"

"जी हा।"

"तब एक काम कर सकते है। मै कार मे टेप-रिकार्डर छिपा दू, तो ?"

बलवन्त चुपचाप देखता रहा।

"आप के यहा फोन है ?"

"जी हा।"

"मैं अभी टेप-रिकार्डर मगवाता हू। उसे कार मे छिपाना देर का काम नही है।"

बलवन्त इन्कार न कर सका। शायद वह भी यही चाहता था कि जल्द ही कुछ ऐसा हो, जिस से सईदा पर आया यह शक या तो बिल्कुल दूर हो जाए या टेप-रिकार्डर से ऐसा फैसला हो सकेगा या नही ? वह उठ खडा हुआ और बोला, "आइए।"

डाक्टर सिह प्रयोगशाला मे ही थे। हाक ने ड्राइग-रूम की साज-सज्जा से प्रभावित हुए बिना सारी चीजो और व्यवस्थाओ को आदतन ध्यान मे रख लिया। फोन का डायल घुमाते समय उस ने परदो के रग पर भी गौर कर लिया।

दूसरे छोर पर घण्टी हो रही थी। जल्द ही किसी ने रिसीवर उठाया,

"यस, प्लीज़ ?"

"हैलो ! सुनिए मैं ने कौए की दुम चबाई।"

"मै ने बिल्ली से हाथापाई की।"

ये साकेतिक वाक्य पहले ही तय हो चुके थे, ताकि फोन पर कोई दूसरा व्यक्ति रहस्यो को न जान ले।

हाक ने जल्दी-जल्दी कहा, "मै कनाट-प्लेस से बोल रहा हू। फायर-ब्रिगेड लेन की कोठी नम्बर मे जल्दी-से-जल्दी बैटरी का एक पावरफुल टेप-रिकार्डर चाहिए। माइक का तार अलग से ले आना ओके इन्त-जार कर रहा हू। थैंक्यू वेरी मच।"

उस ने रिसीवर रख दिया और घूम कर बलवन्त के चेहरे के रग पढ़ने चाहे। बलवन्त हसा, "आप तो यो देख रहे है, गोया मुझ पर भी डाउट हो।"

हाक मुस्कराने लगा, "आदत पड गई है !"

"आइए, बाहर ही बैठे।" बलवन्त ने कहा। वह नही चाहता था कि डाक्टर सिह के कानो तक खुफिया विभाग की बाते पहुचे। गार्डन-चेयर्स की ओर बढते हुए उस ने कहा, "अभी मेरे अकल ने आप को नही देखा है। अगर वह बगीचे मे आ गए तो मैं आप का परिचय एक दोस्त के रूप मे कराऊगा।"

"बेशक !"

लेकिन डाक्टर सिंह बगीचे मे न आए।

लगभग पन्द्रह ही मिनट बाद एक कार सामने आ कर रुकी। बल-वन्त ने हाक की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा। हाक कुर्सी छोड कर उठ रहा था। बलवन्त भी उठा।

टेप-रिकार्डर दे कर कार लौट गई।

बलवन्त ने उसे कार मे छिपाने मे हाक को मदद दी। स्टियरिग के पास स्विच जैसा एक उपकरण लगा कर हाक ने कहा, "ज्यो ही इसे

दबाएंगे, टेप चलने लगेगा। दूसरी बार दबाने पर रुक जाएगा। फिर से दबाएंगे तो चलने लगेगा ”

“राइट टेप कितने वक्त का है ?”

“एक घण्टे का। जब आप ‘उस तरह’ की बातचीत शुरू करे, स्विच आन कर दे।”

बलवन्त को अजीब-सा लग रहा था। कुछ मिनट पहले ही सईदा क्या थी और इस ने आ कर उसे क्या-से-क्या रूप दे दिया ! क्या मालूम, हाक का कहना वाकई सही हो ओह !

“अब तय कर ले कि टेप वापस लेने के लिए मै कहा मिलू ?” हाक पूछ रहा था। इस का उत्तर उसी समय न देते हुए बलवन्त ने कार स्टार्ट की और कहा, “चलिए, आप को कहा जाना है ? छोड आऊ।”

“ ‘रीगल’ कारनर पर छोड दीजिएगा। थैक्यू।”

“इट्स आलराइट कल सुबह मेरे यहा आ सकते है ?”

“कितने बजे ?”

“यही नौ के आसपास ?”

हाक याद करने लगा कि उस वक्त कोई और काम तो नही ? बोला, “ठीक है, आ जाऊगा—ठीक नौ बजे। आप टेप मुझे दे देगे या सुनने के लिए साथ चलेगे ?”

“कहा ?”

“कही भी।”

“मैं साथ चलूगा। कई बार ऐसा होता है कि बातो का गलत मतलब भी ”

“जी हा, बल्कि जरूरत होने पर हम यह भी पूछ सकेगे कि फला बात कहते समय सईदा के चेहरे पर कैसे हावभाव थे। इट विल बी अ ग्रेट हेल्प।”

कार ‘स्टेट्समैन’ के सामने से गुजर रही थी। चौराहे पर लाल सिग्नल

होने के कारण उसे रोक देना पडा । बलवन्त ने हाक की ओर देखा । हाक उस की ओर देख ही रहा था । वह कुछ नरवस होता हुआ मुस्कराया । बलवन्त सचमुच नरवस हो गया था । थोडी देर बाद ही सईदा उस के बगल मे बैठी होगी और वह ऐसे-ऐसे सवाल पूछ रहा होगा कि

'रीगल' के पाम हाक को उतार कर उस ने कार वर्किङ्ग-गर्ल्स-हास्टल की ओर मोड दी ।

अगले दिन बलवन्त और भार्गव को रवाना होना था । उन की स्पेशल ट्रेन शाम को साढे चार बजे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से चलने वाली थी। साढे चार बजे शाम बलवन्त ने कलाई-घडी मे देखा सुबह के नौ बजने वाले थे ।

उस ने हार्न की आवाज सुनी । खिडकी से झाक कर देखा । उस कार मे से हाक की दाहिनी बाह बाहर झूल रही थी । ऐसा लगा, मानो हाक के पास इस एक बाह और उस के ऊपर इस एक चेहरे के अलावा कुछ नही है ।

हजारे ने टेप-रिकार्डर पिछली सीट पर सम्भाल कर रखा और कार चल पडी । बलवन्त ने न पूछा कि कहा जा रहे है । जहा भी जा रहे है, पहुच ही जाएगे ।

"जी ?" उस ने चौक कर हाक की ओर देखा । उस ने कुछ कहा था शायद ।

"मुझे यकीन है, आप ने पूरा को-आपरेशन दिया होगा ।" हाक ने दोहराया ।

"आय एम सॉरी मैं मतलब नही समझा ।"

"मतलब यही कि आप ने पूरी ईमानदारी से टेप-रिकार्डिङ्ग की होगी ।"

"मै नही सोचता कि इस का जवाब देना चाहिए ।"

"क्यो ?"

"मैं ने बेईमानी की हो तो भी इसे मानूगा तो नही ?" उस का स्वर तीखा हो उठा।

"आय एम सॉरी, आफिसर! आई नेवर मेण्ट टु हर्ट यू।"

बलवन्त चुप रहा। विण्ड-स्क्रीन मे से उस ने देखा कि कार पार्लियामेट स्ट्रीट मे है और काफी तेजी से जा रही है। वह एक प्राइवेट मकान के सामने रुकी।

कुछ मिनट बाद ही एक छोटे कमरे मे वह टेप सुना जा रहा था। बलवन्त और हाक के अलावा एक और व्यक्ति कमरे मे मौजूद था। बलवन्त को लगा कि कल टेप-रिकार्डर देने के लिए यही व्यक्ति कार मे आया था।

रिकार्डर के स्पीकर मे से निकलती आवाजो के कारण कुछ ऐसा समा बध गया था, जैसे ये लोग किसी बन्द कमरे मे न हो, बल्कि ऐसी कार मे हो जो काफी तेजी से जा रही हो। एञ्जिन की धीमी गूज बहुत अच्छी टेप हुई थी। वलवन्त ने जो हार्न बजाए थे, वे भी बडी खूबी से रिकार्ड हो गए थे। अगल-बगल से गुजर रहे आवागमन का शोर

"सईदा माई डीयर, इफ यू डोण्ट टेक इट अदरवाइज मैं कुछ बातें पूछना चाहता हू।"

"मामला क्या है ? जनाब आज बडे सीरियस और फारमल हो रहे हैं ?"

"मै ने कुछ ऐसी बाते सुनी है कि "

"ओहो! कुछ खतरनाक बाते ?" (मुक्त हास्य)

"हसो मत सईदा, वे बाते सचमुच खतरनाक है। सरटेन वेरी अनप्लीजेण्ट थिंग्स!"

"जैसे ?" (प्रसन्न स्वर)

"शायद अब भी तुम मजाक समझ रही हो। वैल, देन, टैल मी—

यह अख्तर हुसैन कौन है ?"

मौन।

टेप घूमता रहा।

मौन। मौन।

"चुप क्यो हो, सईदा ?"

सईदा की आह्लादपूर्ण, जोर की हसी। हसी का रुकना। फिर से जारी होना।

"हसो मत, आय एम नाट जोकिग। बताओ—कौन है यह अख्तर ?"

"मेरा दोस्त।"

"दोस्त ! कब से ?"

"कुछ महीनो से।"

"और उस के साथ तुम अकसर घूंमती हो, रेस्तोराओ मे काफी पीती हो।"

फिर से सईदा की उन्मुक्त हसी।

"सईदा !"

"तुम्हे जलन हो रही है ! यू—मैन ! यू आर जलस ! रियली जलस !"

"सईदा। इस मे जलस होने का सवाल नही है।"

"तुम्हे लगता होगा, अख्तर से मेरा कोई रोमास· ·· " (फिर से खिलखिलाहट)

"सईदा, टालने की कोशिश मत करो। मुझे ऐसा कोई शक नही है—अगर है भी तो इसे मैं तुम्हारी असफलता मानूगा—समझ मे आया ? प्लीज़ ·व्हाई डोन्च्यू टेक इट सीरियसली ?"

मौन।

"फिर चुप्पी ?" बलवन्त का स्वर।

"अगर एक लफ्ज मे कहू तो वह मेरा दोस्त है। कई लफ्ज़ो मे कहू तो उस से पहली मुलाकात 'एयर-इडिया' मे हुई। फिर वह लगातार मिलता रहा और मिन्नते करता रहा कि मैं उस की दोस्त बनने से इन्कार न करूँ क्योकि वह बिल्कुल अकेला है और बहुत मायूस "

"कहती जाओ।"

"मैं ने उसे बिल्कुल बढावा नही दिया था, लेकिन वह बडा ही अनोखा और और अटपटा लडका है आई मीन जस्ट टेरिबली टिपिकल ! यू कहो, तकरीबन मुझे हार कर उस की दोस्ती मजूर करनी पडी। भागव साहब भी उसे जानते है। शायद उन्ही ने तुम्हे बताया हो।"

"उन्होने नही बताया।"

"फिर किस ने ?"

"तुम्हे मतलब ? भार्गव ने नही बताया है। बस।"

यहा हाक ने स्टाप-बटन दबाया। टेप रुका। हाक ने पूछा कि भार्गव कौन है ? बलवन्त ने परिचय दिया और बताया कि वह भी आज बतौर एक प्रेस-रिपोर्टर कश्मीर जा रहे है—मेरी ही ट्रेन से।

हाक ने स्टाप-बटन पर से हाथ उठा लिया। टेप घूमने लगा।

"याने, अब तुम बाते छिपाने भी लगे ?" सईदा का स्वर।

"मैं या तुम ?"

"तुम। मैं ने तो बता दिया कि वह मेरा दोस्त है—महज एक दोस्त। तुम्ही नही बता रहे कि तुम्हे पता कैसे चला।"

"बता दूगा वक्त आने पर।"

"टालने वाली बात है। कब आएगा वक्त ?"

"आज ही ··लेकिन तुम इतनी पर्टिकुलर क्यो हो ? मै सोचता हू, तुम्हे अन्दाजा लग जाना चाहिए।" (स्वर मे स्पष्ट व्यग्य)

"कैसा अन्दाजा ?"

"मैं फौज मे हू । मेरा दस तरह के लोगो से मिलना-जुलना है । खुफिया पुलिस मे भी जान-पहचान है ।"

"होगी । इस से अख्तर का क्या ताल्लुक ?"

"शायद उस की किसी खासियत मे खुफिया पुलिस को दिलचस्पी हो "

"याने तुम्हे इत्तला खुफिया पुलिस ने दी है ?"

'शायद ।"

"लेकिन मैं मैं सिर्फ इतना जानती हू कि वह 'एयर-इडिया' मे रिसेप्शनिस्ट है और और उस के भाईजान नागपुर मे रहते हैं । (स्वर मे घबराहट) खुफिया पुलिस ने और क्या बताया उस के बारे मे ?"

"तुम्हे मालूम ही होगा ।"

"ताना कस रहे हो ?"

"खुफिया पुलिस को हमेशा कुछ खास ढङ्ग के लोगो मे ·मसलन, इन दिनो उस की सब से ज्यादा दिलचस्पी है पाकिस्तानी जासूसो मे ।"

"क्या मतलब ? अख्तर जासूस है ?" (आतकित, तीखी आवाज)

"यही मैं तुम से पूछ रहा हू ।"

चुप्पी ।

"सईदा, बार-बार तुम्हारी खामोशी शक पैदा करती है ।"

"मैं · मैं अपने को सम्भालने की कोशिश कर रही हू । मुझे · मुझे मालूम ही नही था कि "

"कि अख्तर को खुफिया पुलिस पहचान चुकी है ?"

"नही मैं मैं· मुझे आखिर कैसे पता चलता कि वह जासूस है···"

"तुम पर कैसे यकीन करू ?"

"ओह ! क्या हो गया है तुम्हे ?"

"तुम अख्तर से मिली हुई हो ?"

"जरा होश मे बाते करो।"

"काप क्यो रही हो ? डर लग रहा है ?"

"नही। गुस्सा आ रहा है।"

"खुफिया पुलिस पर ?"

"तुम पर—तुमपरतुमपरतुमपर ! सिर्फ एक शक ने जिस की मुहब्बत को "

"मुहब्बत की दुहाई देने की कोई जरूरत नही है, सईदा ! इससे तो शक और पक्का हो सकता है।"

चुप्पी। कार के एजिन की गूज। दूर से लगातार बजते किसी हार्न का तीर-जैसी गति से करीब आना और झाााा करते हुए गुजर जाना। क्रमश उस का धीमा पडना। तब तक सईदा की सिसकियो का उभर आना उन का तीव्र होते जाना

'सईदा !"

" "

"सईदा ! मेरा मतलब यह नही था कि तुम "

" . "

"सईदा ! मेरी जगह अपने को रख कर देखो मुझे बताया गया है कि अख्तर जासूस है और तुम से इतना मेलजोल रखता है कि खुफिया पुलिस को तुम पर भी शक है चूकि तुम मेरे साथ देखी गई हो—खुफिया पुलिस को मालूम है कि हम दोनो शादी करने जा रहे हैं। उन्होने मुझे सावधान किया है। न केवल इतना, बल्कि यह जिम्मेदारी भी सौपी है कि मैं मैं सईदा, प्लीज ! रोओ मत "

सिसकिया रोकने का अर्द्धसफल प्रयास।

यहा हाक ने स्टाप-बटन दबा कर बलवन्त की तरफ गम्भीरता से देखते हुए कहा, "औरतो के रोने के कई मतलब होते हैं।"

बलवन्त पर इस की क्या प्रतिक्रिया हुई, इस पर ध्यान दिए बिना

उस ने टेप-रिकार्डर को इस तरह देखा, जैसे वह कोई जिन्दा चीज हो। स्टाप-बटन पर से दबाव हटते ही टेप चलने लगा।

"ठीक है! करो शक! खुफिया पुलिस ही क्यो, तुम भी करो। जितना चाहो, करो।"

"शक तुम्ही पर क्यो, मुझ पर भी किया जा सकता है। सईदा, खुफिया पुलिस किसी के भी साथ रियायत नही बरतती।"

"कहना क्या चाहते हो ?"

"अख्तर कहा है ?"

"उस ने बताया था कि वह नागपुर जा रहा है, क्योकि भाईजान बीमार है। वापस कब आएगा, कुछ नही कहा।"

"कुछ और बता सकती हो ?"

"नही।"

चुप्पी।

"सईदा!"

"कहिए ? और क्या रह गया पूछने से ?"

"सच-सच बताओ ··क्या तुम्हे बिल्कुल नही मालूम था कि अख्तर—जासूस है ?"

"नही।"

"एक बार फिर सोच लो।"

"शक की दवा नही हुआ करती।"

"अगर वह जासूस है तो कभी-न-कभी पकडा जरूर जाएगा। उस के साथी भी गिरफ्तार होगे।"

"ठीक है, मैं भी गिरफ्तार हो जाऊगी अगर मैं मैं उस से मिली हुई हू।"

"लेकिन तब मैं भी तुम्हे न बचा पाऊगा। इस की बजाय अगर तुम· ·सब अभी बता दो तो अभी काफी-कुछ किया जा सकता···"

"देखो, आखिरी बार कहे देती हू—मै नही हू जासूस। फिर यही कहलवाने की कोशिश की तो यही कार से उतर जाऊगी और "

" और कभी मेरा मुह न देखोगी—यही न ? (बलवन्त का धीमा हास्य। सईदा की गहरी चुप्पी)

"खैर असल मे बात यह है, सईदा एनिमी-एजेण्ट्स का जाल बहुत दूर-दूर तक फैला हुआ है और जो मिलिटरी मे है, उन की रिस्पान्सिबिलिटी तो "

"मैं भाषण सुनने के लिए कतई तैयार नही हू।"

"अभी हाल-हाल मे कुछ गिरफ्तारिया हुई थी। उन मे एक औरत भी थी। सोच भी सकती हो कि वह पहले गोआ मे देखी गई होगी ? कहा दिल्ली, कहा गोआ! ये इतनी दूर-दूर तक फैले हुए है कि खुफिया पुलिस बहुत चौकन्नी है। कैपिटल होने के नाते दिल्ली मे रियली इम्पार्टेण्ट लोग रहते है। मान लो, किसी का मर्डर हो जाए वह नुकसान कम्पन्सेट कौन करेगा ?"

"मुझे भाषण नही सुनना, नही सुनना! प्लीज! यह सब मुझे मालूम है—आय एम नाट ए चाइल्ड।"

"मैं भी बहुत चौकन्ना हू। गोआ मे उस औरत ने मेरे साथ जैसा बिहेवियर रखा मै तुरन्त भाप गया कि यह जासूस है। मै ने उस का पूरा हुलिया खुफिया विभाग को सौपा और "

"और वह दिल्ली मे गिरफ्तार हो गई ?" (असहज हसी)

"हा।'

"याने सारा हुलिया आप ने भेजा था ?" (व्यग्य से उबलता स्वर)

"मै इस के लिए बहुत प्राउड फील करता हू। मतलब यह कि कोई भी जासूस लम्बे अरसे तक खुला नही घूम सकता।"

"प्राउड! मिस्टर बलवन्तसिंह, आप मुझ पर एक अहसान करेंगे ?"

(स्वर इतना बदला हुआ कि सईदा का न लगे)

"कहो ?"

"कार रोकिए। मुझे उतरना है।"

"क्यो ?"

"उतरना है। दैट्स आल।"

"लेकिन क्यो ?"

"मैं आप के साथ नही बैठ सकती।"

"आखिर कोई वजह तो होगी ?"

"आप को मुझ पर शक है न ? ठीक है, करते रहिए शक ! और मैं सारी दुनिया पर शक करूगी—जिदगी भर ! किसी के साथ दोस्ती होती है तो तो वह जासूस निकलता है किसी के साथ मुहब्बत होती है तो वह दूसरे शहरो मे दूसरी औरतो के साथ " (गहरी सिसकी)

"सईदा !"

आगे टेप खाली था। हाक ने टेप-रिकार्डर बन्द कर दिया और बलवन्त की ओर देखा।

"मै नही सोचता कि कि वह एजेण्ट है " बलवन्त ने धीमे स्वर मे कहा।

डाक्टर सिह बलवन्त को विदा करने स्टेशन आए थे। उस की और भार्गव की पीठ थपथपा कर बोले, "जाओ " आगे कुछ न कह सके। गला भर आया। बलवन्त और भार्गव मुस्कराए, नीचे देखने लगे।

सईदा नही आई थी।

डाक्टर सिह ने सोचा था कि वह आएगी, लेकिन अपना व्यवहार उन्होने ऐसा बनाए रखा मानो उस की अनुपस्थिति का उन्हे पता ही न हो।

बलवन्त की आखें स्टेशन की भीड मे बार-बार सईदा का चेहरा

देखने के लिए अधैर्य से भटकने लगती। लक्ष्मी और दोनो बच्चे भार्गव को घेर कर खडे थे। लक्ष्मी बहुत गम्भीर थी। बच्चे बार-बार भार्गव के पैरो से लिपटने लगते। भार्गव उन्हे पुचकारते, सहेजते। उन का कैमरा कन्धे से लटक रहा था और आखे सईदा को ढूढ रही थी। लक्ष्मी ने मौका देख कर उन से पूछा भी कि सईदा कैसे नही आई। उन्होने बलवन्त की ओर देखा, "क्यो भई, तुम्हारी 'वो' अभी तक "

"पता नही आय'म अफ्रेड कही बीमार-वीमार न पड गई हो।" कहते समय बलवन्त का स्वर जितना बुझा हुआ था, उस मे भार्गव चक्कर मे पड गए। वह कुछ और पूछ या कह पाते, इस से पहले डाक्टर सिह किताबो की दूकान से लौट आए।

नही आई। सईदा नही आई। इस समय कहा होगी ? क्या कर रही होगी ? क्या सोच रही होगी ? नही आई· नही-आई नहीआई · सईदा सईदा ट्रेन छूटने वाली थी बलवन्त ने कलाई-घडी मे देखा, फिर भार्गव की ओर एजिन चल पडने के लिए बिल्कुल तैयार खडा था हवा को चीरते हुए आगे निकल जाने के लिए उस का विशाल थूथना—कैसी भयावहता के साथ आतुर।

उन्नीस

'धाय !'

लतीफ मिया ने अधेरे मे ताक कर रायफल चला दी । किसी मकान से छन रही फीकी रोशनी मे एक भारतीय सैनिक लड़खड़ाता नजर आया । पता नही, वह मौत के घाट उतर गया या नही । लतीफ मिया उस मकान के कोने मे दुबके रहे, जो उन्हे बिल्कुल खाली मिल गया था— श्रीनगर की बस्ती बटमालू के लोग समूचा इलाका खाली कर के भाग रहे थे कई मकान इतने उजड गए थे कि उन मे एक भी बाशिन्दा नही था । उन पर घुसपैठियो ने कब्जा कर लिया था ।

सुरक्षा सेना की ओर से लगातार गोलिया चल रही थी और घुस-पैठिए जवाब दे रहे थे । बहुत रोकने पर भी उन्हे श्रीनगर तक पहुचने मे सफलता मिल गई थी ।

दो घुसपैठिए स्फूर्ति के साथ मकान मे घुसे । दोनो के कपडे धूल से सने हुए थे और जगह-जगह से फट गए थे । दौड कर आने के कारण वे हाफ रहे थे । लतीफ मिया ने भौहो को सिकोडते हुए उन की ओर देखा, "और कितनी देर है ?"

"कुछ नही, आग लगने ही वाली है ।" एक ने कहा ।

"धाय !" खुली खिडकी मे से गोली आई । लतीफ मिया दुबक गए, लेकिन दो मे से एक घुसपैठिया जमीन पर लोट गया । गोली उस के सीने को भेदती हुई निकल गई थी । उस की आखे उलटी हो गई और मुह खुल गया दूसरा घुसपैठिया सरक कर उसके पास जाना चाहता था, लेकिन लतीफ मिया ने रोकते हुए कहा, "मर चुका है ।"

वह घुसपैठिया भी खिडकी के पास आ कर लतीफ मिया से सटता हुआ बैठ गया। दोनो की रायफलो की नलिया बाहर निकली। अधेरे मे अन्दाजे से निशाना लेते हुए उन्होने कुछ परछाइयो पर गोलिया चला दी। जवाब मे कई गोलिया कच्याय ! कच्याय ! करती हुई उन के सिर के ऊपर से निकली। दोनो हट गए। लतीफ मिया ने कलाई-घडी मे देखा—रात के आठ बजने वाले थे।

बटमालू की नालियो मे पेट्रोल डाल दिया गया था जो बहते पानी के साथ [redacted] ओर फैल चुका था। अचानक हर तरफ से हाहाकार की आवाजे आने लगी। किसी नाली मे आग दिखा दी गई थी। पेट्रोल सभी नालियो मे धू-धू कर भभक उठा था।

छोटे-बडे विस्फोटो की आवाजे भी आई। घुसपैठिए हथगोले फेक रहे थे। लतीफ मिया ने खिडकी से झाकना चाहा। ज्यो ही उन का सिर ऊपर आया—गोली ! उन्होने तुरन्त गर्दन वापस खीच ली।

"या खुदा !" उन के मुह से निकला। एक घुसपैठिया भागता हुआ इसी मकान मे घुस रहा था। वह जमीन के साथ दुबके रहने की कोशिश मे था, जिस से अपने हाथ भी उसे पैरो की तरह चलाने पड रहे थे। ज्यो ही वह दरवाजे मे घुसा, उस की कमर पर एक गोली लगी। वह चीखता हुआ उछल पडा, जिस से वह फायरिंग की रेज मे और ज्यादा आ गया। तुरन्त एक और गोली ने उस का सीना भेद दिया। वह ऐठता हुआ गिरा और मर गया। दरवाजे के पास जो लाश पहले से पडी हुई थी, उसी पर यह दूसरी लाश भी पत्थर की तरह गिरी। लतीफ मिया ने माथे का पसीना पोछा। उन्होने उस तरफ दो-तीन फायर किए जहा से भारतीय जवान मौत उगल रहे थे।

"आग ! आग !"

"बचाओ ! बचाओ !"

"मा ! मा— ओ मा !"

चीखे । चीखे—हर तरफ आग लम्बे-लम्बे डग भर रही थी । लपटे ऊची से और ऊची होती जा रही थी । हवा गर्म

लतीफ मिया का कन्धा न जाने कब छिल गया था । वहा से खून रिस कर सारे कपडो को सराबोर कर रहा था । ऐसी चोट लगने पर भी पता कैसे न चलता होगा ? लतीफ मिया को आश्चर्य हुआ, हालाकि उन्हे मालूम था कि ऐसा होता है ।

दूर से उन्होने फायरब्रिगेड के घण्टो की आवाज सुनी विस्फोटो, गिरते मकानो, चीखते लोगो और लगातार हो रही फार्यरिंग के बीच भी वे घण्टे कुछ-कुछ सुने जा सकते थे । नही । वह जानते थे कि फायर-ब्रिगेड बटमालू तक नही आ सकेगा । किसी हालत मे नही । उस का स्वागत गोलियो से किया जाएगा ।

जलती लकडियो और मलबे आदि की गध तीव्र से तीव्रतर होती जा रही थी । उन्होने ऊपर देखा, इस मकान मे भी आग लगने मे अब देर नही थी । छत से जलती सीके वगैरह गिर कर फर्श पर बिखर रही थी । लतीफ मिया ने लाशो पर निगाह डाली । उन के कपडो मे आग लगने-फैलने लगी थी ।

उन्होने दूसरी बार ऊपर देखा । जलती छत का एक काफी बडा हिस्सा गिरने वाला था । वह उछल कर हटे ही थे कि मलवा आग और गन्ध उगलता हुआ नीचे आ रहा । वह बाल-बाल बचे ।

धुए के कारण उन की आखो से पानी आने लगा था । वह नाक मे पहुच गया था, जिस से जुकाम-हो-जाने-जैसा लग रहा था । एकाएक उन्होने पाया कि वह बिल्कुल खुले मे खडे है । सामने की दीवार जबर्दस्त शोर के साथ ढह गई है और भभकती लपटो की कापती रोशनी ने उन्हे जाहिर कर दिया है—कभी भी उन पर गोली चल सकती थी । उसी क्षण वह लेट गए और सरकते हुए एक ओट मे जाने लगे ।

दो घुसपैठियो के मरने के बावजूद जो तीसरा घुसपैठिया कमरे मे

जिन्दा था, अचानक वह घबरा कर उठा और भागा। इस से पहले कि लतीफ मियां उसे जमीन पर घिसटने का आदेश देते, उस के मुंह से एक दारुण चीख निकली। दोनों हाथों को छाती पर दबा कर वह लडखड़ाने लगा। उस की आंखें दर्द से बाहर आ रही थीं। हथेलियों के नीचे से खून का झरना-सा फूट रहा था।

"या अली!" लतीफ मियां बुदबुदाए। घुसपैठिया लडखडा कर ठीक उन्हीं के ऊपर ढह गया। उस के बोझ के नीचे से बाहर आने में उन्हें ज्यादा वक्त न लगा। उन्होंने सिर के बाल पीछे करते हुए आंखें सिकोड़ कर देखा—सामने के मकान में अभी आग नहीं लगी थी। वह लपके। गली पार करते वक्त कभी भी गोली चल सकती थी, लेकिन वह बच गए। मकान में घुस कर वह बुरी तरह हांफते हुए एक कोने में बैठे।

यहां वह अकेले थे। सारे दरवाजे, खिडकियां खुली हुई थीं। उन्हें इच्छा हुई कि सब को बन्द कर दें, लेकिन शायद यह मुमकिन नहीं था। खिडकी या दरवाजे के पास आते ही काफिरों की गोलियां उन्होंने होंठ काटे। काफिर! बटमालू को राख होने से ये नहीं बचा सकते। अभी तो श्रीनगर की इस एक ही बस्ती का यह हाल हुआ है। जल्द ही सारे श्रीनगर में ऐसी ही ऊंची-ऊंची लपटें उठेंगी और पाकिस्तान का रेडियो पूरे जोरशोर से ऐलान करेगा कि कश्मीर में बगावत हो गई—हिन्दुस्तानी सरकार के खिलाफ बगावत! पाकिस्तान में मिल जाने के लिए एक खौफनाक बगावत! उन्हें मालूम था—मालूम था कि श्रीनगर की अनेक मस्जिदों में इतना गोला-बारूद छिपाया गया है कि सारा शहर धूल में मिल जाए। उन्होंने कमीज की बांह से चेहरा पोंछना चाहा, लेकिन इस कोशिश में बांह नीचे गिर गई—वह इतनी फट-झुलस चुकी थी।

'कल है पन्द्रह अगस्त! हिन्दुस्तान आजादी-दिवस मना रहा होगा और मैं? मैं श्रीनगर को जला रहा होऊंगा।' उन्होंने दरवाजे के पास तिरछे खड़े हो कर एक जवान पर गोली चला दी। निशाना खाली

गया। जवान तुरन्त ओट ले कर जवाबी गोलिया दागने लगा। 'काफिर बदजात !' लतीफ मिया ताक-ताक कर फार्यारिंग कर रहे थे। 'रजाकारो' और 'मुजाहिदो' की योजना तो यह थी कि नौ अगस्त तक श्रीनगर को 'आजाद' कर दे, लेकिन इस मे बहुत देर हो गई थी।

'क्या फर्क पडता है !' लतीफ मिया ने स्वय से कहा, 'खुदा के दरबार मे देर है, अधेर नही !'

"अल्ला-हो-अकबर !"

"या अली !"

"मारो ! भून दो !"

"जला दो !"

चीखे। और चीखे। और और चीखे। ढहते मकानो का भूचाल-सा गर्जन

:

" लीजिए, अब आप पूरे समाचार सुनिए। भारतीय स्वतन्त्रता की अठारहवी वर्षगाठ के अवसर पर ऐतिहासिक लाल किले से बोलते हुए प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री ने कहा कि ताकत का जवाब ताकत से दिया जाएगा। बार-बार होते जयघोष और करतल-ध्वनियो के बीच उन्होने कहा कि भारत की अपनी एक प्रतिष्ठा है, अपना आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान है। भारत की अनेक जिम्मेदारिया भी है। कश्मीर मे पाकिस्तान द्वारा मचाए जा रहे उत्पात का भारत बडी सख्ती से जवाब देगा। चौदह अगस्त को श्रीनगर मे हजारो विद्यार्थियो ने जुलूस निकाल कर चीन और पाकिस्तान-विरोधी नारे लगाए। उन्होने श्री अय्यूब और श्री भुट्टो के पुतले भी जलाए। श्रीनगर की बाहरी बस्तियो मे लगाया गया कर्फ्यू पन्द्रह अगस्त से पूरे शहर पर लागू कर दिया गया। अब तक घुसपैठियो ने श्रीनगर के ढाई सौ मकान जला देने मे सफलता पाई है, जिस से प्राय. आठ सौ लोग बेघरबार हो गए हैं। प्रधान मन्त्री श्री

शास्त्री ने राष्ट्रीय सहायता कोष मे से इन के लिए पचास हजार रुपयो की सहायता-राशि स्वीकार की है यह आकाशवाणी है ”

१६ अगस्त, १९६५ । ससद के सत्र का पहला दिन ।

“अद्भुत !” हीरेन्द्रजी वीरेन्द्र की ओर देख कर बोले, “ऐसा विशाल जन-समुदाय मैने जीवन मे कभी नही देखा !”

मुहअधेरे ही जनसघ के अनुयायियो व कार्यकर्त्ताओ ने लाल किले के सामने इकट्ठा होना शुरू कर दिया था । देश के कोने-कोने से आज के जुलूस मे भाग लेने के लिए जनसघी बडे गम्भीर उत्साह के साथ आए थे—ट्रेन से, बसो और ट्रको से, हर सम्भव साधन से । दिल्ली के अब तक के इतिहास मे यह सब से बडा जुलूस होने जा रहा था । लाल किले से रवाना हो कर जब यह ससद के सामने पहुचेगा और जमा हो जाएगा, हर ओर चेहरे ही चेहरे नजर आएगे—समुद्र !

दरियागज के अपने मकान से हीरेन्द्रजी और वीरेन्द्र पैदल ही लाल किले की ओर रवाना हो गए थे । वे वहा पहुचे तब दस बजने वाले थे । हर ओर लोग-लोग-लोग । उन की बातो की गूज से वातावरण आतकित हो गया था, लेकिन वह अनुशासित आतक था । सडक पर आवागमन बार-बार रुकने लगा । तब हार्न की इतनी आवाजे उठती कि कौन-सी आवाज किस की है, पता न चलता । जल्द ही जनसघ के उत्साही कार्य-कर्त्ता उन लोगो के गुच्छो को सडक से परे कर देते जो आवागमन मे रोडा अटका रहे होते ।

हीरेन्द्रजी और वीरेन्द्र जैसे कई लोग इस प्रदर्शन मे थे, जो जनसघी न होने पर भी उत्सुकता व सहानुभूतिवश शामिल हुए थे । वीरेन्द्र ने नया ट्राजिस्टर खरीदा था, जिसे कन्धे से लटका कर वह शान से इधर-उधर देख रहा था । मैले-कुचैले कपडे पहने हुए एक आदमी करीब से गुजरा । उस के पास भी एक ट्राजिस्टर था जिसे उस ने बहुत तेज खोल

रखा था ।

जुलूस ठीक ग्यारह बजे रवाना हुआ । सब से आगे ढाई सौ मोटर-साइकिले और ग्यारह बिगुल-वादक थे । जुलूस की हर पक्ति मे पाच-पाच लोग चल रहे थे । उन के चेहरे शान्त थे । नेतृत्व महाराष्ट्र की टुकडी ने किया । अनेक कार्यकर्त्ताओ ने जनसघ के झण्डे उठा रखे थे । दो-दो डण्डो के आधार पर कपडे के अनेक 'प्लेकार्ड' तान दिए गए थे—भारतीय जनसघ । कच्छ-करार-विरोध आन्दोलन ।

नारे उठने लगे ।

"रण से भागी जो सरकार—"

"नही हमे उस की दरकार !"

"कच्छ-समझौता—"

"रद्द करो !"

"समझौता तोडो या—"

"गद्दी छोडो !"

मशहूर सडको के चक्कर काटता हुआ यह जुलूस ससद की ओर बढता गया । चौराहे-चौराहे पर भगवे झण्डे फहरा रहे थे । हर चौराहा प्रदर्शनकारियो को सचेत करता कि ससद-भवन कुछ और नजदीक आ गया है । सिर के बालो की बजाय टोपिया ही टोपिया—भगवे रग की ।

हीरेन्द्रजी को प्यास लग आई थी । फ्लास्क खोल कर उन्होने ठण्डा पानी पीया और वीरेन्द्र से कहा कि वह भी पी ले । वीरेन्द्र ने उत्तर दिया कि उसे प्यास नही है । उस ने ट्राजिस्टर खोल कर समाचारो के लिए काटा घुमाया । कश्मीर की तनावपूर्ण, विस्फोटक स्थिति के कारण अब समाचार-प्रसारण पहले से ज्यादा बार होने लगा था । स्टेशन लगते ही जो समाचार सुनाई दिया, उस से वीरेन्द्र उछल पडा ।

हीरेन्द्रजी का चेहरा ट्राजिस्टर की ओर झुक गया, मानो वह कुछ-कुछ बहरे हो । उन की आखे झप नही रही थी, होठ थोडे-से खुल गए थे

और चेहरा आतकित लग रहा था इस आवेश पर उन्होने जल्द ही काबू पा लिया। उन्हे जोर से चीखने की इच्छा हो रही थी—सचमुच ! सचमुच !—कारगिल की चौकियो को, जिन्हे सयुक्त-राष्ट्र-सघ के आश्वासनो के कारण जीत कर भी छोड दिया गया था, भारतीय फौजो ने फिर से छीन लिया था—पाकिस्तानी इलाके मे घुस कर ! ओह ! हीरेन्द्रजी ने मुट्ठी उछाल कर जोर से नारा लगाया, "कच्छ-समझौता—"

भीड ने भीड के स्वभाव के अनुसार नारा उठा लिया, "रद्द करो !"

"रण से भागी जो सरकार—"

"नही हमे उस की दरकार !"

वीरेन्द्र के कान से सटे ट्राजिस्टर मे से आवाज जारी थी, "रक्षा मत्रालय के प्रवक्ता ने बताया कि श्रीनगर-लेह की महत्वपूर्ण सडक को काट देने के पाकिस्तानी प्रयास को असफल करने के लिए भारतीय जवानो ने कारगिल की पाकिस्तानी चौकियो पर फिर से अधिकार कर लिया है। इन चौकियो को सयुक्त-राष्ट्र-मघ द्वारा यह आश्वासन दिए जाने पर छोड दिया गया था कि पाकिस्तान श्रीनगर-लेह सडक को कोई नुकसान नही पहुचायगा। यह आकशवा "

हीरेन्द्रजी ने अधैर्य से ट्राजिस्टर वीरेन्द्र के हाथ से लगभग छीन कर अपने कान से लगा लिया, क्योकि भीड के उबलते शोर मे ऐसा किए बिना खबरो के वाक्य बीच-बीच मे मिट-से रहे थे।

" श्मीर मे सशस्त्र घुसपैठियो को जो असफलता मिली है, उस स घबरा कर पाकिस्तान ने युद्ध-विराम-रेखा के कई स्थानो पर कार्रवाई करने के लिए अपनी नियमित सेना को भी तैनात कर दिया है। टीथवाल क्षेत्र मे पाकिस्तान ने मीडियम टैंक और मोर्टार तोपो से गोलाबारी की। भारतीय सुरक्षा सेना ने उस का कारगर जवाब दिया, जिस से दुश्मन को बेहद नुकसान पहुचा "

"यही होना चाहिए।" हीरेन्द्रजी ने बगल से चल रहे एक जनसघी

से कहा, "जैसे को तैसा। लगता है, शास्त्री सरकार कुछ सचेत हो गई है। कच्छ-समझौते के समय भी उस ने कडाई से काम लिया होता तो इस विराट प्रदर्शन की जरूरत क्या होती ?"

"खैर, देखे, अब क्या होता है।"

पीछे से एक प्रदर्शनकारी बोला, "जनसघ ने इस जुलूस के लिए कम-से-कम पचास लाख रुपए खर्च किए है। सिवा जनसघ के और किस पार्टी मे इतना दम है ?"

हीरेन्द्रजी ने घूम कर एतराज उठाया, "पार्टी नहीं, दल कहिए।"

शायद वह और भी कुछ कहते, लेकिन उसी समय उन की निगाह दूर के एक प्लेकार्ड पर पडी, जिसे दो जनसघी उठाए हुए थे। उस पर अग्रेजी मे लिखा हुआ था—मिलिटराइज द नेशन ! हीरेन्द्रजी अविलम्ब सामने देखने लगे। दाहिनी तरफ एक तख्ती ले जाई जा रही थी, जिस पर लिखा था—इण्डिया नीड्स एटम बाम्ब !

जगह-जगह प्याऊ खडे किए गए थे। फल, चाट और आइसक्रीम वालो की बन आई थीं। कोकाकोला पच्चीस की बजाय पैंतीस पैसो का बिक रहा था।

वह फुसफुसाहट जुलूस मे कहा से शुरू हुई, कोई नही जानता था लेकिन एकाएक हीरेन्द्रजी ने पाया कि सभी एक-दूसरे से कह रहे हैं—जुलूस की कोई औरत गरमी के कारण बेहोश हो गई है। वीरेन्द्र ने आकाश की ओर देखा—सूर्य मक्कार क्रूरता के साथ चमक रहा था। थोडी देर मे ही उन्हे लाउड-स्पीकर पर ललकार सुनाई दी, "किसी को थकना नही है। किसी को रुकना नही है। किसी को शिकायत भी नही करनी है। यह तो दिल्ली की सडक है। कच्छ के रण मे हफ्तो चलना होगा—बिना पानी के चलना होगा। कोई न रुके। कोई न थके "

ससद्-भवन के पास बी० बी० सी० के टेलिवीजन कैमरे जुलूस का इन्तजार कर रहे थे।

नेतृत्व कर रही महाराष्ट्र की टुकडी जब तक ससद के सामने पहुची, डेढ बज चुका था। जुलूस के आखिरी छोर को वहा तक पहुचने मे डेढ घण्टा और लगा। पार्लियामेट स्ट्रीट पर लगी सरदार पटेल की प्रतिमा और ससद तक लोग ठसाठस भर गए।

जनसघ तथा अन्य दलो के अनेक नेताओ ने भाषण दिए। सभी भाषणो का मूल स्वर यही था कि कच्छ-समझौते पर हस्ताक्षर कर के सरकार ने देश के सम्मान को चोट पहुचाई है और अपनी झुकाववादी नीति के कारण दुश्मन को खुला निमन्त्रण दिया है कि वह कश्मीर पर आक्रमण करे।

हीरेन्द्रजी ने वीरेन्द्र से कहा, "भार्गव साहब कश्मीर चले गए, वरना वह देखते कि जनसघ मे कितनी शक्ति, कितनी अनुशासनप्रियता है।"

"क्यो जी ? कितने लोग होगे जुलूस मे ?" पीछे बैठे किसी व्यक्ति ने सब से पूछा।

सब की ओर से किसी ने उत्तर दिया, "है तो दो लाख, लेकिन ये अखबार वाले—देख लेना—ये लोग एक लाख से कम ही छापेंगे।"

जुलूस के सामने की टुकडिया बैठ गई थी। उन के अधिकाश झण्डे और प्लेकार्ड समेट कर लिटा दिए गए थे। पीछे के लोग और झण्डे खडे थे।

एकाएक किसी छोर से उत्साह-भरी, उबलती फुसफुसाहट शुरू हुई, "ले ली साहब, कारगिल की चौकिया आखिर ले ली।"

"ले ली ! ले ली !"

फुसफुसाहट अनियन्त्रित हो कर चारो ओर रेंगने लग जाती, लेकिन उसी समय किसी की तीखी आवाज सुनाई दी, "खामोश !"

बीस

"आओ, आओ, बल्कि आज मै खुद तुम्हे फोन करने वाली थी।" लक्ष्मी ने कहा।

सईदा कमरे मे आई तो तेजी से, लेकिन सोफे पर चुपचाप बैठ गई। इस खामोशी को न समझ पाते हुए लक्ष्मी ने तौलती आखो से उसे घूरा, "परेशान हो ?"

"नही तो, बच्चे कहा है ?"

"होगे यही कही, मरे दिन भर धूल मे खेलते रहते है" कहते समय लक्ष्मी बखूबी समझ रही थी कि सईदा का यह सवाल उस की उखडी मन स्थिति का ही सूचक है।

'कल तुम स्टेशन क्यो नही आई ?" उस ने पूछा।

"ड्यूटी का वक्त कुछ ऐसा था कि "

"रहने दो। पहले तो कभी ड्यूटी आडे नही आई थी। झगडा-वगडा तो नही हुआ ?"

"नही, झगडा कैसा।"

"सब तुम्हारा इतना इन्तजार कर रहे थे कि आपस मे ठीक से बातें भी न कर पाए। मै ने बलवन्तजी से पूछा भी, लेकिन "

सईदा चुप रही। खिडकी के पास जा कर उस ने एक सलाख जोर से पकड ली। बाहर देखा और पहचाना, दूर हीरेन्द्रजी बडे मग्न हो कर अपनी कार चमका रहे थे। सुबह के नौ-सवा-नौ बजे थे।

"चुप क्यों हो ? जरूर कोई बात है।"

"हा, थी कोई। झगडा ही समझिए।"

लक्ष्मी के हाथ रुक गए। वह ब्लाउज पर लोहा कर रही थी। इस्तरी का स्विच आफ करते हुए उस ने उसे मेज पर खडा कर दिया और सईदा के नजदीक आई।

"अजीब लडकी हो ! झगडे के बावजूद स्टेशन आना चाहिए था। कश्मीर का तनाव दिनोदिन बढ रहा है। ऐसी हालत मे अचानक इतने फौजी अफसर रवाना करना क्या मायने रखता है ? 'यह' कह रहे थे कि कभी भी ठन सकती है।"

"न आया गया, क्या करू !"

"पता नही, तुम मुझे इस लायक समझती हो या नही, फिर भी पूछ रही हू—इतना मनमुटाव एकाएक कैसे ?" लक्ष्मी ने बाह पकड कर उसे सोफे पर बिठा दिया।

वह चुप रही। चुप्पी का कारण यह नही था कि वह 'बताऊ, न बताऊ,' इस पसोपेश मे थी। बल्कि आई ही बताने के लिए थी—मन का गुबार शान्त करने। चुप इस लिए थी कि शुरू कैसे करे, समझ नही पा रही थी।

"अरी, बोलती क्यो नही ?" लक्ष्मी ने उसे झकझोर कर गुदगुदा दिया।

सईदा हसने लगी, "झगडा हुआ, इस लिए हुआ। यो ही।"

"और स्टेशन भी तुम यो ही नही आई, क्यो ?"

"आप ने अखबार मे पढा होगा, इण्डिया-गेट के पास एक लेडी-स्पाई पकडी गई थी।"

"पढा तो नही था, 'इन्होने' चर्चा की थी। तो ?"

"कइयो की जाच हुई, तब जा कर वह पकडी गई। मेरी भी जाच हुई थी। मैं वहा किसी के साथ काफी पी रही थी। भार्गव साहब को इस का पता नही है।" सईदा रुकी। लक्ष्मी की आखे उस पर टिकी रही।

"खुफिया पुलिस के पास उस औरत का पूरा हुलिया था। हुलिया जिस ने भी भिजवाया हो, वह उसे 'अच्छी तरह' जानता होगा, यह मैं उसी वक्त समझ गई थी।"

सईदा ने फिर खिडकी से बाहर देखा। हीरेन्द्रजी गन्दे पानी की बाल्टी उठा कर घर मे जा रहे थे। सईदा व्यग्य मे हसी, "परसो पता चला कि हुलिया बलवन्तजी ने भेजा था।"

'अच्छी तरह जानने' से सईदा का क्या आशय था, लक्ष्मी समझ गई। दोनो काफी देर तक चुप रही। लक्ष्मी ने स्नेह से उस के दोनो कन्धे दबाए, "इतना तो मानती हो न कि मै तुम मे बडी हू? न केवल उम्र मे, अनुभव मे भी?"

"हा।"

"मेरी बात पसन्द न आए तो भी याद रखना। वह यह कि जिंदगी मे तुम्हे तरह-तरह की छूट देनी होगी—जो बहुत अपने है, उन्हे भी। इस के बिना गुजारा नही होता। सारी दुनिया को हम नही बदल सकती। जैसी भी यह दुनिया है, हमे इसी मे रहना है।"

"लेकिन कल मै इतनी नाराज थी कि हास्टल से स्टेशन के लिए निकली तो भी न आ सकी। लौट गई और आप चाहे जो सोचे, लेकिन रोने के बाद मन ऐसा शान्त हो जाता है कि खैर यह महसूस तो मैं ने भी किया था कि छूट देनी पडती है लेकिन रोई न होती तो गुबार मे ही घुटती रहती। इतनी दूर तक सोच ही न पाती।"

लक्ष्मी ने इस्तरी का स्विच आन करते हुए बेबी का फ्राक उठा लिया और कहा, "सईदा, जो फौज मे है, उन की जिन्दगी और ही तरह की होती है। उन्हे तो आम लोगो से भी ज्यादा छूट देनी पडती है, क्योकि फौज अपनी जान हथेली पर रख कर हमारी रक्षा करती है।"

"लेकिन ·"

"एक और बात याद रखो। वह यह कि मर्द को पा लेना औरत के

लिए बहुत आसान है। वह मर्द पर अपना सेक्स थोप कर उसे जल्द ही बस मे कर लेती है। बहुत ईमानदार और सीधे-सादे पति को भी कोई गैर-औरत चाहे तो गलत राह पर मोड सकती है। अलबत्ता, मै यह नही कहती कि अपवाद नही होते।"

"आप का मतलब है, उस उस चुड़ैल ने 'उन' पर सेक्स थोपा होगा? जबरन?"

"मुझे यही लगता है। ऐसी औरते इस मे बडी माहिर होती है। उन्हे भेजा ही इसी लिए जाता है इस के अलावा, फौज के लोग औरतो के प्रति कुछ ज्यादा कमजोरी रखते है। उन्हे दोष भी कैसे दे? यह कमजोरी सारी दुनिया की फौजो मे है। जरा सोचो, जब महीनो-महीनो तक उन्हे औरत देखने को भी न मिलती होगी, उन की जिन्दगी कैसी रूखी, बेजान, कैसी मशीनी हो जाती होगी। 'यह' बता रहे थे कि फौजियो की अधिकाश उम्र औरतो के साथ नही, उन की तस्वीरो के साथ गुजरती है। तस्वीरो को ही वे ख्यालो की दुनिया मे जिन्दा करते रहते है। वरना क्या करे? आखिर वे मशीने नही है। इन्सान से इन्सान होने की ही आशा रखी जा सकती है।"

कुछ देर की चुप्पी के बाद लक्ष्मी ने फिर कहा, "फौजियो की भाषा सुनो तो बेहद गन्दी लगे। उन के पास ऐसी-ऐसी किताबे होती है कि हम देखे तो यही सोचे कि इन से बात भी नही करनी चाहिए। लेकिन फौज मे वह सब चलता है। वह सब ठीक है। उस सब के बावजूद फौजी अच्छा आदमी हो सकता है "

उसी समय रसोईघर मे प्लेटे गिरने-टूटने की जोरदार आवाज हुई। लक्ष्मी तेजी से लपकती हुई बोली, "सत्यानाश जाए इस बिल्ली का!"

सईदा भी उठ कर रसोई की ओर जाने लगी।

लक्ष्मी पप्पू और स्वीटी को कान पकड कर बाहर निकाल रही थी। दोनो बच्चो के मुह चीनी से सने हुए थे।

इक्कीस

बम फटने जैसा धमाका हुआ और बस इतने जोर से उछली कि सारी सवारियां अपनी सीटों से गिर पडी। भार्गव का सिर छत के साथ बहुत जोर से टकराया। लोगो की भयभीत चीखे सुनने वाला कोई नही था। भार्गव ने सब से पहले अपने कैमरे पर ध्यान दिया। उसे कोई नुकसान नही पहुचा था। उन्हे बहुत ही कसैला धुआ सास मे अटकता अनुभव हुआ। पलट कर देखा। बस का पिछला हिस्सा ध्वस्त हो कर धुआ दे रहा था।

खिडकियो मे सलाखे होने के कारण उन मे से बाहर निकलना असम्भव था। लोग आगे के दरवाजो से निकलना चाहते थे। सब से पहले निकलने की कोशिश मे वे बार-बार दरवाजो मे फस जाते। तब कोई हिल भी न पाता व उन की घबराहट-भरी चीखे और तेज हो जाती। एक औरत ने अपने बच्चे को पति की ओर फेक-सा दिया, जो दरवाजे मे से पहले निकलने मे सफल हो गया था। भीड के ऊपर से गिरता-पडता वह बच्चा जब तक उस के हाथो मे पहुचा, उस के माथे से खून आने लगा था। न जाने किस नुकीली चीज से उसे चोट लगी थी। वह इस तरह रो रहा था जैसे एक सास के बाद दूसरी सास ही न ले सकेगा। उस का गोरा चेहरा लाल हो गया था। उस की मा, जो अभी तक बस मे से नही निकल पाई थी, रोने-चीखने लगी।

"घबराइए मत। कुछ नही होगा। मत डरिए · बिल्कुल मत डरिए "भार्गव साहब जोर से बोले। दो-चार लोग और भी बोले, लेकिन सब की घबराहट वैसी ही बनी रही। कसैला धुआ बढता जा रहा था।

भार्गव ने ड्राइवर को बस के पिछले हिस्से की ओर लपकते देखा। "ओह !" बुदबुदा कर वह भी उस ओर भागे—कण्डक्टर का बेहोश शरीर वहा खून से लथपथ पडा हुआ था—धमाका ठीक उस की सीट के नीचे हुआ था। भागव ने स्फूर्त्ति के साथ पिछला दरवाजा खोल दिया। ड्राइवर उस मे से कूद गया और बाहर से कण्डक्टर को खीचने लगा। भार्गव के दोनो हाथ खून और कालिख से सन गए थे। उन्होने भीतर मे उस बेहोश शरीर को सहारा दिया।

कण्डक्टर को सडक पर लिटा दिया गया। वह मर गया था। उस की कमर के नीचे का पौन शरीर धमाके मे फट गया था। ड्राइवर रो नही रहा था। वह सडक पर कापता हुआ बैठ गया। धूप तेज थी। भार्गव ने बस की ओर देखा। उस का पिछला हिस्सा अभी भी धुआ उगल रहा था। उन्हे समझते देर न लगी कि इस सडक पर सुरग लगाई गई थी। ऊपर से बस गुजरते ही वह फट गई। कण्डक्टर की सीट के नीचे का वह चका लगभग पूरी तरह उखड कर झूल गया था और अभी तक कुछ-कुछ घूम रहा था। टायर-ट्यूब मे से उठती घिनौनी बू

जिन सवारियो को चोट नही आई थी, उन्होने कण्डक्टर की लाश को घेर लिया। सडक पर खून का रेला बन रहा था।

"सम्भालो ! सम्भालो !" लोग बोले। एक औरत लाश को देखते ही बेहोश हो गई थी।

भार्गव सिर झुका कर लाश के काफी करीब खडे थे। जहा सुरग फटी थी, वहा सडक मे एक बदसूरत गड्ढा हो गया था और बस्सा रहा था। भार्गव सडक के किनारे एक पत्थर पर बैठ गए। दो मोटी औरतें अभी तक उतर नही पाई थी। हडबडी के कारण उन मे से एक गिर पडी। खडी होने मे उसे बहुत दिक्कत हुई। सब इतने घबराए हुए थे कि उसे मदद देने के लिए कोई आगे न आया।

कइयो को मामूली चोटे आई थी। जो आदमी कण्डक्टर के बगल

मे बैठा था, उस का बाया पैर बुरी तरह झुलस गया था। बाए हाथ की उगलिया भी जल गई थी। वह एक ओर पडा कराह रहा था। उस की मा छाती कूटती हुई रो रही थी। दो-तीन नवयुवक बस मे से प्राथमिक-सहायता का सामान निकाल लाए और झुलसे हिस्सो की मरहम-पट्टी करने लगे। "नाश हो पाकिस्तानियो का ! नाश हो अमरीकियो का !" वह औरत चीखने लगी।

लाश के पास बैठे ड्राइवर की आखो से खामोश, गर्म आसू गिरने लगे। उस के होठो मे बार-बार तेज कपकपी होती थी। सब को अब इस की पडी थी कि मेरा सामान सुरक्षित है या नही। कुछ लोग बस मे जा कर टटोलने भी लगे थे। छत पर रखे कई बिस्तरे, पेटिया वगैरह विस्फोट के झटके से उछल कर सडक पर आ रहे थे। कोई टोकरी खुल जाने से तरह-तरह के फल दूर-दूर तक बिखरे हुए थे। कुछ फल लाश के चेहरे के पास लुढक आए थे। लाश का मुह आकाश की ओर खुला हुआ था।

यह बस कुछ घटे पहले श्रीनगर से चली थी तब किसी को अन्देशा नही था कि ऐसा हो जाएगा। घुसपैठियो की तोडफोड पर पूरी तरह काबू पाने के बाद श्रीनगर का नागरिक जीवन सामान्य हो गया था। वहा से दक्षिण-पश्चिम मे नौ मील की दूरी पर स्थित बडगाम मे घुसपैठियो का मजबूत डेरा था, लेकिन सुरक्षा सेना ने वहा से भी उन के पाव उखाड दिए थे। वे भाग रहे थे—जिधर रास्ता मिल रहा था, पलायन कर रहे थे।

भार्गव को पहुचना था मेढर। वहा की सैनिक स्थिति बहुत नाजुक हो गई थी। दो-दो, तीन-तीन सौ सैनिको की कई पाकिस्तानी टुकडिया वहा युद्ध-विराम-रेखा पार कर चुकी थी। तोपो, मोर्टार तोपो और लाइट मशीनगनो से उन्होने कई भारतीय चौकियो पर हमला कर दिया था। श्रीनगर की तुलना मे कही उत्तेजक समाचार अब मेढर क्षेत्र से भेजे जा

सकते थे। भार्गव ने लक्ष्मी व सईदा को अपना नया पता लिख भेजा था और मेढर रवाना हो गए थे। उन्होने सिगरेट सुलगाई सुरग लगाने के पीछे घुसपैठियो का क्या उद्देश्य था ? उन्होने बस और लाश का एक-एक फोटो खीचा। इस के बाद बस की छत पर चढ कर अपना बिस्तरा व दोनो अटैचिया उतारने लगे।

छत से उतरे ही थे कि आसपास की झाडियो के पीछे से अनेक लोग कूद कर सडक पर आ गए। सब के हाथ मे रायफले थी। उन के कपडे धूल, कीचड और खून के दागो से सन कर डरावने हो गए थे, जगह-जगह से फट भी गए थे। सब के बाल रूखे व बिखरे हुए। आखो मे नीद का भूखा अभाव काप रहा था। वे कौन थे, समझाने की जरूरत नही थी। लोगो की आखे भय से फैल गई। सब अपने-आप एक झुण्ड मे खडे हो गए और ताकने लगे।

घुसपैठियो ने उन्हे घेर लिया। सडक पर जो फल बिखरे हुए थे, उन्हे उठा कर पूरी तरह धूल साफ किए बगैर ही वे खाने लगे। एक घुसपैठिया सामने आता हुआ चिल्लाया, "पानी ! पानी लाओ !" उस की आवाज प्यास के मारे बैठ गई थी। वह पूरी ताकत से चिल्ला रहा था तो भी उस की आवाज मे कोई प्रभाव नही था। उस से कही ज्यादा आतक तो उस की रायफल मे था। लोगो के झुण्ड मे कोई हरकत न हुई। सब ने यही समझा कि मेरे सिवा कोई और ही पानी देने के लिए आगे बढेगा।

"सुनते हो या नही ? पानी लाओ !" घुसपैठिया फिर चीखा। उस ने अपना हाथ रायफल पर रख दिया।

अधिकाश सुराहिया और फ्लास्क, लोटे वगैरह बस मे से निकाल लिए गए थे। उन्हे घुसपैठियो को सौप दिया गया। कुछ सुराहिया अभी बस मे ही थी, जिन्हे उन्होने तलाशी ले कर हासिल कर लिया। दयनीय बेताबी से वे पानी पीने लगे। एक ही सास मे ज्यादा-से-ज्यादा पीने के

प्रयास मे उन का दम फूल जाता। पानी उन के होठो से बार-बार छलक जाता। अधिकाश पानी उन्होने वही पी लिया। जो थोडा-बहुत बच रहा, उसे उन्होने अपनी मशको, बोतलो आदि मे भर लिया। "खाना लाओ! क्या-क्या है? जल्दी! जल्दी लाओ!" वे चिल्लाए।

फलो के अलावा रोटिया, सब्जिया वगैरह सब उन्हे दे दिया गया। वे खाने लगे। हडबडी मे कोई चीज धूल मे गिर जाती तो वे तुरन्त उठा लेते। जल्दी-जल्दी पोछते और कौर भरते। दोस्ताना ढग मे वे आपस मे छीना-झपटी भी करते। बहुत चौकन्ने हो कर हर तरफ देखते और सन्तुष्ट होते हुए धीमे से हसते। सब की दाढी कई-कई दिनो की बढी हुई थी।

"ऐ! यह क्या है?" एक घुसपैठिया भार्गव के पास आता हुआ कैमरे की ओर इशारा कर रहा था। "इधर लाओ!" उस ने हुक्म दिया। भार्गव झिझके, लेकिन कोई चारा नही था। उन्होने कैमरा दे दिया। घुसपैठिया उस का केस खोल कर हसा, "ओहो! कैमरा! खूब!' उस ने उसे दो-तीन बार एक पत्थर पर पटका। लेन्स मे दरारे पड गई।

अब घुसपैठियो मे ताकत आ गई थी। उन की आखो मे मक्कारी तैरने लगी। लोगो की भीड मे एक नवविवहिता अपने पति के साथ थी। चमकीली पोशाक के कारण वह अलग ही झलक रही थी। "लो!" घुसपैठिए ने टूटा कैमरा भार्गव को जबरन थमा दिया और उस युवती की ओर कदम उठाए। भार्गव की भौहो पर बल पडे। "खबरदार! कोई मत हिलना।" कहते हुए घुसपैठिए ने हाथ पकड कर युवती को भीड मे से खीच निकाला। युवती आतकित, बारीक आवाज मे चीखी। उस के पति ने आवेश से तने चेहरे के साथ आगे आने की कोशिश की, लेकिन एक और घुसपैठिया उस के सामने रायफल तान कर खडा हो गया।

युवती थरथर काप रही थी। वह दूसरी बार चीखी। घुसपैठिए ने उस का दुपट्टा छीन कर फेक दिया था और अपने साथियो की ओर देख कर ठहाका लगाया था, "ले जाओ! जिसे चाहिए ले जाओ!" किन्तु एकाएक ही उन का ध्यान युवती पर से हट गया। युवती दौड कर अपने पति के पास चली गई। पति ने कापते हुए उसे भींच लिया। दोनो की डरी हुई आखे घुसपैठियो पर टिकी रही। घुसपैठिए उस दिशा मे देख रहे थे, जिधर से वह घरघराहट उभर रही थी—जीप-गाडिया!

जिस तरह वे एकाएक आए थे, उसी तरह एकाएक भागे—अलग-अलग दिशाओ मे। वे झपट कर जमीन पर गिर गए और बन्दरो जैसी स्फूर्ति से झाडियो मे जाने लगे। वे इतनी तेजी और आसानी से गिर रहे थे, मानो उन्हे चोट आती ही न हो। कुछ झाडिया पार करने के बाद एक छोटा-सा मैदान था। वे उठे और भागते हुए मैदान के उस पार की झाडियो मे चले गए।

अचानक कच्ची सडक के मोड पर पाच विराट कुत्ते नजर आए। वे भेडियो की तरह अलमस्त और डरावने थे। सब ने अपनी जीभे बाहर लटका रखी थी। जीभे गीली और लाल थी। कुत्तो की चमकती आखे मानो हर चीज को भेद कर देखना चाहती थी। उन के पीछे-पीछे कई जीपें धूल उडाती हुई चल रही थी। ऊबड-खाबड सडक पर वे बहुत हचमचा रही थी, लेकिन इस का उन की गति पर कोई असर नही था। उन मे भारतीय सुरक्षा सेना के चौकन्ने जवान थे।

कुत्ते रुके। जीपे भी रुकी और कुछ जवान रायफलो पर हाथ रखे हुए जमीन पर कूद गए। कुत्ते सूघते हुए झाडियो मे जा रहे थे। अलग-अलग दिशा की झाडियो मे। एक जीप इन यात्रियो की ओर आई। उसे चला रहे अधिकारियो ने कडक कर पूछा, "कौन है आप लोग?" तभी उस की निगाह कण्डक्टर की लाश और बस के ध्वस्त हिस्से पर पडी, जिस मे से अभी तक बू उठ रही थी। बिना कहे वह सब समझ गया।

"आप ने दुश्मनो को देखा?" उस ने पूछा।

"जी हा, वे वे आए थे जीप की आवाज सुन कर भाग गए।" एक ने कापते स्वर मे कहा।

"किधर ?"

'अलग-अलग साहब, कोई इधर, कोई उधर "

"कितने थे ?"

"दस-बारह होगे।"

"हु " उस ने जीप को उल्टा चलाते हुए चिल्ला कर कहा, "सब लेट जाइए, कोई आड ले लीजिए। दुश्मन नजदीक है। फायरिग होगी। जल्दी लेट जाइए।"

सडक के किनारे ढलान पर कई बडे-बडे पत्थर थे। उन की आड मे सभी यात्री औधे लेट गए। अकेले भार्गव ऐसे थे, जो न लेटे। अपने टूटे कैमरे के साथ वह उस जीप तक आए। अधिकारी उन्हे कौतूहल से देखने लगा, "यस ?"

"मैं एक न्यूज-रिपोर्टर हू।" उन्होने अपना आइडैण्टिटी-कार्ड दिखाया, "मैं मेढर जा रहा था। यदि आप मुझे वहा तक "

"कोशिश करूगा। आ जाइए।"

भार्गव ने जीप मे सीट ले ली। जीप गुर्रा कर चली और एक घनी झाडी की ओट मे खडी हो गई। अधिकारी नीचे उतरा और बोला, "आप यही रहिए, जीप मे ही दुबक जाइए। आई मस्ट गाइड द काम्बिग पर्सनली।" वह एक कुत्ते व जवानो की एक टुकडी के साथ झपटता हुआ चला गया। वे सब झुकते, दुबकते और आडे लेते हुए दौड रहे थे। कभी वे रुकते और दूरबीन लगा कर दूर-दूर तक टोह लेते। कभी किसी वृक्ष या ऊची जगह पर चढ जाते और देखते। कुत्ते खामोशी से जगह-जगह सूघ रहे थे। वे उस बस और उन यात्रियो के पास भी आए, लेकिन जल्द ही दूसरी दिशाओ मे चले गए। लगभग पन्द्रह मिनट बाद—

धाय!

जवाब मे दूर से कुछ गोलिया चली। कौन-सी गोलिया किस पक्ष की थी? भार्गव ने दुखी होते हुए अपने कैमरे की ओर देखा।

धाय! धाय!

एक साथ अनेक रायफले गरज उठी। आवाजे काफी दूर से आ रही होने पर भी सूनेपन के कारण बिल्कुल साफ थी।

एक गोली ने जीप का सामने का काच तोड दिया।

भार्गव साहब हडबडा कर नीचे बैठ गए। सीट पर काच के अनेक टुकडे बिखर गए थे। क्च्याय? एक और गोली आई। काच मे दूसरा छेद हो गया।

:

बाईस

२५ अगस्त १९६५। पार्लियामेण्ट स्ट्रीट की किसी इमारत के एकान्त कमरे मे वे बैठे थे। हाक चुरुट पी रहा था। ऐरो पाइप। कमरा धुए से भरा हुआ था। एक खिडकी खुली थी, लेकिन धुआ बाहर नही जा रहा था। ऐरो ने दूसरी खिडकी खोल दी। वह पहली खिडकी के ठीक सामने थी, जिस से हवा आने-जाने लगी और धुम्रा कुछ कम हुआ।

"यदि अख्तर दिल्ली मे ही है तो सईदा से मिलने की कोशिश कर सकता है। उस ने सईदा से जबरन दोस्ती की—क्या इस के पीछे तुम्हे कोई मकसद दिखाई नही देता? वह स्पाईग मे उस की मदद माग सकता है या और कुछ नही तो—उस से मिलने की कोशिश इस लिए भी कर सकता है कि वह एक लडकी है।" हाक ने कहा।

रेडियो-स्टेशन और वर्किंग-गर्ल्स-हास्टल के पते से सईदा के नाम जितने भी खत आए, उन्हे बीच मे ही रोक कर पढ लेने का उन्होने निर्णय लिया। उन्हे आशा थी कि अख्तर सईदा को खत लिखेगा—दिल्ली मे होने पर भी, न होने पर भी।

"जो गिरफ्तारी से बच गए है, वे कम्बख्त ऐसे तो गायब हुए है कि " बुदबुदाते हुए ऐरो ने सिगरेट के पैकेट जितना एक ट्राजिस्टर निकाला और स्विच आन कर दिया। किसी फिल्मी गीत का आखिरी अश चल रहा था। उस के समाप्त होते ही समाचार शुरू हुए, " रक्षा-मन्त्री श्री चव्हाण ने आज लोक-सभा मे घोषणा कर दी कि भारतीय फौजे टीथवाल क्षेत्र मे युद्ध-विराम-रेखा पार कर के पाकिस्तान मे चली गई है और उन्होने तीन महत्वपूर्ण चौकिया जीत ली है। घोषणा के

साथ ही लोक-सभा मे ऐसा तीव्र हर्षनाद हुआ कि रक्षा-मन्त्री को अपना वाक्य दोबारा पढना पडा। उन्होने कहा कि पाकिस्तानी घुसपैठियो को हमारे क्षेत्रो मे से निकाल बाहर करने और नए घुसपैठियो को आने से रोकने के लिए यह कार्रवाई अनिवार्य हो गई थी। सयुक्त-राष्ट्र-सघ के महासचिव श्री ऊ था से भारत ने माग की है कि वह जनरल निम्मो की कश्मीर-रिपोर्ट प्रकाशित कर दे, ताकि दुनिया को मालूम हो सके कि पाकिस्तान ने कश्मीर मे कैसी उलझने पैदा कर दी है। सयुक्त-राष्ट्र-सघ के पर्यवेक्षक जनरल निम्मो की रिपोर्ट का प्रकाशन अमरीका और ब्रिटेन के विशेष अनुरोध पर रोक दिया गया था। जम्मू-कश्मीर मे घुसपैठियो का सफाया करने के लिए बडी सरगर्मी से सैनिक कार्रवाइया हो रही है। सन्त फतेहसिह ने प्रधान-मन्त्री के इस निवेदन को अस्वीकार कर दिया है कि वह पजाबी सूबे के लिए आमरण अनशन न करे। लीजिए, अब आप पूरे समाचार सुनिए ”

हाक ने ऐरो की ओर गम्भीरता से देखा। ऐरो मुस्कराया, “और चारा भी क्या था! लगता है, हमे टीथवाल मे ही नही, और भी कई क्षेत्रो मे युद्ध-विराम-रेखा पार करनी होगी—पाकिस्तान मे जा कर घुसपैठियो के रास्ते ही काट देने पडेगे।”

पूरे समाचार सुनने के बाद वे सम्बन्धित डाक-अधिकारियो से मिलने चले गए। अगले दिन सुबह वे गोल-डाकखाने पहुचे, तब रेडियो-स्टेशन के पते से आया एक लिफाफा अलग से रखा हुआ था। उस पर सम्भले हुए अक्षरो मे लिखा था—मिस सईदा बानो। वे एक अकेले कमरे मे चले गए और हीटर पर पानी गरम करने लगे। उठ रही भाप पर उस लिफाफे को अनेक बार घुमाने के बाद गोद इतना कमजोर हो गया कि लिफाफा बडी सफाई से खुल सकता था।

यह भार्गव साहब का पत्र था, जो उन्होने मेढर जाते-जाते रास्ते मे कही बैठ कर लिखा था। बस-दुर्घटना के विवरण के बाद उन्होने

सूचित किया था, ' कुल तेरह घुसपैठिए थे । दस मारे गए । तीन ने आत्म-समर्पण कर दिया । उन्हे श्रीनगर ले जाया गया है । उन के जो इण्टरव्यू वहा रिकार्ड होगे, वे अल्टीमेटली तुम्हारे पास आ ही जाएगे । "न्यूयार्क टाइम्स" के एक सवाददाता को हमारे प्रधान मन्त्री ने इण्टरव्यू देते हुए कहा है कि अगर घुसपैठियो ने तोडफोड जारी रखी तो मजबूर हो कर भारत को भी पाकिस्तानी इलाको मे सैनिक कार्रवाइया करनी पडेगी और इस की सारी जिम्मेदारी पाकिस्तान की होगी "

पत्र बन्द करते हुए ऐरो ने कहा, "यह वही भार्गव मालूम पडते हैं, जिन का टेप मे जिक्र हुआ है ।"

"हा ।"

पत्र के ऊपर उसने गर्म इस्तरी फेर दी । लिफाफे मे से भाप की अनेक मोटी-मोटी लकीरे उठी । अब वह इस तरह बन्द हो गया था कि उसे खोला गया है, यह भापना मुश्किल था । वे कमरे से बाहर आने ही वाले थे कि डाक-विभाग का कर्मचारी उन्हे एक और लिफाफा दे गया । प्राय एक मिनट तक भाप पर रखने के बाद ऐरो ने ज्यो ही उसे खोला, उस के चेहरे पर मुस्कान खेल गई । सम्बोधन था, 'डार्लिग सईदा !' वह बोला, "ए लेटर फ्राम हर लवर "

"यू मीन, आफिसर बलवन्तसिह ?" हाक ने पूछा । ऐरो ने सिर हिलाया, "यस, सर !"

पूरे पत्र मे बलवन्त ने अनेक सफाइया दी थी । सईदा उसे विदा करने स्टेशन न आई, इस का उसे बहुत दुख था । उस ने अपनी ओर से पूरा विश्वास दिलाना चाहा था कि वह उतना बुरा नही है, जितना सईदा समझ बैठी है—बल्कि वह बिल्कुल ही बुरा नही है । अपनी 'एक भूल' के लिए उस ने हार्दिक पश्चात्ताप व्यक्त किया था । अन्तिम पैराग्राफ मे उस ने लिखा था, "इस वक्त मैं अमृतसर के फाइटर-बेस मे बैठा काफी पी रहा हू । कल मैं पजाब के किसी फारवर्ड फाइटर-बेस मे होऊगा ।

डाक का पता मैं ने फिलहाल अमृतसर का ही दिया है । नोट कर लेना । छम्ब-जोरिया मे हमे बहुत चौकस रहना है, क्योकि उस से लगे पाकिस्तानी एरिया मे बहुत ज्यादा मिलिटरी-मूवमेट्स हो रहे है ।"

यह लिफाफा भी सफाई से बन्द कर दिया गया ।

शाम को सईदा अहाते मे बाहर आई तब रिजर्व बैंक के सामने ऐरो अपने स्कूटर के साथ खडा था । वह स्कूटर तब तक न चला, जब तक सईदा बस मे न बैठ गई । स्कूटर बस के पीछे-पीछे आता रहा और वर्किंग-गर्ल्स-हास्टल के सामने से आगे निकल गया । कुछ दूर जा कर वह वापस आया और एक पेड के नीचे खडा हो गया । सईदा को गेट मे प्रवेश करते देखने के बाद भी ऐरो वहा इन्तजार करता रहा । स्कूटर को स्टैण्ड पर खडा कर के वह उस की पिछली सीट पर बैठ गया और एक किताब को यो ही खोल कर पन्ने पलटने लगा । बार-बार वह घडी मे देखता, ताकि आने-जाने वालो को यही लगे कि उसे किसी का इन्तजार है । बहुत देर बाद भी सईदा गेट से बाहर न आई तो उस ने ऊब जाने के अभिनय के साथ स्कूटर एक ओर दौडा दिया ।

किम और अख्तर 'घर' से निकलते तो साथ-साथ, लेकिन मौका देख कर कही से अलग हो जाते । दूतावास की ओर से उन्हे यही करने की गुप्त सलाह दी गई थी, ताकि अगर गिरफ्तारी हो तो दोनो की नही, किसी एक की ही । चूकि पडोसियो को यह बताया गया था कि वे नव-दम्पति है, शाम या रात को वे साथ-साथ ही 'घर' लौटते । साथ होने के लिए वे एक निश्चित बस-स्टाप पर पहले से निश्चित समय पर एक-दूसरे का इन्तजार करते ।

कभी-कभी उन्हे महसूस होता कि इस मकान मे ज्यादा दिन रुकना सुरक्षित नही है, लेकिन उन्होने अभी इसे बहुत गम्भीरता से नही लिया था । किम को यह काम सौपा गया था कि दिल्ली-दुग्ध-योजना क उन

कर्मचारियो का पता लगाए, जो यथासम्भव अपनी ओर मिलाए जा सकते हो। उन मे से भी चुनाव कर के अन्त मे एक या दो व्यक्तियो को तय करने का इन का इरादा था, ताकि दुग्ध-योजना के घर-घर पहुचते दूध मे कोई जहर या बीमारी के कीटाणु मिलाए जा सके। इस से दिल्ली मे जो मौते या बीमारिया होगी, उस से लोगो मे कैसा हाहाकार मचेगा, इस की कल्पना उन्हे बहुत सुखद लगती, लेकिन किम को कोई अवसर नही मिल रहा था। 'मै दूसरे शहर से आई हू और दुग्ध-योजना की कार्य-प्रणाली देखना चाहती हू।' इस बहाने किम ने शादीपुर के पास का वह सस्थान अच्छी तरह देखभाल लिया था, जहा दूध को शुद्ध कर के बोतलो मे भरा जाता है, लेकिन केवल देख लेने का कोई अर्थ नही था। उस ने कर्मचारियो के नाम-पतो की सूची प्राप्त करनी चाही थी, पर सफलता नही मिली थी। किसी से जरा भी कुरेद कर पूछते ही शक की निगाहे उठती और उसे घबराहट होने लगती।

घबराहट की शुरूआत तो उसी दिन से हुई थी, जब से वह अकेली बाहर जाने लगी थी। दूतावास की ऐसी सलाह का एक ही मतलब हो सकता था कि खुफिया विभाग का छापा किसी भी समय, किसी भी जगह पड सकता है।

एक दिन 'घर' लौटने पर उस ने अख्तर से कहा, "मुझे रह-रह कर अहसास होता है कि कोई पीछे आ रहा है। कौन है, इस का पता नहीं चलता। पता चले तभी तो उस से बचने की कोशिश करू? डर के मारे मुझे बार-बार पीछे देखना पडता है। यह बहुत खतरनाक लाचारी है। कभी भी मुझ पर शक हो सकता है "

"जब हम दोनो साथ होते थे," कुछ देर रुक कर वह बोली, "इतना डर नही लगता था। मैं अकेली कुछ भी नही कर पाती। तुम्ही बताओ, एक भी 'ढग का' काम कर पाई हू? अकेली होते ही मुझे शक "इट्स रियली आफुल!"

"तुम्हे खामखाह वहम हो गया है।"

"खामखाह कैसे ?"

"हम दोनो चूकि 'घर' से साथ-साथ निकलते हैं और लौटते भी साथ-साथ हैं, सिर्फ तुम्हारा पीछा कभी नही होगा। जब भी होगा, हम दोनो का साथ-साथ ही होगा।"

"शायद तुम्हारा भी हो रहा हो।"

"नही। मैं ने कई बार इस की जाच की है। दौड लगा कर मैं ने कई गलियो को जल्दी-जल्दी पार किया है। पीछा करने वाला ऐसी जाच मे छिपा नही रहता, क्योकि ज्यो ही आप दौडते हैं, उसे भी दौडना पडता है। गलियो मे उस का स्कूटर या कार नही आ सकती। आप भीड को काटते हुए दौड रहे हो और सचमुच कोई पीछे लगा हो तो नजर आ ही जाएगा।"

एक रात किम ने उसे झकझोर कर जगा दिया और पूछा, "अभी मैं नीद मे कुछ बक तो नही रही थी ?"

"मुझे नही मालूम। सो जाओ चुपचाप।"

"अख्तर, मुझे डर लग रहा है।"

"तुम्हे हो क्या गया है एकाएक ?"

"यह डर मेरे भीतर कई दिनो से इकट्ठा होता रहा है। अब तक मैं इस बारे मे चुप रही थी, लेकिन "

"खुफिया पुलिस को हमारी कोई जानकारी नही है। बिल्कुल नही। कह तो दिया! सो जाओ अब।" अख्तर नाराज होने लगा। उस ने कहना चाहा कि जब इतना कच्चा दिल था तो इस धन्धे मे आई ही क्यो, लेकिन चुप रहा।

"अभी मैं जरूर कुछ बक रही थी।"

"मुझे क्या मालूम ? मै सो रहा था।" अख्तर ने करवट बदल ली।

उसे डाक्टर सिंह की कोठी की अन्दरूनी रचना मालूम करनी थी।

एक-दो दिनो बाद जब वह नाम की तख्तियो के आधार पर फायरब्रिगेड लेन मे कोठी ढूढने का प्रयास कर रहा था उसे शक हुआ कि पीछा किया जा रहा है। जहा देश का इतना महत्वपूर्ण व्यक्ति रहता हो, वहा खुफिया पुलिस की गश्त हो, इस मे आखिर अजूबा क्या था ? अख्तर ने ध्यान मे आसपास निगाह दौडाई। सचमुच उसे दो व्यक्ति ऐसे लगे, मानो उन्हे पहले कही देखा हो। वह ऐसे कई चेहरो को पहचान चुका था जो यथासम्भव खुफिया विभाग के होने चाहिए थे।

अख्तर की यूनिट ने पता लगाया था कि डाक्टर सिह कई महत्वपूर्ण हथियारो के प्रारूप तैयार कर चुके है या कर रहे है। योजना यह थी कि किसी तरह प्रयोगशाला मे पहुच कर कागजात चुराए जाए। उन के आधार पर कुछ तो अन्दाजा लग ही जाएगा कि कैसे प्रयोग हो रहे है।

दूर से उस ने देखा कि कोठी के दरवाजे-खिडकिया बन्द है। अगर बगीचा और फुलवारी गुलजार न होती, तो यही लगता कि शायद यहा कोई नही रहता। गेट बद था।

नही। प्रवेश नही किया जा सकता। खुफिया आखे चौकन्नी हो सकती है। अख्तर सिर झुका कर व्यस्त चाल से आगे चलता गया और फायरब्रिगेड लेन से बाहर निकल आया। कोई दूसरा तरीका सोचना होगा

वह कुछ और जगहो के भी चक्कर काट रहा था, जहा हथगोला फेका जा सके, टाइम-बम रखा जा सके—या ऐसा ही कुछ। एक टेलीफोन-एक्सचेज उस के ध्यान मे था। दो बिजली-घरो पर भी उस ने घात लगाई थी।

शाम को किम से मिलने के लिए जो बस-स्टाप तय हुआ था, वहा जा कर वह खडा हो गया और इतजार करने लगा। समय हुआ और बीत गया। बीत जाने को भी काफी समय गुजर गया, लेकिन किम न आई। वह बार-बार घडी मे देखता।

अचानक पीछे से किसी ने उसे धक्का दिया और आगे निकल गया। अख्तर धक्का देने वाले को उस की पीठ देख कर ही पहचान गया—वह उस की यूनिट का एक सदस्य था। अख्तर ने उसे एक गली मे मुडते देखा।

साकेतिकता को समझ लेता हुआ वह उस के पीछे-पीछे गया। वह एक सूने पार्क की बेच पर बैठ गया था। किसी परिचित को एकाएक देखा हो, इस तरह अख्तर "हैलो" कहता हुआ पास जा बैठा। आसपास कोई न होने से उन्होने बातचीत के लिए साकेतिक की बजाय सीधी भाषा ही अपनाई।

सहयोगी ने अचानक बताया, "आज किम गिरफ्तार कर ली गई।"

"ओह!" अख्तर नीचे देखने लगा। उसे अपने घुटने हिलाने की इच्छा हो रही थी। किम विटर्स! अनोखी, खूबसूरत, हसोड युवती किम! वह गिरफ्तार!

"हमारी जो लेडी-डिटेक्टिव पहले गिरफ्तार हुई थी, शायद उस ने कुछ राज बता दिए हो।"

"लेकिन वे सभी राज हम ने खत्म कर दिए थे।" अख्तर ने कहा।

"तो भी कोई कमजोरी छूट गई होगी। पता नही, वे किम की ट्रेसिग कहा-कहा करते रहे, लेकिन उन्होने उसे पकडा बडे अजीब ढङ्ग से।" सहयोगी बताता रहा, "शायद उन के पास कोई अच्छा सबूत नहीं था। उन्होने बहुत सरल-सा उपाय आजमाया। किम एक जगह कुछ सोचती हुई खडी थी। अचानक किसी ने सामने आ कर जोर से कहा, 'जासूस! खबरदार!' किम का रग उड गया। तुरन्त उसे पुलिस वैन मे बिठा लिया गया। वह इतनी नरवस हो गई थी कि उस ने कोई एतराज भी न उठाया। उसे एतराज उठाना चाहिए था। 'जासूस' कहने वाले उस शख्स को तुरन्त उसे डाट देना चाहिए था। पता नही, वह इतनी नरवस कैसे हो गई "

अख्तर ने दुखी स्वर मे कहा, "वह कई दिनो से नरवस थी " उस ने अपनी हथेलिया घुटनो पर रख दी। उसे पता भी न चला कि कब वह घुटने हिलाने लगा। मिस चालीस की गिरफ्तारी के समय उसे ऐसा दुख न हुआ था। शायद लतीफ मिया को हुआ हो

लतीफ ! उन्होने दिल्ली से जाने के बाद कोई खत नही डाला था। 'पता नही जिन्दा भी है या ' एक बार तो अख्तर ने यहा तक सोच लिया था। अख्तर को उन का खत न आए, न सही, लेकिन उन्होंने पाकिस्तानी दूतावास को भी कोई सूचना नही दी थी। खुफिया विभाग खत को बीच मे ही खोल कर पढ लेता तो भी खतरा नही था—लतीफ मिया साकेतिक भाषा इस्तेमाल कर सकते थे। उन की रहस्यमय चुप्पी से सब ने निराशाजनक अनुमान लगा लिए थे।

"अभी तुम्हारे पास कितने रुपए है ?" सहयोगी पूछ रहा था।

"क्यो ?"

"बताओ तो सही ?"

"यही पचास के करीब।"

"मेरे पास काफी है।" सहयोगी ने जेब मे हाथ डाला। दस-दस के पाच नोट और सौ का एक नोट अख्तर को देते हुए उस ने कहा, "बाजार जा कर अटैची खरीदो। सारे कपडे वगैरह भी खरीदो—जरूरत की सभी चीजे। फिर किसी होटल मे बतौर एक मुसाफिर ठहर जाओ। वही पाच-सात दिन रहो और कम-से-कम बाहर निकलो। किम की तरह तुम्हारे साथ भी कोई चाल खेली जा सकती है। जिस मकान मे तुम अब तक रहे, वहा न लौटना ही ठीक होगा।"

"हा ••" अख्तर नीचे देखने लगा।

"हो सकता है, तुम्हे दिल्ली छोड देनी पडे। जैसा भी मुनासिब होगा, मैं मशविरा कर के तुम्हे बता दूगा।"

फतहपुरी के उस होटल के कमरे मे वह रात भर जागता रहा। उस ने इतनी सिगरेटे पी डाली कि तबीयत खराब-सी होने लगी। किम विंटर्स एकाएक वह कैसी भयकरता के साथ उस की जिदगी मे मे काट दी गई थी! इस से तो अच्छा था, वे साथ-साथ ही गिरफ्तार होते! अख्तर को कुढन हुई। कैसा बचकाना ख्याल! मानो खुफिया पुलिस उन्हे जेल मे भी साथ रहने देती!

किम के अलावा उसे सईदा भी याद आई। कितने दिन हो गए उस से मिले या फोन पर बात किए! वह सोचती होगी, अख्तर अभी नागपुर मे है।

कई बार वह किम से बहुत ऊब जाता। जब भी उसे उस मे घरेलूपन का अभाव खटकता, सईदा का सौम्य चेहरा उस की आखो के सामने तैरने लगता। आज! आज जब किम शायद हमेशा के लिए उस से छिन गई थी, वह अपने को अदर से उबला हुआ-सा, पका हुआ-सा महसूस कर रहा था। सईदा और किम की हसी मे कितना फर्क किम की हसी उसे भभका देती थी, जबकि सईदा की खिलखिलाहट

तेईस

कनाट-प्लेस के एक रेडियो-डीलर ने अपनी दूकान से बाहर एक छोटा-सा लाउड-स्पीकर लगा रखा था। दोपहर एक-चालीस के समय उसे खोल दिया गया। क्रिकेट-मैच मे दिलचस्पी रखने वाले जिस तरह इकट्ठे हो जाते है, उसी तरह ज्यो ही सुनाई पडा कि हमारे जवानो ने उडी दर्रे की सात और चौकियो पर कब्जा कर लिया है, लोगो की भीड़ वहा घिरने लगी।

दो-तीन स्कूटर घरघराते हुए आए और लाउड-स्पीकर की आवाज के दायरे मे रुक गए। एक टैक्सी वाला अपनी टैक्सी आगे बढा लाया और सुनता हुआ सिगरेट पीने लगा। कोई महिला अपने बच्चो के साथ बगल के रेस्तोरा से निकली। आधे मिनट बाद उस का पति भी बाहर आया। वे सब अपनी कार की ओर बढे। अचानक पति ठिठक गया। उस ने मुड कर आवाज की दिशा मे देखा।

"हनी!" उस ने पत्नी से कहा, 'ड् यू हियर इट ?"

पत्नी भी रुक गई। बच्चो ने मचलते हुए उस से कुछ पूछना चाहा, लेकिन उस ने नाक पर उगली रखते हुए कहा, "शी · "

बच्चे चुप हो गए और पास ही खडे आइसक्रीम वाले की ओर देखने लगे।

आइसक्रीम वाले के पास अख्तर खडा था।

होटल मे बैठे-बैठे वह बहुत बोर हो गया था और कनाट-प्लेस चला आया था। पकडे जाने का खतरा तो था, लेकिन उस ने सोचा था कि खतरा तो हर वक्त रहेगा। कमरे का सूनापन उस के लिए असह्य हो

उठा था क्योकि किम और मईदा के साथ बिताए गए क्षणो ने पूरे उबाल के साथ उसे आ घेरा था।

उन बच्चो ने अख्तर की ओर भी देखा। उन्हे कुछ-कुछ डर लगा, क्योकि अख्तर ने काला चश्मा लगाया था, फेल्ट-हेट को चेहरे पर बहुत ज्यादा झुका लिया था। होठो मे बडा-सा पाइप। टेरीन की चुस्त पेंट, कीमती सूती बुश्शर्ट और नए-नुकीले जूते उसे किसी ऐसे अमीर, आधुनिक युवक का रूप दे रहे थे, जो रूखा और घमण्डी हो। बच्चो ने पलट कर उसे एक बार और देखा, फिर "मम्मी " कहते हुए महिला के पास चले गए। महिला ने हाथ बढा कर उन्हे छुआ और अपने साथ लिपटा लिया। छुअन पा कर वे आश्वस्त हो गए। फिर से उन्होने अख्तर की ओर देखा, लेकिन अब वह डरावना न लगा।

दो साइकल वाले कही जा रहे थे। गुजरते हुए उन्होने सुना, 'टीथवाल के बाद हमारी फौजो को उडी क्षेत्र मे भी युद्ध-विराम-रेखा पार कर के पाकिस्तान मे प्रवेश करना पडा, ताकि घुसपैठियो को वही रोका जा सके। भारतीय फौजो को अपने उद्देश्य मे पूरी-पूरी सफलता मिली है।"

दोनो लौटे और अख्तर के पास खडे हो गए। अख्तर ने उन्हे काले चश्मे की आड से देखा और पाइप का कश लिया। वह उन से जरा परे हट गया, लेकिन जहा वह खडा हुआ, वहा बूट-पालिश करने वाले तीन छोकरे आ गए। दो छोकरे अख्तर के दाहिनी तरफ और एक बाई तरफ खडा हो गया। बाई ओर वाले ने उस से पूछा, "क्यो सा'ब, खूब पिटाई हो रही है न ? मारो सुस्सरो को ! चटनी बना दो !"

अख्तर ने नाराजगी से उसे घूरा। काले चश्मे के कारण उस की आखे तो छोकरे को नजर न आई लेकिन वह समझ गया कि सा'ब नाराज हो रहे है। उस ने दाहिनी ओर खडे छोकरो की ओर देख कर आखो-ही-आखो मे इशारा किया। वे ढीठता से हसे, फिर गम्भीर हो

कर सुनने लगे ।

"भारतीय फौजो ने उडी की युद्ध-विराम-रेखा परसो अर्थात् अट्ठाईस तारीख को पार की थी । अब तक प्राप्त समाचारो के अनुसार फौजो ने अधिकाश पाकिस्तानी चौकिया हथिया ली है। हाजी पीर दर्रा कश्मीर मे घुसपैठ करने वालो का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण रास्ता रहा है। अब वह पूर्णतया भारतीय अधिकार मे है । लोक-सभा मे रक्षा-मन्त्री ने जब इस सफलता की घोषणा की तो तुमुल हर्षनाद के साथ इस का स्वागत किया गया ।"

आइसक्रीम वाले को लगा कि वह बहुत दूर खडा है। ठेला चला कर वह लाउड-स्पीकर के कुछ पास आ गया । एकाध मिनट बाद वह और पास आने का इरादा करने लगा, लेकिन अभी वह सोच ही रहा था कि सामने तीन लडकिया खडी हो गई । सब के हाथ मे पढाई की पुस्तके थी । शुरू मे उन्हे किसी बात पर हसी आ रही थी, लेकिन यहा रुकते ही वे खामोश हो गई ।

"हमारी फौजो को अचानक अपने इलाके मे देख कर दुश्मन हक्का-बक्का रह गया । इस आक्रमण से दुश्मन को भारी नुकसान पहुचा है, लेकिन नुकसान के पूरे आकडे अभी प्राप्त नही हुए है । भारत के जवानो को बहुत कम नुकसान उठाना पडा । जवानो का उत्साह इस लिए भी बढ गया कि अधिकाश मुठभेडो मे पाकिस्तानियो ने लडने की बजाय पीछे हट जाना बेहतर समझा । इस से बहुत बडी मात्रा मे उन के अस्त्र-शस्त्र हमारे हाथ लगे ।"

समाचार पूरे हुए, तब तक वहा प्राय सौ लोगो की भीड इकट्ठी हो चुकी थी ।

लोग बिखरने लगे । अख्तर ने एक ओर कदम बढा दिए । उस की चाल से यह नही लगता था कि वह चहलकदमी कर रहा है। लगता था, वह बडी व्यस्तता से कही जा रहा है । एक के बाद दूसरा चौराहा

वह पार करता रहा। उसे दुख था—पाकिस्तान की हार का दुख, लेकिन उस से भी ज्यादा उसे आश्चर्य था। जिस इलाके पर भारतीय फौजो ने कब्जा किया था, वहा पाकिस्तान की फौजे बडी मजबूती से जमी हुई थी। घने जगलो और ऊचे पर्वतो के बावजूद वहा भारतीयो का घुस आना मामूली बात नही थी।

अब वह जिस चौराहे पर खडा था, उसे पार करने के बाद 'टी-हाउस' मे या 'रीगल' की तरफ जाया जा सकता था। यहा एक भीड। ठीक सामने उधर भी एक भीड। सब को ट्रैफिक-सिग्नल के लाल होने का इन्तजार था। कुछ लोग ट्रैफिक जारी होने के बावजूद सडक पार कर रहे थे, लेकिन अख्तर ने ऐसा न किया।

वह सावधान हो गया। उस ने पहचाना—

सईदा!

सामने की भीड मे वह खडी थी। दूर से कैसी गुडिया जैसी काश, अभी जा कर वह उस से बाते कर सकता! वह पूछती, 'आप कब लौटे नागपुर से?' वह कहता, 'अभी कल ही।' लेकिन नही, वह सईदा के पास से गुजर तो सकता है, उस से बाते नही कर सकता।

अगर सईदा उसे पहचान ले? नही। एक तो उसे अख्तर के दिल्ली मे होने का पता नही है। दूसरे, अख्तर का हुलिया इतना बदला हुआ है कि भीड के अनेक लोगो मे से छाट कर उसे अलग पहचानना असम्भव है।

सईदा अकेली थी।

उसे अच्छा लगा कि सईदा अकेली है।

ट्रैफिक-कण्ट्रोलर का गोल चेहरा लाल हो गया। ट्रैफिक रुक गया। लोग सडक पार करने लगे। अख्तर जान-बूझ कर सईदा के पास से निकला। आमने-सामने से आते हुए वे दोनो एक-दूसरे को छू जाने से कुछ ही बचे और आगे-पीछे निकल गए। अख्तर को रोमाच हो आया।

किसी दिन सईदा को बताएगा कि ऐसा हुआ था। सईदा। सईदा। उसे लगा कि वह किम को भूल रहा है। किम के आने पर वह कुछ दिनो के लिए इतनी ही तेजी से सईदा को भूल गया था। सडक पार कर के उस ने पलट कर देखा। सईदा काफी दूर जा चुकी थी, लेकिन पीछे से भी वह उसे पहचान सका। सईदा।

उस से न रहा गया। दौड कर उस ने सडक वापस पार कर ली। वह बडी तेजी से सईदा के काफी करीब चला गया, फिर एक दूरी कायम रखता हुआ चलता रहा। सईदा रुकी और पटरी पर बैठे एक मूर्तिवाले से पूछने लगी कि इस वीनस के क्या दाम है। शायद उसे पूछना ही था—यो ही। वह बिना खरीदे आगे चली गई। अख्तर थोडी दूर तक बाकायदा उस के बगल से चलता रहा। उसे बहुत ही अच्छा लग रहा था। पाइप के तम्वाकू का हर कश पहले से ज्यादा नशीला हो गया

साडी की एक दूकान के सामने सईदा की कोई सहेली इन्तजार कर रही थी। दोनो उस दूकान मे चली गई। अख्तर ने तय कर लिया—बेकार है यो पीछे-पीछे घूमना। वह आगे निकल गया, फिर लौट कर उस स्टाप की ओर बढा, जहा से फतहपुरी की बस मिल सके।

बस मे उसे एक शक हुआ—क्या सईदा को अभी तक मालूम न हुआ होगा कि 'एयर-इण्डिया' मे काम करने वाला वह युवक कौन था ? बलवन्त ने, जो मिस चालीस की गिरफ्तारी का कारण रहा था, दूसरे जासूसो की जानकारी भी पा ली होगी। किसी जलनखोर ने या खुफिया विभाग के किसी आदमी ने बलवन्त को शायद बता दिया होगा कि सईदा अकसर किसी युवक के साथ घूमती दिखाई पडती है। शायद बलवन्त ने सईदा से पूछताछ की हो और सईदा ने उस के बारे मे सब बताया हो। तब शायद बलवन्त ने सावधान किया हो कि यह युवक क्या हो सकता है। शायद, शायद और शायद ·

कैसे पता चले कि सईदा जान गई है या नही ?

वह सोचता रहा।

और क्या यह सचमुच आवश्यक था कि सईदा को मालूम है या नही, इस की जानकारी अख्तर को हो ?

उसे लगा, 'हा'

'हा' क्यो ? क्योकि उस ने सईदा को चाहा है। सईदा के सामने उस ने भले ही मजूर न किया हो, लेकिन सचमुच वह उसे चाहता रहा है। किम के आने के बाद भी उस का घरेलूपन उसे बराबर याद आता रहा है। अख्तर को पता चलना ही चाहिए कि सईदा उस का भेद जानती है या नही

अगर नही जानती तो अख्तर उस से मुलाकात करेगा।

लेकिन अख्तर ने अपना हुलिया जो इतना बदल रखा है ? कोई बात नही। इस का भी कोई बहाना या उपाय निकाला जाएगा।

और यदि वह जान चुकी है ?

तो भी अख्तर उस से मिलेगा। कैसे ? कहा ? इन सवालो पर बाद मे सोचा जाएगा। अभी तो यही मालूम करना है कि वह जानती है या नही। वह उसे विश्वास दिलाएगा कि उसे जो सूचना मिली है, गलत है।

फोन किया जाए ?

'हा' उस ने सोचा, 'यह बहुत अच्छा उपाय है। यदि वह जानती है तो साफ कह देगी कि आइन्दा मुझे आप से कोई ताल्लुक नही। यदि नही जानती तो पूछेगी कि आप नागपुर से कब लौटे ?'

लेकिन एक खतरा और था। कही ऐसा न हो कि सईदा भेद जान तो चुकी हो, लेकिन फिर भी वह अख्तर से मिलने की जगह और समय तय करे। अख्तर जाए और वहा खुफिया पुलिस तैनात हो !

अख्तर उलझ गया।

होटल पहुच कर उस ने काफी मगवाई। बैरा कमरे मे ट्रे रख कर चला गया। उस ने दरवाजा बन्द किया। चुस्किया लेता हुआ वह सोचता

रहा । सईदा से सम्पर्क बनाते ही वह नया खतरा मोल लेगा, इस मे शक नही था, लेकिन सईदा को छोड कैसे दिया जाए ? सईदा ने उसे एक दोस्त के रूप मे काफी पसन्द किया था। उसे अख्तर से सहानुभूति थी—थी नही, करवाई गई थी—और इमी बहाने वह उसे मजबूर कर सका था दोस्त बनने के लिए मजबूर क्या वह एकाएक उस के खिलाफ जा सकती है ? खिलाफ जाने से पहले क्या वह एक भी बार उस से मिलना न चाहेगी ? मिल कर पूछेगी नही कि क्या सचमुच तुम जासूस हो ? नही। वह नही पूछेगी। कोई जासूस मजूर नही कर सकता कि वह जासूस है और यह बात वह जरूर ममझती होगी।

लेकिन क्या सचमुच वह इतनी तेज हो सकती है कि अख्तर को मिलने का समय दे और फिर गिरफ्तार करवा दे ? नही। फोन पर अख्तर की आवाज सुनते ही वह उसे पहचान लेगी और सकपका जाएगी अगर उसे भेद मालूम है। इतनी डर जाएगी कि हकलाने लगेगी। या फोन रख देगी। वह इतनी होशियार कतई नही है कि आवाज सुनते ही सारा षड्यन्त्र सोच ले।

लेकिन ऐसा भी तो हो सकता है कि षड्यन्त्र उस ने पहले ही से सोच रखा हो।

नही। उस ने नही सोचा होगा। इतनी दूर तक वह सोच तभी सकती है, जब वह अख्तर से एक भी बार मिले बिना, अख्तर को सफाई का एक भी मौका दिए बिना उसे पुलिस के शिकजे मे फसाना चाहे। वह ऐसा न कर सकेगी—अख्तर ने पिछले दिनो उस की सहानुभूति कोई कम नही जीती है। वह यकीन ही न कर पाएगी कि अख्तर जासूस है।

वह जितना सोचता, उतना ही उलझ रहा था।

रात काटनी मुश्किल हो गई। कल की रात भी आसानी से नहीं कटी थी। आज एक फर्क था। कल उसे अधिकाश समय किम विण्टर्स

की उत्तेजक याद आती रही थी। आज याद आ रही थी सईदा।

वह उठ कर बैठ गया। घडी मे देखा। रात के तीन बज रहे थे। उस ने सिगरेट सुलगाई—वह फैसला कर चुका था। आखिरी फैसला—और उस के मुताबिक काम होगा। काम किया जाएगा।

यदि सईदा उस का भेद अभी तक नही जानती तो कभी-न-कभी अवश्य जान लेगी। यदि जान गई है तो ठीक है—वह जान गई है। दोनो ही सूरतो मे अख्तर को वह करना है, जो वह करने जा रहा है। कश लेते ही सिगरेट के छोर पर अधेरे मे एक चमकदार छेद हो जाता।

होटल मे सहयोगी जासूस उस से केवल एक बार आ कर मिल सका था, लेकिन उन्होने काफी महत्वपूर्ण फैसले कर लिए थे। कुछ जासूस दिल्ली छोड कर जा चुके थे। जिन का जाना बच रहता था, अख्तर उन मे से एक था। कुछ ऐसे भी थे, जिन्हे खतरा चाहे जितना बढ जाए, दिल्ली मे ही बने रहना था। अख्तर के पास दिल्ली के अब दो दिन है। तीन दिन। या चार। ज्यो ही आदेश मिलेगा, उसे यहा से चल देना है। वह रुका हुआ इस लिए है कि उसे किस शहर या इलाके मे जाना है, अभी तय नही हुआ।

बहरहाल, उसे जाना था—जल्दी ही। सईदा के बारे मे जो भी किया जाना है, इन्ही दो-चार दिनो मे। उस ने तय कर लिया था—दिल्ली छोडते समय वह अकेला नही होगा। दूसरे जासूस उस के साथ हो या न हो, लेकिन सईदा जरूर होगी। चाहे जो हो जाए।

चौबीस

हमला !

बलवन्त जानता था, कभी भी उन्हे आज्ञा दी जा सकती है—झपटो ! उस ने उत्तेजना अनुभव की । यह उस के लिए पहला मौका था, जब वह वास्तविक युद्ध मे भाग लेने जा रहा था । प्रशिक्षण के दौरान उस ने कल्पित दुश्मनो से अनेक बार 'लोहा लिया' था, लेकिन ऐसे बनावटी युद्ध मे सब पूर्व-निश्चित-सा होता है । 'असली युद्ध मे होती है खतरनाक अनिश्चितता—और उसी मे युद्ध का सच्चा रोमास ' उस ने सोचा ।

आज ही उसे सईदा का पत्र मिला था । उस ने सोचा था, पत्र देर से आएगा । समय से डाक मे डाल दिया जाए तो भी अग्रिम इलाको मे पत्र देर से ही आने की सम्भावना होती है । सईदा ने ज्यादा बाते नही लिखी थी लेकिन जितना लिखा था, वह उसे तसल्ली व जोश दिलाने के लिए पर्याप्त था ।

पत्र पढ कर एक ओर जहा वह झूम-झूम गया था, वही दूसरी ओर उसे हार्दिक पश्चात्ताप भी हुआ था । सईदा तो एक ही बार की उस की 'भूल' को जानती है । और भी कितनी ही 'भूले' वह समय-समय पर करता रहा है । क्या सईदा जैसी भली लडकी के प्रति यह अन्याय नही था ? पहली बार उसे लगा कि था—सचमुच अन्याय था । बलवन्त का चेहरा तन गया । पिछली 'भूले' उस ने खुद की थी, लेकिन इस भूल के लिए काफी हद तक दुश्मन जिम्मेदार था । उसी ने जाल बिछा कर इस का एक ही प्रायश्चित है—जान की परवाह किए बगैर वह दुश्मन से जूझ जाए, भून डाले उसे ! सईदा का पत्र आया भी कितने मौके से है ! आज,

जब वह सचमुच हमला करने जा रहा है, सईदा जैसे खुद सामने आ कर कह रही है—जाओ ! लडो और जीतो !

'हा !' वह स्वय से बोला, 'मै न केवल लडूगा, मैं जीतूगा ।'

आज सितम्बर १९६५ की पहली तारीख थी । 'वायु-सेना के इतिहास मे यह हमेशा याद रखी जाएगी ।' उस ने सोचा । फाइटर-बेस के और भी कई साथी उस कमरे की ओर जा रहे थे, जहा थोडी देर बाद वे अपने वरिष्ठ अधिकारी का भाषण सुन रहे होगे । बलवन्त के कदम चुस्त हो उठे ।

प्राय आधे घण्टे बाद बेस के सभी पायलट एकत्र हो चुके थे । उन मे हसी-मजाक चल रहा था, लेकिन स्थिति की गम्भीरता को वे पूरी तरह समझते थे । वरिष्ठ अधिकारी के प्रवेश करते ही सब शान्त हो गए ।

"साथियो !" अधिकारी ने शुरू किया, "जैसा कि आप लोग जान चुके है, पाकिस्तान ने छम्ब इलाके मे अपनी दो रेजिमेटो के साथ भारी हमला कर दिया है । अब तक सारी घुसपैठ या हमले युद्ध-विराम-रेखा पर होते रहे है, लेकिन इस बार का पाकिस्तानी हमला अतर्राष्ट्रीय सीमा पार कर के किया गया है । हमले मे करीब सत्तर पैटन टैक है । इतने बडे हमले का सामना हमारी फौजे तभी कर सकती है, जब वायु-सेना उन्हे भरपूर सहायता दे ।

" मै जानता हू कि ये सारी बाते आप लोगो को पहले से मालूम है और मै इन्हे दोहरा ही रहा हू, लेकिन इस दोहराने का भी एक मतलब है । मै बार-बार कहता रहा हू कि अगर हमारी ट्रेनिग अच्छी है तो ताकतवर, बडे हवाई-जहाजो का खात्मा छोटे हवाई-जहाजो से भी किया जा सकता है । लेकिन आज शायद हमे दुश्मन के हवाई-जहाजो का सामना नही करना पडेगा । आज हमारी अधिकतर मार होगी पैटन टैको पर । जाओ बहादुरो और टूट पडो इन अमरीकी टैको पर, जो अजेय,

अभेद्य माने जाते है। बरसाओ गोले और छोडो राकेट—तहस-नहस कर दो। अपनी काबलियत का सबूत देने का बहुत अच्छा मौका है। लेकिन ”

यहा वरिष्ठ अधिकारी कुछ रुका। उस की उम्र लगभग पचास वर्ष थी। उस की गौरवशाली चाद दूर से आतक जमा रही थी। उस की आखे कुछ सिकुडी, “लेकिन जल्द ही दुश्मन के हवाई-जहाजो से भी मुठ-भेड होगी। हमे बहुत सावधानी और दिलेरी से काम करना होगा। आप लोगो को जो ट्रेनिंग दी गई है, उस के अनुसार दुश्मन को हराना बिल्कुल मुश्किल नही है, लेकिन हमे गफलत मे भी नही रहना है। दुश्मन के बडे हवाई-जहाजो को मजबूर करो कि वे कम ऊचाई पर आए और वहा लडे। कम ऊचाई पर बडे हवाई-जहाजो की ताकत भी कम हो जाएगी, जबकि हमारे छोटे-छोटे नैट उतने ही ताकतवर बने रहेगे।”

हवाई-पट्टी पर अट्ठाईस बम-वर्षक तैयार खडे थे। सूर्यास्त होने में ज्यादा देर नही थी। बलवन्त के नेतृत्व मे उन बम-वर्षको ने एक-एक कर हवाई पट्टी पर दौड लगाई और धरती छोड दी। गडगडाहट से आकाश गूज उठा। ढलती धूप मे उन के मजबूत आकार चमकने लगे। टरबो-जेट एजिनो द्वारा उगला जा रहा धुआ अट्ठाईस सफेद फीतो की तरह हवा मे तन गया। कुछ देर बाद हवाई-जहाज दिखाई पडने बन्द हो गए, लेकिन वे अट्ठाईस सफेद धारिया आकाश मे आगे और आगे· · बनती जा रही थी

बलवन्त को याद आया, वह अपने हवाई-जहाज मे जिन विनाशक बमो और टैंक-भेदी गोलो को ले जा रहा है, वे डाक्टर सिंह के प्रारूप के आधार पर तैयार हुए हैं। उस का उत्साह दूना हो गया। पैटन टैंक! चवालीस टन का ठोस राक्षस, जिस पर दो-दो विमानभेदी मशीनगनें लगी हैं— ३० और ५० मिलिमीटर वाली खतरनाक मशीनगनें · जिन की बडी तोप नब्बे मिलिमीटर की है और जो ‘कम्प्युटराइज्ड रेंजिंग’ से

लैस होने के कारण अपनी मार की ठीक-ठीक गणना भी कर सकता है
रात मे देखने के लिए जिस के पास इन्फ्रा-रेड आखे हैं

छम्ब की युद्ध-भूमि अब दूर नही थी ।

खुफिया विभाग ने दिल्ली मे अचानक छापे मार कर कई जासूसो को गिरफ्तार कर लिया । जो बचे हुए थे, उन्हे पाकिस्तानी दूतावास ने फोन कर के या अन्य उपायो से तुरन्त सूचना दे दी—भाग जाओ । कही भी चले जाओ ।

कहाँ ? कैसे ? और वहा आजीविका का साधन क्या होगा ? दूतावास के पास इन सवालो के जवाब नही थे । ये सब बाद के मसले थे । सब से पहले तो गिरफ्तार होने से बचना था । अख्तर ने कपडे बदले और बहुत जरूरी सामान एक अटैची मे रख कर, उसे खुद ही उठाए हुए होटल से बाहर आ गया । अधिकाश चीजे उस ने होटल मे ही छोड दी । कहा-कहा लादे फिरता ? इस नई स्थिति मे वह जरा भी विकल नही हुआ था । जाने-अनजाने मे उस ने इस का इन्तजार ही किया था । वह गम्भीरता से सोच रहा था—सईदा !

आज तक अख्तर ने अपनी सारी जिदे पूरी की थी । सईदा को साथ ले कर ही दिल्ली से जाने की जिद क्या इस बार छोड देनी होगी ? लेकिन उसे साथ लिया कैसे जाए ? कार । अपहरण । लेकिन कार का इन्तजाम हो, इस से पहले उसे दिल्ली छोड देनी है । मान लो, वह दिल्ली से न जाए । हद-से-हद यही होगा न कि पुलिस की गिरफ्त मे आ जाएगा ? लेकिन नही, ऐसा भी नही होना चाहिए । गिरफ्तारी के बाद तो सईदा को पाने का सवाल ही नही उठता ।

उस ने अपने से समझौता कर लिया, 'चलो, कोई बात नही । अभी चला जाता हू, पर जल्द ही लौटूगा । लौटने की खबर किसी को नही दूगा । चुपके से सईदा को बाद मे जो होगा, देखा जाएगा ।'

न जाने क्यो उसे रेल से सफर करना असुरक्षित मालूम हुआ। लगभग दो सौ रुपयो के नोट, एक भरा हुआ रिवाल्वर और काफी कारतूस उस ने अपने चमडे के बैग मे रख लिए थे, जो उस ने परसो ही खरीदा था। एक हाथ मे अटैची, दूसरे मे बैग। वह सोच रहा था, 'कौन से शहर जाना चाहिए ?'

वह जानता था कि चोर कई बार आख के सामने बैठा हो तो पकड मे नही आता, क्योकि उस की खोज दूर-दूर तक तो होती है, आसपास नही। वह दिल्ली से बहुत दूर जाना नही चाहता था। वापस भी तो लौटना है! अगर गिरफ्तार होना ही मुकद्दर मे बदा है तो वह कही भी जाए, हो जाएगा। अगर नही बदा है तो दिल्ली के आसपास क्या, खास दिल्ली मे ही रहे तो भी बचा रहेगा। लेकिन नही। दिल्ली मे ही बने रहना अपनी किस्मत पर जरूरत-से-ज्यादा भरोसा करना होगा। हा, बहुत दूर जाने की बजाय आसपास के ही किसी शहर या गाव मे रहा जा सकता है। नही। गाव मे जाना ठीक नही। छोटी बस्ती मे एक भी व्यक्ति आए या जाए, सब की चर्चा का विषय बन जाता है। जाना तो शहर मे ही चाहिए, ताकि आराम से किसी होटल मे ठहरा जा सके और किसी का ध्यान भी आकर्षित न हो। शहर भी कोई ऐसा, जहा टूरिस्टो का काफी आना-जाना होता हो। वह अपने को टूरिस्ट के रूप मे बडी आसानी से खपा लेगा। जयपुर ? ठीक हे। यह शहर न ज्यादा दूर है, न ज्यादा पास। और जयपुर बस मे भी जाया जा सकता है।

स्कूटर ने उसे बस-स्टैड पर उतारा। वह चौकन्ना हो कर देखने लगा कि स्टैड पर शायद कोई सहयोगी जासूस मिल जाए। उधर! सफेद पेंट, सफेद बुश्शर्ट मे कैसी सादगी के साथ बैठा है!

अख्तर का चेहरा खिल उठा। झट उस के पास पहुचा और कन्धे पर हाथ रख कर बोला, "कहो प्यारे? किधर? जयपुर चल रहे हो क्या?"

"तुम जयपुर जा रहे हो ?"

"हा। किसी होटल मे ठहरूगा। तुम ?"

"अपना क्या ! कहो तो हम भी चले चले।" वह हसा।

"एक से दो भले। चलो।"

"और कोई है साथ मे ?"

"पता नही। स्टैंड पर तो कोई नजर नही आ रहा।"

दोनो ने दूर-दूर तक निगाह दौडाई। फिर वे पान खाने चले गए। बस आने मे अभी आधे घण्टे की देर थी। वे अगल-बगल खडे हो कर जूतो पर पालिश करवाने लगे।

पीछे से उन्होने किसी ट्राजिस्टर की आवाज सुनी। पलट कर देखा तो एक लालाजी दोनो हाथो मे ट्राजिस्टर को इस तरह पकडे हुए थे, गोया वह कोई पालतू कबूतर हो। समाचार आ रहे थे। देखते-देखते कुछ लोग लालाजी के पास खडे हो गए। तब दस-बारह व्यक्ति और आ गए।

शान्त, स्थिर महिला-स्वर

"छम्ब मे पाकिस्तानी हमले को रोकने के लिए भारतीय वायुसेना ने कल शाम जो जवाबी हमला किया था, उस मे दुश्मन को भारी नुकसान पहुचा है। जो अमरीकी पैटन टैंक अभेद्य माने जाते है, उन को भी तबाह करने मे हमारे उडाको ने शानदार सफलता पाई है। दुश्मन के चौदह टैंक नष्ट हो गए और उन मे से ग्यारह तो आग की लपटो मे घिरे देखे गए। तीस-चालीस भारी गाडिया भी तहस-नहस कर दी गई।"

वे अपने जूतो की ओर देखते रहे।

पच्चीस

"स्क्रैम्बल ! स्क्रैम्बल !" फाइटर-बेस से लाउड-स्पीकर से आज्ञा गूज उठी।

बलवन्त अपने हाथ की पत्रिका फेक कर भागा। उस का नैट हवाई-जहाज तैयार ही खडा था। काकपिट का छाजन खुला हुआ था, ताकि पायलट आ कर तुरन्त बैठ सके। दूर से नैट किसी विराटकाय टिड्डे जैसा लग रहा था। बलवन्त के साथ उडान भरने वाले अन्य पायलटो के अलावा कई ग्राउण्ड-इजिनीयर भी विभिन्न दिशाओ से झपट रहे थे। दो ही मिनट मे पूरी टुकडी वायु को थर्राती हुई हवाई पट्टी छोड चुकी थी।

रेडियो-फोन के रिसीवर मे बलवन्त ने फाइटर-बेस द्वारा दिए जा रहे निर्देशो को ध्यान से सुना। शत्रु के चार हवाई-जहाज छम्ब की भारतीय चौकियो पर हमला करने की नीयत से उडान भर रहे थे और इन्हें उन से टक्कर लेनी थी। बेस के राडार की सूचनानुसार पाचो हवाई-जहाजो ने गडगडाहट के साथ दिशा बदली और झपटे।

मोर्चा कैसे बनाया जाए, इस की योजना बलवन्त के मन मे आकार ले रही थी। उस ने सहयोगियो से रेडियो-फोन पर कहा, "हमे कम ऊचाई पर फ्लाई करना है, लेकिन इतनी कम ऊचाई पर नही कि दुश्मन के राडार को पता न चले। तेजी से उडने की कोई जरूरत नही। आराम से चलो, ताकि एनिमी-राडार हमे और क्लियरली देख सके। हम से लडने के लिए एनिमी प्लेन खुद-ब-खुद नीचे आएगे· ·वी शुड हैव एन आफेन्सिव एण्ड डिफेन्सिव फार्मेशन "

कुछ ही देर मे चारो पाकिस्तानी हवाई-जहाज कम ऊचाई पर आने के लिए हवा को चीरते और तिरछे होते नजर आए।

"देयर! देयर दे आर!" बलवन्त ने जोशीली आवाज मे रेडियो-फोन पर कहा। यह आवाज प्रसारित हो कर सभी पायलटो को अपने रिसीवर मे सुनाई पडी, जो उन के कानो पर लगे हुए थे।

शत्रु हवाई-जहाज! अधिक बडे, अधिक ताकतवर चार मे से तीन सैबर-जेट थे और एक स्टारफाइटर। किस हवाई-जहाज से किस की भिडन्त होगी, कहना मुश्किल था। सब के चेहरे स्थिर और तनाव-पूर्ण हो गए। करीब और करीब शत्रु हवाई-जहाजो के चारो आकार तीव्रता से बडे हो रहे थे।

"आ बेटा! जरा और पास आ!" बलवन्त की आखे उस सैबर-जेट पर लगी थी जिस ने इसी ओर पलटा खाया था। टुकडी के अन्य हवाई-जहाजो पर से ध्यान हटा कर बलवन्त ने थ्राटल आगे सरकाया। नैट की तेजी अचानक इतनी बढ गई कि 'किस हिसाब से तोप दागी जाए,' यह सैबर न समझ पाया। बलवन्त ने थ्राटल पीछे किया। फिर से नैट की गति मे इतना फर्क आ गया कि सैबर का नया हिसाब भी गडबड हो गया।

बलवन्त स्पष्ट देख सका कि सैबर-जेट दो साइड-वाइण्डर मिसाइलो से लैस है। सैबर का पायलट इन्हे दागे, इस से पहले जो भी करना है, कर लेना चाहिए। उस ने झटके के साथ थ्राटल आगे खिसका दिया और इतनी तेजी से झपटा, मानो सैबर मे टकरा ही जाएगा। गणना करने मे एक सैकण्ड से भी कम की भूल हुई होती तो सचमुच वह टकरा जाता, लेकिन एकाएक नैट पलटा खा गया। गोता लगा कर नैट अपनी दोनों एडन तोपे घडधडाने लगा। ये तोपे उस के ढाचे के दोनो ओर लगी हुई थीं। उन की पहली गर्जना के साथ सैबर के एक हिस्से की धज्जिया उड गईं। नैट की कलाबाजियो ने उसे वार करने का एक भी मौका नही

दिया था। वह अनियन्त्रित हो चुका था और लडखडाता, डोलता हुआ जमीन की ओर जा रहा था। उस का पूरा ढाचा धू-धू कर जल उठा था। मात्र एक सैकेण्ड पहले उस की चमक कितनी खूखार थी!

बलवन्त ने यह देखने की कोशिश नही की कि जमीन पर टकराने के बाद सैबर मे कैसा आखिरी विस्फोट हुआ। देखने का समय ही न था। उस ने नैट को गडगडाहट के साथ पलटते हुए अपने साथियो की ओर बढाया। उधर एक स्टारफाइटर और दो सैबर-जेटो की तोपे आग उगल रही थी। चारो नॅट उन्हे कारगर जवाब दे रहे थे। नैट की गोलाबारी उन्हे जगह-जगह भेद देती, लेकिन जब तक मर्मस्थल पर गोला न लगे, उन के ध्वस्त होने की सम्भावना नही थी। शत्रु भी नैटो के मर्म को भेदने की भरसक कोशिश कर रहा था, लेकिन अचानक नैट की गति इतनी कम हो जाती कि गोला नीचे से निकल जाता। गोले जब तक नए निशाने पर दागे जाते, नैट ,कोओओ करते हुए झपट आते या इतनी निर्भीकता से नाक के बल डुबकी लगाते, मानो नीचे, जमीन से टकरा जाने का उन्हे खतरा ही न हो।

बलवन्त शत्रु के इस प्रयास को तुरन्त समझ गया कि सैबर और स्टारफाइटर साथ-साथ बने रहना चाहते है, ताकि उन की मिलीजुली ताकत अजेय रहे। उन्हे जुदा करना बहुत आवश्यक था। बलवन्त का नैट तेजी से आगे आ कर धीमा हुआ, फिर उसी तेजी से झपटा और फिर से धीमा हो गया। उस पर दागे गए अनेक गोले बेकार चले गए। चूकि वह पीछे से आक्रमण कर रहा था, स्टारफाइटर दोनो सैबर-जेटो को छोड कर अलग आया। बलवन्त ने उस के सामने कलाबाजिया खा कर कई वार बेकार कर दिए। प्रत्येक फायरिग के साथ स्टारफाइटर की तोपो मे से आग की जो जीभ दिखाई पडती, वह इतनी तेजी से अन्दर-बाहर हो रही थी, मानो उस मे कोई स्प्रिग लगा हो। धूप के बावजूद वह साफ-साफ झलकती। साय-सायँ करते वे घातक गोले अगल-बगल से

निकल रहे थे ।

नैट हचमचा गया । दो गोलो ने उस की दाहिनी बाह को भेद दिया था ।

बलवन्त ने गोता लगाते हुए नैट की दोनो एडन तोपे—तीस मिलि-मीटर की घातक तोपे—जारी कर दी, लेकिन स्टारफाइटर अधिकाश वार साफ बचाता रहा ।

गोते को पलट कर सीधा करते ही बलवन्त ने देखा कि वह स्टार-फाइटर से नीचे उड रहा है और उस से लगभग पाच सौ गज आगे है । वह स्टारफाइटर की 'फायरिग-रेंज' मे था । उसी क्षण नैट ने गोता लगा दिया वरना वह टुकडे-टुकडे हो कर बिखर चुका होता—स्टार-फाइटर ने एक साइड-वाइण्डर मिसाइल दाग दिया था । धुआ उगलता और सनसनाता हुआ मिसाइल बिल्कुल करीब से निकल गया । वह पलट कर वापस भी आ सकता था, क्योकि उस मे 'इन्फ्रा-रेड हीट-सीकर्स' लगे हुए थे । उन के कारण वह किसी भी ऐसे लक्ष्य का बाकायदा पीछा कर सकता था, जो गर्म हो । नैट का एञ्जिन अपने पीछे से उबलती गैसो का जो झरना फेंक रहा था, उस की गर्मी से आकर्षित हो कर मिसाइल आवाज से भी ज्यादा तेजी के साथ पीछा कर के नैट से आ टकराता और उसे ध्वस्त कर देता ।

लेकिन वह नैट की बजाय सूर्य की ओर चला गया ।

बलवन्त ने उसे काफी करीब आने दिया था और उस के बाद ही अचानक गोता लगाया था । गोता जरा भी पहले लगा होता तो मिसाइल पीछा कर के टकरा सकता था । लेकिन गोते के समय वह इतना पास आ चुका था कि उस की दिशा न बदल सकी । तेजी से आने के कारण वह सनसनाता हुआ बगल से निकल गया—और आगे था सूर्य ! चम-कता, धधकता सूर्य ! नैट के टरबो-जेट एञ्जिन से अगणित गुना गर्म ! लाल ! गर्मी से आकर्षित होने वाले 'इन्फ्रा-रेड' उपकरणो ने अपना रुख

उसी ओर कर दिया। मिसाइल बढता गया बढता ही गया लेकिन तब तक स्टारफाइटर एक और मिसाइल दाग चुका था।

तुरन्त बलवन्त ने आटल पीछे खीच लिया।

जो नैट हवा को फाड देता हुआ झपट रहा था, वह एकाएक इतना धीमा हुआ कि यह मिसाइल भी निशाना चूक कर सूर्य की ओर चला गया—धुआ उगलता और सन्नाता हुआ, अपनी नपुसक मौत के साथ!

आटल आगे कर दिया गया।

बलवन्त की तेज आखे देख चुकी थी कि स्टारफाइटर के पास मिसाइल दो ही थे। उन के बेकार चले जाने के बाद वह केवल अपनी बीस मिलिमीटर को सिक्स-बेरल तोपो मे लड सकता था—और तोपे नैट की भी कम शक्तिशालिनी नही। गोलाबारी करते हुए नैट ने कलाबाजी खाई। यह युद्ध चूकि सिफ पाच हजार फीट की ऊचाई पर हो रहा था—स्टारफाइटर, जो अपने विशाल आकार के कारण चालीस हजार फीट से नीचे आसानी से नही मुड सकता, त्रस्त हो रहा था।

एकाएक नैट ने पीछे और नीचे आ कर स्टारफाइटर के पेट को ध्वस्त करना चाहा। तुरन्त स्टारफाइटर ने भयकर तेजी से आकाश मे उठना शुरू कर दिया। वह ज्यादा ऊचाई पर जाना चाहता था, ताकि नैट की कलाबाजियो का कारगर जवाब दे सके। नैट के जेट का धुआ जगह-जगह सफेद पट्टिया बना रहा था। उस के दायरे को छोड कर वे एकदम ऊपर चले गए।

दोनो की तोपे लगातार गरज रही थी।

घाााायकडकड———!!!———!!!—मडाक्! आग—आग—आगआगआग!

बलवन्त ने आखे बन्द कर ली।

किस का हवाई-जहाज ध्वस्त हुआ?

'नही! मैं·· मैं सुरक्षित हू। वरना यह सब महसूस कैसे करता?'

यह आग, विस्फोट दिखाई कैसे पडता ?' उस ने सोचा ।

वह जोर से हसा ।

उसे अपनी हसी सुनाई भी पडी। ओह ! वह और जोर से हसा । "मार डाला ! मार डाला कम्बख्त को ! हा, हा, हा !" सुनने वाला कोई नही था तो भी वह खिलखिला रहा था ।

गति धीमी कर के उस ने नैट को वापस लिया। अभी भी जलता हुआ मलबा गिर रहा था ।

बलवन्त पाच हजार फीट की ऊचाई पर उतरा । वहा जो दो सैबर-जेट लड रहे होने चाहिए थे, वे कही नही थे । पलायन कर गए थे ।

"द स्टारफाइटर !" बलवन्त रेडियो-फोन पर चिल्लाया, "आई गॉट हिम ! आइ गॉट हिम, टू !"

उस ने किलक मे भर कर अपने नैट को कई कलाबाजिया दी ।

छब्बीस

चार सितम्बर १९६५ का अखबार मेज पर फैला हुआ था। डाक्टर सिंह उसे कई बार उठा चुके थे। अब फिर से उठा रहे थे। पहले पृष्ठ पर आज दो ही तस्वीरे थी, जो चमक रही थी। लालबहादुर शास्त्री। स्क्वाड्रन-लीडर बलवन्तसिंह। शास्त्रीजी का भाषण उन्होने कल रेडियो पर सुना था और आज पढ भी लिया था—एक बार। जो उन्होने बार-बार पढा था—वह था बलवन्त के बारे मे। उस की तस्वीर के नीचे लिखा था, 'हवाई-युद्ध का वीर नायक'। फिर सक्षेप मे दिया गया था कि किस तरह उस ने एक सैबर और एक स्टारफाइटर का पाच ही मिनट मे सफाया कर दिया।

उन्होने वह सक्षिप्त विवरण एक बार फिर पढा। आखे तस्वीर पर टिक गई। कम्बख्त ये प्रेस वाले! कितने आकर्षक युवक को कितने मामूली ढङ्ग से छापा है! ऐसा ही है बलवन्त? पहचाना तक नही जाता।

उन्हे लगा कि प्रेस वालो का ज्यादा कसूर नही। सरकार की ओर से जो प्रेस-रिलीज सभी को गई होगी और उस मे बलवन्त का जैसा फोटो रहा होगा, वही तो छापा जाएगा! उन्हे कुढ़न हुई कि फौजी वीरो की अच्छी, कलात्मक तस्वीरे पहले से तैयार क्यो नही रखी जाती। अरे, कुछ नही तो आ जाते मेरे पास! एक नही, दस दे देता। एक-से-एक बढिया।

या

जाते और सईदा से मिलते। उस के पास भी एक-से-एक अच्छे फोटो···वह प्रफुल्लित हो कर मूछो पर ताव देने लगे। सईदा के बारे

मे सोचना उन्हे अच्छा लगा। ऐसा पहली बार हो रहा था। इस मे पहले जब भी उन्होने सोचा था मन पर एक अजीब-सी खट्टी नाराजगी छा गई थी। सईदा आज कितनी खुश हो रही होगी! वह भी अखबार की इस तस्वीर को बार-बार देख रही होगी। उस के एल्बमं मे इस से कही अच्छी तस्वीरे लगी होगी, लेकिन इस के साथ जो बात जुडी हुई है, वह और कहा ?

'सईदा को खुश होने का पूरा हक है। मै पसन्द न करू तो भी है।' उन्होने सोचा। मन हो रहा था, स्वय की भर्त्संना करे। सईदा को आखिर वह पसन्द क्यो नही करते ? क्या कमी या बुराई है उस मे ? क्या यह उन की अपनी कमजोरी नही कि वह उस की जाति को नही भूल पाते ? अपनी कमजोरी ही तो! लेकिन सईदा के प्रति अरुचि आज पूर्णतया जाती रही थी। यह भाव क्षणिक भी हो सकता था—वह नही जानते थे कि क्षणिक है या नही—लेकिन वह उस से अभिभूत हो गए थे। 'किसी भारतीय की सफलता से किलक उठने वाला कोई भी व्यक्ति भारतीय ही है—चाहे वह मुसलमान हो, हिन्दू, पारसी या कोई भी ' यह नई दृष्टि उन्हे सुखद लग रही थी।

सईदा अभी कहा होगी ? हास्टल मे ? या रेडियो-स्टेशन मे अपनी ड्यूटी पर ? उन्होने फोन उठा कर हास्टल का नम्बर मिलाया और 'हैलो' होते ही कहा, "कुड आई टाक टु मिस सईदा ?"

"रूम नम्बर प्लीज ?"

"सॉरी, आई डोट नो।"

"प्लीज़ होल्ड ऑन। आय'म इन्क्वायरिग।"

इन्तजार करते हुए वह सोचते रहे कि सईदा को कितना आश्चर्य होगा! डाक्टर सिह, जिन के साथ उस की केवल दुआ-सलाम थी, फोन पर उस से बाते करे—कितनी खुश होगी वह!

"हैलो!"

"कौन ?" उन्होने सावधान होते हुए पूछा ।

"सईदा हियर । आप कौन साहब बोल रहे है ?"

"हैलो, सईदा ! मै—डाक्टर सिह ।"

"ओह ! गुडमार्निङ्ग, डाक्टर साहब ! अ अ आप आप ने कैसे • "

"सोचा, बधाई दे दू । अखबार देखा ही होगा आ तुम ने ?"

"जी शुक्रिया ब बहुत-बहुत शुक्रिया " सईदा इतनी घबरा-सी गई थी कि उन्हे बहुत मजा आया । बोले, "मैं जानता था, तुम तो मुझे बधाई दोगी नही, इस लिए मै ने ही "

" "

"हैलो, सईदा !"

"यस, डाक्टर साहब ?"

"चुप कैसे हो गई थी ?"

"मैं मैं इतनी खुश हू कि "

"होना भी चाहिए । भई, कभी मेरी भी खैर-खबर पूछ लिया करो । तुम तो बलवन्त दिल्ली मे होता है, तभी नजर आती हो, वरना "

"आप इतने बिजी रहते है कि "

"इसका मतलब यह तो नही "

बीच मे ही सईदा ने कुछ असहज होते हुए कहा, "आऊगी, डाक्टर साहब, ज़रूर आऊगी ।"

लेकिन वह जानते थे कि सईदा नही आएगी । न आने मे ही स्वाभाविकता थी । दो-चार और सवादो के बाद उन्होने फोन रख दिया । अपने को वह बहुत ही हल्का महसूस कर रहे थे ।

कुछ माह पहले सभी अखबार कैसे मुर्दा लगते थे ! लेकिन जब से कश्मीर मे घुसपैठ हुई है, रेडियो के समाचार-प्रसारण का व सुबह अखबार वाले का कैसा तीव्र इन्तजार होता है । 'छम्ब मे हवाई-युद्ध छिडा है,'

वह चहलकदमी करते हुए सोचते रहे, 'तब से मैं बहुत कम काम कर पाया हू । मन लगता ही नही । हर वक्त रेडियो के पास । अखबार मे सुबह वही सब आता है, जो मै कल रेडियो पर सुन चुका होता हू, लेकिन एक-एक लाइन पढे बिना मन नही मानता । इस के अलावा रेडियो पर तस्वीरे तो आने से रही !'

प्रयोगशाला मे जा कर उन्होने दरवाजा बन्द कर लिया । अखबार उन्होने बाहर ही छोड दिया था । 'क्या देखना वार-बार !' उन्होने स्वय को ही डाट दिया था, 'बच्चो से भी गई-बीनी हरकत !'

अपने टैंक-भेदी गोलो की सफलता से उन्हे खुशी हुई थी, लेकिन यह खुशी अप्रत्याशित नही थी । उन्हे ज्ञात ही था कि ऐसा होगा । इन दिनो वह डी० आर० डी० ओ० (डिफेन्स रिसर्च एण्ड डेवलपमेट आर्गनाइजेशन) के 'आर्मामेट ग्रुप' की ओर से कुछ और नए हथियारो के प्रारूप तैयार करने मे जुटे हुए थे । कुछ-कुछ घण्टो के अन्तर से रेडियो द्वारा जो समाचार दिए जाते, उन की उत्तेजना उन्हे भली तो लग रही थी, लेकिन यह बहुत महगी उत्तेजना थी—उन्हे अपने काम को बार-बार रोकना पडता । 'स्नाइपर टैलिस्कोप' का प्रारूप डी० आर० डी० ओ० को दिया जा चुका था । उत्पादन-विभाग के इञ्जिनीयरो ने उसे पास भी कर दिया था । 'इन्फ्रा-रेड बायनाकुलर्स' का उत्पादन शुरू होने जा ही रहा था । उन के फिट होने के बाद भारतीय टैंक रात मे और अच्छी तरह 'देख' सकेंगे ।

जो प्रारूप हाथ मे था, उसे पूरा होने मे देर नही थी, जिस से काम का बार-बार रुकना उन्हे बहुत अखर रहा था । प्रारूप था टैंक-भेदी सुरग का । टैंक-भेदी गोलो के बाद वैसी सुरग बनाना मुश्किल काम तो नही था, लेकिन इस बार एक जटिलता थी । यह सुरग ऐसी होनी चाहिए थी, जो शत्रु के लिए जासूसी करने वाले अमरीकी उपकरणो को भी झासा दे जाए । 'ब्लास्ट-प्रूफ एण्टी-परसोनेल माइन' का प्रारूप डाक्टर

सिह का एक परिचित वैज्ञानिक तैयार कर चुका था। कोई आर्डनैंस फैक्ट्री' ऐसे विस्फोटको का उत्पादन करने लगी थी, जिन पर बहुत कम तापमान का भी कोई असर न हो। कम तापमान मे अच्छी तरह काम कर सके, ऐसे 'प्रोपेलैण्ट्स' भी वहा बनने लगे थे।

काफी देर तक काम मे जुटे रहने के बाद उन्हे भूख लग आई। उन्होने हजारे को आवाज दी, फिर रेडियो आन करते हुए पूछा, "खबरो का टाइम यही है न ?"

"हा जी, टाइम हो गया।" हजारे रसोई-घर से ही उत्साहित स्वर मे चिल्लाया।

रेडियो क्रमश गर्म हुआ ओर उप मे से एक बारीक आवाज हौले-हौले उभर कर स्थिर हुई, " क बज कर चालीस मिनट हुए है। अब समाचार प्रसारित किए जाएगे।"

डाक्टर सिह ने चौक कर रेडियो की ओर देखा। लगा, यह स्वर सईदा का था। एक उडता हुआ सा अहसास उन के मन मे तिरा कि रेडियो कुछ देर पहले खोला होता तो

"यह आकाशवाणी है। अब आप से समाचार सुनिए "

"हजारे ? कितनी देर हे ?"

'अभी लाया, सा'ब "

गर्म फुलके उतारने मे विलम्ब हो गया था। खाने की मेज पर सलाद और पानी का जग रखा जा चुका था। डाक्टर सिह ने दो घूट लिए।

"—त्रीजी के कल के भाषण को पूरी दुनिया मे बडी गम्भीरता से लिया गया है। उन्होने कहा था कि भारत शान्तिप्रिय देश है और शान्ति के लिए कार्य करता रहा है, लेकिन इस का मतलब यह नही कि हम एक युद्ध-विराम से दूसरे युद्ध-विराम पर जाते रहे और इन्तजार करे कि कब पाकिस्तान उसे भग करता है। प्रधान मन्त्री ने यह भी कहा था कि कश्मीर मे आत्मनिर्णय का प्रश्न ठीक उसी तरह नही उठता, जिस तरह

कि भारत के किसी भी अन्य क्षेत्र मे। छम्ब मे आगे वढते दुश्मन को पूरी तरह रोक दिया गया है। भारत ने सयुक्त-राष्ट्र-सघ के महा-सचिव ऊ था से स्पष्ट कह दिया ह कि जब तक सभी घुमपैठिए और आक्रमण-कारी कश्मीर से वापस नही बुला लिए जाने, तब तक किसी भी शान्ति-प्रस्ताव पर विचार करना असम्भव है रावलपिडी ने मजूर कर लिया है कि उस के एक सैबर-जेट को भारतीय लडाको ने मार गि—"

"सब्जी और लाऊ, सा'व ?" हजारे ने पूछा।

डाक्टर सिह को पता ही न चला था कि सब्जी खत्म हो गई है। उन्होने सिर हिला कर स्वीकृति दी और रेडियो की ओर देखा।

"—रूस ने कश्मीर पर पाकिस्तानी आक्रमण के बारे मे गहरी चिन्ता प्रकट की है। अमरीका ने पाकिस्तान को जो हथियार चीन के सम्भावित आक्रमण का सामना करने के लिए दिए थे, उन का भारत के खिलाफ इस्तेमाल होना रूस मे बहुत ही गम्भीर माना जा रहा है। भारत ने बहुत सख्ती के साथ अमरीका मे माग की ह कि पैटन टैक, सैबर-जेट और स्टारफाइटर जेसे हथियारो को इस युद्ध मे इस्तेमाल होने से रोका जाए। ये सभी हथियार पाकिस्तान की आत्म-रक्षा के लिए है, न कि हमला करने के लिए।"

डाक्टर सिह ने कौर चबाते हुए सोचा, 'नही। अमरीकी हथियारो का इस्तेमाल नही रुकना चाहिए। वे मैदान मे आएगे, तभी तबाह होगे। तभी हमारे लडाको की शान बढेगी।'

उन्होने फिर से वह अखबार उठा लिया और बलवन्त की तस्वीर को देखने लगे।

लतीफ मिया की जाघ मे चार गोलिया लगी थी। और भी कई जगह इतने गहरे घाव हो गए थे कि चलना असम्भव था। उन्हे एक कामचलाऊ स्ट्रेचर मे लाद कर वे छिपते हुऐ भाग रहे थे—पाकिस्तान

की ओर। उन की सख्या लगभग पन्द्रह थी। दिन के समय वे किसी जगल मे छिपे रहते। जगलो की कोई कमी नही थी। कमी थी खाने-पीने की चोजो की, दवाओ की। स्ट्रेचर के कारण उन के भागने की गति बहुत धीमी थी। लतीफ मिया को दो-एक बार शक हुआ था कि ये लोग मुझे किसी वीराने मे लावारिस छोड कर चले जाएगे, लेकिन अभी तक तो ऐसा न हुआ था। उन की जाघ मे दर्द की टीसे उठती, लेकिन वह न कराहते। कराहने का कोई मतलब नही था। उन्होने बात करने का अपना तरीका बहुत ही नम्रतापूर्ण बना लिया था, ताकि उन्हे छोड देने का इरादा यदि सचमुच बन रहा हो तो बदल जाए।

वे रात को ही आगे बढते। कम्पास के आधार पर वे पश्चिम किधर है, जान लेते आर कभी चलते, कभी दौडते, कभी छिप कर आहट लेते। उडी और पुछ के बीच का अधिकाश इलाका चूकि भारतीय अधिकार मे था, उन्हे पुछ और मेढर के बीच मे से गुजरना था। पाकिस्तान मे दाखिल होने का यही सब से करीब का रास्ता था—और सब से सुरक्षित।

नक्शो से उन्हे पता चला कि वे किसी ऐसी जगह है, जहा से पुछ और मेढर उत्तर-दक्षिण पडते है और दोनो की दूरी लगभग बराबर है। सरहद तक पहुचने के लिए अभी कम-से-कम दस-बारह मील का फासला तय करना है। भारत के गावो मे इतनी चेतना आ गई है कि दिन मे चलना मौत को बुलाने जैसा ही है। रात के अधेरे मे इतना फासला तय करते चार-पाच दिन लग सकते हैं।

उन के पास भोजन नही था। जगल मे जो खाने लायक चीजें मिलती, उन से काम न चलता, क्योकि कई फासले ऐसे भी होते, जब न कोई कन्द-मूल मिलते, न फलदार वृक्ष। उन्होने एक दिन ऐसा भी गुजारा था, जब कुकुरमुत्ते खाने पडे थे। दो घुसपैठियो को कुकुरमुत्तो की अच्छी पहचान थी। कई कुकुरमुत्ते जहरीले होते है, अत. यदि वे दो साथ मे न

होते, तो ऐसी घटिया चीज भी उन्हे नसीब न हो पाती ।

लतीफ मिया ने पहला कुकुरमुत्ता, जो किसी आड मे जलाई गई छोटी-सी आग पर उबाला गया था, मुह मे डाला तो लगा, जैसे वह रूई खा रहे हो। पास ही एक मजबूत ऊचा-पूरा घुसपैठिया बैठा हुआ था। अधेरे मे उस का चेहरा ठीक मे देखना असम्भव था। लतीफ मिया ने उस की आवाज सुनी, "इस से तो अच्छा था, मैं जेल मे रहता।"

"जेल ?"

"हा, 'जिब्राल्टर फोर्सेस' मे भरती होने से पहले मैं जेल मे ही था। मुझे ताउम्र कैद की सजा मिली थी।"

"क्यो ?"

"अपनी बीवी को कत्ल कर दिया था मैंने। मुझे उस पर शक था।"

"इस की बजाय तुम तलाक भी तो दे मकते थे ?"

"दरअसल मेरा खून उबल गया था।" वह बोला, "खैर जेल मे मैं ने दो साल मुश्किल से गुजारे होगे कि पता चला, पाकिस्तान को हमारी जरूरत है। हमारी याने उन सब की, जिन्होने कत्ल किए हैं, औरतो को बरबाद किया है, डाकेजनी की है। हमे कहा गया कि मुल्क के लिए लडो। उस से भी ज्यादा, मजहब के लिए लडो। तब खुदा तुम्हारे सारे कुसूर माफ कर देगा और तुम्हे जन्नत मे जगह मिलेगी। खुदा से भी पहले तुम्हारे कुसूर सरकार माफ कर देगी। लतीफ साहब, मुझे आजादी की जिन्दगी चाहिए थी। जेल की चहारदीवारी मे मैं बुरी तरह ऊब गया था "

लतीफ मिया चुप रहे। उन्हे मालूम था कि ऐसे एक नही, अनेक लोग हैं, अनेक अनेक

घुसपैठिए के मन मे न जाने कितना गुबार भरा हुआ था। लतीफ मियां ने पिछले कई दिनो से उसे बहुत कम बोलते देखा था। आज वह लगातार बोले जा रहा था, "मैं तैयार हो गया। तुरन्त मुझे आजाद कर

दिया गया। आप सब जानते ही है कुछ चीनी अफसरो ने मुझे, मेरे जैसे कई कैदियो को छापामार लडाई सिखाई, लेकिन लेकिन क्या यही वक्त देखने के लिए? बताइए भला, चार दिनो से मैं ने कुछ नही खाया। कुकुरमुत्ते खाने से तो बेहतर है, कुछ न खाया जाए। हा, एक फायदा जरूर हुआ—मै ने मार्शल अय्यूब खा से हाथ मिलाया!" वह विद्रूप से हसा।

लतीफ मिया की जाघ मे जोर की टीस पडी। उन्होने पलके मीच ली।

कोई घुसपैठिया अधेरे मे सरकता हुआ आया और बोला, "पास ही एक गुफा है। हमे वहा चलना चाहिए।"

गुफा के किसी कोने मे आग जलाई जा सकनी थी। खुले मे जलाना खतरनाक था, क्योकि रोशनी से अगर किसी का ध्यान आकर्षित हो गया तो वह कोई भी हो सकता है। कोई बच्चा। कोई चरवाहा। कोई मुसाफिर। कोई बूढा या अनपढ औरत। कोई भी। 'सभी को जैसे खुफिया पुलिस की नौकरी मिल गई है! काफिर!' आक्रोश से लतीफ मिया ने कहना चाहा, लेकिन चुप रहे। गुफा मे जाने के लिए उन का स्ट्रेचर उठा लिया गया। अधेरे ने सारी हरियाली पर कालिख पोत दी थी।

गुफा सकरी और काफी गहरी थी। अन्दर एक मोड भी था। बहुत अच्छी जगह थी, रोशनी बाहर बिल्कुल नही जाएगी।

उन्होने एक देहाती से दो टोकरी आलू लूटे थे, सिर्फ यही था, जो खाया जा सकता था। आलू उबाले गए। कई घुसपैठिए इतने भूखे थे कि बिना छिलके उतारे ही खाने की कोशिश करने लगे। आलू बहुत गर्म थे, उन के मुह झुलस गए। अधचबाए आलुओ को उन्हे हथेली पर ले लेना पडा। वे जल्दी-जल्दी उन पर फूकने लगे।

खाने के बाद उन के चेहरो पर राहत तैर आई। तीन दिनो से वे बिल्कुल न सो पाए थे। आगे बढने की बजाय आज नीद ले ली जाए,

ऐसा प्रस्ताव न जाने किस ने रखा, जिसे तुरन्त सब ने मान लिया।

सुबह होने मे जब कुछ ही घण्टे बाकी थे, लतीफ मिया की आख खुल गई। अधेरे मे कुछ सरकता-सा महसूस हुआ।

"कौन ?" उन्होने हल्के स्वर मे पूछा।

"शी " किसी ने भय से फटनी बुदबुदाहट मे कहा, "बाहर कोई है।"

सभी घुसपैठिए कुत्तो जैसी चौकन्नी नीद सो रहे थे। खटका होते ही सब जाग गए। वे अधेर मे उठन और गुफा की दीवारो की ओर सरकने लगे, ताकि अगर गोलिया चले तो लगने की गुजाइश कुछ कम हो। दीवारो और कोनो तक सब से पहले पहुचने की कोशिश मे वे एक-दूसरे से टकराने लगे। एक-दो लोग शायद उलट भी गए। उन्होने धीमे स्वर मे गालिया बकी।

लतीफ मिया गुफा के बीचोबीच लेट हुए थे। किसी को आ कर उन्हे भी दीवार की तरफ सरका देना चाहिए, लेकिन कोई न आया। वह समझ गए कि कोई आएगा भी नही। वह खुद ही सरकने लगे। ज्यो ही उन का शरीर स्ट्रेचर से नीचे आया, कुछ नुकीले पत्थर गड गए। एक पत्थर ने जाघ के घाव से रगड खाई। दर्द से आखे मीच कर उन्होने फिर से दोनो कोहनियो पर जोर दिया और सरके। दीवार तक पहुच कर वह सिकुडने लगे।

"कौन है अन्दर ?" एक कडकती आवाज सुनाई दी। यह गुफा के बाहर से आई थी, लेकिन सन्नाटे मे ऐसा लगा, जैसे बिल्कुल कान के पास से ही बोला गया हो। गुफा मे प्रतिध्वनिया उठ रही थी, 'कौन है अन्दर ? कौन है अन्दर ?'

वे बिल्कुल खामोश रहे। उन्हे आशा था कि अन्दर आए बिना, बाहर से ही डरा-धमका कर, जो भी आए है, वे चले जाएगे—यह सोच कर कि अन्दर कोई नही है।

खड खड

किडिक्क् !

रायफल !

किसान या देहाती नही, ये रायफलो वाले है। कितने है ? दो या चार हैं तब तो डरने की जरूरत नही। घुसपैठिए करीब पन्द्रह है। हथियारो की कमी इन के पास भी नही। अधेरे मे लेकिन पता कैसे चले कि वे कितने है ?

खामोशी

एकाएक तीन टार्च जल उठे। उन की तेज रोशनी ने अभी-अभी जागे घुसपैठियो की आखो के सामने चौध पैदा कर दी।

"हैड्स अप ! हैड्स अप !"

तीनो टार्चो की चौध के पीछे खडे वे भारतीय जवान बिल्कुल नजर नही आ रहे थे। 'हैड्स अप !' की आज्ञा मानो उन टार्चो ने ही दी हो

लतीफ मिया ने आतकित होते हुए हाथ उठा दिए। उस समय वह दीवार के सहारे अधलेटे पडे थे। उन्होने सिर उठा कर दूसरे घुसपैठियो को देखा। रोशनी सहन न होने से अभी तक वे आखे मिचमिचा रहे थे। हाथ सभी के उठे हुए।

अचानक ही एक भयावह धमाका सुनाई पडा। उन तीन टार्चो के सामने इतना बडा विस्फोट हुआ कि गुफा की ऊचाई-लम्बाई-चौडाई मे वह आग मुश्किल से समा सकी। बारूद की गन्ध से हवा सन गई। धधकती मिट्टी और पत्थरो से बचने के लिए घुसपैठिए तुरन्त लेट गए। कोई नुकीला पत्थर लतीफ मिया के कपार पर लगा। उन्होने वहा छू कर न देखा। छूए बिना ही पता चल गया कि खून पूरे चेहरे को तर कर रहा है। खून का एक रेला भौहो को भिगोने के बाद पलको पर उतर रहा था। अभी वह आखो मे चला जाएगा। उन्होने चेहरा घुमा कर खून को बाह से पोछ दिया।

सामने देखा ।

अधेरा ।

तीनो टार्च गायब थे ।

क्या हुआ उन का ? मर गए ? या भाग गए ? यह गोला किसी घुसपैठिए ने फेका था। अगर वे टार्च तीन ही थे तो जरूर मर गए होगे ? अगर ज्यादा है तो जवाबी तैयारी कर रहे होगे । लतीफ मिया सिहरे । तब यहा जितने भी है—सब । सब मर जाएगे ।

धडाम !

इतनी आग !

उन्हे लगा, वह अन्धे हो जाएगे । पूरी गुफा काप गई ।

धमाके की प्रतिध्वनिया धडाम्धडाम्धडाम् और चीखे !

उन्होने सब को—सभी घुसपैठियो को चीखते सुना वे भाग रहे थे और बाहर से मशीनगने चल रही थी बारूद की कसैली, उत्तेजक गन्ध ओह ! गुफा ढह रही थी। छत मे से बडे-बडे पत्थर टूट कर गिर रहे थे । अधेरा उन्होने उठने का प्रयास किया, लेकिन उसी समय सब शून्य हो गया ।

गुफा ।

धमाके की प्रतिध्वनिया ।

मशीनगनो की थर्राती आवाजे ।

चीखे ।

कसैली गन्ध ।

उन पर एक इतनी बडी शिला आ गिरी कि सब शून्य !

सत्ताईस

डी० आर० डी० ओ० की एक मीटिंग के बाद डाक्टर सिह विज्ञान-भवन से बाहर आए तो सवा छह बज चुके थे। शाम घनी हो चली थी, लेकिन इतनी घनी नही कि कार की बत्तिया जलानी पडे। फिर भी उन्होने हेड-लाइट्स जला ली। उन्हे अच्छा लगा। वह उत्तेजित थे। सहसा उन्हे पता चला कि वह काफी तेज जा रहे है। उन्होने गति कम कर ली। चेहरा गम्भीर। घडी के काटे छह-बीस दर्शा रहे थे। केवल दस मिनट! उस के बाद कार की रोशनिया बुझा देनी होगी।

छह सितम्बर! दिल्ली के ब्लैक-आउट का पहला दिन!

'फायरब्रिगेड लेन पहुचते-पहुचते सात बज जाएगे।' उन्होने सोचा।

कारो, स्कूटरो, टैक्सियो आदि की भीड एकाएक बढ गई। कई जगह रास्ता पाने के लिए उन्हे दो-दो, तीन-तीन मिनट तक इन्तजार करना पडा। ऐसे मौके पर हर तरफ से हार्न बजने लगते। उन्हे बुरा लगा। क्या जरूरत है इतना शोर मचाने की? जगह मिलेगी, तभी तो कोई आगे जाएगा? या सामने जो स्कूटर खडा है, उसी के ऊपर से कार निकाल ली जाए?

जिन्होने कभी ब्लैक-आउट नही देखा था, वे कुछ घबरा गए थे। हार्न वे ही ज्यादा बजा रहे थे, क्योकि उन्हे जल्दी-से-जल्दी घर पहुचना था। जो घबराए हुए नही थे, वे कम या ज्यादा उत्तेजित थे। चीनी आक्रमण के समय दिल्ली ने एक भी ब्लैक-आउट नही देखा था। चीन के साथ वह सघर्ष कुछ और ही तरह का था, जिस ने ब्लैक-आउट लाए बिना ही हर जगह ब्लैक-आउट कर के लोगो के जिगर सिकोड दिए थे। लेकिन तीन वर्ष बाद का पाकिस्तान से यह सघर्ष इतने अप्रत्याशित रूप से जोशीला

था कि लोग ब्लैक-आउट का मानो इन्तजार ही कर रहे थे ।

सिविल डिफेन्स कमेटी की आपत्कालीन बैठक के बाद चीफ कमिश्नर ने घोषणा कर दी थी कि आज दिल्ली मे आंशिक ब्लैक-आउट होगा । बहुत महत्व की जगहो मे थोडी-बहुत रोशनी की जाएगी, वह भी कुछ समय तक । साढे छह के बाद किसी भी वाहन की बडी बत्तिया नही जलानी चाहिए । हा, डिप-लाइट्स या पार्किङ्ग-लाइट्स जलाई जा सकती है ।

ब्लैक-आउट का कारण था—पाकिस्तान द्वारा खुले युद्ध की घोषणा। —प्रेसिडेण्ट अय्यूब खा ने कुछ घण्टे पहले ही कराची रेडियो से कहा था, "अभी हिन्दुस्तानियो को नही मालूम कि उन्होने किसे छेडा है । हिन्दुस्तान से हम खुला युद्ध कर रहे है । हम एक-के-बाद-एक तब तक घातक वार करते जाएगे, जब तक इस शैतान का सिर न कुचल दे ।"

छह बज कर पच्चीस मिनट !

उन्होने ब्रेक लगाया—सामने चल रही वह कार अचानक रुक गई थी ।

कोठी अभी दो मील दूर थी । इतनी भीड न होती तो यह फासला मिनटो मे तय हो जाता । ट्रैफिक-पुलिस की सख्या कई गुना कर दी गई थी, तो भी गुत्थिया बार-बार पैदा हो जाती ।

साढे छह बजने मे दो मिनट ।

ट्रैफिक खुला । उन की कार ने तेजी पकडी, लेकिन ट्रैफिक तुरन्त ही फिर रुक गया ।

साढे छह मे बस, एक मिनट ।

अब एक भी नही ।

उन्होने हेड-लाइट्स बुझा दी । डिप-लाइट्स जलती रही ।

साइरन बज उठा था । पूरे आकाश से मानो एक कपकपी उतर रही थी—हूऊऊऊ हू हूऊऊऊ• ऊबूबूबू

जिन के पास घडिया नही थी या जिन की घडियो मे गलत वक्त था, उन्होने सायरन सुनते ही बडी रोशनिया गुल कर दी ।

ट्रैफिक रुका । उन्हे भी झटके के साथ कार रोक देनी पडी । एक साइकल वाला बगल मे आ कर खडा हो गया और झाक कर कार मे देखने लगा । उन्होने उस की ओर ध्यान न दिया । साइकल वाला जोश मे था । उस के चेहरे का अधिकाश हिस्सा धुधलके ने छिपा लिया था । उस ने होठो को गोलाकार मे मोडते हुए सायरन की नकल उतारी "हूऊऊ !"

डाक्टर सिह ने उस की ओर नापसन्दगी से देखा, लेकिन वह खिल-खिला कर हसने लगा और बोला, "क्यो सा'ब ? रावलपिण्डी मे भी हू-हू हो रही होगी ?"

उन्होने जवाब न दिया । ट्रैफिक चलने लगा था । साइकल वाला "बचो ! बचो !" चिल्लाता हुआ कारो, स्कूटरो आदि के बीच से रेगने लगा । बार-बार उसे एक पैर जमीन से टिका कर रुकना पडता । वह काफी लम्बा था, अत उसे कोई दिक्कत न होती ।

युद्ध की स्थिति ने पिछले दो दिनो से ऐसा तनाव ग्रहण किया था कि कब क्या हो जाएगा, कहना मुश्किल था । बीते शनिवार को नैट हवाई-जहाजो ने दो सैबर-जेट और मार गिराए थे, जिस से बौखला कर पाकिस्तान ने इतवार को युद्ध का विस्तार फैला दिया । युद्ध को कश्मीर मे सीमित न रख कर वह पजाब मे भी ले आया—इतवार को अमृतसर क्षेत्र मे एक खूखार सैबर-जेट ने उडान भरी । भारतीय वायु-सेना के एक ठिकाने पर उस ने दो राकेट छोडे । दोनो ही निशाना चूक कर इधर-उधर फटे । तब तक भारतीय विमानभेदी तोपे इतनी गोलाबारी करने लगी कि सैबर-जेट को भाग जाना पडा ।

सियालकोट के पाकिस्तानी हवाई-अड्डे पर सैनिक कार्रवाइया अत्यन्त तीव्र हो गई थी । जम्मू क्षेत्र के दो गाँवो मे भी पाकिस्तानियो ने राकेट

गिराए थे, लेकिन सैनिक ठिकानो को कोई नुकसान नही पहुचा था।

'वीर चक्र !' डाक्टर सिह के चेहरे पर मुस्कान आने लगी। उन्होने उसे रोका। सडक से गुजरता कोई व्यक्ति अगर देखे कि कार मे बैठा एक आदमी अकेला-अकेला मुस्करा रहा है तो क्या सोचे ! वह बेहद खुश थे। स्क्वाड्रन-लीडर बलवन्तसिह को वीर चक्र ! घोषणा आज ही हुई थी। सभी अखबारो ने उस का प्रकाशन किया था।

इतवार को पाकिस्तान ने अमृतसर क्षेत्र पर हमला किया तो जवाब मे आज भारत की सेनाए लाहौर की ओर बढ गई थी। 'इटेलिजेन्स' को ज्ञात हो गया था कि लाहौर क्षेत्र से पाकिस्तान शीघ्र ही भारी हमला करेगा। इस से पहले कि हमला शुरू होता, नया मोर्चा भारत ने ही खोल दिया।

उन की कार कनाट-प्लेस के आउटर-सर्कल मे प्रवेश कर चुकी थी। थोडी देर बाद वह उस सडक पर मुड सकेगे, जो उन्हे सीधे कोठी तक ले जाएगी। 'पाकिस्तान के तानाशाह कैसे चौके होगे ! कभी पलट कर वार न करने वाला, ज्यादतियो को हमेशा सह लेने वाला भारत एकाएक अपनी फौजे बढा देगा, यह सोचा भी किस ने होगा ?'

आजादी के बाद निश्चय ही यह सब से रोमाचक घटना थी। सुबह भारतीयो ने लाहौर का मोर्चा खोला और शाम को प्रेसिडेण्ट अय्यूब खा ने खुले युद्ध की घोषणा कर दी। आज—छह सितम्बर १९६५। सोमवार।

कार कोठी के सामने आ कर रुकी। गेट बन्द था। उन्होने हार्न बजाया। हजारे दौडता हुआ आया। समूची कोठी अधेरे मे डूबी हुई। सब से अन्दर के कमरे मे एक मोमबत्ती जल रही थी। बाहर से उस की टिमटिमाती लौ देखी जा सकी। हजारे ने गेट खोल दिया। उन्होने कार पिछवाडे के शेड की ओर बढाई।

रेडियो से बार-बार प्रसारित सूचनाओ के अनुसार हजारे बाजार से बहुत-सा भूरा कागज खरीद लाया था। लेई तैयार थी। अधिकाश काचो

मिलता। इस के अलावा, वहा के सारे काच मूद ही दिए गए थे।

लेकिन वह ड्राइग-रूम के सोफे पर लेटे रहे। मोमबत्ती भी उन्होंने बुझा दी। अधेरे मे गायब हो कर वह अपने भय को नकारना चाहते थे। भय! जो फुफकार रहा था

मान लो

नही यह नही हो सकता। ऐसा सोचना भी नही चाहिए।

लेकिन न सोचने पर भी ऐसा हो सकता था।

और सोचने के बावजूद नही हो सकता था। होना-न-होना किसी के बस मे नही था। किसी के भी नही—वह सिवा इस के कुछ नही कर सकते थे कि न सोचने की कोशिश करे और सोचे

आज हवाई-युद्ध लगातार होता रहा लाहौर का आकाश गडगडाहटो से कापता रहा मुमकिन है, बलवन्त समय निकाल कर अभी कही काफी पी रहा हो। मुमकिन है, अभी वह जल्दी-जल्दी टोस्ट खा रहा हो। मुमकिन है, मेस मे उस के लिए आमलेट बन रहा हो और दूर से ही वह उस की सुगन्ध ले रहा हो। मुमकिन है

और मुमकिन है

क्या मुमकिन है?

ओह!

वह उठ बैठे।

बाहर निकले। गेट के पास हजारे परछाई की तरह खडा था। पास ही था टीपू। यह कुत्ता खुफिया विभाग की ओर से कुछ ही दिन पहले यहा रखा गया था। हजारे और टीपू बिल्कुल खामोश। डाक्टर सिंह उन के पास आए। टीपू उन से अभी ज्यादा घुला-मिला नही था, क्योंकि उसका अधिकाश समय हजारे के साथ बीतता था। डाक्टर सिंह ने उस के गले पर हाथ फेरा। इस के लिए उन्हे कुछ झुकना पडा। उन्होंने हजारे की ओर देखा। वह उन्ही की ओर ताक रहा था।

वह बुदबुदाए, "हजारे !"

हजारे चुप रहा। तब वह भी मौन माध गए। कुछ देर खडे रहे, फिर टीपू को साथ ले सडक पर निकल आए। हर तरफ अधेरा लेटा हुआ। वह टहलते रहे। टीपू आगे जाने लगता तो चेन मे झटका पडता और वह उस की ओर जैसे अविश्वास से देखने लगते। टीपू उन के सामने था, इतनी अच्छी तरह था कि उसे पीटा या थपथयाया जा सके, किसी के पीछे दौडाया जा सके—लेकिन आज उन्हे सभी कुछ अविश्वसनीय लग रहा था। क्या सचमुच युद्ध हो रहा है? क्या सचमुच युद्ध की भयकरता इतनी है कि लाहौर का आकाश गडगडाहटो से कापने लगे?

ओऽ

उन्होने ऊपर देखा। कोई हवाई-जहाज था। बहुत दूर उस की बत्तिया बारीक-बारीक देखी जा सकी। वे बडी होती रही। आवाज भी घनी हो गई—ओओ ! हवा को मथता और निचोडता हुआ वह ठीक ऊपर से गुजर गया।

डाक्टर सिह जल्दी-जल्दी कोठी की ओर लौटने लगे।

अधेरे ड्राइग-रूम मे वह कुर्सी पर निढाल हो गए। "हजारे!" उन्होने पुकारा, "गेट बन्द कर दो। दरवाजा भी।"

दस बजे उन्होने नीद की गोलिया ली। अधेरे मे थोडी चहलकदमी करने के बाद सिर भारी होने लगा। वह लेट गए। आदतन वह शुरू मे बाईं करवट पर नही, चित लेटते थे। वैसे लेट कर उन्होने गर्दन से पैर तक चादर खीच ली।

थोडी ही देर मे छत गायब हो गई। चारो दीवारे ढह गई और फर्श कही फिसल गया ो ! ो-ो-ो ! बलवन्त ? ओ ! -ओओऽ ! नैट ! सैबर ! स्टारफाइटर ! ओओओऽ ! धड-धड-धड ! तोपें ! उधर ! उधर देख ! सैबर आ रहा है ! दाग तोपें ! वह गया ! कीईंईंईं ! वाह बलवन्त ! आ काऽ ! यह स्टारफाइटर !

घ्रोओओ ! इतना करीब ! लगा निशाना ! देर क्यो ? घ्राग्राआ ! लगा दे गोता ! होशियार ! उस ने मिसाइल दागा है ! लगा एक ग्रौर गोता ! तुझे हो क्या गया है ? लगा गोता ! वह आया ! ओह ! लगाता क्यो नही ? क्रीईईई ग्राया मिसाइल ! क्रोओओ ! धडाम ! कडडड ! ग्राग ! धधकता पेट्रोल ! गया—मर गया ! बलवन्त मर गया !

हडबडा कर वह उठ बैठें। पसीने से तर हो रहे थे। पलग से उतरे। पाव झुरझुर-झुरझुर ! टिच् ! पूरा कमरा जगमगा उठा। नही। इतनी रोशनी नही। ग्राज से ब्लैक-आउट है ! बुझा कर उन्होने जीरो पावर का बल्ब जलाया ग्रौर चल कर सुराही तक गए। पानी पीया। अभी तक काप रहे थे।

"सा'ब !"

वह डर गए।

"कौन ? हजारे ? क्या बात है ?"

ग्रब वह तन कर खडे थे और काप नही रहे थे।

"सा'ब ! क्या हुआ सा'ब ?" हजारे पास ग्रा गया। नीली रोशनी मे वह कैसा धुधला लग रहा था !

"क्या हुआ ? कुछ भी तो नही। क्यो ? क्या हुआ ?"

हजारे कुछ हिचका।

"यहा क्यो आए हो ?"

"मै ने सा'ब, ग्राप की चीख सुनी।"

"मैं चीखा था ?" उन्होने ग्रविश्वास से पूछा।

हजारे चुप रहा।

"नही तो। ऐसी कोई बात नही। जाग्रो। मैं नही चीखा था।"

थोडे ग्रसमजस के बाद वह जाने लगा।

"सुनो !"

वह रुका ।

"मेरे लिए काफी बनाओ । गर्म !"

काफी पीते हुए उन्होने स्वय को समझाना चाहा, 'अगर सचमुच ऐसा हो जाए तो तो भी इतना नरवस नही होना चाहिए ।'

खिडकियो-दरवाजो पर कागज लगे होने के बावजूद उन्होने सारे परदे खीचने के बाद ही टेबल लैम्प जलाया । अखबार वाली बलवन्त की तस्वीर फिर से देखने की तीव्र इच्छा हो रही थी, लेकिन उन्होने टाल दिया । आश्चर्य भी हुआ कि टालने मे सफलता कैसे मिली ।

भय को जीतने के लिए उन्होने भय के और करीब जाना चाहा । कुछ माह पहले उन्होने विदेशी कहानियो का एक सग्रह खरीदा था । डरावनी कहानिया ! टेबल लैम्प की रोशनी रैक पर केन्द्रित कर के वह सग्रह ढूढने लगे । व्यस्तता इतनी रही थी कि वह उसे एक बार भी खोल कर देख तक नही पाए थे । सग्रह जल्दी मिल गया । उस पर जमी धूल की झीनी पर्त उन्होने फूक कर निकाल दी, फिर आवरण को ध्यान से देखते रहे । फिफ्थ बुक आफ हारर स्टोरीज नीचे युवती का चेहरा। दाहिनी ओर से—युवती के लहरीले बाल । सुघड कान । भरा हुआ गाल । बकिम भौह । बहुत बडी, नुकीली आख । अच्छी-सी नाक लेकिन नाक आधी उस का दूसरा हिस्सा सडने लगा था । मास उघड रहा था और बाई ओर क्रमश इतना गायब हो गया था कि खोपडी की हड्डिया निकल आई थी । दाहिनी आख बहुत बडी और नुकीली—बाई आख अधेरे का गहरा गड्ढा ! दाहिना गाल भरा हुआ, चिकना—बाया गाल कालिख के कुए जैसा ! वह देखते रहे । उन्हे डर न लगा ।

कुर्सी मे बैठ कर उन्होने एक पैर पर दूसरा पैर चढा लिया और पन्ने उलटने लगे । एक छोटी कहानी उन्होने शुरू की । शीर्षक था—'कलाकार' । अपराधियो को फासी देने वाला एक जल्लाद किस तरह अपने जघन्य कार्य मे भी कला ढूढ लेता है, इस का विशद वर्णन था ।

"इसी को डरावनी कहानी कहते है ? क्या है इस मे डरने लायक ?' उन्होने मन-ही-मन शिकायत की और दूसरी कहानी कौन-सी शुरू करे, इस का चुनाव करने लगे। अनेक शीर्षक। अनेक लेखक। लेखको की साहित्यिक ख्याति उन्हे ज्ञात नही थी। सभी शीर्षको मे बनावटीपन महसूस हुआ।

दो बज रहे थे।

एक छोटी कहानी और पढ डाली, जिस के बाद वह ऊब गए। पुस्तक रख कर उन्होने सोचा, 'अब ?'

नीद नाम-मात्र भी नही थी, पर एकाध गोली और खाने की इच्छा न हुई।

भौ ! भौ ! चौंक कर वह दरवाजे की ओर बढे। टीपू बाहर के अधेरे मे झपट रहा था। उन्होने दरवाजा खोलते हुए कडक कर पूछा, "कौन ? कौन है इस वक्त ?"

साथ ही एक भय-विस्फारित चीख सुनाई दी। कुत्ते ने शायद आगतुक की छाती पर पैर रख दिए थे। "टीपू !" उन्होने आवाज लगाई और आगन मे निकल आए। टीपू लौटा और धीमी गुर्राहट के साथ उन के पास खडा हो गया। "कौन ?" उन्होने फिर पूछा। अधेरे मे कुछ दिखाई नही दे रहा था।

"सा'ब ! आप का कुत्ता " भय से कापती आवाज।

"कुछ नही करेगा। चले आओ। कौन हो ?"

"आप का तार है, सा'ब !"

उन्होने बहुत स्पष्ट सुना—तार ! रात को इस वक्त !

कोई जवाब न मिलने के कारण अधेरे मे से फिर पूछा गया, "आ जाऊ, सा'ब ?"

वह चुप रहे।

"सा'ब ?"

"मेरा तार है ?"

"जी हा, सा'ब लेकिन आप के कुत्ते ने तो "

"किस का तार है ? मेरा ?"

"कोठी नम्बर यही है न ?"

"जी हा, लेकिन किस के नाम का तार है ?"

डाक-कर्मचारी ने दूर ही खडे रह कर टार्च जलाई और लिफाफे पर लिखा नाम पडा, "डाक्टर हरदयालसिह।"

"ठीक है। ले आओ।"

"सा'ब, यह कुत्ता "

"कुछ नही करेगा। अच्छा, मैं ही तुम्हारे पास आता हू।" उन्होने दिलेरी के साथ कहा। सचमुच उन के स्वर मे कपकपी नही थी। वह जान गए थे, तार मे क्या है। जो है, स्वीकार करना ही है। उन्होने कदम उठाए। गेट तक पहुचे। कर्मचारी ने बन्द लिफाफा उन्हें दे दिया और एक पीले कागज के पाचवे खाने मे दस्तखत करा लिए। अत्यन्त भयभीत दृष्टि से वह कुत्ते को देखता जा रहा था। कुत्ता गुर्राया। "टीपू !" डाक्टर सिह ने उस की गर्दन पर हाथ फेरा व कर्मचारी की साइकल की तरफ देखने लगे। वह काले रग की थी, जिस से उस का आधा हिस्सा अधेरे मे घुल-सा गया था।

आधी साइकल चलाता हुआ कर्मचारी रवाना हो गया।

"क्यो जी ? कौन था यह ?" दो युवको ने आ कर पूछा। अपना परिचय देते हुए उन्होने बताया कि हम गश्त लगा रहे हैं।

वे चले गए और डाक्टर सिह खडे रहे। लिफाफा खोलने की जरूरत नहीं थी। वह हतप्रभ हो गए थे, लेकिन उन के जिस्म मे झुरझुरी नही थी। उन्होने आकाश की ओर देखा। कोई हवाई-जहाज नही उड रहा था। टीपू लगातार गुर्रा रहा था, लेकिन कई क्षण ऐसे आते, जब गुर्राहट उन्हे बिल्कुल सुनाई न देती। गुर्राहट ही क्यो, उस समय वह कुछ भी

न सुन रहे होते—उस के बाद कान मे सिसकारी होने लगती। बारीक झकार जैसी

उन्हे कोठी के भीतर चले जाना चाहिए था, लेकिन पैर सुन्न हो रहे थे। लिफाफे वाले हाथ को चेहरे के पास लाते हुए उन्होने अपना नाम पढना चाहा, किन्तु अधेरे मे

"सा'ब!" अधेरे मे हजारे की काली आकृति खडी थी।

"क्यो? तुम्हे नीद नही आती?"

"अभी टीपू भौका तो जाग गया।"

"हु।" वह भीतर लौटने लगे।

"कोई आया था?" हजारे ने पूछा।

"हा।"

"कौन था?"

"पोस्ट-आफिस का आदमी। मेरे नाम एक तार आया है!" वह धीमे से हसे, "रखा है जेब मे।"

"तार?" हजारे ठिठक गया। उस ने तुरन्त दरवाजा बन्द किया और नजदीक आते हुए आशकित अधैर्य से पूछा, "किस का तार, सा'ब?"

"मेरा।"

"लेकिन कहा से?" हजारे की उगलिया आपस मे फस गईं। उस के हाथ नमस्ते की तरह उठे हुए थे। वह कुछ झुक-सा गया था, जैसे ठण्ड लग रही हो।

"कहा से?" डाक्टर सिंह ने ऐसी आवाज मे कहा, जो स्वय उन्ही को अपनी नही लगी, "पता नही कहा से!"

"सा'ब!"

"हजारे! जाओ यहा से।"

"पहले बताइए, तार किस का है?"

अपने लिए नही, हजारे के लिए तार खोल रहे हो, इस तरह उन्होने वह लिफाफा जीरो पावर की पीली रोशनी मे धीरे-धीरे फाडा। पीले कागज की पर्ते खुलने की खडखडाहट सन्नाटे मे बहुत तेज मालूम पडी। हजारे और पास सरक आया। डाक्टर सिह को लगा, शायद वह रोने की तैयारी कर रहा है। 'तब मुझ से भी ' उन्होने सोचा। उन्हे बुरा लगा।

वह सारी झुरझुरी, जो उन्होने दबा कर रखी थी, एकाएक उभर आई। हाथ इतने कापने लगे कि पर्तों का खुलना मुश्किल हो गया।

पर्ते खुली और उन्होने फैली-फैली आखो से पढा। तुरन्त उन्होने कागज झटके के साथ फेक दिया—वह खिलखिला रहे थे। भूल गए थे कि रात के सन्नाटे मे आवाज दूर तक

"सा'ब !" हजारे सकपका गया।

"बेवकूफी !" वह उन्मुक्त स्वर मे बोले, "सरासर बेवकूफी ! इस मे तार देने की क्या जरूरत थी ? बिल्कुल डरा दिया !"

"लेकिन सा'ब, बताइए तो सही "

डाक्टर सिंह ने नजदीक आ कर उस के कन्धो पर हाथ रखे। हजारे देखता रहा। वह मुस्कान के साथ बोले, "हजारे, इलाहाबाद मे एक विचित्र आदमी रहता है। उस का नाम तुम जानते हो।"

हजारे चुप रहा। इतना तो समझ गया था कि कोई वैसे समाचार नही है, लेकिन वह अभी भी आतक से ग्रस्त था।

"वह आदमी है डाक्टर सलूजा। तार उसी का है। बेवकूफ !" फिर से उन्हे हसी आने लगी।

सलूजा ने तार से सूचना दी थी—'चण्डीगढ के महान् रचयिता, अद्वितीय भवन-निर्माता ल कोरबूजिए दिल के दौरे मे चल बसे है। दौरे के समय वह समुद्र मे तैर रहे थे। कैसी अनोखी मौत ! मैं बहुत दुखी हू। विस्तार से पत्र लिख रहा हू। ल कोरबूजिए मकान की तुलना मशीन से करते थे। बेचारे !'

अट्ठाईस

सईदा मुरादाबाद से दिल्ली रवाना हो गई।

अम्मीजान ने कहा था, "छुट्टी ले कर पन्द्रह-बीस दिन यही रह—मेरी आखो के आगे।"

"अम्मी, कैसे समझाऊ तुझे ! ऐसे दिनो मे रेडियो-स्टेशन का काम बहुत बढ जाता है। मैं ही जानती हू, दो दिन की छुट्टी भी कैसे मिली। वापस नही जाऊगी तो नौकरी कैसे करूगी ?"

"सुना है, दिल्ली मे कल एक हवाई-जहाज गिरा है। हमला करने आया था।"

"हा, आया तो था। तोपो ने हवा मे ही तबाह कर दिया। मलबा मेरठ के पास गिरा है। दो और भी हवाई-जहाज उस के साथ थे। भाग गए।"

"जुबैदा की वालिदा कह रही थी कि इन करमजले पाकिस्तानियो ने सौ से भी ज्यादा जासूस दिल्ली के करीब उतारे है।"

सईदा हस पडी, "अम्मी, तुम बेकार घबरा रही हो। उतरे है तो पकडे भी जाएगे।"

सईदा को अगली सुबह नौ बजे ड्यूटी पर पहुचना था। आज प्राय दो घण्टे बाद मुरादाबाद से उस की गाडी चल देगी। रात के साढे सात, आठ तक दिल्ली। इस के आध-पौन घण्टे बाद हास्टल मे।

शायद वहा कोई खत इन्तजार कर रहा हो। बलवन्त या भार्गव साहब का। या दोनो के ही। यदि वे रेडियो-स्टेशन के पते से लिखे गए होगे तो कल सुबह मिलेगे। वह सोचती रही बलवन्त ! वीरचक्र-

विजेता ! ओह ! कब खत्म होगी यह लडाई ? कब वह वापस आएगा ? 'इस बार तो बस जाने दूगी ही नही। कहूगी, पहले निकाह !' इस इरादे पर फिर वह खुद ही शरमा गई।

"क्या सोच रही हो, बेटी ?" अम्मीजान पूछ रही थी।

"कुछ नही।"

अम्मीजान शायद बहुत बुरा मानेगी कि सईदा ने एक सिक्ख के साथ लेकिन निकाह होगा, जरूर होगा—अम्मीजान की रजिश भी एक दिन खत्म हो जाएगी।

एक पडोसिन के साथ अम्मीजान उसे छोडने के लिए स्टेशन आई ओर तरह-तरह की हिदायते देती रही। सईदा कुछ बोर हो गई, लेकिन सुनती रही। वह जानती थी, अम्मीजान के दिल पर क्या गुजर रही है। गाडी चली तो दोनो की आखो मे आसू आ गए। सईदा ने रूमाल निकाला और पलको तक लाते हुए कहा, "क्यो जी छोटा करती हो, अम्मी !"

गाडी एक-के-बाद-एक स्टेशन छोडती जा रही थी। सईदा के पास एक बूढा बैठा ऊघ रहा था। 'मुझी पर लुढक न जाए कही !' सईदा को शक हुआ। किसी स्टेशन पर जो सवारी उतरी, उस की सीट खिडकी के पास थी। वह वहा बैठ गई। सीट एक ही व्यक्ति की थी। उस ने राहत महसूस करते हुए अखबार खोल लिया।

सामने एक चश्माधारी युवक बैठा था। उस ने सईदा की ओर उडती निगाह से देखा। अगर युवक के पास अखबार न होता तो शायद उस ने जरा ध्यान से देखा होता। कागज की खडखडाहट हुई। वह अपना अखबार बीच मे मोड रहा था।

सुबह से ले कर गाडी छूटने तक का समय अम्मीजान से बाते करने और दिलासा देने मे ही बीत गया था, जिस से सईदा अखबार की केवल

सुर्खिया देख सकी थी। गाडी चलते ही वह समाचारो को विस्तार से पढने लगी। नौ सितम्बर का अखबार। आठ सितम्बर के समाचार। सब से मोटी सुर्खी—भारतीय फौजे सिन्ध मे दाखिल। उस के नीचे—गदरा पर हमारा अधिकार। सियालकोट की ओर बढती भारतीय फौजे। द्वारिका पर पाक नौसेना द्वारा गोलाबारी।

दाहिनी ओर युद्ध-स्थिति दर्शाने वाला नक्शा था। चकलाला, सरगोधा और हैदराबाद-सिन्ध के आधुनिक हवाई-अड्डो पर बमबारी करने मे भारतीय उडाको को जो सफलता मिली थी, वह बडी शान से अकित थी। उडाके! बमबारी! वीरचक्र! लेकिन इस सारे उत्साह, सारी उत्तेजना पर एक आशका रह-रह कर हुह! ऐसा भी कही होता है? कोई और नही, बलवन्त ही क्यो?'

"माफ कीजिएगा, क्या मै जान सकता हू, आप कहा जा रही है?" चश्माधारी की आवाज ने उस का ध्यान भग किया। जरा रूखेपन से उस ने कहा, "दिल्ली।" वह बेमकसद किसी से बोलना नही चाहती थी। अख्तर इसी तरह उस के पल्ले आ पडा था और कैसा धोखा खाया था उस ने!

पिछले दिनो उसे एक और विचार आया था। जिस तरह बेकुसूर होने के बावजूद खुफिया पुलिस को सईदा पर शक था, उसी तरह कही अख्तर भी बेकुसूर न हो।

लेकिन इस पर उस ने ज्यादा नही सोचा था।

अख्तर अभी नागपुर से लौटा नही होगा वरना फोन जरूर करता। हो सकता है, सईदा ये दो दिन जो दिल्ली से बाहर रही है, उस दौरान वह फोन करता रहा हो। यह भी नामुमकिन नही कि वह पुलिस की हिरासत मे हो। बहरहाल, अगर फोन आया, वह साफ कह देगी कि मै आप के साथ न कोई ताल्लुकात रखना चाहती हू, न इस की वजह बताऊगी।

लेकिन यदि सचमुच अख्तर कुसूरवार नही है, तो ?

बला से ! मुझे लेना या देना ! अगर है तो गिरफ्तार होगा। नही है तो हो कर भी छूट जाएगा।

खुफिया विभाग की परवाह करना भी उस ने छोड दिया था। 'जब मै कुसूरवार नही हू तो केवल शक-ही-शक से क्या होता है ! कोई सबूत मिलेगा, तभी कुछ होगा न ?"

"तब तो हमारा साथ काफी लम्बा है।" चश्माधारी कह रहा था, "मैं गाजियाबाद जा रहा हू।"

सईदा चुप रही।

"आप कही पढाती है शायद ?"

"जी नही।" उस ने ऐसे तीखेपन से उस की ओर देखा, मानो चुनौती दे रही हो। शक हुआ कि अभी पूछा जाएगा, 'पढाती नही तो क्या करती है ?' लेकिन युवक ने न पूछा। वह बार-बार खिडकी से बाहर झाक रहा था।

सईदा ने युद्ध-स्थिति के नक्शे के पास छपे समाचारो पर निगाह डाली। दिल्ली के पास जो हवाई-जहाज ध्वस्त हुआ था, वह अमरीकन था और उस का माडल था—सी-१३०, ट्रान्सपोर्ट। फिरोजपुर, जोधपुर, अमृतसर—इन तीनो जगहो पर पाकिस्तान के हवाई हमले हुए थे।

"आप नही पढाती ? लेकिन मैं पढाता हू। गाजियाबाद के एक प्राइवेट कालेज मे।" चश्माधारी बोला, "और मैं ने इस लडाई को दूसरी ही निगाह से देखा है। यह तानाशाही और गणतन्त्र की लडाई नही। यह लडाई तो एक षड्यन्त्र है, जो भगवान ने स्वय भगवान के खिलाफ रचा है।"

बात सईदा से कही गई थी, लेकिन पास ही बैठा एक आदमी बोल पडा, "जी ?"

चश्माधारी ने उस की ओर देखा, "जितना हमारा ख्याल है, उस से

कही ज्यादा इस लडाई के पीछे भगवान का हाथ है ।"

'जी ?' कहने वाला परम सन्तोष से बोला, "चलिए, आप का भगवान पर विश्वास तो है, वरना आजकल के लोग तो "

"आप गलत समझे । भगवान पर मेरा बिल्कुल विश्वास नही है ।" चश्माधारी ने टोका, "मै तो मानता हू कि भगवान का कोई अस्तित्व ही नही । यदि हो तो भी मै उसे मानने के लिए तैयार नही हू । लेकिन यह कितनी अनोखी बात है कि वह न होते हुए भी मेरी जिन्दगी को नए-नए मोड देता है । ममलन भगवान के ही कारण अभी मै युद्ध के तनाव मे हू ।"

"यही तो है उस की माया !" दूर से कोई बोला ।

सईदा को चश्माधारी युवक बुद्धिमान लेकिन सनकी मालूम पडा । वह सुनती रही ।

युवक ने 'माया' की दुहाई देने वाले को तीव्र अरुचि से देखा । फिर वह सईदा से मुखातिब हो गया, "कुछ लोग कितने अजीब होते है ! भगवान और माया की बात करते है !"

"अभी आप भी कर रहे थे ।" दूर बैठे किसी व्यक्ति ने ऊचे स्वर मे कहा ।

चश्माधारी हसा, "हा, क्योकि मै जानता हू कि भगवान दुनिया का सबसे बडा बिजनेस है । आज भी दुनिया मे सब से ज्यादा बिकती है बाइबल । भारत मे लाखो-करोडो रुपए भगवान के नाम पर खर्च होते है और और हमारे तीर्थो मे भगवान के ही नाम पर घोर पाप किए जाते है । बोलिए, किए जाते है या नही ? भगवान की·· खुदा की दुहाई दे कर ही पाकिस्तान ने हम से जग छेडी है ।" वह बोलता चला गया, "हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सुलह के लिए रूस था आने वाले है— इस के पीछे भगवान है । अभी मै आप लोगो से बाते कर रहा हू— इस के पीछे भगवान है । मैं मेट्रिक के इम्तहान मे फेल हो गया था,

क्यो कि मेरे घर के सामने   जरा गौर से सुनिए, रात के नौ से सुबह चार बजे तक—रोज—लाउड-स्पीकर पर भजन किए जाते थे। वे लोग चीख-चीख कर भगवान को पुकारते थे। बताइए, वैसे शोर मे पढाई कैसे होती ? मै सिर्फ दो नम्बरो से फेल हो गया।"

लोग चुप रहे। युवक बहुत बोलता है, सब समझ गए थ। कोई जवाब न पा कर युवक भी चुप हो गया, लेकिन वह बौखला रहा था। दो स्टेशन पार होने के बाद उसे यह डिब्बा मनहूस लगने लगा। तीसरा स्टेशन आया तो वह किसी और डिब्बे मे चला गया। उस की खाली सीट मे एक बुजुर्ग आ बैठा। उस के पास अखबार नही था। थी एक पुस्तक—'नई अहिसा'। गाडी चली। एक स्टेशन पार हो गया। उस ने सईदा से बात करने की उत्सुकता न दिखाई।

सईदा अपने अखबार से बोर हो गई थी। उसे समेट कर उस ने गोद मे रख लिया और बाहर देखने लगी। तेजी से फिसलती जमीन

"आप का अखबार ले सकता हू ?" बुजुर्ग ने शालीनता से पूछा।

"जरूर !" सईदा सौजन्यपूर्ण स्वर मे बोली और अखबार बढा दिया।

बुजुर्ग ने 'नई अहिसा' देते हुए कहा, "तब तक आप इसे पढिए।"

"जी नही, मुझे   " सईदा कुछ भी पढने के मूड मे नही थी।

"पढिए तो सही। बडी अच्छी किताब है।" बुजुर्ग ने ऐसे आग्रह से कहा कि उन की उम्र का लिहाज रखने के लिए सईदा ने पुस्तक ले ली। पन्ने खोले। भूमिका मे जगह-जगह लाल निशान लगे हुए। पहला निशान इन वाक्यो पर—'यह पुस्तक मै ने कच्छ-समझौते के बाद लिखी है। प्रयास यही है कि गाधीजी की अहिसा को जनता के सामने वास्तविक रूप मे रखू।'

पुस्तक के हर दूसरे-तीसरे पृष्ठ पर कोई-न-कोई निशान। सईदा कुछ अश सरसरी निगाह से पढती रही। पुस्तक निस्सन्देह अच्छी थी,

लेकिन विषय इतना गम्भीर था कि गाडी मे पढना असम्भव लगा । वैसे भी, उस की मन स्थिति सम्भली हुई नही थी ।

ऊब के बावजूद एक अश ने उस का ध्यान आकर्षित कर लिया—'गाधीजी ने यह कभी नही कहा कि हमेशा सहते रहो । शान्ति मे उन का अनोखा विश्वास था, लेकिन शान्ति के लिए आत्म-सम्मान की कीमत चुकाना उन्हे कभी गवारा नही हुआ । उन्होने कहा था कि शान्ति तो पत्थर और कब्र मे भी होती है । पिछले अनेक सालो से हम यह भूलते रहे है कि गाधीजी ने कायरता और हिसा मे से हमेशा हिंसा का ही चुनाव करने की राय दी थी "

उस ने किताब बन्द कर दी—लेखक सूझ-बूझ का व्यक्ति लगा, तो भी । उस ने प्रकाशक का नाम याद रख लिया और तय किया कि मौका मिला तो दिल्ली खरीदूगी ।

भागती जमीन ! फिसलते गाव ! खेत ! कितने शान्त है ये—और छम्ब-जोरिया मे मौत नाच रही है। सरगोधा और चकलाला पर बमबारी कर रहा बलवन्त लगागार कैसा उत्तेजित रहता होगा ! सईदा ने खिडकी के चौखट पर माथा टिका कर आखे मूद ली ।

"लीजिए, आप का अखबार ।"

सईदा ने आखे खोली और जरा तन कर बैठते हुए कहा, "शुक्रिया !" उस ने 'नई अहिंसा' वापस कर दी । बुजुर्ग उठा और नीचे पडे एक बिस्तर को लाघता हुआ दरवाजे की ओर बढा ।

गाडी किसी स्टेशन पर रुक रही थी । बुजुर्ग उतर गया ।

उस के बाद वह सीट दिल्ली तक खाली रही ।

उनतीस

क

खुद अख्तर को हैरानी थी कि उसे क्या हो गया है ।

जयपुर मे तीन-चार दिन ही मुश्किल से बीते थे और उस के दिमाग पर सईदा का याद धुंध की तरह छा गई । वे मिर्जा इस्माइल रोड के एक अच्छे होटल मे ठहरे थे, जहा उन्होने अपने को सैलानी बताया था। इस नाते उन का अधिकाश समय जयपुर 'देखने' मे बीतता । वे हवामहल देख रहे होते या आमेर का किला, अख्तर के मन मे सईदा का ही नाम घुट रहा होता । वह दिल्ली जाना चाहता था, फिर इस मे कितना भी खतरा क्यो न हो ।

अकेले जाने की बात होती तो वह कब का चला गया होता, लेकिन उस ने महसूस किया था कि यह सब अकेले नही होगा । सहयोगी से वह मिन्नतें कर रहा था, लेकिन सहयोगी तब तक दिल्ली चलने के लिए तैयार नही था, जब तक युद्ध का तनाव कम न हो । "अभी वहा खुफिया विभाग इतना चौकस होगा कि ..."

यह जानते हुए भी कि उस की बात सच है, अख्तर ने उत्तर दिया, "खतरा जितना वहा है उतना ही यहा । मुझे तो तुम्हारे इन्कार के पीछे कायरता की बू आती है ।"

"यह कायरता नहीं, अक्लमन्दी है ।"

"हम दलीले देते रहे तो इस का कोई किनारा नही । सौ बात की एक बात । मुझे दिल्ली जाना है और उसे उठा लाना है । दोस्त के नाते तुम्हे मेरी मदद करनी चाहिए । बदले मे मैं तुम्हे नकद तो कुछ नही दे

सकता, सिर्फ यही कह सकता हू कि आगे जब भी मौका पडेगा, मै तुम्हारा पूरा साथ दूगा—जान का जोखिम उठा कर भी ।"

सहयोगी मुस्कराया, "फुसला रहे हो ?"

"आजमा कर देख लेना ।"

"अख्तर मैं तुम्हे काफी दिनो से जानता हू । इन दिनो हम साथ-साथ है और अच्छे दोस्त हो गए है, लेकिन माफ करना, जितना ईमानदार दोस्त मै हू, तुम नही । तुम हमेशा अपने मतलब को पहले ध्यान मे रखते हो ।" सहयोगी ने उसे सिगरेट देते हुए कहा, "जब तक किम तुम्हारे पास थी, तुम इस लडकी का नाम भी नही लेते थे ।"

"क्या बात करते हो ! मै बाकायदा उस से मिलने जाता था ।"

"याने तुम किम से बेईमानी कर रहे थे ।"

"किम भी तो कइयो "

"छोडो मुझे बहस नही करनी ।"

"चलो, मैं बिना बहस किए मान लेता हू कि तुम मुझ से अच्छे दोस्त हो । अच्छे दोस्त के नाते तुम्हे साथ देना ही चाहिए ।"

सहयोगी आखिर मान गया । उस के मन मे भी एक इरादा उभर आया था, लेकिन उस ने उसे छिपा लिया । बहुत देर तक वे कई योजनाए बनाते और फेल करते रहे । होटल का कमरा अच्छी तरह बन्द था और उन के स्वर बहुत धीमे । उन्होने घण्टी दबाई और बैरे के आने पर खाना कमरे मे ही लाने के लिए कहा । बैरा चला गया । उन्होने ट्राजिस्टर खोला । दिल्ली से फिल्मी गीत प्रसारित हो रहे थे, लेकिन सभी वीरता और देशभक्ति के । अख्तर मीटर बदलने जा ही रहा था कि गीतो का कार्यक्रम समाप्त हो गया । एनाउन्सर ने कहा, "अब समाचार होगे ।"

समाचार ! पता नही कौन-से पाकिस्तानी हवाई-अड्डे पर बमबारी की गई हो, कौन-से नए या पुराने मोर्चे पर भारत ने उसे मात दी हो,

उस के और कितने सैबर-जेट तबाह कर दिए हो। सैबर-जेट और पैटन टैंक !

पाकिस्तान रेडियो से उन्हे ठीक उल्टी खबरे सुनने मिलती। हिंदुस्तान हार रहा है। हिन्दुस्तान पीछे हट रहा है। पाकिस्तानी फौजो को दिल्ली पहुचने मे देर नही। हिन्दुस्तान के सारे मिग विमान तबाह हो गए।

अख्तर सब समझता था।

बैरा मेज पर खाना रख रहा था, तब ट्राजिस्टर ने शुरू किया, "यह आकाशवाणी है। रात के सवा आठ बजे है। अब आप से समाचार सुनिए "

बैरे को चले जाना चाहिए था, लेकिन वह रुका रहा। वह ट्राजिस्टर की ओर देख रहा था। जितने ध्यान से वह सुन रहा था, उस से अख्तर को कुढन हुई। उस ने डाट दिया, "क्या है ? क्यो खडे हो यहा ?"

बैरा कमरे से तो निकल गया, लेकिन दरवाजे के पास, दीवार की ओट ले कर सुनने लगा। अख्तर को गुस्सा आया, पर सहयोगी ने उसे चुप रहने का इशारा किया। अख्तर ने थोडी देर तक तो सब्र किया, लेकिन जब बैरा वहा से हटा ही नही, उस ने उठ कर भडाक से दरवाजा बन्द कर दिया। लौट कर वह ट्राजिस्टर को धीमा भी करने लगा। सहयोगी ने कहा, "अजीब आदमी हो ! सुन लेता तो क्या बिगड जाता तुम्हारा ?"

"बैरे ! पान वाले ! ठेलो वाले ! पालिश वाले ! इन लोगो को क्या दिलचस्पी है ?" वह चिढता हुआ बोला।

सहयोगी खामोश रहा।

"ब्रिटेन के प्रधान-मन्त्री श्री हैरोल्ड विल्सन ने इस पर बडा आश्चर्य और क्षोभ प्रकट किया है कि भारत ने अपनी फौजे पाकिस्तान मे भेज कैसे दी। याद रखने की बात यह है कि उन्हे उस समय कोई आश्चर्य नही हुआ था, जब पाकिस्तान ने कश्मीर मे सशस्त्र घुसपैठिए भेजे और

उस के बाद भारत पर खुला आक्रमण भी कर दिया। ये समाचार आप आकाशवाणी से ”

अख्तर और सहयोगी मुस्कराए।

“—सुन रहे है। विश्वस्त सूत्रो से पता चला है कि रूस दोनो देशो मे शान्ति-स्थापना के लिए अपना सहयोग देने को पहले से कही ज्यादा उत्सुक है ”

बन्द दरवाजे पर ठक-ठक। अख्तर ने सिटकनी खोली। होटल का मैनेजर खडा था। “सॉरी टु डिस्टर्ब यू ” कहता हुआ वह भीतर आया।

“—अमरीका ने भारत और पाकिस्तान को मिलती आर्थिक सहायता पर पूरी रोक लगा दी है। इस से पहले वह दोनो देशो की सैनिक सहायता भी काट चुका है। अमरीका के इस कदम पर भारत ने असतोष प्रकट करते हुए कहा है कि दोनो देशो को एक ही श्रेणी मे रखना बहुत बडी भूल है। जिस पर हमला किया जाए, उसे हमलावर के साथ ही बिठा कर अमरीका ने निश्चय ही अपनी तटस्थता का परिचय नही दिया ”

मैनेजर सुनता रहा। वह कुर्सी मे बैठ गया और शरीर का सारा भार एक कोहनी पर रखता हुआ ट्राजिस्टर की ओर झुका। एकाएक वह उठा और बोला, “आप लोग खाना खा लीजिए। फिर मैं कुछ बातें करना चाहूगा।”

“नही, नही, आप इसी समय कर सकते हे।” सहयोगी ने उत्तर दिया।

“मैं यह कहने आया था कि आप हमारे बैरो को मसलन, अभी आप ने एक बैरे पर गुस्सा निकालने के लिए जोर से किवाड बन्द किए • और भी कई बाते है शुरू से ही हमारे बैरो को आप से शिकायत ”

“आय'म सॉरी। आइन्दा ध्यान रखेगे।” सहयोगी ने कहा।

मैनेजर जाने लगा, लेकिन ठिठक गया। उस ने चमकती आखो से ट्राजिस्टर की ओर देखा।

"सभी मोर्चो पर शत्रु से डट कर लोहा लिया जा रहा है। सिर्फ चौबीस घण्टो मे पचहत्तर पाकिस्तानी टैंक तबाह कर दिए गए। इस प्रकार तबाह किए गए टैंको की कुल सख्या एक सौ चौदह हो जाती है। अभेद्य, अजेय माने जाते पैटन टैंको के ऐसे सहार ने अमरीका को भी चौका दिया है। देश की आपत्कालीन स्थिति को देखते हुए सन्त फतहसिंह ने पजाबी सूबे के लिए आमरण अनशन करने का अपना निर्णय त्याग दिया है। उन की इस घोषणा का सर्वत्र स्वागत किया गया।"

मैनेजर उत्साहित होता हुआ चला गया। अख्तर को लगा, सीधा वह होटल के रेडियो के पास जा बैठा होगा।

अख्तर सहयोगी से उलझने लगा, "तुम ने 'सॉरी' क्यो कह दिया ? बैरो की आखिर औकात क्या होती है ? क्यो कहे हम 'सॉरी' ?"

"औकात की बात छोडो। खामखाह किसी से उलझने से हमारा कौन-सा भला हो जाएगा ?"

"अन्त मे आप मुख्य-मुख्य समाचार फिर सुन लीजिए। रावलपिडी मे आज सयुक्त-राष्ट्र-सघ के महासचिव ऊ थां और प्रेसिडेण्ट अय्यूब खा मे वर्त्तमान युद्ध-स्थिति पर डेढ घण्टे तक वार्ता होती रही। वार्ता का परिणाम अभी गुप्त रखा गया है। सधि-वार्ता के सिलसिले मे ऊ थां शीघ्र ही भारत आएगे "

ख

नौ सितम्बर '६५। रात्रि।

'प्रिय सईदा,

आज ही जम्मू पहुचा हू। फिर मै पठानकोट, गुरदासपुर होता हुआ

अमृतसर जाना चाहता हू, जहा नौ सितम्बर तक पाकिस्तान ने अठारह बार हवाई हमले किए है। वहा की विमानभेदी तोपे इतनी अचूक रही है कि पाकिस्तान के सैबर-जेट वहा हमला करने नही, अपना नाश कराने ही पहुचते हे। अभी कल दो जेट और मार गिराए गए।

जम्मू मे भारतीय फौजी कार्रवाइया इतनी ज्यादा हैं और शत्रु के हमलो का खतरा भी इतना है कि यहा के लोगो को भयभीत होना चाहिए, लेकिन ऐसा नही है। सामान्य जीवन इतना व्यवस्थित है, मानो लडाई यहा के लिए रोज की बात हो।

रात होते ही चारो ओर सन्नाटा छा जाता है, क्योकि किसी भी वक्त दुश्मन हवाई-जहाज की डरावनी गूज और बमबारी की गर्जनाए शुरू हो सकती है। तुरन्त हमारी विमानभेदी तोपे गोले बरसाने लगती है और शत्रु जान बचा कर भाग निकलता है। बौखला कर वह आसपास के गावो मे बम और राकेट फेक देता है। नागरिको पर ऐसी बमबारी निहायत भोडी बात है, लेकिन पाकिस्तान मे इतनी शालीनता होती तो वह युद्ध ही क्यो शुरू होता! इस्लाम के नाम पर लडने के बावजूद पाकिस्तान ने जोरिया की एक मस्जिद पर बमबारी की और नमाज पढ रहे पचास लोगो को मौत के घाट उतार दिया। जम्मू क्षेत्र मे भी उस ने एक गुरुद्वारा नष्ट किया। पता नही, इस नासमझी के पीछे पाकिस्तान की क्या योजना है। इस तरह तो वह अपने ही देश के मुसलमानो की सहानुभूति खो देगा। लगता है, अमरीका ने सारे हथियार बन्दरो के हाथ मे दे दिए हैं।

मेरा कैमरा घुसपैठियो ने तोड दिया था, यह मैं तुम्हे लिख चुका हू। यहा एक कैप्टन को इस का पता चला तो उस ने अपना बहुमूल्य कैमरा मुझे भेट मे दे दिया। छम्ब सेक्टर मे मैं ने एक्चुअल फाइटिंग की चीखो-चिल्लाहटो और गरजती आवाजो की टेप-रिकार्डिङ्ग की है। दिल्ली लौट कर सुनाऊगा।

अमृतसर मे शायद बलवन्त से मुलाकात हो उस ने तो वायु-सेना के अनेक करिश्मो का सेहरा अपने माथे पर ले लिया। मुझे तो खुशी होती ही है, सोचता हू, तुम्हे कितनी होती होगी ! और डाक्टर सिंह को · ’

ऐरो ने हाक के काले पाइप की ओर देखते हुए कहा, “भार्गव साहब से कभी मुलाकात न होने के बावजूद वह हमारे कितने करीबी दोस्त हैं ! और उन को यह मालूम भी नही !”

हाक हसने लगा।

लिफाफा बन्द कर के उन्होने ऊपर से गर्म इस्तरी फेर दी।

ग

दिल्ली-दुग्ध-योजना के बूथ से बोतले ले कर लक्ष्मी का लौटना रोज सुबह इसी समय होता था, लेकिन हीरेन्द्रजी अपनी कार को चमकाते कभी नजर न आते। उन का यह कार्यक्रम प्राय एक घण्टे बाद शुरू होता।

लेकिन आज वह कार के विड-स्क्रीन पर कपडा रगड रहे थे। उन्होने खाकी हाफ-पेंट पहन रखी थी। बालो से आच्छादित उन के मोटे पैर घुटनो से काफी ऊपर तक अनावृत थे। ‘आज इन्हे जल्दी कही जाना होगा।’ लक्ष्मी ने सोचा। हीरेन्द्रजी से निगाह मिलते ही उस ने हाथ जोड दिए।

“नमस्कार ! नमस्कार !” उन्होने तपाक से कहा, “कहिए, क्या हालचाल है ? भार्गवजी कब लौटेंगे ?”

“अभी तो कुछ पता नही। खत आया है कि जम्मू पहुच गए हैं और वहा से पठानकोट, गुरदासपुर होते हुए···”

“मैं समझ गया, वह अमृतसर पहुचेंगे। है न ?”

"जी हा।"

"कुछ भी कहिए, साहब, सच तो यह हे कि अमृतसर के लोगो की हसरते पूरी हो रही है। कहते है, ज्यो ही जेट विमानो की आवाज सुनाई देती है, वे छतो पर निकल कर चिल्लाते है, 'वह आया! वह आया!' और जब तक 'वह गया!' कहते है, समसुच जेट की धज्जिया उड जाती है। लोगो को छत पर निकल आने से कोई डर ही नही लगता। वाह रे अमृतसर! जैसे लडाई नही, पतगबाजी हो रही हो!"

"मैं चलू, कुछ तैयारी करनी है।" लक्ष्मी को भय लगा, कही यह लम्बी बातचीत न छेड बैठे।

"हा, हा जरूर। लेकिन सुनिए?"

वह रुकी।

"सुना है, आप दिल्ली से जा रही हे? 'वह' कह रही थी कि "

"जी हा। अम्मा गाजियाबाद मे हैं। उन्ही के यहा चली जाऊगी— जब तक यह ब्लैक-आउट नही हटता। अम्मा ने ब्लैक-आउट पहली बार देखा है, इस लिए उन के मन मे मुझे भी यहा अकेले मे डर लगता है।"

"फिर बच्चो की पढाई?"

"मैं घर पर कराती रहूगी। पिछडेगे नही—काफी तेज है। अच्छा जी, चलती हू। नमस्ते!" लक्ष्मी ने फिर हाथ जोड दिए। जाते-जाते भी उसे कहना पडा, "अभी कुछ घण्टो मे।" क्योकि हीरेन्द्रजी ने पूछा था, "कब जाएगी?"

विड-स्क्रीन की सफाई से सन्तुष्ट होने के बाद हीरेन्द्रजी गन्दे पानी की बाल्टी उठाए हुए भीतर चले गए। उन के यहा दो दिनो के लिए एक मित्र महोदय ठहरे हुए थे। हीरेन्द्रजी का भीतर जाना और उन का नहा-धो कर कमरे मे आना साथ-साथ हुआ।

"बताइए, कोई तमीज है?" हीरेन्द्रजी बाल्टी उठाए हुए रुक गए

और बोले ।

"किस बारे मे कह रहे है ?"

"यही—पाकिस्तान।"

"कोई विशेष बात ?"

"माने तो सभी विशेष है, न माने तो कुछ भी नही ।" कहते हुए हीरेन्द्रजी ने जोर से आवाज दी, "रामू ! स्नानागार मे तौलिया और साबुन रखो । हम आ रहे है ।" फिर मित्र महोदय से मुखातिब हो गए, "आज का अखबार देखा ? एक भारतीय लडका दुश्मन के हवाई-जहाज पर वार करने ही जा रहा था कि रुक गया । उस हवाई-जहाज पर लिखा था—आई० ए० एफ० । फौजो के सभी काम कम्बख्त अग्रेजी मे होते है, वरना लिखा होना चाहिए—भारतीय वायु-सेना के लिए भा० वा० । बहरहाल वह हवाई-जहाज और पास आया तो पता चला कि यह तो सैबर-जेट है । तुरन्त तोप चली और सैबर की धज्जिया उड गई । लेकिन भला बताइए, कोई तमीज है ? दुश्मन हवाई-जहाज पर भारतीय निशान बने हो तो कौन पसोपेश मे न पड जाएगा ? वह तो हमारे उडाके की तेज आखे और आशु-बुद्धि थी कि "

"अब एक नई कहावत बन सकती है—पाकिस्तान का दिमाग, शैतान का घर !"

"नही । पाकिस्तान का दिमाग, अमरीका और चीन का घर !" हीरेन्द्रजी अपना स्वर चबाने लगे, "अमरीका ने कोई कसर छोडी हो तो कहे ! अब तक वह पाकिस्तान को बीस अरब रुपयो की सैनिक सहायता दे चुका है । बीस अरब ! कहा है, अति सर्वत्र वर्जयेत् !" और वह बाल्टी का गन्दा पानी फेंकने चले गए ।

लौट कर बोले, "न जनसघ का जुलूस उतना अनोखा रहा होता, न शास्त्री सरकार को इतनी सख्ती बरतने की प्रेरणा मिलती । इस सघर्ष मे आप जनसघ के महत्व से इन्कार नही कर सकते । शास्त्रीजी को

जनसघ ने ही आश्वासन दिया कि जब भी जरूरत हो, गिनती के घण्टो की पूर्व-सूचना दीजिए । हम सारे देश मे मजबूत नागरिक सेना खडी कर देगे । दूसरे कौन-से दल मे है इतनी एकता, इतना सगठन ?"

घ

सुबह-सुबह जयपुर से आई पैसेजर पुरानी दिल्ली के स्टेशन पर रुकी और भीड उतरने लगी । अपनी दो-दो अटैचिया उठाए हुए वे प्लेटफार्म से बाहर आए ।

फतहपुरी के जिस होटल मे अख्तर कभी ठहर चुका था, फिर से वही जाना उन्हे असुरक्षित लगा । उस से काफी दूर के एक होटल की अख्तर को जानकारी थी, जहा ग्राहको के लिए 'हर तरह की' सुविधाए जुटाई जाती थी । वहा उन्होने दो छोटे, लेकिन अलग-अलग कमरे बुक किए । दोनो नहाए-धोए, फिर अटैची मे से चमडे के दो बैग निकाले । वे काफी फूले हुए थे । सारी 'आवश्यक' चीजे रख कर उन्हे जयपुर मे ही 'तैयार' कर लिया गया था । अटैचियो के ताले लगा कर उन्होने होटल के मैनेजर द्वारा दिए गए दो बडे ताले अपने-अपने कमरो की कुण्डियो मे डाले और बाहर निकल पडे ।

कनाट-प्लेस पहुच कर उन्हे चाय पीने की इच्छा हुई । वे एक मामूली होटल मे चले गए और आर्डर दिया । चाय रखी ही गई थी कि बाबूनुमा दो युवक अन्दर आए और उन के साथ वाली दूसरी मेज पर बैठ गए ।

सुबह के लगभग दस बज रहे थे ।

अख्तर और सहयोगी गम्भीरता से चुप थे । चुप्पी के कारण वे उन दोनो की बाते न चाहते हुए भी सुनते रहे । जब वे आए थे, उन की आवाजे धीमी थी । अब वे तेज हो गई थी, लेकिन शायद उन्हे इस का पता नही था ।

"पाकिस्तान ? पाकिस्तान हम से पूरे छह मामलो मे आगे रहा है। हम क्या खाक उस की बराबरी करेंगे !" पहले युवक ने कहा। (अख्तर और सहयोगी की मेज पर बैरा चाय की ट्रे रखता हुआ।)

"छह मामलो मे ?"

"जी हा, जनाब, छह मामले ! पूरे आधा दर्जन।"

"कौन-कौन से ?" (अख्तर व सहयोगी चीनी मिलाते हुए। निर्विकार।)

"गिन ! नम्बर एक—उन्होने हम से पहले खुली लडाई का ऐलान किया।"

"मालूम है। आगे ?"

"नम्बर दो—उन्होने हम से पहले इण्टरनेशनल बार्डर पार कर के जग छेडी। नम्बर तीन और चार—छम्ब मे उन्होने हम से पहले टैंको का इस्तेमाल किया और अमृतसर पर राकेट गिरा कर हवाई जग भी हम से पहले शुरू की।" (सहयोगी के चेहरे पर मुस्कान का हल्का आभास। दोनो चुस्किया लेते हुए।)

"नम्बर पाच—द्वारिका पर बम्बार्डमेंट कर के उन्होने हम से पहले नैवी का इस्तेमाल किया। नम्बर आधा दर्जन—हम उन के जहाज जब्त करते, इस से पहले, कराची मे खडे हमारे जहाज उन्होने जब्त कर लिए।"

"क्या लेंगे, बाबू सा'ब ?" बैरे ने आ कर उन से पूछा।

युवक ने जैसे चुनौती दी, "जो मगाए, ला देगा ?"

"होगा तो बाबू साहब, लाएंगे क्यो नही ?"

"तो ला—आधा सेर अय्यूब ! दो छटाक भुट्टा—नही, भुट्टो ! और और ला एक पीस पैंटन टैंक ! दो पीस सैबर-जेट · और ·· और "

अख्तर उठा। सहयोगी उसे रोक पाता, इस से पहले वह युवको के

सामने पहुच चुका था और कह रहा था, "इतना ही जोश है, जनाव, तो यहा क्यो बैठे हे ? जाइए फ्रण्ट पर और लडिए।"

दोनो युवक चुप हो कर उसे ताकने लगे। एक ने नाराजगी ने कहा, "आप को हमारी बातो मे टाग अडाने की जरूरत ?"

"टाग अडाने की बात नही ह, आप लोग जो गाली-गलौच कर रहे है "

"आप तो मजाक को भी गाल-गलोच समझने लगे। नाराज क्यो होते है, भाई सा'ब ? आगे पाकिस्तान से दोस्ती हो गई तो ये मजाक कौन करने देगा ?"

सहयोगी ने लौट आने का इशारा किया, लेकिन अख्तर बिफर-सा गया था। बोला, "यही तो दिक्कत ह ! हिन्दुस्तानी लोग बाते खूब करते है। मजाक भी खूब करते है, लेकिन काम करने का मौका पडता है तो घर मे जा छिपते हे।"

"सोच-समझ कर बात करिए। मोर्चे पर जितने गए है, उतने ही पाकिस्तान के दात तोडने के लिए काफी है। जिस दिन नाकाफी होगे, हम यहा दिखाई नही पडेगे—समझे ? बाते तो सिर्फ आप जैसे सफेद-पोश करते है।"

सहयोगी बाह पकड कर अख्तर को वापस खीच लाया, "क्यो तुम खामखाह सब से उलझते हो ?"

अख्तर घुटने हिलाने लगा।

चाय पी कर उन्होने बिल भुगताया और दस पैसो की टिप छोड कर बाहर निकले। सामने ही एक टेलिफोन-बूथ था।

"रेडियो-स्टेशन फोन कर के पूछे तो सही कि आज उस की ड्यूटी कब से कब तक है ?" अख्तर बोला।

"हा। आओ।"

दोनो ने बूथ मे प्रवेश किया। अख्तर नम्बर मिलाता रहा। दो बार

इगेज्ड मिलने के बाद आपरेटर ने रिसीवर उठाया, "ब्राडकास्टिंग प्लीज ?"

"हैलो ! गिव भी एक्सटेन्शन नम्बर—।" अख्तर ने शान्त स्वर मे कहा। उस की धडकन मे कोई फर्क नही आया था। कमरे का फोन यदि सईदा उठाएगी तो वह उसे उस की 'हैलो' से ही पहचान लेगा। तब वह बिल्कुल चुप रहेगा। सईदा दो-तीन बार 'हैलो ! हैलो !' कर के फोन रख देगी। अख्तर सचमुच उत्तर नही देगा, क्योकि सईदा से ही उस की ड्यूटी का समय पूछने पर वह पूछने वाले का नाम जानना चाहेगी। यदि किसी और ने फोन उठाया, तभी जरूर कुछ बोलेगा।

एक्सटेन्शन नम्बर—मे घण्टी होने की चाप ईयर-पीस मे सुनाई देती रही। फोन उठाया गया। घण्टी बन्द हो गई, लेकिन 'हैलो' सुनाई न पडी। दस-बारह सेकण्ड के इन्तजार के बाद अचानक तेज आवाज आई, "किडीकोको ! किडीकोको ! डोओ !"

हडबडा कर अख्तर ने फोन रख दिया।

"क्या हुआ ?" सहयोगी ने पूछा।

"कोई उठा ही नही रहा।"

"आओ, थोडी देर बाद कर लेंगे।"

बूथ के बाहर वे ही युवक इन्तजार करते दिखाई दिए। उन मे से एक आगे आया और अख्तर से बोला, "माफ कीजिएगा, बाबूजी, अगर आप नाराज न हो तो "

"कहिए ?"

"आप घुसपैठिए तो नही है ?"

"क्या बकते हो !" बिना चौंके, बेहद-बेहद गुस्से के अभिनय के साथ अख्तर ने आखे तरेरी।

"क्या मै आप का बैग देख सकता हू ?"

अख्तर ने बैग को पीछे किए बिना ही करारे स्वर मे कहा, "हद है

बदतमीजी की ।"

सहयोगी जासूस ने क्रोधित हो कर युवक की बाह पकड ली, "मिस्टर ! समझते क्या हो अपने को ? ऐसा झापड मारूगा कि "

युवक ने ठहाका लगाया । दूसरा युवक भी जोरो से हसने लगा और बोला, "ल्लो ! बाबूजी फिर नाराज ! अरे साहब, हम तो मजाक कर रहे थे ! आप भी क्या छोटी-छोटी बातो मे "

वे हसते हुए चले गए ।

"कम्बख्त !" अख्तर ने मुट्ठी कस ली।

उस समय तो नही, अब उसे कुछ-कुछ झुरझुरी हो रही थी ।

"सब तुम्हारे कारण हुआ । तुम्ही जा कर उन से उलझे थे ।"

"अच्छा, बाबा, अच्छा ! अब खुदा के लिए कही चल कर बैठो ! डू यू अण्डरस्टैण्ड ? आई वाण्ट टु सिट्-डाउन ।"

सहयोगी ने उस के गले मे हाथ डाला जो उसे काफी अच्छा लगा । वे कनाट-प्लेस के पार्क मे एक सूनी बेंच पर बैठ गए ।

'कुछ घण्टे !' अख्तर ने सोचा, 'फिर मै उसे ले जा रहा होऊगा ।'

लगभग आधे घण्टे बाद उन्होने रेडियो-स्टेशन मे दूसरी बार फोन किया । रिसीवर सईदा ने नही, किसी और ने उठाया । अख्तर ने पूछा "क्या आप बता सकते है, सईदाजी की ड्यूटी कब तक है ?"

"कौन साहब बोल रहे है ?"

"कोई भी होऊ ! बिना नाम पूछे नही बता सकते क्या ?"

"आय'म सॉरी !" फोन निश्चय ही किसी सज्जन व्यक्ति ने उठाया था, "नाम पूछने की मेरी आदत है । लीजिए, आप सईदाजी से ही बात कर लीजिए । वह आ गई है ।"

अख्तर ने उसी क्षण फोन रख दिया और कुढते हुए कहा, "यार ! हर बार कोई-न-कोई अडगा "

ड

"अरे ! आप ?" डाक्टर सिह ने साश्चर्य कहा ।

आगे बढ कर उन्होने डाक्टर सलूजा से हाथ मिलाया । दौरे के बाद यह उन की पहली मुलाकात थी । सलूजा का स्वास्थ्य पहले से काफी अच्छा हो गया था । बोले, "मै ने सोचा, चिट्ठी लिखने की बजाय खुद ही चला चलूँ । सिस्टर भी साथ आई है ।"

"ओह !" डाक्टर सिह ने देखा कि उन की छोटी बहन, जिस से इलाहाबाद मे मुलाकात हुई थी, टैक्सी से उतर कर नमस्कार कर रही है ।

"नमस्ते ! ए वेरी हैपी सरप्राईस ।" उन्होने हसते हुए कहा, "एकाएक कैसे ?"

"सब बताएगे, सामान तो रखवाइए घर मे !" वह बोली । डाक्टर सिह को वह पहले से कुछ मोटी लगी, लेकिन इतना फैलाव उस के व्यक्तित्व को आब दे रहा था । उन्हे उस का नाम याद न आया । हजारे टैक्सी से सामान उतरवाने मे लगा था । टीपू पास ही खडा दुम हिला रहा था । नाम अकस्मात् याद आया—सुलोचना ।

डाक्टर सलूजा और सुलोचना नहा-धो चुके तो काफी बनवाई गई । मेज पर साथ देते हुए डाक्टर सिह ने कहा, "आज इस घर मे तीन डाक्टर इकट्ठे हुए है—पहली बार ।"

सुलोचना हस पडी, लेकिन हसी के पीछे एक विषाद छिपा हुआ था : सलूजा निर्विकार रहे ।

डाक्टर सिंह ने पूछ ही लिया, "क्या बात है ? आप दोनो मुझे कुछ उलझे-उलझे-से· आप के दिल्ली आने की मुझे वाकई खुशी है, लेकिन इस तरह एकाएक आने के पीछे जरूर कोई "

"इन्होने जिद पकडी कि मुझे राजधानी का ब्लैक-आउट देखना है ।"

सुलोचना ने अपने भाई की ओर निगाह फेरी ।

सलूजा ने तपाक से कहा, "हा, बेशक ! मैं अधेरे मे छिपी राजधानी देखना चाहता हू । मैं बहुत दुखी हू और अकेला पड गया हू, क्योकि ल कोरबूजिए हमेशा के लिए चले गए है । वह महान् कलाकार थे, भारत को बहुत ही प्यार करते थे । तीन सितम्बर को पैरिस मे उन्हे भारतीय राजदूत ने गगाजल मे—बाकायदा, साहब, गगाजल से श्रद्धाजलि दी । जैसा कि आप जानते है, मै आकाश के अलावा और भी कई बातो मे दिलचस्पी ले रहा हू । लेने की कोशिश मे हू । यह कोशिश आप को नकली लग सकती है, लेकिन नही, ऐसी बात नही । मै जानता हू कि दार्शनिक श्वाइत्जर की भी मृत्यु हो गई है । उन्हे मानवीय सेवाओ के लिए सन् ५२ मे शान्ति का नोबेल पुरस्कार मिला था ।"

सलूजा एक साथ इतना कुछ बोल जाएगे, डाक्टर सिह के लिए यह अप्रत्याशित था । उन्होने सुलोचना की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि उठाई । सुलोचना हसी, "बोलने का इन का मर्ज बढता जा रहा है ।"

"मर्ज ?" सलूजा ने एतराज उठाया, "तुम इसे मर्ज कहती हो ? बोल कर मै अपनी आवाज सुन सकता हू । तब अहसास होता है कि मै जिन्दा हू । यह मर्ज नही, माई डियर सिस्टर, अहसास है अहसास !"

डाक्टर सिह ने विषय-परिवर्तन करना चाहा, "छोडिए आप लोग जानते ही होगे, मेरा भतीजा एयर-फोर्स मे है और अभी फ्रण्ट पर लड रहा है ।"

"हा, याद आया· आप ने एक बार बताया तो था ।" सलूजा बोले ।

"उसे वीरता के लिए राष्ट्रपति ने सम्मानित भी किया है ।"

"वेरी गुड । आय'म रियली हैपी । पृथ्वी एक रज-कण से भी गई-बीती है लेकिन आश्चर्य ! उस पर वीरता की कितनी कीमत है !"

काफी पी जा चुकी थी और डाक्टर सिह समाचार सुनना चाहते

थे। उन्होने रेडियो खोल दिया। 'समाचार होगे, तब तक सलूजा चुप रहेगे।' उन्होने सोचा। अन्दाजा सही निकला।

"—किस्तान ने भारत के गैर-सैनिक ठिकानो पर बमबारी करने मे और तेजी ला दी है। नागरिको पर हवाई हमले कर के वह जनता मे भय फैलाना चाहता है, लेकिन भारत की जनता ने इसे एक चुनौती के रूप मे ही लिया है। पूरे विश्व को आशका थी कि इस हमले से भारत मे आन्तरिक विद्रोह भडक उठेगा, लेकिन ऐसा नही हुआ। भारतीय मुसलमानो ने भी विभिन्न सभाओ और गोष्ठियो मे यह स्पष्ट कर दिया है कि वे पूरी तरह भारत के साथ है।

"पाकिस्तान ने असम मे कई छाताधारी सैनिक उतारे है। दिल्ली के आसपास भी अनेक छाताधारी जासूस उतरे है, जिन की खोज सरगर्मी से की जा रही है। ऐसे जासूसो को पकडने या इस मे सहायता देने वाले नागरिको के लिए पाच सौ रुपए के पुरस्कार की घोषणा हुई है।"

समाचार समाप्त होने पर डाक्टर सिह ने सलूजा को कुछ पत्रिकाए दी और कहा, "इन्हे देखिए, मैं अभी आया।" वह पिछवाडे के बगीचे की ओर चले गए। जाते-जाते उन्होने सुलोचना को उस तरफ आने का सकेत दिया। सुलोचना आई। उस के होठ काप रहे थे। आखें गीली हो आई थी।

डाक्टर सिंह चुप रहे। वह चाहते थे, शुरूआत सुलोचना ही करे। वह बोली, "डाक्टर साहब, आप को तकलीफ देने के लिए मुझे कितना खेद है, कह नही सकती, लेकिन क्या करती "

"नही, नही, खेद की कोई बात नही, यह बताइए कि सलूजा साहब···"

"इन्हे किसी मानस-शास्त्री को दिखाना होगा। इन्हे उन्माद हो गया है। हमेशा आकाश की बाते करेगे या फिर ऐसे-ऐसे विषय छेडेंगे कि सब बेतुका लगे। मैं इन की सारी जिदें पूरी करती जा रही हू। न

करू तो आफत ला दे। यह दिल्ली का ब्लैक-आउट देखना चाहते हैं। ठहरना भी आप ही के यहा चाहते है, वरना मैं इन्हे किसी होटल मे खैर ब्लैक-आउट देखने का यह शौक चार-छह दिनो मे पूरा हो जाएगा तो इन्हे साथ ले कर मैं तुरन्त लौट जाऊगी। रियली, मैं आप को डिस्टर्ब नही करना चाहती, लेकिन ”

“इतना फील मत करिए। मुझे कोई डिस्टर्बेन्स नही होगा। बल्कि आप लोगो के आने से मेरा भी जी बहलेगा।”

“आप कितने व्यस्त होते है, मुझे मालूम है ”

“इन दिनो मैं बिल्कुल खाली हू। वार के समाचारो ने ऐसा तनाव पैदा किया है कि मैं ने आखिरी काम पूरा कर के कल ही दिया। अधिकारियो से कह दिया है कि अब एकाध सप्ताह कुछ नही करूगा। मैं बल्कि सोच रहा था कि अम्बाले से किसी को बुला लू। मेरा परिवार वही है।”

‘फिर भी मुझे लगता है, आप को जरूर खलल पहुचेगा • ”

“बलवन्त मोर्चे पर लड रहा हो, तब भला कोई काम हो सकता है ?” वह हसे। एक आशकित लेकिन गौरवपूर्ण हसी।

च

“सईदाजी, मैं ने आप को एक विशेष कारण से बुलाया है। बैठिए।” उस ने एक कुर्सी की ओर इशारा किया। उस का अधिकाश सिर गजा था, लेकिन उम्र से वह पैतीस से ज्यादा का नही था। सईदा ने उस से कभी बातचीत नही की थी, हालाकि वह जानती थी कि वह रेडियो-स्टेशन का कितना बडा अफसर है और उस के सम्पर्क से कितना लाभ हो सकता है। सईदा को अचरज ही हुआ था कि उस ने उसे क्यो बुलाया है।

वह सकोच के साथ बैठी। कमरे मे उन के अलावा और कोई नही था। चपरासी को बुला कर अधिकारी ने कहा, "कोई मिलने आए तो कह देना कि आधे घण्टे से पहले नही।"

"जी।" चपरासी चला गया। जाते-जाते उस ने सईदा को ध्यान से देखा। इस तरह देखने का सईदा को पता भी चल गया। वह आशकित होने लगी। राखदानी मे से सिगार का कसैला धुआ उठ रहा था।

वह अधिकारी कुछ सेकण्ड तक उस की ओर सीधी निगाह से देखता रहा, तब आगे झुकता हुआ बोला, "सईदाजी, एक बात बताइए।"

"जी ?"

"भार्गव साहब को आप कैसे जानती है ?"

प्रश्न जिस तरह पूछा गया, उस से सईदा को बुरा लगा, लेकिन वह सयत रही। सहसा समझ न पाई कि क्या कहे।

"मैं ने आप से कुछ पूछा।"

"जी लेकिन मैं इस सवाल का कारण जानना चाहूगी।"

"भार्गव साहब अभी फ्रण्ट पर गए हुए है। एम आई रौग ?"

"नो सर !"

"साप्ताहिक 'किरण' मे हर हफ्ते रेडियो की समीक्षा का एक कालम लिखा जाता है। वह छपता है भार्गव साहब के नाम से, लेकिन भार्गव साहब दिल्ली मे नही है। फिर कौन लिखता है उसे ?"

"मैं मैं नही लिखती।"

"मैं ने कब कहा, आप लिखती है ?"

"."

"वैसे, मैं ने सुना है कि आप को लिखने का काफी शौक है।"

"इस का मतलब यह तो नही कि मेरा उस कालम से कोई ताल्लुक "

"ओह ! आप सारी बात अपने ऊपर खामखाह ले रही हैं। लगता

है, घबरा भी गई है। मै ने बिल्कुल नही कहा कि वह कालम आप ही लिखती है। रेडियो मे नौकरी करते हुए रेडियो की ही आलोचना करेगी तो—आप बखूबी समझती होगी, नौकरी छूट जाएगी। मैं जानता हू, ऐसी भूल आप कभी नही कर सकती।"

" "

"पानी मगवाऊ ? आप सचमुच घबरा गई है।"

"जी नही, शुक्रिया। आय एम ओके।"

"उस कालम मे रेडियो की बिल्कुल ताजा बातो की चर्चा होती है। वे बाते, जो भार्गव साहब के दिल्ली छोडने के बाद घटी है। जाहिर है कि कालम भार्गव फ्रण्ट पर से नही भेज रहे।"

". "

"किस सोच मे पड गई ?"

".. "

"घबराने की कोई बात नही। आप का कुसूर इतना बडा नही है कि ."

"याने आप ने पहले से मान लिया है कि कालम मै लिखती हू ?"

"जी नही। मुझे आप से कोई दुश्मनी थोडे ही है। असल मे हुआ यह कि.. "

" "

"मैं 'किरण' प्रेस गया था। वहा के मोनो डिपार्टमेट मे मेरी जान-पहचान है। मैं ने इस कालम की पाण्डुलिपि मगवा कर देखी।"

"..."

"वह टाइप्ड थी, लेकिन बीच-बीच मे टाइप की भूले सुधारी गई थी। उन अक्षरो को मै ने रेडियो-स्टेशन की आप की लिखावट से मिलाया। वे बिल्कुल एक-जैसे है।"

"..."

"मैं ने कालम की बहुत पुरानी पाण्डुलिपिया भी मगवाई। वे भी टाइप्ड थी, लेकिन उन मे भार्गव साहब की लिखावट थी। उन के जाने के बाद से लिखावट बदल गई है और शायद वह आप ही की "

" "

"आप का मौन रहस्यमय है।"

" "

'और लुभावना भी।"

"जी ?"

"मै सबूत के तौर पर एक पृष्ठ ले आया हू।"

'उस कालम मे आकाशवाणी की सिर्फ बुराई कभी नही की गई।"

"बस, चुटकी ली गई है—यही न ?"

" "

"कालम मे बुराई छपती है या नही, वगैरह बाद मे तय होगा। उस के लिए शायद आप को अदालत मे भी जाना पडे सब से पहले तो आप की नौकरी "

"क्या मैं यहा से जा सकती हू ?"

"अभी बातचीत पूरी कहा हुई ?"

"मुझे कहना पडेगा कि रेडियो-स्टेशन अपने को सुधारना नही चाहता। बजाय इस के कि कालम लिखने वाले के पीछे जासूसी की जाती, चाहिए यह था कि खैर · भार्गवजी के कालम मे रेडियो की तारीफ़ भी छप सकती है—छपती रही है।"

"कालम भार्गवजी का या आप का ?"

"अगर जबरन मुझ से 'हा' कहलवाना चाहते है तो "

"नही, नही, जबरदस्ती कैसी। जो भी होगा, आप की मर्जी से होगा। बैठिए, चाय मगवाऊ ?"

"मै एक बार इन्कार कर चुकी हू। शुक्रिया।"

"आप ने इन्कार तो पानी के लिए किया था।"

"मुझे नौकरी से निकालना ही है तो एक नही, अनेक बहाने ढूढे जा सकते है। आप को जो करना हो, करिए। मै जाना चाहूगी।"

"बस, दो मिनट। फिर चली जाइएगा।"

"..."

"फिर चुप हो गईं आप ?"

"आप कुछ कह रहे थे ?"

"वही—जो मै ने अभी कहा—जो भी होगा, आप की मर्जी से होगा। आज आप की ड्यूटी कब तक है ?"

"कह नही सकती। काम ज्यादा है।"

"मुझे मालूम है कि इन दिनो काम ज्यादा रहता है। मेरा मतलब है आप शाम को सात बजे मिल सकती है ? मेरी कार है ही। कही चलेंगे।"

सईदा का चेहरा तमतमा आया।

"या आप चाहे तो मैं सोचने के लिए तीन-चार दिनो का वक्त भी दे सकता हू।"

सईदा ने कुर्सी छोड दी। वह तेजी से मुडी और बाहर निकल आई।

अपने कमरे मे पहुची तो माथा तपने लगा था। जैसे कि दुनिया मे एक रेडियो-स्टेशन ही तो है जहा नौकरी मिल सकती है! रास्कल कही का!

"आय'म सॉरी।" सईदा ने एक एनाउन्सर को फोन पर कहते सुना, "नाम पूछने की मेरी आदत है। लीजिए, आप सईदाजी से ही बात कर लीजिए। वह आ गई है।"

उस ने रिसीवर सईदा की ओर बढा दिया, "आप का फोन।"

मन.स्थिति किसी से भी बात करने की नही थी। "कह दीजिए, नही

हैं।" वह बोली। आवाज काप रही थी। एनाउन्सर ने उस की तरफ़ अचम्भे से देखा, "जी ?"

"कह दीजिए, नही है।"

"लेकिन मै तो कह चुका कि सईदाजी आ गई है।"

'ओह !" हार कर वह फोन के पास आई। रिसीवर मेज पर रख दिया गया था। उठा कर उस ने कहा, "हैलो !"

दूसरी ओर से कोई जवाब न आया।

"हैलो !" वह ज्यादा स्पष्टता व औपचारिकता से बोली, "सईदा स्पीकिंग।"

खामोशी।

"हैलो !" उस ने झुझलाते हुए दोहराया। वही चुप्पी। "कम्बख्त !" उस ने रिसीवर पटक दिया।

"अरे, अरे, अरे ! यह नाराजगी किस पर ?" अनवर ने प्रवेश किया था। उसे कोई उत्तर दिए बिना सईदा एक कुर्सी मे निढाल हो गई और मेज पर सिर टिका कर आखे मूद ली।

"तबीयत तो ठीक है ?" अनवर ने पास आते हुए पूछा।

"जी ? जी हा, बिल्कुल ठीक।"

मूड उखडा हुआ देख अनवर दूसरी ओर चला गया।

थोडी देर बाद सईदा ने छुट्टी की दरख्वास्त लिखी और हास्टल लौट जाने के लिए अपना पर्स सम्भालने लगी। न केवल माथा, शायद पूरा शरीर तप आया था। वह लेटना चाहती थी। कैसा रूखा अकेलापन ! अहाते से निकलने से पहले वह कैफे मे गई। वहा एस्प्रो या एनासिन मिल सकती थी। पानी के साथ एनासिन गले से उतारी, तभी कुछ होश आया।

'हास्टल जा कर क्या करूगी ?' उस ने सोचा, 'अभी दोपहर ही हुई है। न हो, लक्ष्मी भाभी से ही मिल आऊ। मन बहल जाएगा। उन

के बच्चे कितने अच्छे हे ··'

चूकि वह ऐसे वक्त रेडियो-स्टेशन से जा रही थी जब सामान्य रूप से उस का जाना नही होता था, ऐरो बस-स्टाप पर निगाह रखता हुआ दूर कही खडा नही था। कुछ दिनो से राजधानी मे काफी बारिश होती रही थी, अत स्कूटर की बजाय ऐरो कभी कार मे भी आ जाता।

बस-स्टाप लगभग सूना था। सईदा ने केन्द्रीय सचिवालय की ओर देखा। दरियागज की बसे उधर से ही आ सकती है। कोई बस नही।

कोई व्यक्ति नजदीक आ कर रुका। उस के पास ट्राजिस्टर था। आवाज की खरखराहट उस के सस्ते नमूने का सबूत थी। समाचार प्रसारित हो रहे थे। वक्ता का स्वर बीच-बीच मे मिटने-सा लगता, लेकिन चार-छह लोग ट्राजिस्टर को घेरते हुए खडे हो गए। फिर कुछ और लोग।

" डेरा बाबा नानक क्षेत्र मे हमारी फौजे रावी को पार कर गई हैं। स्मरणीय है कि भागते पाकिस्तानियो ने कुछ दिनो पहले रावी का पुल उडा दिया था। आगे बढती फौजो को दुश्मन की भारी गोलाबारी भी रोक नही सकी है। जम्मू-सियालकोट मे भारतीय फौजें लगातार बढती रही। इस क्षेत्र मे अब तक डेढ सौ पाकिस्तानी सैनिक कैद हो चुके है। चालीस पैटन टैंक और तबाह कर दिए गए। इन मे से इक्कीस कसूर क्षेत्र मे और उन्नीस वाघा मे तबाह हुए।"

प्रसारण से पहले ही ये समाचार वह जान चुकी थी। उसे कोई उत्सुकता न हुई। बस आई। वह बैठ गई। ट्राजिस्टर वाला न बैठा। शायद उसे बस मे जाना ही न हो या किसी और नम्बर का इन्तजार हो। वह खिडकी से आ रहे झोको मे राहत ढूढने लगी।

कनाट-प्लेस आ गया। बस मुडी और सिन्धिया हाउस की ओर जाने लगी। उधर ट्रैफिक बहुत ज्यादा था। सिन्धिया हाउस के चौराहे से काफी दूर ही बस रुक गई।

खाकी हाफ-पेंट और सफेद कमीज पहने हुए कई स्वय-सेवक 'एस० पी० ओ०' का बिल्ला लगाए हुए ट्रैफिक सम्भाल रहे थे। ये 'स्पेशल पुलिस आफिसर' जनसघ, काग्रेस और महावीर दल के थे। बार-बार उन की सीटिया बज उठती। उन मे कुछ-कुछ हडबडाहट थी, क्योकि इस काम के लिए वे बिल्कुल नए थे। छाता-सैनिको की अनवरत खोज करने के लिए दिल्ली की ट्रैफिक-पुलिस भी लगा दी गई थी, जिस मे महत्वपूर्ण चौराहो को सम्भालने का जिम्मा स्वय-सेवको ने उठा लिया था। चीफ कमिश्नर ने उन की मुक्त प्रशसा करते हुए कहा था कि दो-एक दिनो मे यह काम वे और अच्छी तरह सीख जाएगे।

सभी सीटो पर बस के एञ्जिन की कपकपी हो रही थी।

"गीता बहनजी, नमस्ते!" सईदा ने सडक पर से किसी की आवाज सुनी। उस ने ध्यान न दिया, लेकिन अगली बार यह आवाज बहुत करीब से सुनाई दी, "गीता बहनजी, नमस्ते!" उस ने मुड कर देखा।

सडक पर हीरेन्द्रजी 'एस० पी० ओ०' का बिल्ला लगाए हुए मुस्करा रहे थे। सईदा ने चौकते हुए हाथ जोड दिए। तत्काल उसे याद आया, 'इन्हे भार्गव साहब ने मेरा नाम गीता अरोडा बताया था।'

"कहिए? सब ठीकठाक?" हीरेन्द्रजी बस की खिडकी के और पास आ गए।

"जी हा।"

"मैं महावीर दल या जनसघ की तरफ से नही, मात्र एक नागरिक के रूप मे यह काम कर रहा हू।" उन्होने बताया।

तब तक ट्रैफिक खुल गया और बस चलने लगी। "अच्छा, नमस्कार!" हीरेन्द्रजी बोले। उन्होने देखा कि एक कार लाल सिग्नल के बावजूद मुड रही है। वह उधर दौडे और रेलवे गार्ड की तरह सीटिया बजाने लगे।

बस के कई लोग इन अनाडी लेकिन उत्साही 'स्पेशल पुलिस अफ-

सरों' को देख कर मुस्कराने लगे थे । ये मुस्कराहटें मखौल की नहीं थी । वास्तव मे अधिकाश लोग झेप रहे थे, क्योंकि वे अनजाने ही यह सोचने लगे थे कि अगर यही काम हमे सौप दिया जाए तो कभी न हो । इसी झेप को वे अपनी मुस्कानों से मिटा रहे थे ।

दरियागज मे बहुत बडी निराशा उस की प्रतीक्षा मे थी । दूर से उस ने देखा, दरवाजे पर ताला लगा है । पडोस मे पूछताछ करने से मालूम हुआ कि कुछ घण्टे पहले ही लक्ष्मी दोनो बच्चो समेत अपनी मा के पास गाजियाबाद चली गई और जब तक ब्लैक-आउट है, वापस नहीं आएगी ।

अब !

सईदा नेताजी सुभाष मार्ग की भीड मे आ कर एक तरफ खडी हो गई । वह उलझने लगी । उसे अम्मीजान याद आ गई थी । मुरादाबाद मे उन का जी कैसा घबराता होगा । जिस नौकरी को सुरक्षित रखने के लिए उस ने उन्हे वहा अकेले छोड दिया, उसी पर आज कैसा दाव लगाया गया उस के कपार पर फिर से पसीना छनने लगा । रूमाल निकाल कर वह चेहरे पर पोछती-रगडती रही । लोग कितने व्यस्त है ! सभी कही-न-कही जा रहे है सब के अलग-अलग मकसद है, अलग-अलग मजिले है और और इन्ही मे कुछ छाता-सैनिक भी घूम रहे होगे ! वह सिहर उठी पाकिस्तानी जासूस अनेक अख्तर ! उसे कुछ ऐसा भय लगा, मानो दो-एक जासूस खास उसी को नुकसान पहुचाने के लिए दरियागज आए है ।

'गोलचा' मे एक अग्रेजी फिल्म लगी हुई थी—'द स्वोर्ड आफ लैन्सलाट' । शुरू होने मे पन्द्रह मिनट की ही देर थी । ब्लैक-आउट के कारण फिल्मो के समय बदल गए थे । पहला शो ग्यारह बजे, दूसरा दो या ढाई बजे और तीसरा पाच बजे । पहला छूट चुका था ।

'दूसरे शो के अधिकाश दर्शक बैठ चुके होगे ।' सोचती हुई सईदा

तेजी से सडक पार कर 'गोलचा' की ओर बढी ।

फिल्म बहुत अच्छी नही थी, लेकिन उस का मन लगा रहा। बाहर आई तो काफी खुश थी। शायद इस लिए भी कि वह खुश होने की तत्परता बटोरती रही थी। चार का समय। फिल्म छोटी थी। अब कहा ? 'कनाट-प्लेस ही सही।' वह एक फोर-सीटर की ओर बढी। उस मे दो सवारिया बैठ चुकी थी। सईदा के आने के बाद चौथी सवारी की ज्यादा प्रतीक्षा न करनी पडी। फोर-सीटर का चालक एक सरदार था। वह बहुत ऊचा था। मोटा भी काफी था। उस ने फोर-सीटर जोर से दौडा दिया। एक कार से रगड खाने मे बस, जरा-सी कसर रह गई। आगे बैठी एक सवारी ने कहा, "धीरे चलाओ, बादशाओ !"

"धीरे ? अरे बाबूजी, ए फ्रण्टियर मेल ए फ्रण्टियर ! जोर नाल ही चलदा ए। फेर अज्ज ते असा ने चालीह टैंक तबाह कीते हन। अज्ज वी धीरे ? चल—फ्रण्टियर दे पुत्तर !" उस ने जोश मे गाडी और तेज कर दी। ठडडड ! नीला धुआ उगलता हुआ फोर-सीटर डोल रहा था।

"अरे भाई, मारोगे क्या ?" दूसरी सवारी उस की पीठ पर कोचती हुई बोली, "यही करना है तो हमे इधर ही उतार दो।"

सरदार ठठा कर हसा, "मोतियावालयो ! तुसी किवे उतरोगे ! ए फ्रण्टियर ते ऐवे ई चलदा ए। घबराओ ना, बादशाओ, एक्सिडेण्ट ता सारे पाकिस्तान विच्ची हुन्दे ने !"

दिल्ली गेट से उस ने फोर-सीटर को इरविन अस्पताल की ओर मोडा। साफ-सुथरी, चिकनी सडक पर फोर-सीटर का डोलना कम हो गया।

दाहिनी ओर रामलीला मैदान मे विशाल भीड लगी हुई थी। लाउड-स्पीकर पर भाषण दिए जा रहे थे।

फोर-सीटर मे ब्रेक लग गए। सरदार ने कहा, "असी अग्गे नहीं

जावागे । तुसी दूजी अस्वारी लै लवो !"

सब के चेहरो पर नाराजगी उभर आई, लेकिन सरदार को परवाह नही थी । उस ने फोर-सीटर एक पेड के नीचे रोक दिया, "सुनाई नईं पैंदा ? डाक्टर जाकर हुसैन दा भाषण हो रया ए ?"

एञ्जिन बन्द कर के वह रामलीला मैदान की ओर चला गया । सवारिया बैठना चाहे, बैठी रहे । उन से पैसे लेने की भी उसे चिन्ता नही थी । दो सवारियो को कही जाने की जल्दी थी । उन्होने बुदबुदाते हुए कहा कि भाषण कल के अखबार मे आ ही जाएगे । वे उतरी और बस-स्टाप की ओर बढी । सईदा रामलीला मैदान की ओर जाने लगी । चौथी सवारी फोर-सीटर से उतर तो गई, लेकिन उसे समझ मे न आया कि क्या करे । थोडे पसोपेश के बाद वह भी मैदान की भीड मे खो गई ।

हजारो चेहरे राष्ट्र पर आई विपत्ति के कारण दृढता के साथ अपने नेताओ की ओर उठे हुए थे ।

डाक्टर जाकिर हुसैन का स्वर, "हम किसी की भी एक इच जमीन नही चाहते, लेकिन हम उन सिद्धान्तो को नही छोड सकते, जिन पर हमारे देश की, हमारे सारे कौमी जीवन की बुनियाद है—और हमे इसी सिद्धान्त को छोडने के लिए मजबूर किया जा रहा है यह बहस-मुबाहसे का समय नही है । हमे चुपचाप तेजी से फैसला करना है और उस को अमल मे लाना है । मोर्चे पर हमारी फौज डटी हुई है । उस ने जो शानदार जौहर दिखाया है, उस से हमारे लिए भी यह फर्ज हो जाता है कि हम भी अपने को एक फौज की शक्ल दे, नागरिको की फौज की·· और जो कुछ हमारे सिद्धान्तो की जीत के लिए जरूरी है, वह सब आगे बढ कर करे । सिपाही को तो उस का सेनापति हुक्म देता है । हमे खुद अपने अन्त करण से हुक्म लेना है । हमे अपनी समझदारी, अपनी कार्यकुशलता और अपने अनुशासन का वैसा ही कडा इम्तहान लेना है, जैसे सिपाही को मोर्चे पर हमे मालूम है कि हमारा फर्ज

क्या है । हम लडखडाएगे नही, हम हिचकेंगे नही । हम, इन्सानियत में जो कुछ भी ऊची और शानदार चीजे है, उन की हिफाजत के लिए इस चुनौती को मजूर करने से पीछे नही हटेंगे और खुदा की मेहरबानी से हम जीतेंगे । जयहिन्द !"

पूरी भीड ने गम्भीर घोष किया—जयहिन्द !

तालिया

अन्य कई नेताओ के भाषण होने जा रहे थे, लेकिन सईदा बस-स्टाप पर लौट आई । एक बस रुकी । उस मे से बहुत सारे लोग उतरे । नेताओ ने उन्हे आकर्षित कर लिया था । उतरने वाले ज्यादा और चढने वाले कम होने से सईदा को प्रवेश करने मे कोई दिक्कत न हुई ।

अब वह सीधी अपने हास्टल जा सकती थी । मन काफी शान्त था । रात को नीद तो देर से ही आएगी, लेकिन मूड ऐसा बिगडा हुआ नही था कि कुछ पढा भी न जा सके । शाम झुक आई थी ।

छ

अख्तर और सहयोगी भीड मे खडे थे । 'वीमेन्स पोलिटेकनिक' मे गृह मन्त्रालय की 'मोबाइल सिविल इमरजेन्सी फोर्स' की ओर से एक कार्यक्रम रखा गया था—'जब हवाई हमला हो ।'

सारजेण्ट ने जोर से सीटी बजाई । तत्काल 'मोबाइल फोर्स' के दो व्यक्ति जमीन पर गिर पडे । वे औधे लेटे हुए थे । कोहनिया जमीन को छू रही थी । छाती जमीन से उठी हुई । कान मे रूई भर कर उन्होंने दोनो हथेलियो से मूद लिया था । मुह मे रूमाल ठुसा हुआ ।

सारजेण्ट ने भीड को सम्बोधित किया, "देख लीजिए । इसी तरह लेट जाना चाहिए । हवाई हमले मे घबराने की जरूरत नही होती । अभी हम जो बता रहे है, उन का पालन करने पर खतरा बहुत मक

हो जाता है।"

फिर इस का प्रदर्शन किया गया कि बम गिरने से किसी इमारत मे आग लग जाए तो लोगो को कैसे बचाए।

अख्तर बोर हो गया, "यार, चलो "

वे सडक पर आ गए और व्यर्थ ही एक बस मे घुसे।

चूकि समय ही काटना था वे पुराने किले जा पहुचे। सोचा था, भीतर चिडियाघर देखेगे, लेकिन फिर मन न हुआ। वे बाहर खडे रहे। वहा सैलानियो को तरह-तरह की चीजे बेची जा रही थी। खिलौने। आइसक्रीम। बोतलो मे ठण्डा, मीठा दूध।

"धड-धड-धड!" उन्होने किसी बच्चे की आवाज सुनी। पलट कर देखा। पाचेक साल का एक लडका अपने अगूठे और अगूठे के बाद की उगली से पिस्तौल जैसा आकार बना कर डरा रहा था, "डैडीजी! हैड्स अप! गोली मार दूगा। तुम पाकिस्तानी! धाय!"

डैडीजी ने उसे प्यार से चपत लगाई। मम्मी भी साथ थी। उसे लगभग धकेलते हुए वे आगे चले गए।

किले के बाहर बडी तेजी से घनी झाडिया साफ की जा रही थी। लगभग पचास सिपाही इसमे लगे थे। सब के पास रायफले।

एक आदमी नजदीक आया और सफाया होते देखने लगा। अपने से ही बाते कर रहा हो, इस तरह बोला, "पता नही, कितने पैराट्रूपर्स दिल्ली मे घुस चुके है। जहा भी उन के छिपने की गुजाइश है, झाडिया साफ हो रही है।"

उस की बात स्वगत होने के बावजूद अख्तर और सहयोगी को सुनाने के लिए काफी जोर से कही गई थी। वह फिर बोला, "क्यो जी? सुना है, पाकिस्तानियो का खास बडा ट्रासमीटर भी दिल्ली मे है? बाकायदा पाकिस्तान को सिगनैलिग की जाती है? अभी तक तो पकड मे आया नही "

अख्तर ने सिर हिला कर दर्शाया कि उसे कोई जानकारी नही है।

सहयोगी ने घडी मे देखा। सिर्फ तीन। "आओ, कनाट-प्लेस ही चले। काफी-वाफी पीए।" उस ने अख्तर की बाह मे बाह डाल दी। दोनो बेफिक्री चाल से एक स्कूटर की ओर बढे।

कनाट-प्लेस से इस बार उन्होने जो फोन किया, उस से वे जान सके कि कल सईदा की ड्यूटी रात ढाई बजे है फिर आगे की योजना बनते देर न लगी।

प्राय दो घण्टे बाद वे एक टैक्सी मे बैठे हुए थे। ड्राइवर कह रहा था, "बाबूजी, सात बजे ब्लैक-आउट हो जाएगा। पार्किङ्ग-लाइटे तो जलाने देते है, लेकिन बडा खतरा होता है अधेरी सडको पर। रोज एक्सिडेण्ट मे दस-पाच मरते ही है।"

"हु "

"मैं ब्लैक-आउट मे पहले ही घर पहुच जाता हू। आप लोग पार्क से जल्दी निकल आइएगा।"

"अभी तो पाच ही बजे है।"

लिक रोड के चौराहे पर टैक्सी बुद्ध-जयन्ती-पार्क की ओर मुड गई। युद्ध का माहौल होने के कारण पार्क मे बहुत कम लोगो की दिलचस्पी थी। सडक के लम्बे-लम्बे फासले सूने मिल जाते। दोनो ने यही आशा रखी थी। अख्तर ने बैग खोला। रिवाल्वर, कारतूसो इत्यादि के बीच मे एक शीशी रखी हुई थी। अगली सीट की पीठ की आड लेते हुए उस ने शीशी इस तरह खोली कि ड्राइवर की निगाह न पडे। फिर सहयोगी के जूते पर हल्का दबाव दिया।

सहयोगी टैक्सी-ड्राइवर से बोला, "जरा रोकना भाई, मुझे हल्का होना है।"

टैक्सी रुकी। ड्राइवर ने एजिन बन्द कर दिया।

सहयोगी उतरा और सडक के किनारे चलता हुआ एक ढूह के पास पहुचा ।

अख्तर ने चौकन्नी निगाह से सामने देखा । सूनापन । पीछे देखा । वही सूनापन । झुकती धूप मे अकेली लेटी विधवा सडक

शीशी खोल कर वह रूई का एक फाहा तर कर चुका था । पीछे से टैक्सी-ड्राइवर के करीब खिसकता हुआ बोला, "लो, सिगरेट पीओगे ?"

ज्यो ही ड्राइवर ने पीछे देखा, उस ने एक हाथ से उस की गर्दन दबोच कर दूसरे से वह फाहा नाक पर रख दिया । ड्राइवर घबरा गया । उस ने चिल्लाना चाहा, लेकिन मुह पर अख्तर की हथेली आ दबी । सहयोगी जासूस झपट कर आया । टैक्सी का दरवाजा खोल उस ने छटपटाते ड्राइवर को जकड लिया । बहुत रोकने पर भी ड्राइवर ने दो-तीन सासे ले ली थी । वह ढीला पडने लगा और बेहोश हो कर लुढक गया ।

सहयोगी ने उसे एक तरफ धकेला और स्टियरिग के सामने बैठते हुए एजिन स्टार्ट कर दिया । अख्तर ने वह निबल जिस्म चलती टैक्सी मे पीछे खीच लिया और उस के चेहरे पर निगाह टिकाई । नही, रिवाल्वर की आवाज दूर तक छुरा मारने पर टैक्सी मे खून के दाग गला घोटना ही

सामने या पीछे से कोई आ तो नही रहा, इस की तसल्ली पाने के बाद उन्होने वह लाश एक झाडी मे फेक दी और आगे निकल गए । पार्क मे पन्द्रह-बीस मिनट बैठे, फिर लौटने लगे । लिक रोड पर उन्होने पेट्रोल डलवाया । अतिरिक्त पेट्रोल भी रख लिया । तय कर चुके थे कि रात टैक्सी मे ही लेटे हुए बिताएगे ।

"रात भर इसे खडी कहा करेंगे ?"

"उसी सडक पर, जो पार्क की ओर जाती है ।" सहयोगी ने मक्कारी से कहा, "हमे लाश को भूल जाना चाहिए । लाश से दूर भागने पर

शायद वह ज्यादा याद आएगी। कोई अच्छी जगह देख कर टैक्सी सडक से उतार लेंगे। आड लेने के लिए उधर झाडियो की कमी नही है। आबादी न होने से गश्त भी नही लगती।"

अख्तर को ठीक से याद नही था कि जिस झाडी मे लाश डाली गई थी, वह कहा थी। रात को उन्होने कार जहा खडी की, उस के पास वाली झाडी अख्तर को बिल्कुल वैसी ही लगी उसे सिहरन हुई, लेकिन इस वहम को मन से निकाल कर वह सोने लगा। नीद न होने के बावजूद पलके मूदने के कारण थोडी देर मे आखे दर्द करने लगी। अख्तर पिछली सीट पर लेटा हुआ था। अगली सीट पर सहयोगी जासूस आराम से फैल गया था। उस ने एक ओर का दरवाजा खोल दिया था, जिस मे से उस के पैर बाहर निकले हुए थे। अख्तर ने दरवाजा नही खोला था। जगह कम होने पर भी उस ने अपने को किसी तरह सीट पर ही व्यवस्थित कर लिया था। सईदा। सईदा।

एक बजे के बाद उसे कुछ नीद आई। सईदा। करीब दो घण्टे बाद वह जाग गया। साइरन!

हूऊ! हु-हु-हु हुऊऊऊ! हू! हूबूबू!

वह चौक कर बैठ गया। उस ने सहयोगी को झिझोड कर जगाया, "उठो साइरन बज रहा है हमारा एरोप्लेन बमबारी करेगा। धमाके सुनाई देगे! या अली!"

ज

"तो ऐसी होती है साइरन की आवाज!" सलूजा ने आखे झपकाई।

हजारे, टीपू, सुलोचना, डाक्टर सिह और सलूजा प्रयोगशाला के बगल वाले छोटे कमरे मे आ गए थे। कोठी मे यही सब से सुरक्षित जगह थी। हजारे ड्राइग-रूम का रेडियो यही ले आया था। वह घबराया

हुआ था। अगर वह डाक्टर सिह के साथ न होता तो औरज्यादा घबरा जाता। टीपू ने जीभ लटका रखी थी। कमरे के नीले, धूमिल बल्ब की अधेरेनुमा रोशनी।

हूवूवूवू ! हुह ! हूऊऊ !

"आवाज रुक-रुक कर हो रही है।" सलूजा बोले।

"हा।" डाक्टर सिह ने कहा, "खतरा दूर होने पर 'आल-क्लियर' का साइरन होगा। वह लगातार बजेगा। जरा सोचिए, अभी दुश्मन का हवाई-जहाज तेजी से दिल्ली की ओर झपट रहा है मुमकिन है, वह मेरे ही मकान पर बम गिराए या मुमकिन है, गन्स के कारण वह दिल्ली के करीब भी न आ सके "

सलूजा की भौहो पर बल पडे।

"डाक्टर सलूजा, मेरे साथ बाहर चलेगे ? अभी ?"

"क्यो ?"

"देखे तो सही, एण्टी-एयरक्राफ्ट गन्स चलती कैसे हैं। शायद दुश्मन हवाई-जहाज आकाश मे ही फट जाए। वह नजारा आतिशबाजी जैसा होगा।"

"क्यो मजाक करते है !" सुलोचना बोली, "साइरन होने पर लोग बाहर निकलते है या छिप जाते हे ?"

"यह आप अमृतसर जा कर देखिए !" डाक्टर सिंह हसे, "जरूरी थोडे ही है कि जो बाहर निकले, उसी पर बम गिरे ? इस के अलावा धूल से भी गई-बीती धरती पर धूल से भी गए-बीते किसी इन्सान की मौत हो जाए—या वह जिन्दा बचा रहे—फर्क क्या पडता है ?"

सलूजा तैश मे आ गए, "जी हा ! कोई फर्क नही पडता। चलिए, मैं बाहर निकलने के लिए तैयार हू।"

साइरन रुक चुका था। अब तक हजारे भी यही समझ रहा था कि मजाक हो रहा है, लेकिन डाक्टर सिह के चेहरे की दृढता देख कर वह

चौका ।

सुलोचना बोली, "सचमुच जा रहे हैं ?"

"आप भी चलिए !"

"याने सचमुच आप ?"

"जी हा ! आप को यकीन क्यो नही हो रहा ?"

इस के बाद मानो फैसला दे रहे हो, इस तरह वह बोले, "नही, आप यही बैठिए । हजारे भी यही रहेगा । टीपू को हम साथ लिए लेते है ।" उन्होने डाक्टर सलूजा की बाह पकड ली, "आइए !"

अंधेरे ड्राइग-रूम और एक छोटे कमरे को पार कर के वे खुले मे आ गए । तिरछे, बारीक चाद को भी साइरन ने जैसे सहमा दिया हो सलूजा ने ऊपर देखा । अनेकानेक सितारो की टिमटिमाहट ! इस पर वह कुछ सोचते, इस से पहले ही दू र कुछ गडगडाहटे हुईं ।

"वह ! उधर देखिए !" डाक्टर सिह ने इशारा किया । काले विस्तार मे बार-बार धधकती लकीरें-सी बन रही थी । बनती, बुझती और गडगडाहट ।

"डाक्टर सिंह, आप कहा है ?"

"यहा आप से जरा ही दूर । क्यो ?"

"आई मस्ट कन्फेस ! मुझे डर लग रहा है ।" सलूजा उन के पास आए, "अन्दर चलिए !"

"आश्चर्य ! धूल जैसी पृथ्वी पर धूल से भी गए-बीते मनुष्य को डर का अहसास ?"

"मैं जानता हू, आप व्यग्य कर रहे है, लेकिन सचमुच यह अहसास एक आश्चर्य है । मैं ने हमेशा आश्चर्य को आश्चर्य के ही रूप मे लिया है, उसे कभी नकारा नही ।"

फिर से गडगडाहट हुई । कुछ सेकण्ड बाद फिर । दसो दिशाओ मे जैसे आतक लुढक रहा हो सिन्दूरी आग की लपलपाती जीभे

"भीतर चलिए, डाक्टर! मेरे लिए यह पहला ब्लैक-आउट है। आय एम नरवस! मैं बहुत नाजुक आदमी हू।" उन की आवाज विस्फारित होने लगी थी, "देखिए, तोपे फिर गरज उठी।"

कमरे मे लौटते ही डाक्टर सिंह ने महसूस किया कि यो बाहर निकल कर उन्होने उसी तरह भय के और करीब पहुचना चाहा था, जिस तरह डरावनी कहानियो का सग्रह पढते हुए उस दिन

सलूजा सुलोचना के पास जा कर पलग पर बैठ गए थे। सुलोचना और हजारे के चेहरो पर दोनो के लौट आने की राहत थी।

हूऊऊ---

"गया! गया एरोप्लेन!" सुलोचना बोली, "खतरा निकल गया! ओ माई लार्ड!"

सलूजा 'आल-क्लियर' साइरन की न-टूटती आवाज को पहचान लेना चाहते थे। चौकन्ने हो कर वह कुछ इस तरह सामने देख रहे थे, गोया वह आवाज दीवार मे ही पैदा हो रही हो।

तीस

वह टैक्सी रात के प्राय दो बजे वर्किंग गर्ल्स हास्टल की दिशा मे जा रही थी। काफी पुरानी होने के कारण उस के ढाचे मे जगह-जगह से खडखड की आवाज फूट रही थी, जो रात के डरावने सन्नाटे मे बहुत भोथरी हो उठी थी।

ब्लैक-आउट ने हर चीज को कालिमा के अगणित लिफाफो मे बन्द कर दिया था। जैसे दरख्त और इमारते। जो चीजे बहुत दूर-दूर तक लम्बी फैली हुई थी, जैसे सडके और गलिया, वे उन लिफाफो मे कैद नही हो सकती थी। उन पर ब्लैक-आउट के अदृश्य हाथ ने चिपचिपे डामर का ब्रश फेर दिया था···

टैक्सी चला रहा सहयोगी पूरी तरह चुप था। बहुत चौकन्नेपन के साथ वह अधेरे मे लेटी सडक को पहचान-खोज रहा था। अख्तर पीछे की सीट पर बैठा हुआ था। उस का चेहरा जिद और सम्भावित उपलब्धि के कारण तन आया था, लेकिन यह तनाव अधेरे मे लुप्त हो गया था। जीरो पावर के चश्मे और गालो पर दो नकली झुर्रियो ने उसे बिल्कुल बदल दिया था।

जो छोटे-छोटे झोके लग रहे थे, उन के कारण उनीदी पत्तिया और शाखाए बार-बार झुरझुरा उठती। उन मे से एक रहस्यमय सरसराहट प्रसारित होती और अधेरे मे छटपटाती हुई लावारिस दौड पडती।

हैड-लाइट मरी हुई थी। केवल पार्किंग-लाइट जल रही थी—जलाई जा सकती थी—ताकि अधेरे मे सरकता टैक्सी का ढाचा कहा-कहा तक है, इस का आभास दूसरो को—यदि सडक पर कोई हो—मिल सके

और दुर्घटना से बचा जा सके।

"ठहरो! कौन है?" इस मोड पर किसी की चुनौती ने खामोशी को उधेड दिया।

सहयोगी ने टैक्सी रोकी।

दो-तीन काली आकृतियो ने टैक्सी को घेर लिया। एक आकृति सहयोगी की ओर बढी। उस के पास छोटी टार्च थी, जिस के काच पर रूमाल बधा हुआ था। टार्च जलाते ही रूमाल पीला-पीला चमक उठा। अधेरे के कारण उतना पीलापन भी आखो मे चुभा। सहयोगी ने पलकें मिचमिचाई।

अख्तर ने टैक्सी की खिडकी के पास आते हुए कहा, "प्लीज़ मैं एक मरीज को देखने जा रहा हू। आय'म ए डाक्टर। मेरा एक-एक मिनट कीमती है। इटस ए क्वेश्चन ऑफ लाइफ एण्ड डेथ ."

नागरिक स्वय-सेवको ने, जिन के जत्थे पूरी दिल्ली मे हर रात गश्त लगाते थे, टैक्सी को इस से पहले तीन बार रोका था।

"आप डाक्टर हैं?"

"जी हा।"

"कहा है—अपना बैग दिखाइए!"

अख्तर ने सीट पर नजदीक ही रखा एक बैग उठाया और टार्चों की रूमाल-बधी रोशनी मे खोल कर दिखाया। स्टेथोस्कोप, दवाए, रूई, इजेक्शन .

दो स्वय-सेवको के पास एक बास था। जो भी कार या कोई वाहन रुकने से इन्कार करता, उस के सामने झपट कर वे बास को सडक के समानान्तर तानते हुए खडे हो जाते और रोक ही लेते। आमतौर पर ऐसा करने की जरूरत रात के नौ-दस के बाद नही पडती थी, क्योकि ढीठ आवागमन तब तक घरो और गैरेजो मे छिप जाता। ग्यारह बजे के बाद तो शायद ही कोई वाहन दिखाई पडता।

"जाइए।" स्वय-सेवक ने इजाजत दे दी।

"शुक्रिया।" अख्तर बुदबुदाया। टैक्सी गुर्रा कर आगे चली गई।

वर्किंग गर्ल्स हास्टल की अधकार-सनी इमारत दूर से आभास देने लगी।

अख्तर ने बैग खोला और फाहा तैयार कर लिया। टैक्सी की छत पीली होने के कारण शेष ढाचे से कुछ कम काली लग रही थी। हास्टल के गेट के पास सहयोगी ने टैक्सी रोकी और बुदबुदा कर कहा, "यस, अख्तर, मैं हार्न दे रहा हू। आर यू रेडी ?"

"यस।"

पीईं

हास्टल के कौन-से कमरे की खिडकी खुली, अधेरे मे पता न चला। खुलने की आवाज उस खामोशी मे धीमा-धीमा आभास भर देती रही।

फिर एक बारीक स्वर काफी ऊचाई से (कौन-सी मजिल से ?) बहुत स्पष्ट सुनाई दिया, "यस, कमिंग "

अख्तर ने सनसनी महसूस की। सईदा की आवाज ! कितने दिनों बाद, कितने अनोखे माहौल मे !

हास्टल की सीढिया उतर कर थोडी ही देर मे सईदा गेट से बाहर आ जाएगी और टैक्सी के पास पहुचेगी। रेडियो-स्टेशन की स्टाफ-कार की बजाय एक टैक्सी खडी देख कर वह चौंकेगी नही। टैक्सी-सेवा का उपयोग भी रेडियो प्राय करता है। स्टाफ-कार खराब हो या सभी कारें कही गई होने के कारण एक भी उपलब्ध न हो तो रेडियो की ओर से टैक्सी ही भेजी जाती है। कोई आवागमन आसानी से उपलब्ध न होने के कारण केवल रात मे ही यह सुविधा मिलती है।

अधेरे मे सईदा को आभास मिलेगा कि टैक्सी मे पहले से कोई आदमी बैठा हुआ है—लेकिन यह भी उस के चौकने या आशकित होने का कारण न बनेगा। स्टाफ-कार हो या टैक्सी, प्राय वह एक ही खेप मे कई

कर्मचारियो को रेडियो-स्टेशन पहुचाती है। सईदा यही समझेगी कि भीतर कोई कर्मचारी बैठा हुआ है।

अख्तर ने आखे सिकोडी। सईदा सीढिया उतर रही थी वह सफेद कपडो मे थी, इसी लिए इतने अधेरे मे भी कुछ-कुछ झलक रही थी। रगीन कपडो मे होती तो अधेरे के साथ ऐसी एकाकार हो जाती कि बिल्कुल टैक्सी के पास पहुचती तभी अचानक दिखाई पडती।

टैक्सी का एजिन चालू था। धीमी घरघराहट के साथ उस के समूचे ढाचे मे झुरझुरी हो रही थी और वह भागने के लिए आतुर किसी विशालकाय कीडे जैसी लग रही थी।

सईदा हास्टल के गेट के नजदीक पहुच चुकी थी। अब गेट मे। अब गेट से बाहर। अब बाहर से गेट को बन्द करती हुई। अब पलट कर टैक्सी की तरफ बढती हुई।

पास···

और पास·

"अरे ! आज भी टैक्सी ?" पूछते हुए सईदा ने दरवाजा खोलने के लिए हाथ बढाया। यह प्रश्न उस ने कोई जवाब पाने के लिए नही किया था, अत जवाब न मिलने के बावजूद उस ने निश्शक हो कर दरवाजा खोल लिया। खुलते ही टैक्सी की छत के नीचे अत्यन्त फीकी रोशनी देता हुआ एक छोटा-सा बल्ब जल उठा।

सईदा अन्दर आई। पाउडर की भीनी-भीनी खुशबू साडी की सरसराहट यह पिछली सीट थी और उस के दूसरे छोर पर अख्तर बैठा हुआ था। नए वेश मे, नए चेहरे के साथ, अधेरे मे लगभग गायब· ·

सईदा ने उस पर उडती निगाह डालते हुए दरवाजा बन्द कर दिया।

खच्च·

छोटा-सा वह बल्ब बुझ गया।

घूऊऊऊ

झटके के साथ टैक्सी रवाना।

स्पीडोमीटर के काच के पीछे जरा-जरा रोशनी असमर्थ और मूक

'स्टाफ-कारे भी बिल्कुल कबाडखाने की है! जब देखो, खराब!" सईदा लगभग स्वगत बोली, लेकिन उसे औपचारिक अनुमोदन देना जरूरी था।

"जी हा, ऐसा ही है।" अख्तर ने दूसरी आवाज मे कहा और उस की तरफ सरकने की तैयारी करने लगा।

सईदा चुप रही।

"अरे, ड्राइवर!" वह बोली, "कौन-सी सडक है यह? रेडियो-स्टेशन तो इधर नही•"

वाक्य पूरा कर पाती, इस से पहले ही जबरदस्त ताकत से उस का मुह बन्द कर दिया गया। वह छटपटाने लगी। उस की चीख उबल आना चाहती थी, लेकिन मुह के अलावा नाक पर भी दबी हथेलियो ने एक धीमी रिरियाहट ही बाहर आने दी। उस ने गीला-गीला, मुलायम-सा कुछ नाक पर रखा जाता महसूस किया। घबराहट मे उस की सास रुकी हुई थी। तडप कर उस ने गहरी सास ली, लेकिन ताकत मिलने की बजाय एक-एक रग ऐंठ-निचुड गई। हाथ-पैर लुज पडते गए और सारे दिमाग मे भाय-भाय हहक उठी सिर की चमडी पर कुछ ऐसी चुनचुनाहट, जैसे घने बालो को किसी खूटी से बाध कर सारी सईदा अधर लटका दी गई हो शून्यता शरीर के चप्पे-चप्पे से भीतर घुस आई और तमाम शक्तियो को चूसने लगी।

जब उस की तडपन और कपकपी पूरी तरह डूब गई, अख्तर ने अपने कन्धे पर उसे कुछ इस तरह निढाल कर लिया, जैसे वह सख्त बीमार हो और बिना सहारे के न बैठ सकती हो।

अगर स्वय-सेवको के किसी गश्ती दल ने टैक्सी रुकवा कर पूछताछ की, बडी आसानी से कहा जा सकेगा कि डाक्टर के यहा जा रहे हैं।

होटल फतहपुरी का वह होटल

उस का मैनेजर अभी ऊघ रहा होगा। चौकीदार को पचास रुपयो की एकमुश्त घूस ने खुश कर दिया है। 'काफी ज्यादा' रुपए और भी मिलने का उसे पूरा आश्वासन है। आधी रात वह उन्ही का इन्तजार कर रहा होगा। होटल के गेट की कुण्डी उतार कर। सब कितना व्यवस्थित ! कितने खौफनाक ढङ्ग से आसान ! अख्तर मुस्कराने लगा। उस के हाथो ने सईदा को कितने अधिकार से थाम रखा था ' सईदा कितनी करीब, ओह ! अख्तर को डर लगा, कही उस की मुस्कान खिलखिलाहट मे न बदल जाए • ऐसी खिलखिलाहट, जो उसी तरह अचानक आए, जिस तरह छीक आती है इस मुस्कान को दबाना ठीक नही तब जरूर उस मे विस्फोट हो जाएगा यह खुशी थोडी-थोडी रिसती रहे, यही बेहतर है अख्तर को जरूर मुस्कराना चाहिए दसो दिशाओ मे कितना अधेरा है ! ब्लैक-आउट ! कितना अच्छा है यह, कितना दोस्ताना ! वही उस के चेहरे को छिपाए हुए है। कितनी खूबी से ! शायद सहयोगी को भी नजर न आए कि वह मुस्करा रहा है और और अधेरे मे इस निढाल शरीर के साथ मनचाही छूट भी वह ले सकता है लेकिन यह अहसास !—जैसे किसी लाश को दबोच रहा हो नही, इस तरह नही। यह जिस्म इस तरह निढाल नही होना चाहिए इसे तो पूरे होश मे होना चाहिए और इसे मालूम होना चाहिए कि इसी के साथ, इसी दुस्साहसी अख्तर के साथ उसे हमेशा के लिए रहना है अख्तर, जिस ने कितना बडा जोखिम उठा कर ओह !

सईदा को ले कर टैक्सी रवाना हुई, इस के लगभग पन्द्रह मिनट बाद ही रेडियो-स्टेशन की स्टाफ-कार हास्टल के सामने रुकी और बडी देर तक हार्न देती रही

इकतीस

क

"मै बाहर जाना चाहता हू।" सलूजा बोले।

"क्यो ?" डाक्टर सिंह अपनी काफी समाप्त कर चुके थे और रेडियो खोल रहे थे।

"मैं यहा एक अजनबी के रूप मे घूमूगा। स्टाप पर जा कर किसी भी बस मे चढ जाऊगा और कही भी उतर जाऊगा। फिर पैदल वापस आऊगा। घूमता-घामता।"

"आप को कई मील चलना पड़ेगा। इलाहाबाद जैसा यह छोटा शहर नही है, जहा हर चीज पडोस मे ..."

"मैं जानता हू। वैसे, दो धूल-कणो मे से कौन बडा है और कौन छोटा, इस पर सोचना भूल है।"

"आप खो गए, तो ?"

"भीड मे, लम्बे-चौडे रास्तो के जाल मे खो जाने के लिए ही मैं जाऊगा— खोने पर नही, थक जाने पर टैक्सी मे लौट आऊगा। रुपए रख ही लिए है। दिक्कत न होगी।"

"लेकिन एकाएक यह सूझा कैसे ?"

"यो ही।"

तब तक रेडियो समाचार देने लगा था, "सयुक्त-राष्ट्र-सघ के महा-सचिव ऊ था, जो कराची से बम्बई होते हुए आज राजधानी आए हैं, प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री के साथ कश्मीर समस्या पर बहुत देर तक प्राथमिक वार्ता करते रहे। पाक-अधिकृत कश्मीर मे आज पाक-सरकार

के खिलाफ विद्रोह हो गया। पजाब के सभी मोर्चो पर हमारी फौजे निरन्तर आगे बढ रही है। टर्की और ईरान से कहा गया है कि जब सयुक्त-राष्ट्र-सघ की ओर से शान्ति-प्रयत्न चल रहे हैं, उन की ओर से पाकिस्तान को सैनिक सहायता देने के निर्णय अत्यन्त खेदजनक है। अब आप पूरे समाचार सुनि "

'बन्द करिए रेडियो!" सलूजा उत्तेजित हो गए। डाक्टर सिह स्विच ऑफ कर पाते, इस से पहले उन्होने ही ऑफ कर दिया और कहा, "मेरी बात का फैसला कीजिए।"

'कौन-सी बात का ?"

"मै दिल्ली मे खो जाना चाहता हू। अकेला।"

"खो जाइए! कौन मना करता है ?"

तभी सुलोचना वहा आई।

"सुलोचना, मैं जा रहा हू। दिल्ली की भीड-भाड मे दो-तीन घण्टे टहल कर लौटूगा। यहा बैठे-बैठे ऊब गया हू।"

"मैं साथ चलूगी।"

"नही।"

"आप का अकेले जाना ठीक नही है।"

"कोई परेशानी होगी तो लौट आऊगा।"

"लेकिन भैया "

"लेकिन-वेकिन कुछ नही।" वह उठे और जाने लगे। सुलोचना ने उन की बाह थामनी चाही, लेकिन झटके के साथ छुडा कर वह बाहर निकल गए। सडक पर पहुच कर वह तेजी से एक तरफ बढे।

सुलोचना ने आशकित होते हुए डाक्टर सिह की ओर देखा।

वह हसे, "वह अपनी हर जिद पूरी करते है सुलोचनाजी, और अच्छा है अकेले भटकने दीजिए। शायद उन्हे थोडा-बहुत समझ मे आए कि आकाश, कोरबूजिए और श्वाइत्जर के अलावा भी कई बाते सोचने-समझने की है। मसलन सडक के नियम भी मालूम होने

चाहिए ।"

"कही एक्सिडेण्ट न हो जाए !"

"मेरे ख्याल से वह पन्द्रह-बीस मिनट मे लौट आएगे ।"

"एक्सिडेण्ट एक-दो मिनट मे भी हो सकता है ।"

"इस का कोई इलाज नही । एक्सिडेण्ट घर के अन्दर भी हो सकते है । वी हैव टू लिव विथ देम ।"

उसी समय डाकिए ने दरवाजा खटखटाया । डाक्टर सिंह के पास खडा टीपू गुर्राने लगा । वह डाकिए के पास पहुचे । एक एक्सप्रेस-डिलीवरी-लैटर था । उन्होने हस्ताक्षर किए और शान्ति से लिफाफा खोलने लगे । सुलोचना करीब आई, "किस का है ?"

वह चुप रहे । पढते समय उन की उगलियो मे कपकपी होने लगी ।

"डाक्टर साहब, किस का लेटर है ?"

"अभी हम एक्सिडेण्ट की बात कर रहे थे न ? इस मे एक्सिडेण्ट का ही जिक्र है ।" वह रुके, फिर एकाएक बोले, "बलवन्त जरा घायल हो गया है ।"

सुलोचना की सास मे सास आई । उस ने कुछ और गम्भीर आशका रखी थी । वह चुप रही । डाक्टर सिंह रेडियो के पास गए । वह उसे आन करना चाहते थे, लेकिन स्विच छूए बिना ही एक कुर्सी के पास पहुचे और जल्दी से बैठ गए । कहा, "अमृतसर से मेरी भतीजी ने इन्फार्म किया है कि कि "

उन का गला भर आया । वह खखारने लगे । बोले, "मैं भी कैसा हू ! भला कोई बात हुई ? अभी मैं ही कह रहा था कि एक्सिडेण्ट्स से छुटकारा नही मिल सकता । बलवन्त सिर्फ घायल हुआ है, कौन सी आफत आ गई इस मे ? चन्द दिनो मे ठीक हो जाएगा और · "

"ज्यादा घायल तो नही हुआ ?"

"हुआ होगा तो भी रिश्तेदार लिखेंगे थोडे ही । बलवन्त ने भी मना किया होगा । इतना ही इन्फार्म किया गया है कि वह अमृतसर के

मिलिटरी हास्पिटल मे है और हालत तेजी से सुधर रही है ।"

'आप उन्हे देखने जाएगे ?"

"नही !" सुलोचना को अचरज मे डालते हुए वह बोले, "क्या होगा देखने से ? वह ठीक हो जाएगा ? अमृतसर मे कई रिश्तेदार है। देखभाल रख ही रहे होगे ।"

"तो भी आप का जाना जरूरी है ।"

डाक्टर सिह हसे, "आप सोचती है, मै बलवन्त को बिस्तरे पर पडा हुआ देखने जाऊगा ? मै ने उसे कभी इस तरह नही देखा—देखूगा भी नही। वह ठीक हो जाएगा तो सूट-बूट मे या फौजी वर्दी मे सामने आएगा। तब उस की पीठ थपथपाऊगा, अभी जा कर क्या करना है ? डाक्टर और नर्से उसे ठीक से छूने भी न देगे ।"

उन्होने जेब मे हाथ डाला। वह पत्र फिर से उन की उगलियो मे आ गया। सुलोचना दूसरी तरफ देखने लगी। उन की विह्वलता उस से सहन नही हो रही थी। उस ने कागज फटने की आवाज सुनी। डाक्टर सिह पत्र के टुकडे-टुकडे कर रहे थे ।

ख

'स्टेट्समैन' के बस-स्टाप पर सलूजा चुपचाप एक तरफ खडे हो गए थे। जो पहली बस आई, उस मे इतनी भीड थी कि घुसने की हिम्मत न हुई। दूसरी बस पता नही किधर जा रही थी, लेकिन वह खाली थी। सलूजा लपक कर बैठ गए ।

"कहा का टिकट दू ?" कण्डक्टर ने पूछा। उन्होने कहा, "जो भी सब से बडा हो !"

कण्डक्टर ने उन्हे कोई जिन्दादिल आदमी समझा और पैंतीस पैसे का टिकट दे दिया ।

प्राय आधे घण्टे बाद वह किसी स्टाप पर उतरे। यह कौन-सा चौराहा है, वह नही जानते थे, लेकिन यहा की भीड उन्हे अच्छी लगी। उन के चेहरे पर मुस्कान उभर आई।

'मैं कहा हू ?' उन्हे जिज्ञासा हुई।

फुटपाथ पर दिल्ली के नक्शे बिक रहे थे। उन्होने एक खरीद लिया। नक्शे बेच रहे उस लडके से पूछा, "क्यो भाई, इस वक्त मै कहा हू—नक्शे मे बताओ जरा ?"

लडके ने बताया।

"रेल्वे स्टेशन कहा कहा है ? पुरानी और नई दिल्ली के ? किशनगज भी तो कोई स्टेशन है ? शायद सराय-रोहिल्ला भी कोई "

"जी हा।" लडका सभी स्टेशन दिखाने लगा।

सलूजा ने नक्शा समेट कर जेब मे रखा और चलने लगे।

लडका घबरा गया था। उठा और एक आदमी के पास पहुचा, "बाबूजी ! बाबूजी !"

आदमी ने पलट कर देखा, "क्या है ?"

लडके ने पीछे से सलूजा की ओर सकेत करते हुए कहा, "वो •• वो जा रहा है न ? उस ने अभी-अभी एक नक्शा खरीदा—दिल्ली का नक्शा। पूछ रहा था, अभी मैं कहा हू और रेलवे स्टेशन कहा-कहा हैं।"

आदमी की भौहो पर बल पडे। शारीरिक दृष्टि से वह बहुत मजबूत नही था। लडका लौट गया। वह आदमी एक तगडे व अपरिचित व्यक्ति के पास पहुचा और बोला, "सुनिए ! जरा मदद करेगे ?"

तगडे आदमी को कोई एतराज न हुआ। दुबले ने उसे बताया कि वह आदमी, जिस की पीठ यहा से नजर आ रही है शायद घुसपैठिया है और किसी तोड-फोड के लिए रेलवे-स्टेशन जाना चाहता है।

"आप को कैसे मालूम ?" तगडा आदमी उत्तेजित और उत्साहित

होने लगा।

"अभी-अभी उस ने एक नक्शा खरीदा। नक्शे वाले से रेलवे-स्टेशनों की सिचुएशन वगैरह पूछ रहा था।"

"अच्छा ?"

"जी हा।"

"आइए फिर !"

दोनो दौडे। सलूजा फुटपाथ पर सिर झुकाए हुए चल रहे थे। दोनो उन के ठीक सामने जा कर खडे हो गए। मजबूत आदमी के साथ होने से दुबले ने सलूजा से कडक कर पूछा, "कौन है आप ?"

उन्होने आखे झपकाई।

"मैं पूछता हू, कौन हो तुम ?" दुबले ने फिर पूछा।

"डाक्टर सलूजा।"

"क्या डाक्टर सलूजा ?" तगडा आदमी आगे आया, "सच बता—कौन है तू ?"

"पहले आप तमीज से बात करना सीखिए। मैं एक बहुत बडा आदमी हू। समझे ?" सलूजा पहली बार अपने लिए 'तू' सुन रहे थे।

"ठहरो एक मिनट !" दुबले आदमी ने तगडे को रोकते और स्वय सतुलित मस्तिष्क का सिद्ध करते हुए कहा, "डाटने से काम नही चलेगा। मुलायमियत से पूछिए। कही हम ख्वामखाह शक न कर रहे हो।"

"शक ? कैसा शक ?" सलूजा चौके।

उन के चौकते ही तगडे और दुबले आदमी की भौंहो पर बल पड गए। दुबले ने डपट कर पूछा, "तुम ने अभी-अभी दिल्ली का नक्शा खरीदा है ?"

"जी हा।"

"क्यो खरीदा ?"

"तमीज से बात करिए। आप मुझे 'तुम' नही कह सकते।"

"ओए! तमीज दे पुत्तर!" तगडे आदमी को तैश आ गया। दुबले को पीछे धकेलता हुआ वह आगे बढा। उस ने सलूजा का कालर पकड लिया और कहा, "पाकिस्तानी कही के? सीधे-सीधे बताता क्यो नही? कौन है तू?"

सलूजा इतने हक्के-बक्के रह गए कि कालर छुडाने का भी प्रयास न कर सके। तगडे आदमी ने न केवल कालर पकड रखा था, उन्हे कुछ उठा भी लिया था, जिस से उन के पैर जमीन पर प्राय लडखडा रहे थे।

वे दो आदमी एकाएक पचास हो गए। चारो ओर से आवाजे उठने लगी, "पाकिस्तानी! पाकिस्तानी जासूस! मारो!"

पर अभी तक किसी ने हाथ नहीं चलाया था।

कोई चिल्लाया, "मारना मत। बेकसूर भी हो सकता है!"

"कौन है तू? कहा रहता है?" तगडे आदमी ने सलूजा को झकझोर दिया। उन्हे खासी आने लगी। भय लगा, यही सडक पर दिल का दौरा पड गया तो

"अरे, यार, इसे बोलने तो दे। छोड गला।" किसी ने तगडे को पीछे हटा दिया।

"मैं मै डाक्टर सलूजा हू। इलाहाबाद से आया हू।" उन की आखे भर आई।

"अबे तो रोता क्यो है? तेरी जान तो नही निकाल रहे?"

"यहा कनाट-प्लेस मे ठहरा हू। अपने एक दोस्त के यहा "

"शक्ल देखो इस की! कनाट-प्लेस मे ठहरा है!" कोई ठठा कर हसा।

"क्या है? क्या बात है?" एक मुस्टण्डा भीड को चीरता हुआ आगे आया।

पीछे से किसी ने दबे स्वर मे कहा, "घुसपैठिया है ।"

मुस्टण्डे ने सुना ही था कि सलूजा को तड से तमाचा मार दिया । वह लडखडा गए । एक-दो लोगो को उन पर दया भी आई, लेकिन अधिकाश को यकीन हो गया था कि यह घुसपैठिया ही है ।

"मारो ! मारो !" आवाजे उठने लगी ।

सलूजा घिर गए । सिर, गर्दन, पीठ, छाती, चेहरा—कोई हिस्सा ऐसा नही था, जहा तमाचे या मुक्के न पड रहे हो । वह जोर से चिल्लाए, "छोडो । छोडो मुझे ! मै मै सब को मार डालूगा ! मैं डाक्टर सलूजा हू । मै शास्त्री से मिलूगा । चव्हाण से मिलूगा । एक-एक को गिरफ्तार करवा दूगा । समझते क्या हो मुझे ?"

चिल्लाहट के दौरान लोगो के हाथ कुछ रुके रहे, लेकिन ज्यो ही वह चुप हुए, वे दूने जोश से टूट पडे ।

"मत मारो ! मत मारो !" दो-तीन रोबीली आवाजे सुनाई दी ।

भीड मे से किसी ने मारना रोक दिया । यह देख कर एक और आदमी के भी हाथ रुक गए । इस से तीन आदमी प्रभावित हुए । उन्होने न केवल मारना रोका, मारने वालो को वे थामने भी लगे और चिल्लाए, 'रुकिए ! रुकिए !"

सलूजा जमीन पर गिर कर धूल से सन गए थे और क्रोध से थरथरा रहे थे । वह बहुत जोर से कुछ चिल्लाना चाहते थे, लेकिन खासी आ गई । उन के होठ कट गए थे । किसी ने खून वाली जगह पर रूमाल दबाना चाहा लेकिन उन्होने उसे पीछे धकेल दिया, 'हट जाओ ! पहले मारते हो और अब और अब "

पल-दो-पल सन्नाटा ।

तब तक वे पचास लोग प्राय सौ हो चुके थे । नए-नए आए लोगो मे से किसी ने जोर से कहा, "पाकिस्तानी है तो मुसलमान भी होगा ।"

उसी तरफ से किसी छोकरे की आवाज आई, "सुन्नत देखो

इस की !"

"हा ! हा ! देखेगे !" चारो ओर से नारे उठने लगे।

"दूर रहो ! बेवकूफो " सलूजा की आवाज भय से विस्फारित हो गई। उन्होने दोनो हाथो से अपनी पेट थाम ली और पीछे हटने लगे, लेकिन आगे-पीछे-अगल-बगल लोग-ही-लोग थे। किसी ने उन की गर्दन मे हाथ डाला और नाटकीय प्यार से कहा, "अरे, दिखा दे ! क्या बिगडेगा तेरा, ऐ ?"

"छोडो !" सलूजा भागने लगे, लेकिन भीड चारो ओर से कस गई। अब उन्हे तमाचे या मुक्के नही पड रहे थे, लेकिन स्वय को बचाने की इतनी कोशिश उन्होने मार पडते समय भी नही की थी। अनेक लोगो ने उन्हे ऐसे जकड लिया कि वह जमीन से अधर उठ गए—लेटी हुई स्थिति मे। उन का चेहरा आकाश की ओर था, लेकिन आकाश बहुत कम नजर आ रहा था। आकाश की अधिकाश जगह मे लोगो के चेहरे और उत्सुक-उत्तेजित आखे। उन के हाथ दो डैनो की तरह अलग कर दिए गए। उन्होने जोर से तडपना चाहा, लेकिन किसी विराट केचुए की तरह ऐंठ कर ही रह गए।

लोग हटने लगे। अब उन मे उत्तेजक चीखो की बजाय फुसफुसाहटे हो रही थी। "हमे मानना पडेगा " किसी ने किसी से कहा, ' कि दुश्मन इस मामले मे तो सफल हुआ ही है। छाता-सैनिक उतार कर उस ने चारो तरफ वाकई शक पैदा कर दिया है।"

"बेवजह पिट गया बेचारा !"

"लेकिन थोडा कसूर उस का भी था।" एक आदमी ने जाते-जाते रुक कर कहा, "जो पूछा गया, उस के टेढे जवाब देने की बजाय खैर, जो हो गया, हो गया।"

"मुझे · टैक्सी ला दीजिए।" सलूजा तमतमाए चेहरे के साथ एक ओर असहाय खडे थे। किसी ने उन की बात न सुनी। उन्होने फिर

दोहराया, जिस से एक युवक रुक गया। बोला "गनीमत समझिए, लोग आप को पुलिस मे न ले गए।"

सलूजा भुरभुराते हुए चुप रहे। युवक टैक्सी लेने चला गया।

करीब पन्द्रह मिनट बाद सलूजा डाक्टर सिंह की कोठी के सामने उतरे तो काप रहे थे।

ड्राइग-रूम मे आ कर वह जोर से चिल्लाए, "सुलोचना! कहा हो? मर गया—आज मैं मर गया!"

क

"यह रेडियो भूठिस्तान है। लीजिए, अब आप ढिढोरची से खबरे सुनिए।"

हीरेन्द्रजी के कानो मे ज्यो ही यह आवाज पडी, वह नाराज हो गए। निश्चय ही घर मे किसी ने पाकिस्तानी मीटर पर रेडियो चला रखा था। पाकिस्तान के समाचार पढने वाले महोदय का एक खास ही लहजा था, जो, हीरेन्द्रजी के अनुसार, 'बहरा व्यक्ति भी आसानी से पहचान सकता था'। वह रेडियो वाले कमरे मे गए तो देखा, वीरेन्द्र पूरे ध्यान से सुन रहा है। वह डाटने लगे, लेकिन वीरेन्द्र ने कहा, "पिताजी, यह पाकिस्तानी नही, हिन्दुस्तानी रेडियो है।"

"हिन्दुस्तानी ? लेकिन लहजा तो "

"यही तो खूबी है। बिल्कुल उसी लहजे मे यह 'ढोल की पोल' कार्यक्रम अब रोज आने लगा है।" वीरेन्द्र हसा, "इस मे पाकिस्तानी प्रोपेगैण्डा की पोल खोली जाती है।"

"प्रोपेगैण्डा नही, बेटे, प्रचार।"

वीरेन्द्र के सारे उत्साह पर पानी पड गया।

हीरेन्द्रजी ने गौर से सुना। बिल्कुल वही लहजा उन्हे हसी आ गई, "कमाल है आकाशवाणी के कलाकार भी !"

कार्यक्रम के बाद रेडियो ने कहा, "अभी आप 'ढोल की पोल' सुन रहे थे। कलाकार थे अनवर हुसैन, जोकेन "

आगे के नाम हीरेन्द्रजी के ठहाके मे डूब गए।

ख

अख्तर ने सिगरेट सुलगाई। होश मे आते ही सईदा शोर न मचा दे, इस के लिए उस के मुह मे अच्छी तरह कपडा ठूसा हुआ था। ऊपर से अच्छी तरह एक और कपडा कसा हुआ था। हाथ-पैर भी मजबूती से बधे हुए।

अब सुबह के चार बजने वाले थे। सहयोगी अभी तक लौट कर नही आया था।

पूर्व-योजना के अनुसार अख्तर को होटल के सामने उतार कर सहयोगी टैक्सी आगे बढा ले गया था। मौका देख कर उस ने टैक्सी को कही लावारिस छोड दिया होगा और खुद सडक पर पैदल निकल आया होगा। टैक्सी चूकि होटल के नजदीक नही छोडी जा सकती थी, इस के लिए उसे कई मील दूर जाना पडा होगा। उतनी दूरी से ब्लैक-आउट की असुविधाओ को भेदते हुए यहा तक वापस आने मे वक्त तो लगेगा ही।

लेकिन सहयोगी अभी आए या कुछ घण्टो बाद, क्या फर्क पडता है! अख्तर सन्तोष से हसा। सईदा जिसे मिलनी चाहिए, उसे मिल ही गई है। उस ने गठरी की तरह बधे उस शरीर को फिर एक बार देख लिया।

कमरे मे जीरो पावर का बल्ब जल रहा था। उस के पीले प्रकाश मे सईदा पलग पर पडी हुई धुधली-धुधली

वह कसमसाई।

अख्तर उस पर झुक आया और बुदबुदाया, "सईदा!" मुह पर तो कपडा कसा हुआ था, अख्तर ने उस के कपार पर होठ रख दिए। ठण्डा। व्यर्थ।

कसमसाई है तो अब जल्द ही होश मे आ जानी चाहिए। अख्तर उस के सिरहाने बैठ गया। मैनेजर अब भी ऊघ रहा होगा। दिन के

समय सईदा को होटल से निकालना कोई मुश्किल नही। वह उमे बुरका पहना कर बहुत ग्रासानी से बाहर ले जा सकता है। उसे उम के कमरे से निकलते हुए मैनेजर देख ले तो भी यही समझेगा कि कोई परिचिता या रिश्तेदार मिलने आई होगी, अब जा रही है। इस के अलावा, कौन-सा यह होटल दूध का धुला है।

बेहोश सईदा को उठा कर कमरे मे लाना चौकीदार की आख बचा कर सम्भव नही था। दूध का धुला होटल न होने पर भी ऐसी हरकत मे हगामा हो सकता था, लेकिन चौकीदार की दो खुली आखो पर दस-दस का एक-एक नोट चिपका दो, एक-एक नोट दो जेबो मे डाल दो, एक हाथ मे पकडा दो कम-से-कम इस तरह के होटलो के चौकीदार तो ऐसे ही हो सकते हैं

लेकिन अख्तर जानता था कि होटल फिर भी होटल है। यहा से, बल्कि दिल्ली मे ही जितनी जल्दी रवाना हुआ जा सके, उतना अच्छा। मेरठ जाया जा सकता है। वहा रहने-ठहरने की सुविधाए कुछ दिनो के लिए मिल जाए, इतना इन्तजाम 'यूनिट' अब कर ही लेगी।

इस के बाद सईदा के साथ धीरे-धीरे पाकिस्तान की ग्रोर बढा जाए।

अभी नही।

ग्रभी तो सरहदो पर भयकर लडाई छिडी हुई है। लडाई जब खत्म हो जाएगी—कभी-न-कभी होगी ही—अख्तर और अख्तर जैसे कई एजेण्ट चुपके-चुपके पाकिस्तान भागेगे। जिस की जितनी ग्रौकात—कोई लडकी ले कर, कोई सोना-चादी ले कर, कोई खाली हाथ ही और कोई भागे तो पाकिस्तान की ओर लेकिन पहुच जाए हिन्दुस्तानी जेल मे!

सईदा फिर कसमसाई।

"सईदा! सुनो, सईदा!" वह फिर उस के बेहोश चेहरे पर झुक ग्राया।

आधी रात को रेडियो-स्टेशन मे जितने भी कर्मचारी मौजूद थे, सब सकते मे आ गए। स्टाफ-कार लेडी-एनाउन्सर को लेने जाए और पता चले कि रेडियो की तरफ से एक टैक्सी आ कर उसे पहले ही ले जा चुकी है! भयकर! ड्यूटी-रूम मे बैठी दो महिलाओ के चेहरो पर हवाइया उडने लगी।

एक-दो लोगो ने सईदा पर भी शक करना जरूरी समझा। उन का कहना था, पता नही, कौन कहा-कहा मिला हुआ हो! सईदा उठा कर ले न जाई गई हो, बल्कि वह खुद ही सरक गई हो। क्या आश्चर्य यदि ऐन इसी वक्त, इसी ड्यूटी-रूम मे कोई पाकिस्तानी जासूस मौजूद हो!

यह बात यो तो सब ने मजाक मे टाल दी लेकिन अकस्मात् सभी को एक-दूसरे पर शक होने लगा।

सुबह किसी के ध्यान मे आया कि अपने कागजात आदि रखने के लिए सईदा को जो आला मिला हुआ है, उस का ताला तोडा जाए। शायद उस मे से कुछ पते या फोन-नम्बर ऐसे मिले, जहा इस दुर्घटना की सूचना देना आवश्यक हो।

घ

सईदा ने आखे खोली। धुधली रोशनी अपरिचित कमरा कहा है वह? यहा कैसे आई और वह बधी हुई है! मुह मे कपडा ठुसा हुआ एकाएक सारी चेतना सिमट कर जल उठी। उस ने चीखना, तडपना चाहा पर

"सईदा!" उस ने सुना। भय से आखे फट रही थी। 'कौन? कौन हो तुम?' उस ने पूछना चाहा, पर आवाज

"सईदा मैं अख्तर "

अख्तर ! पाकिस्तानी ! उसे लगा, अभी वह फिर से बेहोश हो जाएगी वह पुरुष चेहरा उस की आखो के इतना पास था कि उसे वह पूरा देख भी नही सकती थी । रोशनी का फीकापन कैसा डरावना अब ? अब आगे जो होने जा रहा था सिहर कर उस ने आखे बन्द कर ली । इस के साथ ही इतना डर लगा कि उसी क्षण उसे आखे खोल देनी पडी । पास ही वह चेहरा अख्तर का चेहरा और झुक आया । कपार पर एक गीला स्पर्श । होठ ! बहुत गर्म आसू सईदा की आखो मे से गालो पर बह आए । कैसी लाचारी ! रोने के लिए भी वह चीख नही सकती । बलवन्त ! तेरी सईदा आज तू वहा लड रहा है और तेरी सईदा आज

अख्तर कह रहा था, "सईदा यह मै हू मुझे माफ कर दो, सईदा, मुझ से रहा ही न गया । मेरे पास और कोई चारा ही नहीं था "

वह मात्र सुन रही थी ।

अख्तर ने उसे उठा कर कुछ तिरछा कर दिया, ताकि पीछे बधे उस के हाथ खोल सके ।

वह जोर से, पूरे जोर से तमाचा मारेगी । उस ने जल्दी-जल्दी पलके झपकाई ताकि पुतलियो पर छलक रहे आसू चू जाए ।

हाथ खुले । उस ने उन्हे घुमा कर अख्तर को नोच लेना चाहा, पर अख्तर के भी तो हाथ है ! उस की दोनो कलाइया थाम कर जकड ली गई ।

"सईदा ! अब कोई फायदा नही । लडोगी तो फिर बाध दूगा—समझी ?" वह उस के पैर खोल रहा था ।

मुह पर कसा कपडा हटाने से पहले उस ने चेतावनी दी, "सईदा ! चीखोगी तो तुम्हारी अपनी बदनामी है । अभी तुम जिस हालत मे हो,

उस से भी बुरी हालत हो जाएगी तुम्हारी सब सोच लेना "

और सईदा इतनी हताश हो गई कि हाथ-पैर खुल जाने के बावजूद मुश्किल से वह किसी तरह बैठ भर सकी। इतनी काप रही थी कि उठना चाहती तो जरूर गिर पडती। ओह! एकाएक एकाएक यह क्या हो गया! और क्या होने जा रहा है खुदा! तू है भी या

"सईदा मै तुम से निकाह कर लूगा। तुम्हे पूरी इज्जत से रखूगा। लेकिन अगर तुम चीखी—सुन रही हो न ?"

वह रो रही थी।

"अगर चीखी तो जिन्दगी भर लोग तुम पर थूकेगे कहीं की न रहोगी।"

सईदा को छूना अब लाश को छूने जैसा नही था। अख्तर की एक-एक रग मे आवेश की भाप घुटने लगी। उस ने उस के मुह मे ठुसा कपडा निकाल दिया। सईदा चीखने जा ही रही थी कि जिन्दगी भर लोग तुम पर थूकेगे

थू! सईदा ने अख्तर के चेहरे पर गाढी नफरत से थूक दिया। अख्तर हसा, 'समझदार हो! चीखी तो नही! आगे भी चुप रहना • इसी तरह।"

कमीज की बाह से थूक पोछ कर वह पलग पर बैठ गया। सईदा उठ पाती, इस से पहले वह कमरे की रोशनी बुझा चुका था।

५

हाक और ऐरो की कार कनाट-प्लेस के एक चौराहे के पास पार्क की हुई थी। दोनो अगली सीट पर बैठे सिगरेट पी रहे थे। लगभग दस मिनट बाद वे उन स्थानो की ओर रवाना हो जाने वाले थे, जो शकास्पद थे। सुबह अभी-अभी हुई थी, जिस से कनाट-प्लेस की सभी दूकानो के

दरवाजे मुदे हुए थे और सडको पर नाम-मात्र का ही ट्रैफिक होने के कारण हवा मे पैट्रोल की नीली बू नही थी । झोको मे गुलाबी, सूखी ठण्ड ।

दस बजे से पहले उन दोनो को या उन मे से किसी एक को वापस आ कर रेडियो-स्टेशन के पास तैनात हो जाना था, क्योकि उन्हे ज्ञात था कि सईदा की ड्यूटी आज आधी रात के बाद से सुबह दस बजे तक है । इतनी लम्बी ड्यूटी कम ही लगाई जाती है, किन्तु इन दिनो युद्ध-स्थिति के कारण रेडियो का काम प्राय दोगुना हो गया था, जबकि कर्मचारी उतने ही थे ।

अखबार बेचने वाले एक लडके ने कार के अन्दर झाकते हुए जोर से कहा, "बाबूजी ! अखबार ! कसूर मे पाकिस्तान की करारी हार ! चौदह अफसर गिरफ्तार !"

"अरे, वाह ! बिल्कुल शायर है न नो !" ऐरो ने अखबार खरीदते हुए कहा ।

सिक्के जेब मे रख कर लडका हसने लगा । उस के अगले दो दात कुछ बडे थे जो उस के पूरे चेहरे को आकर्षक भोलापन दे रहे थे । उस के बालो मे कघी नही हुई थी और आखे चमक रही थी । वह जोर से दौडा और दूर खडा हो गया । मुड कर उस ने टैक्सी की ओर देखा और हसने लगा । फिर से उस ने दौड लगा दी और एक पेड के नीचे रुकते हुए चिल्लाया, "पाकिस्तानी जनरल मारा गया । ब्रिगेडियर का खात्मा । सत्रह पैटन-टैंक हमारे कब्जे मे आज का ताजा खबर !"

दो आदमियो ने उसे रोका और अखबार खरीदे । एक आदमी अपने चेहरे के सामने अखबार फैला कर पढता हुआ कार की ओर बढने लगा । अखबार की आड के कारण वह कार को देख नही सकता था । हाक व ऐरो ने उसे करीब आते और कार के अगले हिस्से के साथ टकरा कर हडबडाते देखा । अखबार हटा कर उस ने कार पर एक झेंप-

भरी निगाह डाली और फिर से अखबार फैला लिया। कार की बगल से निकलता हुआ वह आगे जाने लगा।

"किसी नाली-वाली मे न गिर पड़े!" ऐरो हसा।

अखबार उन्होने खरीदा तो था, लेकिन युद्ध के सभी समाचार उन्हे रेडियो-प्रसारण से भी पहले ज्ञात हो जाते थे। अखबार मे उन्हे विशेष रुचि नही हो सकती थी।

कार मे लगे रेडियो-फोन मे किरकिरी हुई। ऐरो ने तुरन्त अपनी खिडकी का काच ऊपर तक चढा लिया। दूसरी खिडकिया पहले ही बन्द थी।

अब वे कार के अन्दर इतनी अच्छी तरह बन्द थे कि सडक की अधिकाश आवाजे उन तक नही पहुच रही थी। न उन के सवाद ही कार से बाहर आ सकते थे।

"हैलो!" रिसावर उठा कर हाक ने कहा।

"क्या आप नरक से बोल रहे है?" पूछा गया।

"मै घोडा हू।" आज का साकेतिक उत्तर।

'मिस्टर हाक! आप या मिस्टर ऐरो मे से कोई एक तुरन्त पार्लियामेट स्ट्रीट के आफिस मे पहुचिए। ओवर।"

"हमे साथ-साथ कही जाना है। क्या उधर आना बहुत जरूरी है? ओवर।"

'यस, वेरी इम्पार्टेट। मिस सईदा हैज बीन किडनैप्ड। ओवर।"

"किडनैप्ड? व्हेन? ओवर।"

"सुबह करीब दो बजे। हास्टल से। आप मे से कौन आ रहा है? ओवर।"

'मै खुद। ओवर।"

"राइटो क्विक!" उधर से फोन रख दिया गया।

ऐरो और हाक ने तुरन्त निर्णय लिए। ऐरो कार द्वारा शकास्पद

स्थानो की ओर चला गया और हाक एक स्कूटर मे, जो सामने ही मिल गया, तीव्रता से पार्लियामेट स्ट्रीट की दिशा मे बढा ।

च

टैक्सी लावारिस छोड कर सहयोगी को करीब आधा मील पैदल चलना पडा, तब कही उसे बस-स्टाप मिला । प्राय एक घण्टे के इतजार के बाद उसे पहली बस आती नजर आई । सूर्य अभी निकला नही था, लेकिन अब अधेरा भी नही था । सहयोगी ने हाथ उठाया । बस रुकी । वह पुरानी दिल्ली नही जा रही थी । उस मे केवल तीन सवारिया बैठी हुई थी और सिर्फ युद्ध की बाते कर रही थी ।

सहयोगी कनाट-प्लेस मे उतर गया, जहा से उस ने पुरानी दिल्ली की बस पकडी ।

जब उस ने होटल मे कदम रखे, सूर्य दो हाथ ऊपर आ गया था । अख्तर ! अभी वह सहयोगी के होठो पर मुस्कान आना चाहती थी । उस ने रोक लिया ।

अपने कमरे मे दाखिल होने से पहले उस ने अख्तर के कमरे पर निगाह डाली । वह बन्द था । उन के कमरे अगल-बगल थे, जिन का बीच का दरवाजा होटल वालो ने बन्द कर रखा था । सहयोगी ने भी अन्दर से अपना दरवाजा बन्द किया और टाई निकालने लगा । इस के बाद बीच के बन्द दरवाजे के पास आ, कान लगा कर सुनने लगा । कोई आवाज सुनाई न दी । चूकि अब कोई देख नही रहा था, सहयोगी खुल कर मुस्कराया ।

बाथ-रूम कमरे से ही सलग्न था । वह ब्रश करता रहा । कुल्ले करते हुए जान-बूझ कर उस ने ज्यादा आवाज की, ताकि बीच के दरवाजे के उधर अख्तर सुन ले । सहयोगी ने शेव की, फिर तसल्ली से नहाया

भी। उस समय वह प्रसन्नता से सीटी बजा रहा था।

धुले कपडे पहन कर वह बाहर आया।

अख्तर का कमरा अभी भी बन्द था।

उस ने दरवाजे पर खटखट की। कोई जवाब नही। फिर से खटखट।

"कौन ? एक मिनट " भीतर से अख्तर जोर से बोला।

वह खडा रहा। दरवाजा खुला।

"आओ।" सामने खडा अख्तर, जो बनियान और लुगी मे था, मुस्कराया।

अदर आ कर दरवाजा अख्तर ने नही, सहयोगी ने बन्द किया। चारो ओर देखा। सईदा नही थी।

"कहा है ?" सहयोगी ने पूछा।

अख्तर सिगरेट सुलगा रहा था, "बाथ-रूम मे।"

"खूब !" सहयोगी पलग पर बैठा। चादर मसली हुई।

बाथ-रूम का दरवाजा खुला। सहयोगी उठा। सईदा कमरे मे आई और उसे देखते ही ठिठक गई।

"मेरा दोस्त है।" अख्तर ने आश्वासन के स्वर मे बताया।

"चाय-वाय पी चुके क्या ?" सहयोगी ने पूछा।

"अभी नही।"

"मगाई जाए ?"

अख्तर सईदा से मुखातिब हुआ, "माई डीयर, जरा फिर से बाथ-रूम मे जाओ भला ? चाय मगवाने के लिए कमरा खोलना पड़ेगा।"

सईदा जहा-की-तहा खडी रही।

अख्तर ने खुद आगे बढ कर बाथ-रूम खोला और अन्दर छिपने का आज्ञावाही सकेत किया।

वह खामोशी से भीतर चली गई। जाते-जाते उस ने फिर एक बार

भयभीत निगाह सहयोगी पर डाली ।

चाय-नाश्ता रख कर बैरा चला गया और फिर अन्दर से सिटकनी चढा दी गई । अख्तर ने बाथ-रूम के दरवाजे को ठेल कर खोलना चाहा, लेकिन वह बन्द था ।

"सईदा ! कम ऑन । नाश्ता आ गया है ।"

दरवाजा न खुला ।

"बाहर आओ, सईदा, जिद का कोई मतलब नही है कम ऑन, आई से ।"

दरवाजा बन्द ही रहा । अख्तर ने अधैर्य से खटखटाहट की, "सईदा ! समझदारी से काम लो, चलो, आओ बाहर । लाइक ए गुड गर्ल ।"

सहयोगी ने धीमी आवाज मे दोहराया, "लाइक ए गुड गर्ल !" और व्यग्य से मुस्कराया । अख्तर कुछ चौक कर उस की तरफ देखने लगा ।

सईदा आखिर बाहर आई और लुटी-लुटी एक दीवार से टिक कर खडी रही ।

"बैठो !" अख्तर ने एक कुर्सी उस की ओर बढाई ।

वह बैठी, क्योकि ऐसा करने के लिए कहा गया था । आज्ञाओ का ठीक किसी गुलाम की तरह पालन करना, यही तो बचा था अब उस की जिन्दगी मे । होश मे आने के बाद से अब तक वह एक भी शब्द नही बोली थी । मानसिक, शारीरिक यातना के कारण दो-एक बार उस के मुह से रिरियाहट भर निकली थी । बस ।

"पीयो !" उसे चाय दी जा रही थी ।

"खाओ !" आमलेट की प्लेट उस की तरफ खिसकाई जा रही थी । छुरी और काटा उस ने आमलेट काट कर काटे से उठाया । जी हुआ, काटे को पूरा-का-पूरा मुह मे डाल दे, डालती जाए और गले को लहूलुहान करती हुई मर जाए, यदि इसी तरह मरा जा सकता हो ।

आधा ग्रामलेट मुश्किल से खा सकी होगी कि पेट मे भभाका-सा उठा। दौड कर वह बाथ-रूम मे गई और कै करने लगी।

"अख्तर " वह कमरे मे वापस आती, इस से पहले सहयोगी ने कहा, 'अब क्या प्रोग्राम है ?"

अख्तर ने जैसे सुना ही नही। उठा और बाथ-रूम मे जा कर सईदा की पीठ पर हाथ रखता हुआ झुका। 'बेचारी ! कितनी परेशान हो रही है।' उस ने सोचा। सचमुच उसे सईदा पर दया आ रही थी।

सईदा ! पाकिस्तान पहुच कर वह इस से शादी करेगा, इसे कानूनी तौर पर भी अपनी बीवी बना लेगा। इतनी हचमचाई मन स्थिति मे भी सईदा के चेहरे पर जो घरेलूपन था—किम विंटर्स से कितना भिन्न !—उस ने अख्तर को इतना मोह लिया था कि एकाएक ही वह बहुत भावुक हो उठा था। सईदा को थाम कर वह कमरे मे लाया और पलग की ओर बढा, "लेट जाओ, सईदा, तुम ख्वामखाह इतना फील कर रही हो। जल्द ही ठीक हो जाओगी।"

सईदा लेट गई। नाक के नीचे और कपार पर पसीने की कई बूदे छन आई थी। अख्तर ने उन्हे रूमाल से पोछ दिया।

"अख्तर, जरा मेरे कमरे मे चलोगे ? कुछ बाते करनी है।" सहयोगी द्वारा सिगरेट का कश।

"नाश्ता कर लें। फिर।"

छ

अभी-अभी आए अखबार को डाक्टर सिंह ध्यान से पढ रहे थे। एक कोने मे 'हमारा पश्चिमी मोर्चा' शीर्षक से युद्ध की सार-सूचनाए।

लाहौर क्षेत्र कसूर मे घमासान युद्ध और विजय। वाघा और खालरा मे निरन्तर आगे बढती फौजें।

जम्मू-सियालकोट . घोर युद्ध जारी।

छम्ब-जौरिया सम्पूर्ण क्षेत्र पर भारतीय अधिकार। उडी और पुछ आपस मे जुड गए।

बाडमेर-सिन्ध पाकिस्तानी फौजे कच्छ के रण मे अपनी सिंचाई-व्यवस्था की सहायता से दलदल बनाने मे लगी है। भारतीय फौजो द्वारा दुश्मन पर लगातार चोट।

फोन मे घण्टी हुई। उन्होने रिसीवर उठाया, "हैलो!"

"बलवन्तजी है क्या?" अपरिचित पुरुष-स्वर। वह चौकन्ने हुए, "देखिए वह तो दिल्ली मे नही है। आप कौन साहब बोल रहे है?"

"मैं रेडियो-स्टेशन से बोल रहा हू यहा एक बडी अजीब बात हो गई है। उस की सूचना बलवन्तजी को देना निहायत जरूरी "

"मुझ से कहिए। मैं उस का अकल हू।"

"आप का फोन-नम्बर मुझे सईदाजी की नोट-बुक मे से मिला है।" स्वर नियन्त्रित नही था, "आय'म रियली सॉरी टु कन्वे दिस टु यू· · हुआ यह है, कल रात सईदाजी को उन के हास्टल से "

फिर जो बात सामने आई, उस मे डाक्टर सिंह हतप्रभ ही रह गए। सुलोचना को बुलाया और जल्दी-जल्दी कहा, "मै बाहर जा रहा हू। पुलिस-आफिसियल्स से मिलने। एक लडकी किडनैप कर ली गई है।"

"कौन?" सुलोचना चौंकी।

डाक्टर सिंह को पहली बार बताना, या किसी तीसरे व्यक्ति के सामने स्वीकार करना पडा, "बलवन्त उस से मैरिज करने वाला है "

"ओह!"

तभी सलूजा आ पहुचे, "क्या बात है? दोनो इतने सीरियस कैसे· ·"

"इन्हे आप बताइए।" डाक्टर सिह सुलोचना से किसी तरह बोले और कार की चाबी ले कर तेजी से निकल गए।

"अख्तर ! क्या इरादे है ?" सहयोगी साकेतिकता से देखता हुआ मुस्कराया।

सईदा अख्तर के कमरे मे बन्द थी। ये दोनो बगल के दूसरे कमरे मे, जिस के दरवाजे पर उन्होने परदा खीच दिया था, आमने-सामने बैठे थे।

"इरादे ? किस बारे मे ?"

सहयोगी ने परदा एक तरफ सरकाते हुए दरवाजा बन्द किया। कमरे मे जो अन्धेरा घिर आया, उसे दूर करने के लिए उस ने ट्यूब जलाई और कहा, "हम ने काफी बडा रिस्क लिया है। अपनी जान बचानी भी जब मुश्किल हो रही है, उडा कर लाई हुई एक लडकी साथ रखना "

"हमे आज ही दिल्ली से निकल जाना चाहिए। मैं सईदा के लिए अभी एक बुरका खरीद लाता हू। मेरठ जाना ठीक रहेगा "

"शायद • लेकिन तुम ने सोचा है, इतने बडे रिस्क मे मैं ने तुम्हारा साथ क्यो दिया ?"

"क्यो ? दोस्त के नाते ?"

"बेशक, दोस्त के नाते ! लेकिन दोस्ती मे भी लेन-देन होते हैं।"

"साफ-साफ कहो।" अख्तर ने उत्तेजना अनुभव की। सहयोगी का आशय धुधला-धुधला समझ मे आ गया था।

"टु बी वेरी फ्रैंक, अब एकाध घण्टा तुम इस कमरे मे और मैं तुम्हारे कमरे मे "

"क्या बकते हो !" अख्तर बैठा न रह सका। खडे हो कर उस ने दोनो हाथ जेब मे डाल लिए।

"मुझे तुम्हारे 'बकते' शब्द पर सख्त एतराज है।"

"तुम्हे भी बात सोच-समझ कर कहनी चाहिए।"

"तुम उसी समय समझ जाते, जब मैं ने तुम्हारा सुझाव माना था।"

"कौन जानता था, तुम इतनी कमीनगी दिखाओगे।"

"अख्तर ! होश मे बात करो।"

"तुम्हारी जगह कोई और होता " अख्तर ने वाक्य पूरा न किया। आगे जो कहने जा रहा था, काफी तीखा था।

"तो क्या करते ?" सहयोगी ने दोनो हाथ छाती पर मोड लेते हुए जैसे चुनौती दी।

" "

"अख्तर ! मैं लम्बी बहस नही चाहता। सौ बात की एक बात, मैं उस कमरे मे जाऊगा। अभी।"

"मेरे रहते यह नही हो सकता।"

सहयोगी की भौहे सिकुडी, "यह होगा।"

"तुम अच्छी तरह जानते हो, इस के साथ मुझे निकाह करना है।"

"क्या बचकानी बात करते हो ! तुम्हारे निकाह के लिए मैं क्यो इतने बडे रिस्क मे साथ देता ?"

"अब क्या हो सकता है ? साथ तुम दे चुके।"

"हा और उस के एवज मे "

"सवाल ही नही उठता।"

"एक छोकरी को ले कर तुम मुझ से झगडोगे ?"

"शट अप !" 'छोकरी' सुनते ही अख्तर के कानो के लवे जल उठे।

"लाओ, कमरे की चाबी दो।" सहयोगी ने हाथ बढाया।

अख्तर काबू मे न रह सका। उस हाथ को पकड कर उस ने इतनी जोर का झटका दिया कि सहयोगी लडखडा कर टी-टेबल पर गिर पडा। टी-टेबल के पास फर्श पर रगडे जाने की तीखी और फटी हुई आवाज·

सहयोगी उठा। क्षण-दो-क्षण वे खूखार जानवरों की तरह कुछ इस

तरह आमने-सामने खडे रह गए, मानो किसी भी वक्त छलाग लगा कर उन्हे एक-दूसरे पर टूट पडना हो। सहयोगी के होठ आवेश से टेढे हो रहे थे। "अख्तर !" उस ने कहा, "तुम ने यह अच्छा नही किया। ताकत की मुझ मे भी कमी नही, लेकिन यहा होटल मे लडोगे तो हम दोनो पर खतरा आएगा।"

"बेशक। तुम भी यह सोच लो।"

"मुझे चाबी चाहिए।"

"मेरे साथ अपनी भी गिरफ्तारी करवानी हो तो आओ, लड लो।"

"यो डरा कर तुम मुझे झुका नही सकते।"

जवाब मे अख्तर सिर्फ हसा। अपमान सहने की मजबूरी ने सहयोगी की पसलियो के पीछे क्रोध का बवण्डर पैदा कर दिया। वह नजदीक आया, "लाओ चाबी। मुझे मेरा हिस्सा चाहिए।"

"शैतान ! ले हिस्सा !" अख्तर ने आपा खो कर उस के पेट मे जोर का मुक्का मारा।

और दोनो गुथ गए।

इस का कारण अब सईदा नही थी। उत्तेजना मे दोनो ही उसे भूल गए थे और इस लिए लड रहे थे कि यह मान-अपमान का सवाल था। अख्तर की कमीज फट गई। उस ने सहयोगी का चेहरा बुरी तरह नोच लिया। मेज-कुर्सियो के घिसटने और जो हाथ में आए वह एक-दूसरे पर फेकने की आवाजे बीच के बन्द दरवाजे को भेद कर सईदा तक पहुच रही थी।

और सईदा खामोश थी।

वे आवाजे होटल के गलियारो मे सरकती हुई उस काउण्टर तक पहुची, जहा मैनेजर बैठा हुआ था और उस आगन तक भी पहुची, जहा कई लोग चाय या काफी पी रहे थे।

मैनेजर चिन्तित मुद्रा में उठा और शोर वाले कमरे की तरफ बढा।

कुछ बैरे व लोग साथ हो लिए ।

दरवाजा पीटा जाने लगा ।

सहसा उन्होने भीतर से एक चीख सुनी । इस के साथ ही उठा-पटक की आवाजे और तेज हो गई । ऐसा लगा, जैसे लडने वालो मे से कोई एक दरवाजे की सिटकनी उतारना चाहता है, लेकिन दूसरा उसे घसीट-घसीट कर दूर फेक देता है ।

"पता नही पता नही अन्दर क्या " कोई बुदबुदाया ।

एक बैरे ने कहा, "इसी तरह खून-खच्चर हो जाते है ।"

दूसरा बैरा, जो मैनेजर के पीछे खडा था, बोला, "सा'ब, दरवाजा तुडवाइए ।"

लेकिन उसी समय सिटकनी उतरी । दरवाजा खुला ही था कि भडाक से बन्द हो गया—अन्दर से कोई जोर से उस पर आ टकराया था ।

फिर से दरवाजा खुला और लडखडाता हुआ अख्तर बाहर निकला । खून से लथपथ । उस की बाह मे चाकू का वार हुआ था । खून बह रहा था, वहा उस की दूसरी हथेली कमी हुई थी ।

होटल के बैरे तो किसी ऐसे ही दृश्य की आशा रखे हुए थे, लेकिन वहा ठहरे लोगो मे से एक की जान सूख गई । वह टेलीफोन की ओर भागा, "पुलिस ! पुलिस !"

"नही ! मत बुलाइए ।" अख्तर चिल्लाया, "मत बुलाइए पुलिस "

"कुत्ते ! बदमाश ! गद्दार कही के !" कमरा खुला हुआ था और भीतर से गालिया फूट रही थी । गालिया देने वाला अभी तक नजर नही आया था और सिवा होटल-मैनेजर व मोटी खाल वाले दो-एक बैरो के सभी को दहशत हो रही थी ।

उसी समय बगल के कमरे का दरवाजा, जिस पर ताला पडा हुआ था, अन्दर से पीटा जाने लगा ।

"खोलो ! खोलो !" विस्फारित नारी स्वर ।

इस के साथ ही जोर का क्रन्दन

ॐ

फोन रखते हुए पुलिस-अधिकारी ने डाक्टर सिह की ओर देखा, "पता चल गया।"

"वह " उन्होने राहत महसूस की, लेकिन आशका की तडप अभी भी वैसी ही थी, "वह कहा है ?"

"फतहपुरी के एक होटल मे । वे लोग खुद ही जाल मे आ फसे । उन मे झगडा हुआ, फिर छुरेबाजी। थाने मे लडकी ने अपना नाम सईदा बताया। शायद वही लडकी है, जिस की हमे—आप को—तलाश "

"मै उस से फोन पर बात कर सकता हू ?"

"इस की बजाय " पुलिस-अधिकारी उठता हुआ बोला, "आइए, मै वही जा रहा हू । साथ चलिए ।"

सईदा हिलक-हिलक कर रो रही थी। डाक्टर सिह ने उसे दोनो हाथो मे भीच लिया था। वह सान्त्वना के शब्द बुदबुदा रहे थे, लेकिन चूकि यह बात लगातार उन के ध्यान मे थी कि सईदा को उन्होने पहली बार इतना स्पर्श किया है, बुदबुदाहट मे जरा भी सहजता नही थी। पुलिस-अधिकारी समझ रहे होगे कि इन दोनो मे गहरी आत्मीयता होनी चाहिए, जबकि वह सईदा को ले कर हमेशा एक अटपटी दूरी महसूस करते रहे थे। आज उसे वह मुख्यत इस लिए थाम रहे थे कि यह उन का कर्त्तव्य था। इस के अलावा, सान्त्वना पाने की सईदा की आवश्यकता इतनी जबर्दस्त थी कि यदि वे दोनो बिल्कुल अपरिचित होते तो भी शायद उन्हे उसे भीचना पडता।

सईदा और डाक्टर सिह, दोनो के ही मन मे एक सवाल ठाठे मार

रहा था जब बलवन्त वापस आएगा और ये समाचार सुनेगा, क्या सोचेगा वह ? कैसी प्रतिक्रिया होगी उस पर ? क्या वह सईदा को उसी रूप मे स्वीकार कर सकेगा, जिस रूप मे उस ने तब किया होता, अगर यह सब, अविश्सनीय-सा यह सब न हुआ होता ? सईदा का अपना दोष इस मे कोई नही, लेकिन जो हुआ था, क्या वह कुत्सित नही था ? कुत्सित और सामाजिक रूप मे अस्वीकार्य ? क्या वह सईदा की ओर से मुह मोड लेना चाहेगा ? सईदा सह पाएगी इसे ? निश्चित रूप से नही। सईदा द्वारा न सहा जा सकना।—क्या इसी को बलवन्त सह पाएगा ? इतना क्रूर हो सकेगा ?

डाक्टर सिह के कोट की बाह उस के आसुओ से भीग गई थी।

"सईदा घर चलो।"

पहली बार उन्होने उस का नाम लिया। घर ! सईदा, घर चलो ! वह उन पर ढहती हुई फफक उठी।

अ

अख्तर और सहयोगी के पास से बरामद कागजातो के आधार पर कई शहरो, गावो, कस्बो आदि मे बडे पैमाने पर कई गिरफ्तारिया इन दोनो के मुह से कई रहस्य उगलवाए भी जा सकेंगे, अधिकारियो को इस का पूरा विश्वास।

हाक ने पाइप पीते हुए कहा, "हमे सईदा का शुक्रिया अदा करना चाहिए।"

ऐरो गमगीनी से बोला, "लेकिन बेचारी ने कितनी बडी कीमत चुकाई।"

तैंतीस

लगभग शाम तक सईदा डाक्टर सिंह के यहा रही।

सुलोचना ने उसे पहली बार देखा। इस घर के साथ उस का जो नाजुक रिश्ता था, चन्द घण्टो मे ही उस के साथ जो-जो घट गया, दुख में डूबा उस का सौम्य चेहरा और रूखे-बिखरे बाल सुलोचना इतनी आलोडित हो गई कि उस ने उसे बाहो मे भर लिया और बहुत ही गहरी सहानुभूति से कहा, "यही रहो, सईदा! हास्टल मे तुम सेफ नही हो।"

"जो हुआ है, उस से ज्यादा अब और क्या होगा?" सईदा ने कहा। चेहरा पथरीला हो उठा। रो-रो कर उस की आवाज बैठ गई थी।

"ऐसा नही कहते।"

"जो हो जाए, उस की ओर से आखे भी कैसे मूद ली जाए?"

"तुम यहा रहोगी तो मेरा भी मन लगा रहेगा। यहा देखो न, सभी मर्द-ही-मर्द है।" उस ने मुस्कराने का खोखला प्रयास किया, "रह जाओ, सईदा, सच!"

"मुझे हास्टल मे ही मुआफिक आएगा। यहा यहा मै" आगे वह न बोल सकी।

यहा आने के बाद उस ने वर्किंग-गर्ल्स-हास्टल और रेडियो-स्टेशन के ड्यूटी-रूम मे फोन कर के अपनी वापसी की सूचना दे दी थी—उसी तटस्थता के साथ, जिस से रेडियो पर समाचार पढे जाते हैं।

डाक्टर सिंह ने प्रवेश किया, "क्या बाते हो रही है?" उन के स्वर मे प्रफुल्लता थी। सप्रयास, सोद्देश्य प्रफुल्लता, जैसे सईदा घूमती-घामती वैसे ही उन के यहा मेल-मुलाकात के लिए आ गई हो। उन का यह

प्रयास सईदा ने पहचाना और स्वय को अत्यन्त हीन अनुभव करते हुए सिर झुका दिया।

सुलोचना ने उसे फिर बाहो मे ले लिया, "यह कहती है, हास्टल वापस जाना है।"

उस ने आशा रखी थी कि डाक्टर सिह भी सईदा से न जाने का आग्रह करेंगे, लेकिन वह खामोश रहे। सुलोचना ने जैसे अनुमोदन ही पाने के लिए दूसरी बार कहा, "इतनी मनौवल कर रही हू कि रह जा यही, लेकिन पसीजती ही नही यह।"

डाक्टर सिंह जान गए कि उन्हे अब कुछ कहना ही चाहिए। 'कुछ' क्यो ? उन्हे निश्चित रूप से यह, सिर्फ यह कहना चाहिए कि रुक जाओ, सईदा।

वह चाहते थे, कह दे।

और चाहते थे, न कहे।

व्याकुल होने लगे।

सईदा सिर झुकाए ही रख कर बोली, "नही, मै हास्टल मे ही मुझे वही "

"अच्छा तो फिर " कहते-कहते डाक्टर सिंह कमरा ही छोड कर चले गए। सुलोचना को वह क्रूर लगे। यह अनुमान भी उस ने उसी क्षण लगा लिया कि सईदा के प्रति कैसा व्यवहार रखे, इस का निर्णय न ले पाने वाली उन की स्थिति आज की नही, काफी पुरानी है।

थोडी ही देर मे कार तैयार हो गई।

सुलोचना साथ चलना चाहती थी, लेकिन डाक्टर सलूजा के साथ हुई मार-पीट के कारण उन की मनस्थिति ऐसी नही थी कि सुलोचना थोडी देर के लिए भी उन्हे अकेले छोड सकती। सईदा कौन है, उस के साथ क्या घटा है, आदि का पता एक छोटे कमरे मे लेटे सलूजा को चल गया था, पर उन्होने कोई उत्सुकता नही दिखाई थी।

"मिलने जरूर आती रहना।" सुलोचना ने कहा, "फोन तो तुम्हे रोज ही करना पडेगा। आया समझ मे ?"

सईदा किसी तरह मुस्कराई।

वह पिछली सीट पर बैठी तब डाक्टर सिंह ने स्वय भी अनुभव किया कि निश्चय ही ज्यादती हो रही है। सईदा को कम-से-कम आज तो यहा रुक ही जाना चाहिए।

वह चुप्पी साधे हुए स्टियरिंग-व्हील के सामने बैठे और एंजिन स्टार्ट किया। खट्टी अपराध-भावना उन्हे उसी तरह छीलने लगी, जैसे कोई तोता धीरे-धीरे मिर्च कुतर रहा हो। अपनी व्याकुलता को सह्यनीयता के साथ पी सकने के लिए उन्हे कुछ बोलना, कोई बातचीत करना अनिवार्य लगा।

कार धीरे-धीरे जा रही थी।

"सईदा "

" "

"एक्सिडेण्ट्स पर हमारा कोई बस नही होता।"

" "

"इसे मैं एक एक्सिडेण्ट ही कहूगा। तुम्हे जल्द-से-जल्द इसे भूल जाना चाहिए।"

" "

"कोशिश तो करनी ही चाहिए।"

" "

"चुप क्यो हो ?"

"क्या कहू, डाक्टर साहब ?"

" "

फिर यह मौन टूट ही न सका।

कार हास्टल के अहाते मे आई।

वार्डन ने ज्यो ही सईदा को देखा, उस के चेहरे पर दुख, सहानुभूति और राहत के मिले-जुले भाव कौंध उठे। सईदा का धैर्य छूटने लगा। वह सोफे पर बैठी और होठो की कपकपी रोकने के लिए पूरा जोर लगाने लगी। जोर रीतता जा रहा था। वार्डन अपनी कुर्सी छोड कर उस के पास आई। हुलस कर उस ने सईदा को अक मे भर लिया और बुदबुदाई, "प्यारी बच्ची "

सईदा रोने लगी।

"होनी को कोई रोक सकता है, बेटी ?" उस ने उस के माथे पर हाथ फेरा, "मत रो। भूल जा सब। जैसे कुछ भी न हुआ हो "

डाक्टर सिह को समझ मे नही आ रहा था कि खडे रहे या बैठे और बैठे तो कहा बैठे। सईदा का रो पडना अप्रत्याशित न होते हुए भी असहनीय तो था ही। वह खडे ही रह गए है, इस ओर वार्डन का ध्यान गया।

"बैठिए न !" उस ने सोफे की ओर इशारा किया।"

डाक्टर सिह बैठे।

"आप के लिए चाय या काफी "

"ओह, नो ! थैंक्यू ! हम लोग घर मे पी कर ही चले है।" उन्होने 'हम लोग' कहते समय कुछ अटपटापन अनुभव किया।

"मैं तो बिल्कुल घबरा ही गई थी " वार्डन कह रही थी, "पहली बार सुना तो यकीन ही न हुआ इसी तरह की एक घटना दो साल पहले भी हुई थी। किसी एयर-होस्टेस को सडक पर से उठा ले गए थे।"

सईदा की दो-तीन सहेलिया सहमी हुई उत्सुकता के साथ वार्डन के कमरे मे दाखिल हुईं। डाक्टर सिह को शक हुआ कि शायद ये सईदा को अपने साथ ले जाए। जब लडकियो ने ऐसा न किया, दो मिनट बैठ कर ही वे चली गई—उन्होने अबूझे छुटकारे की सास ली।

सईदा को याद आया, अभी तक वार्डन से उस ने डाक्टर सिह का

परिचय नही कराया। कहा, "आप डाक्टर सिह। भारत के बहुत बडे वैज्ञानिक।"

"नही, नही, बहुत बडे नो खैर, क्या " वह काशस हो गए।

"मुझे पता चल गया था।" वार्डन मुस्कराई, कुछ रुकी। फिर दूसरी बार आग्रह किया, "काफी तो लीजिए ही।"

डाक्टर सिह मना न कर सके।

दरबान काफी रख गया। तीनो पीने लगे। सईदा को गर्म घूट राहत-भरे लग रहे थे। प्याला खाली कर के उस ने मेज पर रख दिया। डाक्टर सिह का प्याला खाली हो चुका था। वह घडी मे देखते हुए बोले, "तो सईदा, मै चलू ?"

"हा, ब्लैक-आउट के कारण बाद मे सडके रिस्की हो जाएगी।" वार्डन ने कहा, "लेकिन "

वह हिचकिचाई।

वे दोनो उस की ओर देखने लगे।

"सईदा " वार्डन समझ नही पा रही थी, शुरू कैसे करे, "आज तुम्हारे लिए एक और न्यूज है।"

सईदा ताकती रही।

"तुम्हारे नाम एक लिफाफा आया रखा है मै नही जानती, उसे सही मौके पर दे रही हू या नही " वार्डन ने एक ड्रार खोलते हुए कहा, " - लेकिन देना पडेगा।"

उस की उगलियो मे जो लिफाफा आया, वह तार का लिफाफा था। उस का पीला रग दूर से ही उस की घोषणा कर रहा था। सईदा चौक कर अपना पल्लू सम्भालने लगी। डाक्टर सिह ने आशका से उस की ओर देखा, फिर वार्डन और फिर लिफाफे की ओर।

लिफाफा सईदा की ओर बढाया जा रहा था।

"दो घण्टो से आया हुआ है।" वार्डन बुदबुदा रही थी, "मै ने इसे

खोला भी नही, हालाकि बहुत मन कर रहा था, देखू, न जाने कैसे समाचार अभी तो सईदा, तुम तुम अभी नार्मल भी न हुई होगी "

"तार से खुशी के समाचार भी आ सकते है तार का मतलब यह थोडे ही है कि " डाक्टर सिह की आवाज लडखडा रही थी।

सईदा ने लिफाफा ले लिया और खोलने लगी। चेहरा बुतो की तरह निर्विकार, निर्जीव वह अपने को तैयार कर रही थी—किसी भी नए आघात के लिए। जो आघात अभी कुछ घण्टे पहले ही उस ने सहे-भोगे थे, उन के बाद अब शायद ही कोई आघात इतना तीव्र हो सकता था कि सईदा रोए, फफके। उस ने तय किया था, वह नही रोएगी, चाहे जैसा भी समाचार हो

डाक्टर सिह को वह रात याद आई, जब डाक्टर सलूजा ने ल कोर-बूजिए की मृत्यु के समाचार का तार दिया था और आशका की कपकपी मे लिफाफे को ठीक से खोलना भी मुश्किल हो गया था किन्तु सईदा के हाथो मे कपकपी नही थी।

लिफाफा खुल चुका था। तार-विभाग का वह पीला कागज पर्तो मे मुडा हुआ था। पर्ते खोलते समय भी सईदा के हाथों मे झुरझुरी नही थी।

सईदा पढ रही थी।

वह कागज को थामे रह गई।

"सईदा ? किस का तार है ?"

"खुदा का! अगर वह है!"

डाक्टर सिह ने तार उस से ले लिया और पढा। सफेद कागज की पट्टिया चिपकाई गई थी, जिन पर साफ-साफ टाइप किया गया था। तार मुरादाबाद से आया था। मिस सईदा बानो के नाम तार! पहली गाडी से आइए। आप की अम्मीजान की विषैले भोजन से मृत्यु

तार पडोसी ने दिया था।

चौंतीस

अमृतसर पहुचते ही भार्गव को पता चला कि बलवन्त मिलिटरी हास्पिटल मे है। तुरन्त वहा पहुचे। "अरे! यहा कैसे?" बलवन्त ने उन्हे देखते ही अचरज से पूछा, "तुम तो मेढर की साइड मे थे न?"

"इस का मतलब है, तुम्हे वह पत्र नही मिला, जो मैं ने सब से बाद मे डाला था। यहा कब से हो?"

"यही तीन-चार दिन।" बलवन्त ने उत्तर दिया, "इतने ही दिन शायद और रुकना पडे। चोट ज्यादा नही है। दाहिने हाथ मे दो गोलिया लगी थी—स्ट्रेफिंग कर के लौट रहा था, तब।"

"सईदा के खत तो आ रहे है?"

"हा।"

"पता नही, उस दिन स्टेशन क्यो नही आई।"

"छोडो यहा कब तक रुकने का इरादा है?"

"ज्यादा नही। दो-चार दिन।"

"फिर?"

"लाहौर की तरफ जाना चाहता हू। मै ने इच्छोगिल नहर नहीं देखी।" भार्गव ने कहा।

"लेकिन उस पर हमारी फौजो ने अभी कब्जा तो नही किया?"

"अब ज्यादा देर न होगी। लाहौर का आकाश तो हमारे कण्ट्रोल मे आ ही गया।"

युद्ध-स्थिति के कारण अमरीकी नागरिको को लाहौर से हटाया जा रहा था। प्राय छह सौ अमरीकी वहा के हवाई-अड्डे पर ट्रासपोर्ट हवाई-जहाजो का इन्तजार कर रहे थे। हवाई-जहाज उतारने की

अनुमति अमरीका को पाकिस्तान से नही, भारत से लेनी पडी थी। ज्यो ही ये समाचार आकाशवाणी से प्रसारित हुए थे, मिलिटरी हास्पिटल के सभी लोग जोश से भर उठे थे।

"जब तक मै हास्पिटल मे हू, तुम अमृतसर मे ही नही रह सकते क्या ?"

भार्गव ने प्रस्ताव मान लिया। "लेकिन अभी मै चलूगा।" वह बोले, "यहा के बाजार और स्कूलो के फोटो खीचने है, इस के बाद एण्टी-एयरक्राफ्ट-गनर से भी मिलना है।"

अस्पताल से निकल, बाजार मे घूमते-घामते जब वह फाइटर-बेस पहुचे, प्राय एक घण्टा बीत गया था। बेस के रेस्तोरा मे नाश्ता करने के बाद उन्होने अमृतसर के दैनिक जीवन का पूरा ब्योरा 'प्रभात' के लिए तैयार किया। उसे डाक मे डाल कर वह रेडियो के पास बैठ गए। बैरा काफी ले आया। चुस्किया लेते हुए वह समाचार सुनते रहे। ऊ थां के शान्ति-प्रयासो का परिणाम कल घोषित होने वाला था। रूस ने बहुत स्पष्ट शब्दो मे उन सभी देशो को चेतावनी दी थी, जो भारत-पाकिस्तान सघर्ष बढाने मे किसी भी रूप मे सहयोग दे रहे थे। रूसी कम्यूनिस्ट पार्टी के सचिव मिस्टर ब्रेजनेव ने लडाई-बन्दी के लिए फिर से अपील की थी। रूस की पूरी सहानुभूति भारत के साथ होने से चीन व इण्डोनेशिया को चिन्ता हो रही थी।

कार धीमी पड गई।

"क्यो ?" डाक्टर सिंह ने चौंक कर पूछा।

"मुझे नही जाना मुरादाबाद। क्या करूगी वहा ?" बहुत रोने के कारण सईदा की आखें लाल थी। कुछ सूजी हुई भी लग रही थी। डाक्टर सिंह के सिर मे दर्द हो रहा था, क्योकि वह भी पूरी रात मे एक-दो घण्टे ही सो पाए थे। सईदा पर एकाएक आ पडे इस दुख ने

उन्हे भी हिला दिया था। हास्टल से उसी वक्त सईदा को वह अपने यहा ले आए थे। वार्डन भी यही चाहती थी।

तार पढ कर वहा सईदा कुछ मिनट तक तो चुपचाप बैठी ही रह गई थी। फिर रोकते-रोकते भी उस के आसू फूट पडे थे और वार्डन उसे थामने लगी थी। डाक्टर सिह ने भी उसे बाहो का सहारा दिया था।

"सईदा " उस के आसू कुछ थमे तब उन्होने कहा था, "यहा तुम अकेली पड जाओगी। मैं तुम्हे यहा नही छोड सकता यू मस्ट कम विद भी "

"यस, सईदा " वार्डन ने तुरन्त अनुमोदन किया था, "यू मस्ट गो।"

डाक्टर सिह जान गए थे, न चाहते हो तो भी उन्हे अब सईदा को घर ले जाना होगा।

दो अटैचियो मे कपडे आदि रख कर वह उस के साथ कार मे बैठ गई थी।

मुरादाबाद रात को ही जाने की बजाय सुबह जाया जाए, ऐसी सभी की राय रही थी। ब्लैक-आउट के दिनो मे रात के वक्त किसी भी वाहन को दिल्ली प्रदेश से बाहर जाने से पहले जिस पहरे को भेदना होगा, भेदने के लिए जिन-जिन सवालो के जवाब देने होगे, वह सब बहुत दिक्कतभरा और रिस्की भी था।

अगले दिन सात बजे डाक्टर सिह और सईदा रवाना हो गए थे। दूसरा कौन था जो सईदा के साथ जा सकता? उसे अकेली भेजना—ओह, नही, बलवन्त क्या कहेगा? सिर्फ बलवन्त का लिहाज नही था। वह खुद भी उसे अकेली जाने नही दे सकते थे।

सईदा ने रेडियो-स्टेशन से एक हफ्ते की छुट्टी ले ली थी। सात दिनो के बाद भी वह ड्यूटी पर जा सकेगी या नही, वह नही जानती थी। काफी सम्भावना थी कि वह अधिकारी उसे हमेशा के लिए रुखसत

कर दे। या हो सकता था, सईदा की नाजुक मन स्थिति को देखते हुए वह अपनी सौदेबाजी कुछ अरसे के लिए रोक ले।

कार दिल्ली शहर की परिधि से बाहर आई, तब तक वे चुप रहे। डाक्टर सिंह से चुप्पी सहन नही हो रही थी। सईदा पिछली सीट पर बैठी हुई थी।

"सईदा!"

"जी।"

"क्या सोच रही हो?"

" ?"

"तुम्हारी जगह मै होता, पता नही क्या हालत हो जाती। बलवन्त के घायल होने से ही मेरे हाथ-पैर फूल गए थे!" वह झेपते हुए हसने लगे।

" "

"इस मामले मे तुम वाकई मुझ से ज्यादा यो कहो कि दिलेर हो।"

" "

"सईदा, हम पहली बार इतनी बातचीत कर रहे है, वरना अब तक तो एक-दूसरे को सिर्फ चेहरे से पहचानते थे।"

सईदा सकुचाई, " "

"चुप क्यो हो? बोलो, कुछ भी बोलो। इस से तनाव कम होगा। जब तक लडाई नही छिडी थी, मै भी बहुत कम बोलता था, लेकिन अब? अब मै खूब बोलता हू। कुछ भी बोलता रहता हू। बोल कर हम अपने को बिजी रखते है और उन बातो को भूल सकते है, जिन्हे भूल जाना चाहिए।"

" "

वह हसने लगे, "अजीब लडकी हो! इतना भी नही सोचती कि मैं

अकेला कब तक बोलता रहूगा ? दोनो ही चुप हो गए तो सोचो, चार घण्टो का यह सफर कैसे ''

"बोलू भी तो आखिर क्या, डाक्टर साहब ?" प्राय ऐसा ही एक वाक्य सईदा पहले भी एक बार कह चुकी थी। कल।

"कुछ भी।"

" "

डाक्टर सिंह के भीतर उबाल-सा हो रहा था। वह बार-बार घोषणा करना चाहते थे कि सईदा को कुछ-कुछ नापसन्द करना उन की भूल तो थी ही, दकियानूसी भी थी। वह इन्तजार करते रहे कि सईदा कुछ बोले तो जवाब मे कुछ कहू। वह न बोली। उन्होने ही शुरू किया, "सईदा इस लडाई ने पूरे देश को एक ज्ञान दिया है। कभी मै सोचता था कि ज्ञान जैसी चीज एकाएक नही मिल सकती, वह धीरे-धीरे हासिल होती है। अब लगता है, धीरे-धीरे जो मिलती है, वह कला हो सकती है, विद्या हो सकती है, लेकिन "

"..."

"लेकिन ज्ञान कुछ और है। वह एकाएक ही मिलता है—जिस को भी मिलता हो।"

"..."

"खुद तुम ने महसूस किया होगा कुछ ही दिनो मे पूरा देश एकाएक कितना बदल गया है—अब देश का बच्चा-बच्चा अपने हिन्दुस्तानी होने पर गौरव ले सकता है। यह सच है कि यह लडाई हम पर थोपी गई, लेकिन इस की जरूरत थी। पूरे देश की' यो कहो, 'ओवरहालिंग' के लिए इस की जरूरत थी। क्यो ? नही लगता ऐसा ?"

"लगता है।"

उन के प्रति अब तक वह जो आतक-जैसा भाव अनुभव करती रही थी, वह इन दो दिनो मे बहुत कम हो गया था। वह उस गाव की

ओर देखती रही, जो सडक के दोनो तरफ बसा हुआ था और तेजी से पीछे बह रहा था।

"शायद तुम बोर हो रही हो ?"

"नही; नही "

डाक्टर सिंह ने रेडियो ऑन कर दिया। जान-बूझ कर उन्होने समाचार वाला मीटर न लगाया। फिल्मी गीतो का एक कार्यक्रम धीमा-धीमा थिरक उठा। इन दिनो गीत भी वही प्रसारित किए जा रहे थे, जिन मे राष्ट्रीय चेतना हो। उन्होने काटा हटा कर ऐसे मीटर पर लगाया, जो एक सौम्य पश्चिमी धुन दे रहा था। वह नही चाहते थे, सईदा इस समय भी राष्ट्रीय चेतना और युद्ध के सगीत मे डूबी रहे। राहत के भी क्षण होने चाहिए।

"कुछ बोलो, सईदा, यो चुप रहने से तो "

"आप 'उन्हे' देखने के लिए, सुलोचनाजी कह रही थी, अमृतसर नही गए ट्रक भी न किया "

डाक्टर सिंह को अच्छा लगा कि वह उस से बुलवा सके, "हा, सईदा, नही गया। वह ज्यादा घायल थोडे ही हुआ है।"

"पता नही, यह जग कब खत्म होगी।" सईदा कुछ थमी रहने के बाद बोली।

"ऊँ था और रूस इस के लिए कोशिश कर तो रहे है। अरे हा, तुम ने वह पढा होगा " वह इतने उत्साहित हो गए, मानो कोई चुटकुला सुनाने जा रहे हो।

"क्या ?"

"भारत ने अमरीका से कहा था कि वह पाकिस्तान को उन हथियारो का इस्तेमाल करने से रोके, जो उसे अपने बचाव के लिए दिए गए हैं, हमला करने के लिए नही। तब जानती हो, अमरीका ने कैसा गोलमोल जवाब दिया था ?"

"हा ।" सईदा सप्रयास ढग से हसी, "बहुत ही बचकाना जवाब था यही कि हथियार कौन-से इस्तेमाल हो रहे है, यह मुद्दे की बात नही है। मुद्दे की बात तो यह है कि लडाई अच्छी चीज नही होती ।"

"पर-उपदेश कुशल बहुतेरे ! वियतनाम मे खुद तो भयकर बमबारी करने से बाज नही आ रहा है और खैर इतना तो मानोगी कि इस लडाई ने सभी देशो के नकाब उतार दिए है। अब भारत अच्छी तरह पहचान सकता है कि कौन उस का दोस्त है, कौन नही "

लगभग पाच मिनट के मौन के बाद सईदा ने अप्रत्याशित रूप से कहा, "डाक्टर साहब ! वापस चलिए ।"

कार धीमी पड गई ।

"क्यो ?" डाक्टर सिह ने चौक कर पूछा ।

"मुझे नही जाना मुरादाबाद । क्या करूगी जा कर ?"

" "

"अम्मीजान दफन हो ही चुकी होगी और पडोसियो ने मकान मे ताला लगा दिया होगा ।"

उन्हे समझते देर न लगी कि सईदा मुरादाबाद न जाने की बात इस लिए कह रही है कि स्वय वह अमृतसर नही गए थे ।

"नही, सईदा, तुम्हे जाना चाहिए ।"

"क्यो ? अब क्या है वहा ?"

"मुरादाबाद अब दो-चार मील ही "

"तो भी हम वापस जा सकते है ।"

उन्हे सईदा और अच्छी लगी । बोले, "नही, हम वापस नही जाएगे ।"

कार बढती रही ।

उन्होने भावुक होते हुए कहा, "सईदा वह दिन जल्द ही आएगा, जब तुम मेरे बलवन्त की बीवी वन कर वाकई, सईदा ! मुझे उस

दिन का इतना इन्तजार है कि बता नही सकता ”

अचानक वह चौके। उन्होने कार रोक दी और पीछे देखने लगे, “सईदा ? क्या हुआ ?”

“कुछ नही।” सईदा ने रूमाल मे चेहरा छिपा लिया था। सिसकियो के कारण उस का पूरा शरीर बार-बार भुरभुरा उठता।

“पगली ! एकाएक तुम ”

“डाक्टर साहब, मुझे आप से डर लगता है। शुरू मे लगता रहा है।”

“डर ?” वह जोर से हसे, “क्यो ?”

“आप के सामने मेरी कोई हस्ती नही है। इसी लिए मै मै आप से ”

“यूँ, सिली !”

“रोना इस लिए आ गया कि ”

“हा, हा, बोलो ”

“बुरा न मानिएगा।”

“बताओ तो सही।”

“आप उस दिन का बेसब्री से इन्तजार कर रहे है न, जब जब मैं ? लेकिन माफ कीजिएगा, क्या सचमुच आप ऐसा चाहते है ?”

“कैसी बातें करती हो, सईदा !”

“पता नही क्यो, मुझे अभी लगा कि आप की बात नकली है। वह महसूस कर के नही सोच कर कही गई। यह सोच कर कि कि ऐसा कहने से सईदा खुश होगी डाक्टर साहब, प्लीज़ मुझे नकली सहानुभूति नही चाहिए।”

“सईदा !”

मुरादाबाद मे पता चला कि अम्मीजान ने एक हलवाई के यहा से दूध खरीदा था। कुछ छाता-सैनिकों ने उस मे जहर मिला दिया था।

शहर मे दो मौतें हो गई थी। पचास के करीब लोग अस्पताल मे पडे थे, जिस मे से चार की हालत बहुत नाजुक थी।

"अम्मी 'तू इस्लाम के नाम पर कुर्बान हुई" सईदा की सिसकिया फूट पडी।

दोपहर के बाद डाक्टर सिह की कार मे वह दिल्ली की तरफ लौट रही थी। इस बार वह अगली सीट पर बैठी थी।

अधिकाश सफर खामोशी मे हुआ।

पैंतीस

क

भार्गव हास्पिटल पहुचे तब बलवन्त उन्ही के इतजार मे था। उस ने बताया, "डाक्टर सेज, घाव भरने मे कुछ ज्यादा ही समय लगेगा। तुम चाहो तो इच्छोगिल नहर हो आओ। अभी-अभी रेडियो ने एनाउन्स किया है कि हमारी फौजे लाहौर के पास इच्छोगिल नहर पार कर गईं।"

बलवन्त के पास ही एक घायल टैंक-चालक लेटा हुआ था। उस के हाथ-पैर सफेद पट्टियो मे पूरी तरह छिप गए थे। उन्हे फीतो के सहारे उठा कर टाग दिया गया था। गनीमत थी कि वह बातचीत कर सकता था। उस ने भार्गव और बलवन्त की तरफ दमकती मुस्कान फेंकी और कहा, "जम्मू-सियालकोट मे सिर्फ बारह घण्टो मे छियासठ टैंक तबाह! इतनी जल्दी तो, भापाजी, क्रिकेट के विकेट भी नही गिरते। सेकण्ड वर्ल्ड वार के फील्ड-मार्शल रोमेल का भी रिकार्ड टूट गया। काश! मैं भी लडा होता वहा!"

ख

सईदा, डाक्टर सिंह, सुलोचना और डाक्टर सलूजा रेडियो के पास बैठे समाचार सुन रहे थे, "सयुक्त-राष्ट्र-सघ के महासचिव ऊ थां ने न्यूयार्क पहुच कर कहा कि प्रारम्भिक असफलता के बावजूद भारत और पाकिस्तान मे शान्ति-स्थापना के अपने प्रयास वह स्थगित नही करेंगे।

उन्होने सुझाव दिया है कि प्रधान-मन्त्री श्री शास्त्री और प्रेसिडेण्ट अय्यूबखा की आपसी वार्ता के लिए शीघ्रातिशीघ्र मुलाकात होनी चाहिए ”

उसी समय फोन बजा ।

रिसीवर सईदा ने उठाया, “हैलो ?”

“डाक्टर साहब को दीजिए । मै हजारे बोल रहा हू ।”

डाक्टर सिह के फोन पर आते ही उस ने उबलते स्वर मे कहा, “सा’ब ! आप लोग जल्दी आइए । मै ‘रीगल’ के पास से बोल रहा हू ।”

“क्यो ?”

“यहा ‘जीवन-बीमा’ का मैदान है न ? वहा वहा एक पैटन टैक आया है !”

“पैटन टैक ?”

“जी हा, सा’ब ! जल्दी आइए, वरना भीड बढ जाएगी । पैटन टैक अभी-अभी आया है । लोग नारे लगा रहे है—फौजी जवान जिन्दाबाद ! पाकिस्तान मुर्दाबाद ! बडा जबर्दस्त है सा’ब—बिल्कुल राक्षस जैसा ! जल्दी करिए ।”

“अच्छा । अभी आते है ।” फोन रख कर उन्होने कहा, “सलूजा साहब, आप तो चलेंगे नही । यहा रहिए और कोठी की रखवाली करिए । हम जा रहे है ।”

“कहा ?”

“एल-आई-सी ग्राउण्ड मे पैटन टैक आया है ।”

सईदा उछल पडी, “पैटन टैक ?”

“हा । देखने वालो की भीड़ लग रही है ।”

“मैं भी चलूगा ।” सलूजा उठे ।

“क्यो ? ऐसी छोटी-छोटी बातो मे आप को दिलचस्पी नही होनी

चाहिए ।"

"तो भी चलूगा ।"

जाने की विशेष इच्छा डाक्टर सिह को भी नही थी, लेकिन इसी तरह की छोटी-छोटी बातो से सईदा का मन बहल सकने की सम्भावना थी ।

तैयार होने का समय किस के पास था ? जो जैसा बैठा हुआ था, रवाना हो गया । सुलोचना और डाक्टर सलूजा पिछली सीट पर और सईदा अगली पर बैठी । डाक्टर सिह ने कार तेजी से दौडा दी ।

दूर से उन्होने नारे सुने ।

कार एक तरफ पार्क कर के वे भीड मे शामिल हो गए । एक-एक व्यक्ति पैटन टैक के ज्यादा करीब आने का प्रयास कर रहा था । छोटे बच्चे लोगो के पैरो के बीच-बीच मे से खरगोशो की तरह आगे जा रहे थे ।

कई सौ की उस भीड की धकापेल मे सलूजा और सुलोचना अलग हो गए ।

सईदा एक-दो बार गिरते-गिरते बची । डाक्टर सिह ने साधिकार उसे थाम लिया और आगे बढे । भीड मे शामिल होने का यह अनुभव उन के लिए नया ही था । उन्हे अपने से कही ज्यादा इस की परवाह थी कि सईदा को धक्का न लगे ।

पैटन टैक की नब्बे मिलिमीटर की विराट तोप सामने तनी हुई थी । चार जवान अपनी फौजी वर्दी मे टैक के ऊपर खडे थे और चिल्ला रहे थे, "खामोश ! खामोश !"

लेकिन वह खौलती भीड चीख रही थी—पाकिस्तान मुर्दाबाद ! अय्यूबखा हाय-हाय ! अमरीकी हथियार हाय-हाय !

भीड दोगुनी हो चुकी थी । दिल्ली-परिवहन की तीन बसे रुकी । ड्राइवर और कण्डक्टर समेत सारी सवारिया उतरी और भीड मे शामिल

हो गई ।

डाक्टर सिह के मन मे कौध गया, 'कोई सोच भी सकता है कि ऐसे पैटन को भेदने वाले गोलो का निर्माता यही मौजूद है !'

भीड शान्त हुई । वे जवान सब को बताने लगे, "देखिए, यह जो लम्बी-सी तोप है, यह दो हजार गज तक गोला फेंकती है । और देखिए, ये रही वे दो तोपे, जो हवाई-जहाजो को भेदने के लिए है । ये पाइंट थ्री-जीरो और पाइंट फाइव-जीरो मिलिमीटर की है । यह पैटन टैंक एम-४७ नमूने का है । पाकिस्तान के पास एम-४८ नमूने भी है । और भी कई नमूने होते है लेकिन दुश्मन के पास नही है । और ये देखिए, ये है पैटन की इन्फ्रा-रेड आखे । ये रात को भी साफ-साफ देख सकती हैं ।"

जब विमानभेदी तोपो की ओर इशारा किया जा रहा था, डाक्टर सिंह की भौहो पर बल पडे । अपने-आप उन की दृष्टि सईदा की ओर उठ गई । सईदा भी उन्ही को देख रही थी ।

एक नन्ही-सी लडकी टैंक के ढाचे को बार-बार छू रही थी । वह कुछ पूछना चाहती थी, लेकिन समझ मे नही आ रहा था कि उस जवान को वह पुकारे किस तरह ? घर मे जो मिलने-जुलने वाले आते थे, उन्हे तो वह 'अकलजी' कहती थी । क्या फौजी जवान को भी अकलजी कहा जा सकता है ? अन्त मे उस से न रहा गया । वह जोर से चिल्लाई, "जवान ! जवान !"

चारो जवान उस की ओर देखने लगे । सारे लोग भी ।

"तुम ने इसे कैसे पकडा ?" उस ने आखे मिचमिचाते हुए पूछा ।

जवान हसने लगे । उन मे से एक ने झुकते हुए बच्ची के गाल थपथपाए और कहा, "कैसे पकडा ? बेबी, यह एक बगीचे मे घूम रहा था । दिखाई दे गया । मैं ने निकाला एक चिमटा और रख लिया जेब मे !"

छत्तीस

भार्गव बलवन्त के पास ही बैठे थे। इच्छोगिल नहर देखने वह अभी तक नही जा सके थे।

"डाक्टर, मैं घाव भरने का इन्तजार नही कर सकता।" बलवन्त कह रहा था। डाक्टर पूरा आश्वासन दे कर लौट गया कि वह जल्द-से-जल्द रिलीव करेगा। बलवन्त की यह जिद आज की नही, कई दिनों की थी। आज वह सुबह से ही बहुत उत्तेजित था—चीन ने युद्ध की धमकी दी थी। रेडियो पर बोलते हुए प्रधान मन्त्री शास्त्री ने स्पष्ट कह दिया था कि अगर चीन ने भी हमला किया तो उस का पूरी ताकत से जवाब दिया जाएगा।

धमकी दी गई थी शनिवार, सत्रह सितम्बर '६५ को। उस मे कहा गया था कि भारत ने सिक्किम सरहद पर कई ऐसी चौकिया बना रखी हैं, जो चीनी सीमा मे है। इतवार की रात साढे दस बजे तक ये चौकिया भारत ने नष्ट न कर दी तो भयकर परिणाम भुगतने होगे।

धमकी मे एक और बचकाना कारण यह दिया गया था कि भारतीय सैनिको ने चीनी इलाके मे घुस कर आठ सौ भेडे चुरा ली है। भेडें लौटाइए वरना ··

शास्त्री ने कहा था कि भारत बेवजह युद्ध नही चाहता। सिक्किम की चौकियो की दोनो देशो की ओर से सम्मिलित जाच की जाए, इस मे हमे एतराज नही, लेकिन धमकियो के सामने हम कदापि नही झुकेंगे।

"शास्त्रीजी ने यह गलत काम किया है।" बलवन्त भार्गव से उलझने लगा, "क्यो हम अपनी चौकियो और सरहद के आब्जर्वेशन के लिए

तैयार हो जाए ? कच्छ मे भी शास्त्रीजी ने यही किया । उन की जगह मै होता तो दुश्मन के जबडे हमेशा के लिए तोड देता ।"

"इसी लिए मिलिटरी शासन हमेशा युद्ध की ओर जाता है। शान्ति-प्रिय देशो को भी वह युद्ध करने पर मजबूर "

"क्या शान्तिप्रिय-शान्तिप्रिय मचा रखा है ! पहले ताकतवर बनो, फिर शान्ति की बाते करो—समझे ? अकल भी यही कहते है। पाकिस्तान ने जब लडाई छेड ही दी है तो क्यो उस पर दया बरती जाए ? उस ने हमारे नागरिको पर नापाम[1] बम गिराए है । क्या हमे बदला लेने का भी हक नही ? हम भी पाकिस्तान के नागरिको पर बम गिराए, राकेट छोडे ! सारी ईमानदारी, नैतिकता और सारी शान्तिप्रियता का ठेका भारत ने ही नही ले रखा ।"

"तुम उत्तेजित हो, बलवन्त ! ऐसी हालत मे वही सोचा जा सकता है, जो तुम सोच रहे हो, लेकिन युद्ध इसी तरह बढता है । हम यह नही चाहते । पाकिस्तान ने हमारे पूर्वी ठिकानो पर भी हवाई हमले किए है, लेकिन इस का मतलब यह नही कि हम भी पूर्व मे मोर्चा खोल दे ।"

"क्यो न खोले ?"

"इस मे दूरदर्शिता नही है ।"

एक नर्स ने प्रवेश किया । उस के कन्धे से ट्रांजिस्टर लटक रहा था, जिसे उस ने एक मेज पर रख दिया और गानो का कार्यक्रम लगाया । "सिस्टर !" सभी ने विरोध किया, "प्लीज ! समाचारो का मीटर लगाओ ।" चाहती नर्स भी यही थी ।

"यह आकाशवाणी है । ऊ था ने सुरक्षा परिषद् से कहा है कि वह भारत और पाकिस्तान दोनो देशो को अविलम्ब लडाई-बन्दी की आज्ञा

---

१ नापाम के इस्तेमाल पर पूरी दुनिया में रोक है, क्योंकि वह आदमी को तुरन्त न मार कर उसे जिन्दा भून देता है।

दे। भारत के शिक्षा-मन्त्री श्री चगला ने सुरक्षा-परिषद् से माग की है कि सब से पहले वह पाकिस्तान को आक्रमणकारी घोषित करे।

"रूस भारत को जो नियमित सैनिक सहायता देता है, उस मे कोई कमी नही की गई है। रूस ने यह भी साफ-साफ कह दिया है कि अगर किसी भी देश ने युद्ध को और भडकाने की कोशिश की तो रूस केवल एक दर्शक नही रहेगा, बल्कि भारत की महायता करेगा।

"भारतीय जवानो ने अमरीकी पैटन टैको और सैबर जेटो का जो सहार किया है, उस ने स्वय अमेरिका को हैरत मे डाल दिया है। उस ने इस की वैज्ञानिक जाच करने के लिए परीक्षको की एक समिति बनाई है।"

एक दिन बाद जब बलवन्त को हास्पिटल छोडने की इजाजत मिली, रेडियो समाचार दे रहा था कि पाकिस्तान ने अम्बाला के मिलिटरी हास्पिटल पर एक-एक हजार पौड के कई नापाम बम गिराए, जिस से आफिसर्स वार्ड और जनरल वार्ड की इमारते धूल मे मिल गईं। हमले से प्राय डेढ घण्टा पहले अधिकाश घायल अफसरो और जवानो को दूसरी जगह ले जाया गया था, तो भी इस हमले मे कई महत्वपूर्ण अफसर शहीद हुए। दुश्मन हवाई-जहाज ने निहत्थे नागरिको पर भी नापाम बम गिरा कर अनेक को मौत की नीद सुला दिया।

समाचार सुन कर भार्गव के होठ काप गए, "बलवन्त! यह जगलीपन है। एक बेशर्म देश ही ऐमा कर सकता है"

"सेण्ट पाल का गिरजाघर भी एनिमी की बमबारी ने धूल मे मिला दिया! जरा सोचो, भार्गव, तुम वहा के पादरी होते कितने पीस-लविग रह पाते तुम?"

क्षणिक मौन के बाद भार्गव ने सिर को एक झटका दिया और बुदबुदाए, "युद्ध की भी बलवन्त, एक सभ्यता होती है। रेड-क्रास या

एम्बुलेन्स की गाडियो पर, अस्पतालो पर, प्रार्थना की जगहो या निहत्थे नागरिको पर कभी हमला नही किया जाता। यह यह कायरता है।"

"कायरता नही, जगलीपन—और जगलीपन को समझाया नही जा सकता। उसे सिर्फ कुचला जा सकता है।" फाइटर-बेस मे बलवन्त ने अपने हाथ एक मेज पर टिकाते हुए कहा, "मैं कुचलूगा इसे, देख लेना।"

भार्गव की भौहे सिकुडी।

"माई डियर!" वह कहता रहा, 'आज इतवार है। रात को साढे दस बजे चीनी अल्टीमेटम का वक्त खत्म हो जाएगा। लडाई कई और मोर्चो पर खुल जाएगी। मैं भून डालूगा—एक-एक को भून डालूंगा।"

" "

"सुन रहे हो, भार्गव ?"

" "

"चुप क्यो हो ? चीखो! इट्स गोइग टु बी ए टोटल वार!"

" "

बलवन्त ने आगे बढ कर उन के कधे हचमचा दिए, "लैट्स हैव ए वार क्राई—अटैक! चिल्लाओ, भार्गव! अटैक!"

एक पायलट ने बलवन्त की कमर मे हाथ डाला और अपनी मेज की तरफ ले गया, "चैप! यू आर एक्साइटेड!"

"येस! आई एम! एण्ड व्हाई नाट ?"

भार्गव ने भी कुर्सी खीची और बैठे। पायलट ने सब के लिए व्हिस्की ढाली, "लो, राहत मिलेगी।"

हूऊ! हू! हू! हू!..

खतरे का सायरन बज रहा था।

"लो आ गया!" तोपची विमानभेदी तोपो की ओर झपटता हुआ

चिल्लाया, "मिस्टर भार्गव ! छिप जाइए !"

रेत का बोरियो की दीवारे खडी कर के तोपो को छिपा दिया गया था। दीवारो के ऊपर से तोपो की नलिया आकाश की तरफ उठी हुई थी।

भार्गव तोपची के पीछे दौड पडे थे। बोरियो की दीवार के साथ दुबकते हुए वह उत्तेजना से बोले, "मै तोपो की आवाजे टेप करूगा।"

"भागिए यहा से ! दिस इज ए डेजरस प्लेस।"

हू ! हू ! हूऊ !

ओऽऽ!—हवाई-जहाजो की डरावनी गूज इस तरह उभर रही थी, जैसे मशीनो की कोई भीड रो रही हो

क्षितिज के पास चार सैबर-जेटो के खूखार आकार चमकते नजर आए। तोपची के सहयोगी अपनी-अपनी जगहो पर तैनात थे।

ड्रोग्रोवो !

सैबर-जेट, जो पहले चील जितने थे, एकाएक गिद्ध जितने हो गए। वे ऐसी तीव्रता से बडे हो रहे थे, मानो करीब न आ रहे हो, एक ही जगह लटक कर फूल रहे हो

"फायर !"

धडडड ! धा ! धाय ! धड-धड-धड !

भार्गव ने टेप-रिकार्डर का नॉब रिकार्डिङ्ग की लाल बिन्दी पर घुमा दिया था। रिकार्डिङ्ग हो रही है, इसे दर्शाने वाली मैजिक आई मे नीली रोशनी चमक उठी थी। हर आवाज के साथ उस मे कपकपी होने लगती। टेप के चक्के घूमते हुए

सैबर-जेटो की आवाजे इतनी नजदीक आ गई कि पूरे वायुमण्डल मे उन की थरथराहट अनुभव हुई। टेप-रिकार्डर का माइक भार्गव के हाथ मे था, जिसे विमानभेदी तोपो की ओर उठा कर वह जमीन व बोरियो के साथ सिकुड रहे थे।

क्राआाा

एक सैबर-जेट तोपे गडगडाता हुआ इसी ओर बढ रहा था। उडान-पट्टी के सीमेण्ट पर खौफनाक स्ट्रेफिंग कर के छोटे-छोटे गड्ढो की रेखा बनाता और विमानभेदी तोपो की गर्जनाओ की परवाह न करता हुआ वह बहुत करीब आ गया। तोपची उस के मर्म को भेद देने के लिए गोले-पर-गोले दाग रहा था।

क्राओक्क्अ !!

वह एकदम ऊपर आ गया।

अगले ही क्षण आकाश मे जबर्दस्त धमाका हुआ। दिन की रोशनी मे भी आग का वह लपकता गोला साफ देखा जा सका।

तोपची ने जेट की धज्जिया उडा दी थी।

"बचो !"

ऊपर से जलता हुआ मलबा गिर रहा था। भार्गव औंधे लेट गए। मलबा उन से कुछ ही मीटर दूर गिरा।

भार्गव फिर आकाश मे देखने जा ही रहे थे कि उन के सिर पर जोर से चोट पडी। वह लुढक गए। अभी और मलबा गिर रहा था। धधकता हुआ। उन के पैरो पर कोई भारी और जलती हुई चीज आ पडी। वह जोर से चीखे। कपडो मे आग लग गई थी। बुझाने के लिए उन्होने इधर-उधर लुढकना चाहा, लेकिन इस से पहले ही वह बेहोश हो गए।

आखे खुली तब अस्पताल मे थे। बलवन्त उन के सिरहाने बैठा हुआ। झुक कर चिन्तित स्वर मे बोला, "कैसे हो ?"

भार्गव के होठो पर मुस्कान आई, "क्वाइट ओके।" माथे पर पट्टियो की अनेक पर्ते।

बलवन्त चुप रहा।

"घायल होने का पहला मौका !" कमजोरी के कारण उन की

आवाज धीमी थी, "कसम मियां भुट्टो की ! इसी का इन्तजार था। एक अनुभव तो होना ही चाहिए।"

पैरों पर भी मोटी-मोटी पट्टियां। पंजों से कूल्हों तक।

"वक्त क्या हुआ है ?" जरा ठहर कर उन्होंने पूछा।

"क्यों ?"

"रात के दस बजे वह अल्टीमेटम "

"चीन ने टाइम-लिमिट तीन दिन बढ़ा दी है।"

" . "

"अभी-अभी रेडियो-न्यूज से पता चला। बार्डर की मिली-जुली जांच करने का हमारा प्रस्ताव भी उसे मंजूर नहीं।"

"और कोई समाचार ?"

"यू० एन० ने प्रस्ताव पास किया है कि भारत और पाकिस्तान बहत्तर घण्टों के अन्दर युद्ध रोक दें।"

भार्गव हंसे, "मानो प्रस्तावों से ही युद्ध रुक सकता हो !"

बलवन्त खामोश रहा।

"मेरा टेप-रिकार्डर "

"सुरक्षित है।"

"सैबर-जेट ?"

"चार थे। एक तबाह होते ही बाकी भाग गए।"

रात होने से पहले अमृतसर पर एक बार और हवाई-हमले की कोशिश की गई, जो नाकामयाब रही।

सैंतीस

हीरेन्द्रजी की कार नई दिल्ली रेलवे स्टेशन की ओर बढ रही थी। बगल मे वीरेन्द्र। पीछे थी उस की पत्नी। उस ने सिर को पल्लू से ढक रखा था लेकिन घूघट नही निकाला था। वीरेन्द्र की मा अपनी बहू के पास बैठी थी और चुप थी। वीरेन्द्र ने दो दिन पहले ही ऐलान किया था कि मेरी बीवी अब घूघट नही निकालेगी। घर मे हाय-तौबा मचनी थी। मची। किसी ने ध्यान न दिया।

कार पार्क कर के वे उस शामियाने की ओर बढे, जहा एक झूलते, सफेद कपडे पर बडे-बडे अक्षरो मे लिखा हुआ था—जवानो को चाय मुफ्त।

यह प्रबन्ध किया था 'दिल्ली महिला समिति' ने। मा और पत्नी को समिति की सदस्यता वीरेन्द्र की जिद के कारण ही मिली थी। बहुत कम बोलने वाले उस लडके मे युद्ध-वातावरण ने एकाएक ही उबलती चेतना भर दी थी। हीरेन्द्रजी कभी सहन नही कर सकते थे कि उन के घर की महिलाए 'चेहरा उघाड कर' बाहर निकले, किन्तु वीरेन्द्र ने ऐसा विरोध किया कि वह भौचक रह गए।

"तुम लोग जवानो को चाय पिलाओ। मैं और पिताजी हास्पिटल हो आते है।" वीरेन्द्र और हीरेन्द्रजी को ब्लड-बैंक मे अपना खून देना था।

फौजी पोशाक मे अनेक जवान चाय पी रहे थे। चेहरे विजय के आनन्द से खिले हुए। कुछ जवान ठहाके लगा रहे थे, कुछ गम्भीर थे। बडे-बडे अफसरो के घरो की महिलाए भी समिति की ओर से काम कर रही थी। वीरेन्द्र की मा और पत्नी उन मे शामिल हो गईं। पिता-पुत्र कार की ओर बढे।

नजदीक ही एक और कार रुक रही थी । उस मे से हीरेन्द्रजी ने सईदा को उतरते देखा । उन के चेहरे पर मुस्कान आ गई । उन्होने हाथ जोडते हुए कहा "नमस्ते, गीता बहनजी !"

"नमस्ते !" सईदा ने चौकते हुए हाथ जोड दिए ।

"आप यहा कैसे ?"

"घर मे अकेले जी नही लगता था । सोचा, 'महिला समिति' की मेम्बर ही बन जाऊ।"

"घर ? आप तो किसी हास्टल मे थी न ?" हीरेन्द्रजी के इस सवाल ने सईदा को हिला दिया । कैसे बोल गई वह 'घर' ! जब तक निकाह नही हो जाता, कैसे वह उस कोठी को अपना घर कह सकती है ? वह चुप रही ।

डाक्टर सिंह और सलूजा भी कार से निकल आए थे और परिचय न होने के कारण हीरेन्द्रजी को उत्सुकता से देख रहे थे । उन्होने सईदा को 'गीता' नाम से पुकारा जाते नही सुना था, क्योकि उस समय वे कार से उतरने मे व्यस्त थे और दूर भी थे । सईदा ने कुछ अनिच्छा से परिचय कराया, "आप श्री हीरेन्द्रकुमार अग्रवाल भार्गव साहब के पडोसी है ।" फिर डाक्टर सिंह की ओर सकेत किया, "आप है डाक्टर सिंह " आगे जो कहा जाना था, उसे किस तरह कहे, एकाएक समझ मे न आया, जिस से वह कुछ हकला गई । इस हकलाने ने उसे झेपा दिया । फिर यह झेंप साहस मे बदल गई और वह बोली, "आप बलवन्तजी के अकल है और देश के बहुत बडे वैज्ञानिक ।"

डाक्टर सिंह की मौजूदगी मे वह पहली बार बलवन्त का नाम ले रही थी । साडी को कन्धो पर सहेजते हुए उस ने सलूजा की ओर देखा, "और आप है डाक्टर सलूजा · इलाहाबाद यूनिवर्सिटी मे प्रोफेसर ।"

हीरेन्द्रजी बारी-बारी से सब की ओर हाथ जोड़ते रहे ।

डाक्टर सिंह बोले, "आओ, तुम्हे समिति के शामियाने तक तो

पहुचा दू । फिर अस्पताल जाना है और ”

“अस्पताल ?” हीरेन्द्रजी ने जिज्ञासा से पूछा ।

“जी हा । डाक्टर सलूजा जवानो के लिए खून देना चाहते हैं ।” सईदा ने बताया ।

सलूजा गम्भीरता से बोले, “डाक्टर सिह सोचते हैं कि इस तरह मैं अपने खून का महत्व समझ सकूगा । मेरा तो कहना है, इस दुनिया मे कुछ भी किसी महत्व का नही ।”

“आप खून देने जा रहे है ?” उत्साह के कारण हीरेन्द्रजी ने सलूजा का आखिरी वाक्य जैसे सुना ही नही, “इसे कहते हैं सयोग का खेल । मैं और मेरा पुत्र वीरेन्द्र भी इसी उद्देश्य से इर्विन अस्पताल जा रहे है । चलिए, अच्छा साथ रहेगा ।”

डाक्टर सिह को हीरेन्द्रजी जबरन पल्ले पडने वाले व्यक्ति मालूम हुए । उन्होने कहा, “अग्रवालजी, हम लोग अस्पताल जाने से पहले तीन-चार जगह रुकेंगे । बहुत देर लगेगी ।”

“आप इतने बडे वैज्ञानिक है । दर्शनो से मै कृतार्थ हो गया । आप का साथ पाने के लिए मैं अपना सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ कर सकता हू । मैं कार मे पीछे-पीछे आता रहूगा, आप चिन्ता न करे । मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप के सारे कार्य समाप्त होने के बाद खून देते समय हम लोग साथ-साथ ही रहे ।” हीरेन्द्रजी के होठो पर मुस्कान फैल आई ।

“धन्यवाद !” डाक्टर सिह बोले, “लेकिन आप अकेले ही चलिए हमे पता नही, कितना समय ”

हीरेन्द्रजी समझ गए कि यह मुझे टालना चाहते हैं । उन्हे बुरा तो लगा, लेकिन उन की मुस्कान की तरलता मे कोई कमी न आई । “जैसी आप की इच्छा ।” कहते हुए उन्होने अपने जुडे हुए हाथ माथे से भी ऊपर तक ले जा कर नमस्कार किया और कार मे बैठ गए । वीरेन्द्र भी बैठा ।

उन के जाने के बाद डाक्टर सिह शामियाने की ओर बढे। सईदा साथ-साथ चलती रही। डाक्टर सलूजा पीछे।

सईदा, डाक्टर सिह और सुलोचना अपना खून कल दे चुके थे। कल डाक्टर सलूजा ने उन के साथ चलने से इन्कार कर दिया था, किन्तु आज वह मूड मे थे। तबीयत कुछ नरम होने से सुलोचना कोठी मे रुक गई थी।

'महिला समिति' की जिन सदस्याओ से सईदा का नया-नया परिचय हुआ था, उन्होने बढ कर उस का स्वागत किया। सईदा ने डाक्टर सिह से कहा, "मैं शाम तक यही रहूगी।"

वह कहना नही चाहती थी कि आप लेने आ जाइएगा, पर उस के लहजे से डाक्टर सिह समझ गए और बोले, "कितने बजे आऊ ? चार या पाच ?"

"पाच से पहले नही। आई वाण्ट टु कीप माइसेल्फ बिजी "

"ओके, चाइल्ड !" उन्होने स्नेह से कहा, मुस्कराए।

वह और सलूजा कार की तरफ लौटने लगे।

चाइल्ड !

सईदा पुलकित हो गई।

'सचमुच बच्ची ही समझते है !' उस ने सोचा और सामने रखे अनेक कपो मे चाय ढालने लगी।

ज्यो ही डॅाक्टर सिह की कार आखो से ओझल हुई, उस के आस-पास खौफनाक अकेलापन घिर आया।

मिलिटरी का एक ट्रक सामने ही आ कर रुका और रायफलें थामे हुए जवानो की ढेर-ढेर टोलिया उतरने लगी। जवान नारे लगा रहे थे और बेहद खुश थे। कई टोलिया इस ओर बढी। सईदा सब के लिए चाय बनाने मे व्यस्त।

"यह आकाशवाणी है "

सईदा ने घूम कर देखा।

एक जवान के कन्धे से लटकते ट्राजिस्टर मे से आवाज आ रही थी, "सिक्किम-तिब्बत सरहद पर बीस सितम्बर की आधी रात को भारतीय जवानो ने चीनी सैनिको की गोलीबारी का कारगर जवाब दिया। १९६२ के हमले के बाद चीन से यह पहली मुठभेड है, जो साढे चौदह हजार फीट ऊंचे नाथू दर्रे पर हुई। भारत का कोई सैनिक हताहत नहीं हुआ। सिक्किम और लद्दाख की सीमाओ पर चीन पिछले दो दिनो से लगातार हमारी चौकियो पर गोलिया चलाता रहा है, लेकिन हमारे जवान बडे धैर्य के साथ इसे सहन करते रहे। आज रात को अधेरे की आड लेते हुए कई चीनी सैनिक भारतीय सीमा मे घुस आए। तब जवानो ने मजबूरी मे फायरिंग की और चीनियो को खदेड दिया। सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि यह मुठभेड छोटी ही रही, लेकिन यह आगे आने वाली गम्भीर आपत्कालीन स्थिति की ओर सकेत करती है। भारतीय वायु-सेना के एक हवाई-जहाज ने "

सईदा की सास तेज हो गई

चाय पी रहे जवान ध्यानपूर्वक सुन रहे थे।

" कच्छ-सिन्ध सीमा पर पाकिस्तानी इलाके मे बीस मील अन्दर तक उडान भरी और बदीन मे दुश्मन का एक महत्वपूर्ण राडार धूल मे मिला दिया। यह राडार पाकिस्तान के आधुनिकतम राडारो मे से एक था, जिस के द्वारा वह भारतीय इलाके मे बहुत गहराई तक जासूसी कर सकता था।

"गुजरात के मुख्य-मन्त्री श्री बलवन्तराय मेहता के निधन से पूरे देश मे शोक का वातावरण फैल गया है। अब इस मे कोई शक नही रहा है कि श्री मेहता के निहत्थे नागरिक हवाई-जहाज पर किसी पाकिस्तानी हवाई-जहाज ने हमला कर के उसे मार गिराया था। पाकिस्तान की ऐसी कार्रवाई अन्तर्राष्ट्रीय नियमो के पूर्णतया विरुद्ध है। यह इतनी क्रूर व अमानवीय है कि इस के लिए पाकिस्तान की जितनी भर्त्सना की जाए,

कम रहेगी। दुश्मन की इस हरकत ने पूरे देश की भावनाओ को आहत किया है।

"श्री बलवन्तराय मेहता के निहत्थे हवाई-जहाज पर हमला करने के लिए दुश्मन को बदीन से ही निर्देश मिले थे। इसी लिए भारतीय वायु-सेना ने बदीन का राडार तुरन्त नष्ट कर दिया। हमारे कैनबरा बाम्बर ने राडार पर कई राकेट छोडे और बम गिरा कर दुश्मन को भारी नुकसान पहुचाया।"

बम! राकेट! हवाई-हमला!

सईदा को कुर्सी पर निढाल होते देख कर 'महिला समिति' की एक सदस्या करीब आई और पूछने लगी, "तबीयत तो ठीक है?"

"तबीयत? जी हा, बिल्कुल ठीक क्यो? क्या हुआ है मुझे?" सईदा जल्दी से खडी हो गई।

समाचार जारी थे, "हमारा बाम्बर विमान अपने अड्डे पर सुरक्षित लौट आया "

सईदा के मन मे तूफान घुमड उठा, 'बलवन्त!'

प्रत्येक सास उसे होठो के ऊपर गर्म धारियो की तरह महसूस हो रही थी। उस ने चाय पी। कुछ देर बाद एक और प्याला।

अग्रिम इलाके से लौटी हुई एक ट्रेन अभी-अभी रुकी थी। वह उन घायल फौजियों से लदी हुई थी, जिन्हे विशेष उपचार के लिए दिल्ली लाया गया था। एम्बुलेन्स की कई गाडिया एक ओर खडी थी। फौजियो के स्ट्रेचर उन मे रखे जा रहे थे। कैसे विकृत मानव शरीर! किसी का हाथ नही, किसी के दोनो पैर गायब खून से लथपथ पट्टिया सईदा ने दूर से उन्हे असहाय लेटे पुतलो की तरह एम्बुलेन्स गाडियो मे क्रम से रखे जाते देखा कही इन मे से कोई बलवन्त ही न हो!

नही नही—यह कैसे हो सकता है?

बलवन्त इतना घायल होता तो सूचना न आती अब तक? बल्कि

भार्गव ने तो ऐसा तार दिया था कि बलवन्त ठीक हो कर फिर से मोर्चे पर पहुच गया है · दो घण्टे बाद बलवन्त का भी अलग से तार आया था कि वह बिल्कुल सुरक्षित है ।

"सईदा ? क्या सोच रही हो ?" किसी ने उस के कन्धे झकझोर दिए । 'महिला समिति' की एक स्नेहमयी सदस्या हसती हुई कह रही थी, "दो-दो बार पुकारा, देवीजी सुने तब तो !"

सईदा के चेहरे का रग उडने लगा था । वह स्टूल पर बैठ गई । उस महिला ने पहले भी उसे बार-बार हताश होते और बैठते देखा था ।

"क्या बात है, सईदा ?"

"कुछ नही । जरा कमजोरी-सी· "

महिला ने उस के कपार पर हाथ रखा । वह तप रहा था । "अरे, तुम्हे तो बुखार है ।"

"बुखार ?" सईदा ने अविश्वास से पूछा ।

"तुम्हे घर लौट जाना चाहिए ।"

घर ! वह नीचे देखने लगी ।

"चलो, पहुचा आऊ ।"

"अकेली चली जाऊगी । शुक्रिया ।"

घरघराहट करती एक एम्बुलेन्स गाडी सामने से निकल गई ।

"टैक्सी बुला दूं ?"

"नही, मै खुद ·मैं खुद कर लूगी टैक्सी । आप फिक्र न करे "

एम्बुलेन्स की दूसरी गाडी आ खडी हुई और घायल फौजियो के स्ट्रेचर रखे जाने लगे ·

"अरे ! इसे बुखार है ।" दो और महिलाए सईदा का माथा छू रही थी ।

एक फौजी जीप बहुत तेजी से अहाते मे आई । उस का हार्न कितना तीखा

"सईदा, यू मस्ट गो होम।" कोई कह रही थी।

दूर से किसी ट्राजिस्टर की आवाज, "सरगोधा के हवाई-अड्डे पर हमारी वायु-सेना ने एक और जोरदार हमला किया इस हम "

"तुम्हारा अकेली जाना ठीक नही। मै साथ चलूगी।" वह महिला उसे सहारा दे रही थी। टैक्सी सामने ही आ गई थी और इन्तजार मे थी। सईदा उठती हुई बुदबुदाई, "आप मेरे लिए इतनी दिक्कत "

"इस मे दिक्कत की क्या बात है? जब तबीयत अच्छी नही थी, तुम आई ही क्यो?"

दूर से उसी ट्राजिस्टर की मद्धिम आवाज, " अमतसर पर हवाई हमला करने की आज पाच बार कोशिशे की गईं। एक भी कोशिश कामयाब न हो सकी "

बलवन्त! अमृतसर और बलवन्त अमतसर मे बलवन्त अमृतसर के आकाश मे जूझ रहा बलवन्त

सईदा उस महिला के साथ टैक्सी मे बैठ चुकी थी। डाइवर को उस ने किसी तरह बताया, "कनाट-प्लेस फायरब्रिगेड के पीछे "

टैक्सी तेजी से सडक पार कर रही थी। एक जगह ट्रैफिक रुका हुआ था, इस लिए वह भी रुकी। नजदीक ही किसी रेडियो-डीलर की दूकान थी, जिस मे लगा लाउड-स्पीकर बहुत जोर से बोल रहा था, " किस्तान सरकार ने मजूर कर लिया है कि उस की वायु-सेना नापाम बमो का इस्तेमाल करती है। लडाई रोकने के सयुक्त-राष्ट्र-सघ के प्रस्ताव पर भारत सरकार गम्भीरतापूर्वक विचार कर रही है। भारत शुरू से ही शान्तिप्रिय देश रहा है और हमेशा रहेगा, अत लडाई-बन्दी पर उसे कभी एतराज नही हो सकता, ले "

ट्रैफिक खुल गया। टैक्सी झटका दे कर चल पडी। सईदा का तपता जिस्म महिला ने सहेज-समेट रखा था।

रेडियो-डीलर की दूकान पीछे छूट गई, लेकिन टैक्सी जहा-जहा से भी गुजर रही थी, समाचार हर जगह मौजूद थे—किसी-न-किसी रेडियो,

ट्राजिस्टर या लाउड-स्पीकर मे से फूटते-फैलते हुए। लोग जगह-जगह भुण्ड बना कर खडे थे और सुन रहे थे। वे चिन्तित कम थे, गम्भीर ज्यादा।

" किन भारत इस के लिए अपने आत्म-सम्मान को कभी दाव पर नही लगाएगा "

एक स्कूटर तीखी घरघराहट करता हुआ गुजरा। उस के सामने एक बोर्ड लटक रहा था, जिस पर लिखा था—जवानो को स्कूटर-सेवा मुफ्त।

फायरब्रिगेड लेन मे मुडने से पहले टैक्सी कुछ होटलो के सामने से गुजरी। सभी के आगे बोर्ड लगे थे—जवानो को खाना मुफ्त।

सईदा को घर (?) छोड कर महिला उसी टैक्सी मे वापस चली गई।

सुलोचना चिन्तित होती हुई सईदा के माथे पर बाम मलती रही। डाक्टर सिह और सलूजा ब्लड-बैंक से अभी नही लौटे थे।

अडतीस

क

रेडियो ने जब पहली बार यह सूचना प्रसारित की कि भारत व पाकिस्तान दोनो ही देशो ने सुरक्षा-परिषद् का युद्ध-विराम-प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है, उस समय डाक्टर सिंह की कोठी से रवाना हुई वह एम्बुलेन्स गाडी सेन नर्सिङ्ग होम की ओर बढ रही थी।

लोहे के बक मे डाक्टर सलूजा लेटे हुए थे। उन की आखे बन्द थी। एम्बुलेन्स की गाडी काफी धीमी थी तो भी बक मे छोटे-छोटे धक्के लग रहे थे। सुलोचना को यह बहुत खल रहा था। स्टेथोस्कोप गले से लटकाए वह बक की ओर झुकी हुई थी। उस का चिन्तित चेहरा सलूजा के चेहरे के पास था। एक हाथ से उस ने बक का ढाचा इस तरह पकड रखा था, मानो बक का लोहा कोई जीवित चीज हो और उसे छूने से ही सान्त्वना मिल सकती हो।

डाक्टर सिंह और सईदा गोद मे हाथ रखे हुए बक के सामने की पटरी पर खामोश बैठे थे। कभी-कभी वे एक-दूसरे की ओर देख लेते, लेकिन अधिकाश समय उन की आखे बक पर या सलूजा के लेटे आकार पर टिकी रहती—एक असह्य सूनेपन के साथ।

सलूजा को दिल का यह दूसरा दौरा पडा था। समय रहते आक्सीजन का प्रबन्ध हो जाने और पास ही सुलोचना जैसी डाक्टर मौजूद होने से वह खतरे का समय तो सुरक्षित रूप से बिता गए थे, लेकिन घर पर उन की तीमारदारी असम्भव थी। बहादुरशाह जफर मार्ग पर स्थित विख्यात सेन नर्सिङ्ग होम मे दाखिले का प्रबन्ध उसी समय कर लिया

गया था ।

नर्सिङ्ग होम मे उन के स्ट्रेचर को लिफ्ट के जरिए दूसरी मजिल पर पहुचाया गया जहा उन के लिए कमरा आरक्षित था । डाक्टर व नर्से तुरन्त सेवा मे हाजिर हो गए ।

सलूजा को बेड पर लिटा कर उन की नाक मे आक्सीजन की नलिया लगा दी गई । वह प्राय आधी बेहोशी की हालत मे पडे रहे । सुलोचना उन्हे इतने ध्यान से देखती रही, मानो उन के चेहरे पर क्षण-क्षण सूक्ष्म परिवर्तन हो रहे हो । बहुत गहरी सास के साथ उस ने निगाह घुमा ली । 'दूसरा हार्ट-अटैक ।' उस के मन मे बार-बार भयावह गूज हो रही थी ।

"दीदी " सईदा ने उस के कन्धे पर हाथ रखा । वह हताशा से सईदा पर निढाल होने लगी । सईदा ने उसे थाम लिया और कुर्सी मे बिठाया, "दीदी, अब तो यह खतरे से परे है अब क्यो आप इतनी "

सुलोचना मुस्कराई, "आय'म ओके, सईदा, क्वाइट ओके " उठ कर वह बाथ-रूम मे गई, जो कमरे से सलग्न था । शीशे के पास लगे वाश-बेसिन का नल खोल कर वह देर तक चेहरे पर छीटे मारती रही ।

सीज-फायर ! लडाई-बन्दी ! युद्ध-विराम ! इन समाचारो ने सारे देश का तनाव कम कर दिया था, लेकिन सुलोचना का तनाव ? वह शायद और ज्यादा युद्ध-विराम की घोषणा से पहले ही सलूजा पर दूसरा दौरा पड चुका था ·

सलूजा इतने होश मे नही थे कि उन्हे युद्ध-विराम की खबर दी जाए । होश मे होते या उन्हे दौरा ही न पडा होता, तो भी यह खबर उन के लिए शायद बेमानी रहती बुदबुदा कर वह यही कहते, "व्यर्थ··· सब व्यर्थ "

उन्हे मेडिकल इन्स्टीट्यूट के मानस-रोग-शास्त्रियो को दिखाया गया था, लेकिन वे उन का उपचार निर्धारित कर पाते, इस से पूर्व ही उन्हे

यहा ले आना पडा था चेहरे पर तौलिया मसलती-रगडती हुई सुलोचना बाथ-रूम से बाहर आई ।

तब सलूजा के बेड के पास डाक्टर सिंह और सईदा चुपचाप सिर झुका कर खडे थे और एक सिस्टर बेड के पायताने लगा छोटा-सा हैंडिल घुमाती हुई सिरहाने को हौले-हौले ऊचा कर रही थी ।

लगभग पाच मिनट बाद सुलोचना को कमरे मे ही छोड कर सईदा और डाक्टर सिंह नर्सिङ्ग होम के कारीडोर मे निकल आए और सीढियो के पास रखे गए सोफो की ओर बढे । सभी सोफे खाली थे । वे एक पर बैठे । दोनो महसूस कर रहे थे कि उन्हे कुछ कहना चाहिए, पर दोनो चुप थे । आधे ही मिनट बाद एक युवती वहा आ बैठी । उस का नन्हा-सा ट्राजिस्टर समाचार दे रहा था । सईदा और डाक्टर सिह का ध्यान उधर केन्द्रित हो गया अत चुप्पी के कारण पैदा हो रही उद्विग्नता कम होने लगी ।

" प्रधान-मन्त्री लालबहादुर शास्त्री ने आज ससद के दोनो सदनो मे युद्ध-विराम की घोषणा करते हुए बताया कि भारत ने अपने फील्ड-कमाण्डरो को कल २२ सितम्बर १९६५ को, सुबह साढे तीन बजे युद्ध रोक देने के आदेश भेज दिए है आज सौ से भी अधिक ससद-सदस्यो ने अपने हस्ताक्षरो से युक्त एक अपील प्रधान-मन्त्री के सामने रखी, जिस मे उन्होने माग की है कि भारत अपनी सैनिक-आत्मनिर्भरता के लिए अणु बम का निर्माण अवश्य करे "

ख

भार्गव, अगल-बगल लेटे सभी मरीज, नर्स, डाक्टर—सब के चेहरो पर राहत थी । बलवन्त भार्गव की खैर-खबर पूछने आया था ।

"नही, आप लोग गलत सोचते हैं । आज की रात तो सब से भयकर

है। दुश्मन आज सारी कसर पूरी करेगा।" उस ने कहा। भार्गव हस पडे, "आ गए न अपनी लाइन पर ? फौज का आदमी हमेशा वार की टर्म मे ही सोचता है। बेचारा और करे भी क्या !" सब मुस्कराने लगे, पर बलवन्त अपना मत बदलने के लिए तैयार नही था।

वह फाइटर-बेस की ओर रवाना हुआ तब दोपहर के तीन बजे थे। इसे मुश्किल से एक घण्टा हुआ होगा कि—

हू !

हू-हू-हू ! हुऊ ! वू ! वू !

सायरन !

खतरे का सायरन ! हवाई हमले की चेतावनी !

सारे अस्पताल मे खलबली मच गई। भार्गव की भौहो पर बल पडे।

वार्ड का दरवाजा किसी ने भडाक् से बन्द कर दिया। एक नर्स दौड-दौड कर खिडकिया बन्द करने लगी। उस का चेहरा कठोर हो गया था।

हूऊ ! हूऊ !

एक सिस्टर कोने मे सिकुड कर बैठ गई थी।

भार्गव के घायल शरीर की हालत ऐसी नही थी कि उठ कर कोई आड ले सकते या किसी खन्दक मे जा सकते। इस वार्ड के दूसरे मरीज भी इसी तरह लाचार थे। वे अविश्वास, आशका और भय से एक-दूसरो की आखो मे घूरने लगे। कोई बुदबुदाया, "आ गया आ गया बाम्बर ! यही यही सीज-फायर है ?"

कोई हसने लगा और जोर से बोला, "सीज़-फायर अभी कहा हुआ ? वह तो आधी रात के बाद होगा ! ला इज़ ला।"

"दिस इज इन्हच्यूमन !" एक नर्स ने भार्गव के पास आते हुए आक्रोश व भय से कहा।

सायरन रुका।

अस्पताल का हर व्यक्ति, दवा की एक-एक शीशी, हर दीवार, एक-एक इन्जेक्शन और स्टोव, रूई का एक-एक फाहा और सारे-के-सारे स्टेथोस्कोप—सब खामोश स्तब्ध !

दूर से तोपो की गर्जना

'कहा होगी बमबारी ? हो भी पाएगी या नही ? कितना बडा हमला हुआ है ?' भार्गव ने आखे मूद ली, 'बलवन्त ने ठीक ही कहा था • आज तो दुश्मन सारी कसर ओह ! एकाध बम इस अस्पताल पर, इसी वार्ड पर, इसी बेड पर—मेरे बेड पर—गिरे तो ?'

उन के सामने दोनो बच्चो और लक्ष्मी के चेहरे तैरने लगे। उन्होने आखे खोल दी और ऊचे स्वर मे कहा, "मत डरिए।"

विमानभेदी तोपे बार-बार गरज रही थी।

ग

हीरेन्द्रजी ठहाके पर ठहाके लगा रहे थे। उन के सामने 'दिल्ली नागरिक सघ' के सचिव महोदय बैठे हुए पान चबा रहे थे। उन की तोद ज्यादा बडी नही थी और वह बार-बार पीकदान की ओर झुकते थे। बोले, "जवाब नही चीनियो का भी !"

"लेकिन हमारा भी जवाब पा कर वे, जरा सोचिए, कैसे सकपकाएगे !" हीरेन्द्रजी फिर से ठहाका भरते हुए हिलने लगे। उन की प्रसन्नता आज वास्तव मे सीमा लाघ रही थी। यह दोहरी प्रसन्नता थी। पहला कारण था—लडाई-बन्दी की घोषणा। दूसरा—'दिल्ली नागरिक सघ' द्वारा चीनी दूतावास के सामने आठ सौ एक भेडो का जुलूस ले जाने का निर्णय।

भेडे एकत्र करने और उस जुलूस मे दूसरे सामाजिक व राजनीतिक नेताओ का सहयोग प्राप्त करने का श्रमसाध्य काम हीरेन्द्रजी की कार

के कारण पर्याप्त सरल हो गया।

चीन ने भारत को हमले का जो अल्टीमेटम दिया था, उस की मियाद कल रात पूरी हो गई थी लेकिन भारत की किसी भी चौकी पर कोई हमला नही हुआ था। चीन ने ऐलान किया था कि भारत ने हमारे इलाके मे जो चौकिया बनाई थी, उन्हे पीछे हटती भारतीय फौजो ने नष्ट कर दिया है, जबकि न भारतीय फौजे चीनी क्षेत्र मे थी, न वे पीछे हटी, न वे चौकिया ही थी कि नष्ट की जाती।

'भारत ने गैरकानूनी चौकिया तो नष्ट कर दी, लेकिन वे आठ सौ भेडे वापस नही की है जो हमारे इलाके से चुराई गई थी। ऐसी हिमाकत का करारा जवाब दिया जाएगा।'—चीन के नवीनतम विरोध-पत्र मे कहा गया था।

"बेशक! हम उन्हे आठ सौ क्या, आठ सौ एक भेडे वापस करेगे!" हीरेन्द्रजी ने 'दिल्ली नागरिक सघ' के सचिव से कहा व कार ड्राइव करते हुए एक और ठहाका लगा दिया। फिर बोले, "आज पूर्णान्धकार की आखिरी रात है। पाकिस्तान का कोई भरोसा नही। लडाई-बन्दी मजूर करने के बाद भी वह हमला कर सकता है। हम तो युद्ध-विराम होने की राहत आज ही महसूस कर रहे है, लेकिन इस के लिए बाद मे बहुत दिन मिल जाएगे। आज की रात तो सब से भयकर "

रात होनी दूर, शाम को साढे चार बजे ही रेडियो पर एक हवाई-हमले की घोषणा हुई, "युद्ध-विराम स्वीकार करने के कुछ ही घण्टे बाद पाकिस्तानी हवाई-जहाजो ने अमृतसर के छहरटा उपनगर पर कई बम गिराए। पचास से भी ज्यादा निहत्थे नागरिको की निर्मम हत्या कर के दुश्मन हवाई-जहाज जब वापस जा रहे थे, हमारी वायु-सेना की एक टुकडी ने उन पर जोरदार हमला किया। भागते-भागते भी दुश्मन के दो सैबर-जेट आकाश मे तबाह कर दिए गए। ये दोनो सैबर-जेट स्क्वाड्रन-लीडर बलवन्तसिह ने तबाह किए "

घ

"बधाई !" सुलोचना ने डाक्टर सिंह और सईदा की ओर मुस्कान फेंकी, "आप के बलवन्त ने दो और सैबर-जेट ..."

'आप के' कहते समय सुलोचना अकेले डाक्टर सिंह से मुखातिब थी, लेकिन सईदा शरमा कर लाल पड गई। मुस्कान रोकने के लिए वह अपने होठ चबाने लगी। डाक्टर सिंह ने यह देखा और पुलकित हो गए, "सईदा! बधाई!"

सईदा कमरे से भाग गई।

डाक्टर सिंह भी पीछे-पीछे बाहर आए। सईदा कारीडोर मे खडी थी और पैल्लू के छोर को बार-बार उगलियो पर लपेट-खोल रही थी।

"पगली! तुम भी तो मुझे बधाई दो?" स्नेहवश डाक्टर उस के बहुत करीब खडे हो गए। उन्हे सईदा के कन्धे पर हाथ रखने का मन हुआ, लेकिन न रख पाए।

नर्सिङ्ग होम मे डाक्टर सलूजा की तीमारदारी के लिए सुलोचना को रुके रहना था। अतिरिक्त व्यक्ति के रहने-सोने की व्यवस्था मरीज के ही कमरे में थी।

"हम चले?" डाक्टर सिंह ने सुलोचना की अनुमति लेनी चाही।

"जरूर!" वह फिर मुस्कराई। सलूजा के दौरे की उदासी बलवन्त की सफलता के समाचार ने कम कर दी थी।

"चिन्ता न करे।" सुलोचना ने हिदायत दी, "मैं इन के पास हू ही "

"सुबह हम जल्दी आ जाएगे।" डाक्टर सिह ने कहा।

सुलोचना इस बार मौन रही।

सईदा कार मे आगे बैठी थी और डाक्टर सिह गम्भीरता से ड्राइव कर रहे थे।

"सईदा ?"

"जी ?"

"लडाई आखिर खत्म हो ही गई।"

"अभी हमले हो रहे है, खत्म कहा हुई ?"

डाक्टर सिह का चेहरा कठोर हो आया, "सईदा, इस देश का प्रधान मन्त्री मैं होता तो जवाबी हमला करवा देता। उन्होने अमृतसर पर बमबारी की, मैं सीधे रावलपिडी पर करता।"

"अभी तो शाम हुई है। जगबन्दी होगी रात साढे तीन बजे। तब तक शायद हम लोग भी हमला कर चुके हो "

"ऐसा नही होगा। काश, हो पाता, लेकिन सईदा, मैं जानता हू, ऐसा नही होगा " डाक्टर सिह विद्रूप से हसे, "भारत ठहरा आदर्शों के सपने देखने वाला देश। ये सपने है तो बडे खूबसूरत, लेकिन हमे याद रखना चाहिए कि हर चीज की एक सीमा होती है। आदर्शों की सीमा, अहिसा की सीमा, देश और काल की सीमा, हर व्यक्ति की अपनी सीमा जिन आदर्शो के सपने भारत देखता है, वे है किताबी सपने और भारत इसे तभी समझेगा, जब जब दुनिया समझने के लिए मजबूर करेगी एण्ड देन· परहैप्स इट विल बी टू लेट देख लेना सईदा, अमृतसर का यह हमला भारत चुपचाप न सह जाए तो कहना!"

सईदा खामोश रही।

उस के होठो पर मुस्कान आने लगी—बलवन्त ! आज दो सैबरजेट और! कुल कितने हुए? बलवन्तबलवन्तबल-वन्त-ब-ल-व-न्त अब तो वह जल्दी ही वापस· लडाई जो खत्म!

ड

रात के प्राय. दो का समय।

अस्पताल गमगीन सन्नाटे मे डूबा हुआ।

"मिस्टर भार्गव ?" नर्स की आवाज ।

भार्गव ने सिर घुमाया ।

"आप जाग रहे है ?"

"कैसे सो सकता हू !"

समानान्तर बिछे बेड अपने मे एक-एक मरीज लिए हुए, खामोश लडाई प्राय डेढ घण्टे मे रुक जाएगी ब्लैक-आउट कल से उठ जाएगा

बलवन्त बुरी तरह घायल । बेहोश ।

दो सैबर-जेट ध्वस्त कर के उस का नैट नीचे आया था और वह उस के काकपिट मे से निकला ही था कि बेहोश हो कर गिर गया था । खून से लथपथ कपडो मे अटका-फसा हाफता, आवेश से कापता

तुरन्त वह अस्पताल ले जाया गया और—

भार्गव जाग रहे थे ।

पट्टियो के कारण वह उठ नही सकते थे, वरना दौड कर लेकिन नही, उठ सकते तो भी आपरेशन-रूम मे उन्हे जाने थोडे ही दिया जाता बलवन्त के जिस्म मे धसी सारी गोलिया निकाल देने का नाजुक आपरेशन

मरीज और मरीजो से सम्बन्धित सब-कुछ एक चौकन्नी, कच्ची नीद मे डूबता गया था और भार्गव जागते रहे थे

नर्स उन के सिरहाने से हट नही रही थी । नीले बल्ब की बहुत फीकी रोशनी उस आधे चेहरे पर पड कर उसे रहस्यमय बना रही थी रोशनी की तरफ की उस की आख कुछ-कुछ चमकती हुई

नही

चमक नही रही थी

वह आखो का गीलापन था, जो रोशनी मे झलक आया था ।

"सिस्टर ! क्या बात है, आप आप रो रही है ?"

"नही · " नर्स ने रूमाल से आखे पोछ ली, "आय'म सॉरी ! आई शुड'ण्ट बी टची ।"

"सिस्टर ! प्लीज़ क्या बात है ?" भार्गव ने नर्स का हाथ पकड कर झकझोर दिया, "यू मस्ट टेल मी ।"

"आप के वह दोस्त है न ? पायलट बलवन्तसिंह उन की हालत अभी-अभी और ज्यादा " नर्स फिर थम गई ।

उनतालीस

क

लिटन रोड पर स्थित चीनी दूतावास के बन्द गेट के बाहर हजारो की भीड जमा थी। मर्द, औरते, बच्चे, बूढे। हर पेशे और हर रुचि के लोग। वे हस रहे थे, आपस मे मजाक कर रहे थे। पुलिस का एक मज-बूत, घुडसवार दस्ता बहुत चौकन्नेपन के साथ मौजूद था। महिला-पुलिस भी।

नारे नही लग रहे थे। भीड को भेडो का इन्तजार था।

लगभग पन्द्रह मिनट मे जब भीड की घनता डेढ गुनी हो गई, सब ने भेडो को आते देखा। अनेक भारतीय तथा विदेशी सवाददाता, टेलिवीजन के कैमरा-मैन और फोटोग्राफर चुस्त हो उठे। चौबीस सितम्बर '६५। युद्ध-विराम के बाद पहला दिन।

आठ सौ एक भेडो का वह जुलूस बहुत व्यवस्थित था। भेडो के कान और छोटी-छोटी दुमे हिल रही थी, आखे बार-बार झपकती थी। उन के मिमियाने की आवाजे दूर से ही सुनाई पडी। एक अग्रेज फोटो-ग्राफर इतना उत्तेजित हो गया, मानो उस ने फौजी ड्रम सुन लिया हो। वह चिल्ला उठा, "द शीप! दे हैव कम! लुक!" तब तक 'चाऊ-माओ हाय-हाय!' के नारे उठने लगे थे।

एक अमेरिकी प्रेस-रिपोर्टर ने अपने साथी के कन्धे पर हाथ रखा और हस कर कहा, "ए स्ट्रेन्ज डिमान्स्ट्रेशन! ए टैरिब्ली हार्टी जोक!"

जुलूस के आगे हीरेन्द्रजी चल रहे थे। उन के हाथ मे एक सफेद मटका था। पीछे-पीछे भेडे और भेडो के बाद 'दिल्ली नागरिक सघ' तथा

अन्य कई सस्थाओ के हजारो व्यक्ति ।

टेलिवीज़न कैमरे विभिन्न कोण लेते हुए शुरू हो गए। प्रेस-फोटोग्राफर झट-झट तस्वीरें खीचने लगे ।

भेडे रुक गईं । कइयो के गले से गत्ते लटक रहे थे—'हम को खाओ, दुनिया को बचाओ ।'

"हटिए ! हटिए ! जगह दीजिए !" हीरेन्द्रजी ने गम्भीर उत्साह से कहा "भेडो को जाने दीजिए ।"

भीड ने तत्काल रास्ता बना दिया और भेडे चीनी दूतावास की तरफ बढने लगी । जब वे गेट से पचास गज दूर थी उन्हे रोक दिया गया । हीरेन्द्रजी सफेद मटका लिए हुए अकेले आगे बढे, जिसे गेट के पास रख कर वह जोर से बोले, "लीजिए, भेडो के साथ उन का दूध भी लीजिए · वरना आप कहेगे हिन्दुस्तानियो ने हमारी भेडे लौटाईं तो जरूर, पर उन का दूध दुह कर रख लिया ! "

बन्द गेट के पीछे दो चीनी अधिकारी खडे थे । लोगो व भेडो की भीड को वे आखे झपका-झपका कर देख रहे थे । हीरेन्द्रजी ने हिन्दी मे क्या कहा, वे न समझ पाए । उन्होने दुभाषिए की ओर देखा, जिस ने उन्हे चीनी मे अनुवाद कर के समझाया । तब उन की गम्भीरता और बढ गई । उन्होने देखा कि हीरेन्द्रजी के अलावा दो और व्यक्ति गेट के पास आ गए है और इशारे से उन्हे बुला रहे है । दो मे से एक चीनी अपनी जगह पर ही खडा रहा । दूसरा गेट के पास पहुचा ।

उन दो भारतीयो मे से एक था मैजिस्ट्रेट ऑन ड्यूटी और दूसरा था दुभाषिया । दुभाषिए के जरिए मैजिस्ट्रेट और चीनी अधिकारी मे बातें होने लगी ।

"आप ने आठ सौ भेडे मागी थी । हम आठ सौ एक ले कर आए हैं ।" मैजिस्ट्रेट ने निवेदन किया, "गेट खोलिए, ताकि वे अन्दर जा सकें ।"

"दूर रखिए भेडो को ।" चीनी अधिकारी ने अपना कानूनी ज्ञान

प्रदर्शित किया, "वे पचास गज से ज्यादा करीब नही आ सकती।"

"वे पचास गज ही दूर है। गेट खोलिए, उन्हे स्वीकारिए। दूध का मटका भी लीजिए। ये नागरिक आप को एक आवेदन-पत्र भी देना चाहते हैं।"

'कैसा आवेदन-पत्र ?"

"उस मे लिखा है कि मनुष्यो की जान भेडों से ज्यादा कीमती होती है। भेडो को खाइए, दुनिया को बचाइए। वे जो गत्ते भेडो के गले मे लटक रहे है, वे भी यही कहते हैं।"

"भेड़ो या आवेदनो मे हमारी कोई दिलचस्पी नही है।"

मैजिस्ट्रेट ऑन ड्यूटी ने जब ऊचे स्वर मे यह बात नागरिको को बताई, चारो तरफ से शेम ! शेम ! की आवाजे उठने लगी। हीरेन्द्रजी ने आवेदन-पत्र की कुछ प्रतिया उछाल कर दूतावास के अहाते मे फेक दी। चीनी अधिकारी तेजी से मुड कर वापस जा रहे थे और 'चाऊ-माओ हाय हाय !' के नारो, टेलिवीजन कैमरो की कार्रवाइयो, अनेक फोटोग्राफरो की क्लिको, भेडो की मिमियाहटो और भीड के उबलते शोर के बीच हीरेन्द्रजी दूतावास की चमकती नेम-प्लेट पर आवेदन-पत्र की एक प्रति चिपका रहे थे।

ख

छह सितम्बर से जारी ब्लैक-आउट चौबीस सितम्बर को खत्म हुआ और दिल्ली की रोशनिया गम्भीर मौन के साथ जल उठी। लोग रोशनी देखने के लिए कुछ इस तरह घरो से निकले, जैसे दीवाली मन रही हो। सईदा को साथ ले कर डाक्टर सिह भी फायरब्रिगेड लेन मे कुछ देर तक घूमते रहे। उस की आखो की भोली प्रसन्नता ने उन्हे पुलक से भर दिया।

कोठी मे वापस आ कर सईदा रसोई-घर मे चली गई ताकि वहा

का काम हजारे की बजाय वह स्वय कर सके। डाक्टर सिह ने प्रयोगशाला का दरवाजा खोला। बल्ब जलते ही वैज्ञानिक उपकरण, मोटे-मोटे पोथे, ढेर-से कागजात आदि रोशनी से सन गए कितने दिनो बाद · सचमुच कितने दिनो बाद यहा रोशनी करने की खुली छूट मिली थी ! वह कुर्सी मे बैठे और यो ही चारो ओर देखने लगे।

तभी फोन बजा।

पिछले कुछ दिनो से फोन उठाने का हजारे का जिम्मा सईदा ने ले लिया था। वह आसपास न होती तो डाक्टर सिह उठा लेते। कुर्सी छोड कर वह प्रयोगशाला से बाहर आने लगे, क्योकि फोन ड्राइग-रूम मे था।

उन्होने और सईदा ने वहा लगभग साथ-साथ प्रवेश किया। सईदा एक छोटे तौलिए से हाथ पोछ रही थी। डाक्टर सिह ने देखा, उस की कोहनी के पास कुछ आटा लगा हुआ है। वह मुस्कराए।

उन्होने रिसीवर उठाया और कहा, "हैलो ?"

सईदा हाथ पोछ चुकी थी त. भी तौलिए को उगलियो के बीच मे रगडती रही।

"जी हा। बोल रहा हू।" उम ने डाक्टर सिह को कहते सुना। वह कुछ और पास आ गई।

"आय'म होल्डिग।" कहते हुए उन्होने सईदा की ओर देखा। उसे इस दृष्टि मे किसी आशकित अविश्वास की झलक मिली। तौलिए मे उलझे-फसे सईदा के हाथ थम गए, "किस का फोन है ?"

जलता बल्ब डाक्टर सिह के पीछे होने के कारण उन की पगडी पर रोशनी थी, किन्तु चेहरे के अधिकाश हिस्से पर छाया। वह चुप रहे। उसी समय सईदा का ध्यान कोहनी पर लगे आटे पर गया। वहा तौलिए से पोछते हुए उस ने फिर पूछा, "किस का फोन है, डाक्टर साहब ?"

"अमृतसर से ट्रक ··" उन्होने धीमे से कहा।

सईदा की आखें जरा फैल गई। कुछ और आगे आ कर उस ने

मौन दृष्टि से काले रिसीवर की तरफ देखा ।

डाक्टर सिंह माउथ-पीस मे बोलने लगे, "हा क्या कहा ? ओह नही अभी अभी इतना बस मैं मै रख रहा हू • "

जब उन्होने रिसीवर रखा, सईदा ने देखा, उनके हाथो मे तीव्र झुरझुरी हो रही है । फोन के पूरे ढाचे पर उन की उगलिया कस गईं । सिर झुका कर वह चुप खडे रहे ।

अमृतसर से ट्रक मुश्किल से दस सेकण्ड की बातचीत यह झुरझुरी सईदा ने स्वय के पैरो मे भी कपकपी महसूस की । 'ट्रक क्यो आया था, डाक्टर साहब ?" उस ने फिर पूछा तो आवाज लगभग विस्फारित हो रही थी ।

डाक्टर सिह के न केवल हाथो मे, अब पूरे शरीर मे झुरझुरी हो रही थी । रिसीवर पर कसी उगलिया छोड कर वह एक कुर्सी की ओर बढे । जिस तरह वह बैठ रहे थे, उस से सईदा को डर लगा कि कहीं गिर न पडे । वह उन्हे थामने के लिए दौड कर नजदीक पहुची, लेकिन तब तक वह बैठ चुके थे । कुर्सी के हत्थो पर उन्होने अपने दोनो हाथ इस तरह रख दिए, जैसे लकवा मार गया हो ।

सईदा ने देखा, वह मुस्करा रहे है । वह इतनी रूखी, बनावटी और खीची हुई मुस्कान थी कि उसे दहशत हो आई । वह कुछ कहना चाहती थी पर, बिल्कुल न समझ सकी कि क्या कहे ।

"सईदा ?"

वह उसी तरह खडी रही ।

"सईदा बलवन्त " डाक्टर सिंह थमे । फिर वह झटके के साथ उठ खडे हुए और जोर से—पूरे जोर से—मानो सारी दुनिया मे ऐलान कर रहे हो—मुट्ठिया भीच कर चिल्लाए, "बलवन्त गया ! गया— हमेशा के लिए ! "

सईदा की चीख सुनाई नही दी । वह चीख नही सकती थी क्योकि

बेहोश हो कर गिर रही थी। डाक्टर सिंह उसे थामना चाहते थे, लेकिन वह चुपचाप उसे लडखडाते और गिरते देखते रहे वह इतने काप रहे थे कि थामने की ताकत उन मे नही थी

सईदा का हाथ लगने से काच का एक फूलदान फर्श पर गिरा और दूर-दूर तक बिखर गया।

ग

राष्ट्रीय सुरक्षा कोष को पुष्ट करने के लिए सारे देश मे विभिन्न सस्थाए बढ-बढ कर काम कर रही थी। राजधानी का कोई दिन ऐसा नही था जब ऐसे समारोह बहुत बडे पैमाने पर न हुए हो। ये समारोह, जो ब्लैक-आउट के दिनो मे भी जारी थे, ब्लैक-आउट उठने के बाद और जोर-शोर से होने लगे।

दरियागज के नागरिको द्वारा आयोजित एक वाद-विवाद-प्रतियोगिता मे हीरेन्द्रजी बोल रहे थे, "एक नही, अनेक मोर्चे है, जहा हमे फतह पानी है। हमारी सब से गम्भीर समस्याओ मे से एक है बढती आबादी। हिन्दुओ की एक विशेष तरह की लाचारी है, जो सन्तति-नियमन की योजनाओ को सफल नही होने देती। खेद की बात है कि सरकार का ध्यान इस लाचारी की ओर नही है।"

यहा वह कुछ रुके।

वाद-विवाद-प्रतियोगिता का पहला पुरस्कार पाच सौ रुपयो का था, दूसरा ढाई सौ और तीसरा सवा सौ का। सभी पुरस्कार सुरक्षा कोष मे दे दिए जाने थे। वक्ताओ मे शामिल होने की फीस थी पाच रुपए।

हीरेन्द्रजी की निगाह श्रोताओ के चेहरो को छूने लगी। सभी चेहरे उत्सुकता से मच की ओर उठे हुए।

घ

सेन नर्सिङ्ग होम के एक कर्मचारी ने कमरे मे प्रवेश किया और सुलोचना की ओर देखा, "बीबीजी, आप का फोन।"

डाक्टर सलूजा चुपचाप सो रहे थे।

सिस्टर को उन के पास बिठा कर सुलोचना फोन सुनने के लिए नीचे गई।

हजारे बोल रहा था।

"मैं मैं अभी आ रही हू।" सुलोचना ने कापती-थरथराती आवाज मे अपना आखिरी वाक्य कहा और रिसीवर रख दिया। उस के चेहरे का रग उड गया था। उस ने गहरी सास ली, कुछ देर रोके रखी, फिर छोड दी। काउण्टर पर बैठी रिसेप्शनिस्ट युवती ने औपचारिक लेकिन चिन्तित स्वर मे पूछा, "क्या बात है, मैडम ? एनीथिंग रौग ?"

सुलोचना कुर्सी मे बैठ गई थी ? उस ने फिर गहरी सास ली और रिसेप्शनिस्ट को कोई जवाब न दिया। फोन पर जो सुना था, उस पर एकाएक विश्वास नही जम रहा था। बलवन्त ! उसे उस ने कभी देखा नही था। उस से सम्बन्धित बाते ही सुनी थी, उस के फोटो देखे थे, उस के बारे मे सईदा की उमग और डाक्टर सिह के गहन स्नेह का आभास पाया था।

और हजारे ने अभी जो बताया, उस के अनुसार अब वह उसे कभी नही देख सकेगी। शायद इस समय उस की चिता सजाई जा रही हो। शायद चिता मे आग भी लग चुकी हो सईदा कोमल, नाजुक यह लडकी और डाक्टर सिह कैसी गुजरी होगी उन पर—ओह !

"पानी मगा सकती है ?" उस ने किसी तरह कहा। रिसेप्शनिस्ट ने तुरन्त चपरासी को आज्ञा दी और सुलोचना के हाथ पर हाथ रखते हुए पूछा, "मे आई नो ?"

सुलोचना की भीगी आखे उठी। बलवन्त से व्यक्तिगत घनिष्ठता न होने पर भी जब इतना महसूस हो रहा था तो जिस के मन मे उस की हो जाने की आकाक्षाए धधक रही थी, उस की क्या हालत हुई होगी ?

डाक्टर सिह अपने हीरो की वापसी को ले कर कैसे उत्साहित ट्रक-काल से जब उन्हे पता चला होगा

पानी आ गया। उस ने दो-तीन छोटे घूट लिए, फिर एक लम्बा घूट। शेष पानी पीए बिना उस ने गिलास रख दिया। जो हुआ था, उसे वह किसी को बताना चाहती थी। किसी को भी रिसेप्शनिस्ट की आखो मे घूरती हुई वह बुदबुदाई, "हमारा एक पायलट था वह ···नही रहा "

उस की सिसकी फूट पडी। जल्द ही वह सम्भल गई और आखें पोछती हुई उठी।

रिसेप्शनिस्ट कह रही थी, " आई एम सो सॉरी " लेकिन सुलोचना जानती थी कि इस दुख की पूरी गहराई रिसेप्शनिस्ट महसूस कर ही नही सकती।

नर्सिङ्ग होम की शान्ति बहुत कठोर और शीतल थी। रात के प्राय नौ का वक्त। मरीजो से मिलने-जुलने के लिए आए लोग कब के विदा ले चुके थे। थोडी देर मे यह रिसेप्शनिस्ट भी चली जाएगी। गलियारो मे फीकी रोशनी होती रहेगी। सीढियो के पास मेहमानो के लिए रखे सोफे सुबह तक खाली पडे रहेगे।

लिफ्ट ऊपर जा रही थी। सुलोचना उस मे अकेली ही बन्द थी। उस ने फिर से आखे पोछी। लिफ्ट एक मुलायम झटके के साथ रुकी। उस का आटोमेटिक दरवाजा खुला। वह बाहर निकली और सलूजा के कमरे की ओर बढी।

दरवाजा खोलते समय उस के चेहरे पर कठोरता उभर आई। जो हो गया था, हो गया था। अब कठोरता से ही उस का सामना किया

जा सकता था—किया जाना था ।

उस ने सिस्टर से कहा कि वह कुछ घण्टो के लिए फायरब्रिगेड लेन जा रही है । सिस्टर ने आश्वासन दिया कि वह डाक्टर सलूजा का पूरा ध्यान रखेगी ।

जाते-जाते सुलोचना ने सलूजा के चेहरे की ओर देखा । नीद मे डूबा, कमजोर चेहरा पलग के पास, दवाओ के रैक से सटा हुआ आक्सीजन का सिलेण्डर उस की नलिया, जो अभी सलूजा की नाक मे लगी हुई नही थी

नर्सिङ्ग-होम से निकल कर उस ने एक टैक्सी को आवाज दी ।

ड

सभी चेहरे उत्सुकता से मच की ओर उठे हुए थे । हीरेन्द्रजी ने आत्मविश्वास से कहा, "इस लाचारी की जडे काफी गहरी है । हमारे देश मे हिन्दू ही है जो सन्तति-नियमन का ज्यादा पालन करते है सौ साल या डेढ सौ साल या कई सौ साल के बाद की स्थिति पर जरा सोचिए देश के अधिकाश गैर-हिन्दू लोग सन्तति-नियमन नही करते या करते है तो न के बराबर वे गरीबी सह कर भी ज्यादा सन्ताने पैदा करते है, ताकि उन की सख्या बढती रहे । चीन मे भी इसी लिए सतति-नियमन नही है । क्या एक स्थिति ऐसी न आएगी, जब· जब देश मे हिन्दू कम और और गैर-हिन्दू ज्यादा हो जाए ?"

श्रोताओ मे से एक विद्यार्थी उठा और बोला, "याने, आप का मतलब है, सरकार कानून बनाए ? ऐसा कानून, जो सब पर लागू हो ? सभी धर्म के लोगो पर ?"

"मैं आप का मतलब नही समझा ।" हीरेन्द्रजी ने कहा ।

"ऐसा कानून कि कोई भी शख्स दो से या तीन से ज्यादा सन्ताने

नही रख सकता ?"

"कई बाते कानून से ही मनवाई जा सकती है।"

"ठीक है, लेकिन "

"ऐसा करिए, आप मच पर आ जाइए, फिर बोलिए।" अध्यक्ष ने कहा।

हीरेन्द्रजी ने अपना वक्तव्य बाद मे जारी रखने की घोषणा की और बैठ गए।

विद्यार्थी लम्बे डग भरता हुआ मच की ओर बढा।

उच्च-स्तरीय गोष्ठी होने के कारण श्रोताओ की सख्या ज्यादा नही थी। एक छोटे-से हाल मे ही सारा आयोजन समा गया था। विजेताओ के पुरस्कारो का धन चन्दे से।

च

"हो! हो! हो!"

"इक्! इक्! इहीही ईह-ईह-ईह!"

"हा! हा! हा! गजब! गजब, जनाब, गजब!"

"वल्लाह! क्या बात है!"

'टी-हाउस' मे ठहाको पर ठहाके लग रहे थे। पेडू मे उठती हसी के कारण हाक की तोद काप रही थी और ऐरो के सिर मे बार-बार झटके लग रहे थे। खुफिया विभाग के दस-बारह साथी मेज को घेर कर बैठे थे। कुछ की काफी समाप्त हो चुकी थी, कुछ की हो रही थी।

ऐश-ट्रे मे बुझी सिगरेटे और राख इस कदर ठुसी हुई थी कि अब एक भी सिगरेट और नही डाली जा सकती थी।

"लीजिए, अगला चुटकुला!" ऐरो ने कहा।

सब नकली रूप से गम्भीर हो गए।

'तो हुआ यह कि पाकिस्तान का एक शायर किसी हकीम के पास पहुचा और बोला, 'हुजूर, बहुत पुराना कब्ज है।' हकीम ने दवा दी। वह दूसरे दिन आया और बोला, 'कुछ नही हुआ, सा'ब!' हकीम ने और तेज दवा दी। अगले दिन उस से भी तेज दवा देनी पडी "

ऐरो रुका। हाक ने कहा, "तौबा! फिर?"

"जब उस से भी तेज, उस से भी तेज और उस सेए भीई तेएज दवा से कुछ न हुआ तो हकीम बडे हैरत मे। सर खुजाता हुआ बोला, 'अमा, यार, तुम काम क्या करते हो?' जवाब मिला, 'काम? कैसा काम? मैं तो पाकिस्तान का मशहूर शायर हू।' हकीम उछल पडा और शायर को एक रुपया देता हुआ बोला, 'हुजूर, पहले खाना तो खा आइए।'"

इतने जोर का ठहाका लगा कि दूर-दूर की मेजो पर बैठे लोग इधर-देखने लगे।

एक बैरा हाक के पास आया और मैनेजर की आज्ञानुसार बोला, "सा'ब! जरा धीरे "

"नोई! नोई! आज धीरे नोई होगा!" ऐरो ने हुलसते हुए कहा व बैरे के लौटते-लौटते एक और चुटकुला सुना दिया।

छ

"बच्चो के बारे मे ऐसा कानून बनाते ही हमे गर्भपात को जायज मानना होगा आप देश की स्थिति जानते ही है " विद्यार्थी कुछ-कुछ उत्तेजित हो चला था, "तब हमारे आस्तिक लोगो मे तहलका मच जाएगा। भगवान और धर्म के ठेकेदार बलवा कर देगे और और इसी लिए मै कहता हू हमारी हालत साप-छछूदर जैसी है सब से पहले हमे लोगो को बताना होगा कि ईश्वर नही है। जो भी है, प्रकृति है, विज्ञान है। तभी यह देश तभी इस का उद्धार होगा, वरना.."

हीरेन्द्रजी देख रहे थे कि विद्यार्थी सब को अपने प्रभाव मे ले रहा है, " हम लोग बडी-बडी बाते करते है राष्ट्र के नाम पर अनोखी कुर्बानिया भी करते है लेकिन लेकिन अपनी झूठी भारतीयता को, अपने खोखले आदर्शो को तिलाजलि देते हमारी रूह कापती है सोचिए आबादी इसी तरह बढती गई तो हमारी सारी तरक्की, सारी योजनाए धरी-की-धरी "

ज

सईदा बिलख रही थी।

रात की खामोशी मे उस की आवाज के आतक ने फायरब्रिगड लेन को दबोच लिया था। सुलोचना उसे भीचे हुए थी और डाक्टर सिंह बुत की तरह कुर्सी मे बैठे थे। उन के चेहरे पर दयनीय पीलापन था, मानो अभी-अभी अनेक जोको ने उन का अधिकाश खून चूस लिया हो। जिधर देखते, देखते रह जाते। सुलोचना की भी आखे लाल हो गई थी। सईदा की पलके सूजने लगी थी। वह रोए जा रही थी, लेकिन आखो मे अब गीलापन नही था। दोनो पुतलियो पर उसे दाह हो रहा था। जब भी पलकें झपकती, पुतलियो पर किरकिराहट जैसा लगता। हिचकिया बार-बार उसे झिझोड देती। वह इतनी सिकुड कर बैठी हुई थी कि सुलोचना को वह और छोटी, और मासूम लग रही थी।

हजारे दीवार से टिक कर खडा था। हाथ की उगलिया आपस मे गुथ कर कस गई थी।

टीपू फर्श पर निढाल पडा हुआ।

अडोस-पडोस की वे औरते, जिन्होने कभी इस कोठी मे दाखिला नही लिया था, रोदन सुनते ही भागी चली आई थी। सईदा और डाक्टर सिंह को वे हर सम्भव उपाय से सान्त्वना देती रही थी। उन मे से कुछ

रोने भी लगी थी लेकिन सईदा चुप न हो सकी थी ।

पडोस के कुछ मर्द भी आए, लेकिन वे डाक्टर सिह से कोई बातचीत न कर सके । हार गए उन की खामोशी के सामने । थोडी देर मे सारे पडोसी लौट गए । रात के दस से ज्यादा का वक्त । सईदा का चेहरा छाती से दबा कर सुलोचना बुदबुदा रही थी, "मत रो, सईदा, इतनी मत·· "

डाक्टर सिह को बार-बार लगता, वह सास नही ले रहे ।

चालीस

दोनो बच्चो और अपने छोटे भाई के साथ लक्ष्मी अमृतसर आई थी —भार्गव साहब को देखने। वे लोग स्टेशन के रिटायरिंग रूम मे ठहरे थे। बलवन्त की मृत्यु से लक्ष्मी भी ठगी रह गई थी। 'अब सईदा का क्या होगा ?' यह प्रश्न उस के मन मे बार-बार दुख की गहरी गूज पैदा कर देता। उस ने सईदा को समवेदना का एक पत्र रेडियो-स्टेशन के पते से लिखा था, लेकिन कोई उत्तर न आया था। गाजियाबाद और दिल्ली का फोन डायरेक्ट होने के कारण उस ने सईदा को रेडियो-स्टेशन मे फोन भी किया था। और तब पता चला था कि वह यहा से जा चुकी।

वह अधिकारी सईदा का मामला कुछ दिनो तक घपले मे रखने के बाद अतत उसे रुखसत कर चुका था।

सईदा की अम्मीजान का इन्तकाल हो गया है, इस की लक्ष्मी को जानकारी नही थी अत उस ने सोचा था कि सईदा मुरादाबाद चली गई होगी। अमृतसर मे भार्गव साहब से पता चला कि सईदा डाक्टर सिंह के यहा है और सुरक्षित है। अपहरण और वापसी की जानकारी भी उसे यही मिली।

आज वह दिल्ली लौट जाने वाली थी, क्योकि बच्चो को ज्यादा दिनो तक स्कूल से अनुपस्थित रखना ठीक नही था।

भार्गव साहब से मिलने के लिए वे लोग आखिरी बार अस्पताल आए और जैसा कि हर बार होता था, सईदा की चर्चा चल पडी।

"मै दिल्ली पहुचते ही उस से मिलूगी।" लक्ष्मी ने भीगी आवाज मे कहा।

"वह हमारे यहा रहने आना चाहे तो साथ ही ले जाना।" भार्गव बोले और कुछ ऐसे अवसाद से घिर गए, मानो उन्होने सईदा के देशनिकाले की बात की हो। घर फायरब्रिगेड लेन का घर जो सईदा का होते-होते रह गया

"पता नही, वह चाहेगी या नही " काफी देर बाद लक्ष्मी ने मौन भग किया।

"जो भी हो "

फिर से वे खामोश हो गए। दोनो के ही मन मे यह धधक उठा था कि यदि सईदा उन के यहा रहने आ भी जाए तो भी वह हमेशा के लिए तो रह नही सकती थी। न ही वह डाक्टर सिह के यहा हमेशा रह सकती थी। क्या उसे फिर वर्किङ्ग-गर्ल्स-हास्टल मे पहुच जाना है ? या पेइग-गेस्ट के रूप मे किसी परिवार मे अपने को स्वीकृत कराना है ? दोनो स्थितिया भार्गव को असुरक्षित मालूम हुई। हास्टल जहा से वह उठ कर ले जाई गई थी कोई अपरिचित परिवार पता नही, वे कैसे लोग हो एक लडकी पेइग-गेस्ट को पता नही वे कब, कैसे मजबूर करे

"क्या सोच रहे हैं ?" लक्ष्मी की आवाज। उन्होने निगाह घुमाई, "कुछ नही।"

"कहे तो सईदा को जबरन ले आऊ घर।"

"बशर्ते डाक्टर सिह आने दे।"

"क्यो न आने देगे ?"

"सईदा को ले कर उन की भी कुछ जिम्मेदारिया है—बल्कि हम से ज्यादा।"

"सो तो है, पर " लक्ष्मी ने वाक्य अधूरा रहने दिया।

"कहो न ? रुक क्यो गई ?"

"उस का हमारे यहा आ जाना ही उचित है।"

"हा, शायद तुम पूरी कोशिश करना।"

"मैं जरूर मना लूगी।"

भार्गव चाहते थे कि उन्हे अमृतसर से हटा कर दिल्ली के किसी अस्पताल मे पहुचा दिया जाए। डाक्टरो ने पूरा आश्वासन दिया था कि ज्यो ही सम्भव होगा, ऐसा किया जाएगा।

'दिल्ली पहुच कर तुरन्त खत लिखेगे,' कह कर लक्ष्मी और सब ने विदा ली।

युद्ध-विराम के बाद भी पाकिस्तान भारतीय फौजो को निरन्तर छेड रहा था। भारतीय नेताओ ने इस पर बहुत चिन्ता प्रकट की थी कि अगर पाकिस्तान इसी तरह युद्ध-विराम का उल्लघन करता रहा तो किसी भी समय स्थिति मे विस्फोट हो सकता है और तब पहले की ही तरह खुला युद्ध छिड जाएगा। सुरक्षा परिषद् भी बार-बार अपील कर रही थी कि युद्ध विराम का ईमानदारी से पालन किया जाए। ऐसी तनावपूर्ण स्थिति का अन्त क्या है? भार्गव सोचते रहे। वह जान-बूझ कर इस पर सोच रहे थे, ताकि सईदा की चिन्ता से कुछ बरी रह सकें। पाकिस्तान ने २६ सितम्बर को जो युद्ध-विराम-भग किया था, वह बहुत गम्भीर था। अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पार कर के पाकिस्तानी सैनिको का एक जत्था फाजिल्का क्षेत्र मे घुस आया। उस ने कम नही, पूरे बारह भारतीय गावो पर आक्रमण कर के आग लगा दी।

"मिस्टर भार्गव!"

चौंक कर उन्होने देखा, डाक्टर सिंह खडे है।

'ओह! आइए! बैठिए न? उधर उधर स्टूल सिस्टर? प्लीज वह स्टूल दीजिएगा कोई चेयर नही है क्या?" उन्हे एका-एक अपने सामने देखने के लिए वह तैयार नही थे, जिस से कुछ हकला गए।

सिस्टर कुर्सी लाने लगी। डाक्टर सिंह ने आगे बढ कर कुर्सी ले ली

और भार्गव के सिरहाने बैठे। उन का चेहरा बहुत बदल गया था। बदला हुआ चेहरा देखने की आशका-आशा होने के बावजूद भार्गव को वह बहुत ही दूसरा-दूसरा लगा।

"हाऊ आर यू, भार्गव ?" उन्होने गम्भीरता से पूछा।

"नाइस।"

खामोशी न घिर आए, इस के लिए भार्गव ने ही पल-दो-पल बाद फिर कहा, "कब आए आप ?"

"आज ही "

भार्गव ने पूछना चाहा कि तुरन्त की बजाय तीन-चार दिनो के विलम्ब से कैसे, लेकिन वह चुप रहे।

"कल शाम को वापस चला जाऊगा।" डाक्टर सिह कह रहे थे।

"इतनी जल्दी ?"

"हा।" वह कुछ झिझके, "दिल्ली मे सईदा अकेली है।"

सईदा को भी अपने साथ अमृतसर ले आने का प्रश्न ही नही था। लोग पूछते कि कौन है। अम्बाला तथा आसपास के अधिकाश रिश्तेदार अमृतसर के रिश्तेदारो के यहा आ गए थे और या तो अभी ठहरे हुए थे या वापस जाने की तैयारियो मे थे।

कभी-न-कभी इन रिश्तेदारो को पता जरूर चलेगा कि सईदा नाम की कोई लडकी है। तब ?

लेकिन यह बाद का सवाल था। उस पर अभी से सोचने की तत्परता या इच्छा उन मे नही थी। इच्छा या साहस ? जो भी बहर-हाल, अभी वह अकेले ही अमृतसर आए थे और कल शाम ही 'सरकारी काम' का बहाना कर के लौट जाने वाले थे। आते ही, घर की महिलाओ का रोदन अभी पूरी तरह रुका भी न था कि उन्होने घोषित कर दिया था, कल वह चले जाएगे।

लोगो ने इस घोषणा मे एक व्यर्थ विद्रोह का आभास पाया था

और मान लिया था कि वह नही जाएगे। जा कैसे सकते हैं! अव्वल तो वह दो-तीन दिनो की देर से आए खैर देर शायद इस लिए की कि सारा दुख वह एकान्त मे झेलना चाहते हो

'भार्गवजी, मैं बहुत पसोपेश मे हू।"

भार्गव उन की सूनी आखो मे देखते रहे। मौन।

"मैं समझ मे नही आता—क्या करू।"

"किस बारे मे?"

"सईदा "

भार्गव ने व्याकुल हो कर गहरी सास ली। वही बात, जो अभी-अभी लक्ष्मी से हुई थी

"जी हा, डाक्टर साहब, मैं भी इस पर बहुत सोचता रहा हू।"

"जरूर सोचा होगा आप ने इसी लिए मैं एक्चुअली मैं हमेशा किताबो मे डूबा रहने वाला आदमी ऐसी नाजुक गुत्थी सुलझाना मेरे बूते की बात है ही नही और इसी लिए मैं आप के पास आया हू।"

भार्गव ने और तीखी अकुलाहट अनुभव की।

"मै घर वालो से ऐज़ यू कैन अण्डरस्टैण्ड यह मामला डिस्कस नही कर सकता किसी और से भी नही शायद आप ही अकेले शख्स हैं, जो कुछ सुझा सकते है।" डाक्टर सिह का गला भर आया। कुछ देर थमे रह कर बोले, "सईदा अभी मेरे यहा है। आखिर वह कब तक वह ."

भार्गव को न जाने क्यो, तुरन्त ऐसा लगा कि इस मसले पर अभी मन-ही-मन सोचा भले ही जा सकता हो, किन्तु डाक्टर सिंह के साथ खुली बातचीत अभी नही होनी चाहिए। कम-से-कम एक-दो सप्ताहो तक तो नही ''लेकिन एकाएक सारी स्थिति स्पष्ट हो गई बलवन्त की अस्थिया यमुना मे विसर्जित करने के लिए जल्द ही कुछ रिश्तेदार दिल्ली

पहुचेगे। तब वे डाक्टर सिह के यहा ठहरेंगे। उस समय सईदा वहा नही होनी चाहिए।

'डाक्टर साहब, अभी-अभी मेरी वाइफ यहा आई थी। इसी मसले पर उस से बातचीत भी हुई आप अदरवाइज़ न ले तो "

"क्या ?"

"सईदा मेरे यहा आ सकती है। बल्कि मैं ने लक्ष्मी से कह ही दिया है कि उसे दरियागज ले आए दिल्ली पहुचते ही वह उस से मिलने जाएगी "

"थैंक्यू, मिस्टर भार्गव! रियली आय'म आय'म सो ग्रेटफुल टु यू दैट "

"नही, नही, ऐसा मत कहिए "

"रियली, भार्गव, आय'म " वह सन्तोष व प्रसन्नता से कुछ मुस्कराए। ऐसी हल्की मुस्कान भी उन के होठो पर अनेक दिन बाद आई होगी भार्गव ने भी मुस्कराने की चेष्टा की। कहा, "मैं जल्द ही दिल्ली आ जाऊगा। काफी कोशिश मे हू इस की।"

"दैट विल बी नाइस।"

अस्पताल से बाहर निकलते ही एक असहनीय नाराजगी डाक्टर सिह के मन मे फूट आई—स्वय के ही प्रति

सईदा क्या सोचेगी! डाक्टर सिह ने मुझे घर से निकाल दिया—यही

लेकिन दूसरा उपाय भी क्या है ?

'मुझे कल नही, बल्कि तीन-चार दिन बाद दिल्ली जाना चाहिए।' उन्होने महसूस किया। इस मे दोहरा बचाव था। पहला यह कि उन्हे सईदा का आमना-सामना नही करना पडेगा—लक्ष्मी तब तक उसे अवश्य ले जा चुकी होगी।

डाक्टर सिह की गैरमौजूदगी मे घर छोडते हुए सईदा को भी आसानी रहेगी

दूसरा बचाव यह कि अमृतसर के रिश्तेदारो को बुरा नही लगेगा। तीन-चार दिन रुकने पर उन्हे कुछ तो तसल्ली होगी

लेकिन

सहसा एक कौंध। कही ऐसा न हो कि तीन-चार दिन रुक जाने पर तेरहवी तक रुकने वाली स्थिति सामने आए! तेरहवी मे तब दिन ही कितने बचेगे।

नही, इतना नही रुका जा सकता।

यह जल्द-से-जल्द मातम के इस वातावरण से छुटकारा पाना चाहते थे। उन्हे सचमुच आश्चर्य था कि बलवन्त के साथ इतना नेह होने के बावजूद क्यो वह उस के अवसान के दुख से दूर भाग रहे थे। क्या इस पलायन मे कायरता नही थी ?

लेकिन किसी की मृत्यु पर—चाहे मृतक कितना भी प्रिय क्यो न हो—कई दिनो तक लगातार दुख मानना एक अवैज्ञानिक बात थी। वह सामाजिक या सासारिक भले ही हो, लेकिन सचमुच उस मे वैज्ञानिकता नही थी।

तेरहवी तक वह नही रुक सकते। दीगर बाते छोड दे तो भी इस लिए नही कि वह एक वैज्ञानिक है। अकस्मात् उन मे उन का पुराना हठ पैदा हो गया। रिश्तेदार बुरा माने तो मानते रहे। डाक्टर सिह से हमेशा वे बुरा ही मानते रहे है। वह वैज्ञानिक बनने जा रहे थे तब। उन्होने शादी न करने की घोषणा की तब। बलवन्त को उन्होने फौज मे भरती कराया तब। फिर उन के बुरा मानने-न-मानने की परवाह आज क्यो की जाए ?

ये समझते क्यो नही कि तेरहवी करने, दूसरे क्रिया-कर्म करने, अस्थियो के विसर्जन के लिए दूर-दूर जाने मे कोई तुक नही है ? जिस

आत्मा की शान्ति के लिए यह सब किया जाता है, वह कही अस्तित्व ही नही रखती न कोई स्वर्ग या नरक ही ऐसा होता है, जहा आत्मा अपने कर्मानुसार 'पहुचती' हो और ये लोग समझते क्यो नही कि मृत्यु मे कोई पीडा भी नही होती ? मरने वाले का चेहरा कभी-कभी बिगड जाता है, ठीक है, लेकिन इस लिए नही कि पीडा हुई थी। इस लिए कि शरीर की 'मेटाबोलिक फायर' बुझने से चेहरे की मास-पेशियो मे खिचाव आया मत्यु मे पीडा 'पैदा' तो होती है, महसूस' नही होती। 'महसूस' करता है दिमाग—और दिमाग मृत्यु से बहुत पहले बेहोश हो जाता है। वह उसी आसानी से शून्य मे बदल जाता है, जिस तरह कि गहरी नीद आने पर फिर तेरहवी का अर्थ ? आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थनाओ का अर्थ ? तेरहवी तक यहा रुके रहने का अर्थ ?

पैदल ही घर की ओर बढते हुए वह सोचते रहे

हर हालत मे वह कल रवाना हो जाए गे। परसो सुबह पहुच जाएगे अपनी कोठी मे। प्रयोगशाला मे कितना काम बचा हुआ है ! कोठी मे उन्हे पता चलेगा—हजारे आ कर बताएगा—कि सईदा लक्ष्मी के साथ चली गई। परसो तक वह अवश्य ही चली जाएगी। इस लिए चली जाएगी कि कि वह समझदार है और लक्ष्मी भी समझदार है समझदार, व्यावहारिक और और सासारिक—भले ही वैज्ञानिक दृष्टि का उन दोनो मे पूर्ण अभाव हो

लेकिन

लेकिन अगर सईदा न गई होगी, तो ?

तो वह पर्याप्त क्रूरता के साथ लक्ष्मी से कहेगे कि इसे ले जाओ अस्थि-विसर्जन के लिए रिश्तेदार आए, तब तक। ऐसा नही कि वह रिश्तेदारो से डरते हो, लेकिन खामखाह उन से उलझना भी वह नही चाहते थे। जो अस्थि-विसर्जन और तेरहवी आदि-आदि मे विश्वास रखते हो, उन्हे 'सईदा कौन है और यहा क्यो है' वगैरह समझाने की

कोशिश करना पत्थर पर सिर मारने जैसा ही होगा

जब रिश्तेदार चले जाए, सईदा—अगर वह चाहे—वापस आ सकती है। फायरब्रिगेड लेन की उस कोठी मे रह सकती है। लेकिन नही तब भी रिश्तेदारो को पता चल ही जाएगा।

बल्कि शायद कुछ को अभी ही खबर मिल गई हो। न जाने कहा-कहा से भनक चली जाती है।

यदि ऐसा हुआ हे तो तो

वस !

अब नही सोचना है इस पर।

तेजी से जा रहे वाहन मे एकाएक ब्रेक लगा हो, इस तरह उन्होने अपने विचारो को रोक देना चाहा। उन्हे लगा कि वह काफी सफल हुए हैं।

घर आ गया था।

स्वस्थ होने के लिए उन्होने गहरी सास ली, खखार कर गला साफ किया, फिर दाखिल हो गए—बिना आखिरी फैसला किए कि उन्हे क्या करना है या क्या करना चाहिए।

इकतालीस

क

डाक्टर सिंह दिल्ली के प्लेटफार्म पर उतरे तब सूरज निकलने वाला था। लाल आकाश के सौंदर्य पर उन का ध्यान न गया, क्योकि मन का विषाद दिन-ब-दिन कफ की तरह गाढा होता जा रहा था। सभी चीजें उन्हे बुझी-बुझी और दरारो वाली महसूस होती। वह अपनी प्रयोगशाला मे जा कर शीघ्रातिशीघ्र व्यस्त हो जाना चाहते थे, क्योकि इस उपाय से वह न केवल अपने दुख को भूल सकते थे, समय आसानी से गुजारने के अलावा कोई ठोस काम करने का सन्तोष भी पा सकते थे।

टैक्सी जब फायरब्रिगेड लेन की ओर बढ रही थी, उन्हे सईदा का ध्यान आया। 'मैं तो व्यस्त हो कर अपना दुख भूल जाऊगा, लेकिन सईदा ? वह कैसे भूलेगी ?' वह सोचने लगे। महसूस हुआ कि दुख को भुलाने मे उन्हे सईदा की सहायता करनी चाहिए—यह उन का फर्ज है। बलवन्त के चाचा होने के नाते एक फर्ज।

इस नाते उन के और क्या-क्या फर्ज है ?

नही अभी नही अभी इस पर नही सोचना है सोचना असम्भव है शायद

कोठी के सामने उतर कर उन्होने काल-बेल दबाई। तब सूरज निकल चुका था और दूर के कुछ वृक्षो मे चिडियो का शोर हो रहा था। हवा मे अक्तूबर के पहले सप्ताह की गुलाबी ठण्ड।

उन्हे शक हुआ कि ज्यो ही दरवाजा खुलेगा, सईदा खडी दिखाई

देगी । लक्ष्मी उसे अपने यहा ले जाने के लिए आई तो होगी, पर सईदा ने इन्कार कर दिया होगा ।

वह प्रतीक्षा करते रहे ।

दरवाजा खुला ।

सामने—

हजारे खडा था ।

डाक्टर सिह के चेहरे पर सन्तोष की मुस्कान आ गई । हजारे की नमस्ते के जवाब मे वह मुस्कराते ही रह गए, जो स्वय उन्हे अटपटा लग रहा था । सयत होते हुए उन्होने कहा, "सामान उतारो !"

हजारे टैक्सी की ओर बढ गया । उस के पीछे-पीछे टीपू ।

डाक्टर सिह ड्राइग-रूम मे आए और जूते उतारने लगे । वह हजारे से पूछना चाहते थे कि सईदा है या नही, लेकिन न पूछा । उन्होने टैक्सी का बिल अदा करने के लिए उसे पाच का एक नोट दे दिया । हजारे जब बकाया पैसे टैक्सी-ड्राइवर से वापस ले रहा था, वह अपनी प्रयोगशाला का ताला खोल रहे थे । अभी उन्हे ब्रश करना था, नहाना-धोना था, नाश्ता करना था । प्रयोगशाला इसी वक्त खोलने की आवश्यकता बिल्कुल नही थी ।

लेकिन उन्होने दरवाजा खोला और अन्दर चले गए । प्रयोगशाला भीतर से बन्द कर के उन्होने ऐसी राहत अनुभव की मानो कोई राजनीतिक विद्रोही अपने गुप्त तहखाने मे आ गया हो । हर तरफ धूल जमी हुई । वह बैठ गए और गुमसुम-से चारो ओर देखने लगे ।

उठे ।

कुर्सी की जो धूल कपडो मे लग गई थी, उसे हथेली से झाडने लगे । रूमाल निकाला, कुर्सी साफ की, बैठे ।

दरवाजा खोलने के लिए सईदा सामने नही आई थी, लेकिन इस के बावजूद वह इस कोठी मे हो सकती थी । शायद अभी वह सो रही हो

—रात देर तक जागती रही होगी। शायद अभी वह पिछवाडे के बगीचे मे हो—अपनी बोई हुई गोभियो को देखने गई होगी। या शायद अभी वह नहा रही हो—उठने के साथ, फिर चाहे वह जब भी उठे, उसे झटपट ब्रश आदि करने, नहाने और उस के बाद ही चाय पीने की आदत है। या हो सकता है, अभी वह घूमने निकल पडी हो। पडोस की किसी महिला के साथ। आसपास अब उस की कई सहेलिया है।

या

वह फायरब्रिगेड लेन मे सचमुच न हो। दरियागज मे हो। लक्ष्मी के यहा।

कहा है वह ?

उन्हे सईदा का नाम ले कर पुकार उठने का प्रयोग करने की इच्छा हुई, लेकिन अगले ही क्षण इस मे प्रयोजनहीनता नजर आई।

वह प्रयोगशाला से बाहर निकले। दो कदम चले, फिर लौट गए —उन्हे वहा का ताला बन्द करना था। पूरी सावधानी के साथ। प्रयोगशाला से इतना मोह उन्होने पहले कभी अनुभव किया हो याद न आया। प्रयोगशाला, जो उन्हे व्यस्न रखेगी व्यस्त, क्योकि

वह उस रैक की ओर गए, जिस मे जूते रखे जाते थे। यहा पता चल सकता है यदि सईदा यही है तो उस की जूतिया और स्लीपर्स जरूर यहा होगी।

दूर से उन्होने देखा—लेडीज जूतियो और चप्पलो के एक नही, कई जोडे रैक मे रखे है।

ब्लैक-आउट के दिनो मे वह घर की कई ऐसी चीजो को पहचान गए थे, जो उन के लिए, यो देखा जाए तो, कोई महत्व की नही थी। मसलन उन्हे मालूम था कि रेडियो के पीछे जो छिपकलिया रहती हैं, उन की सख्या दो है।

उन लेडीज जूतियो मे से कुछ सईदा की थी, कुछ सुलोचना की,

देगी । लक्ष्मी उसे अपने यहा ले जाने के लिए आई तो होगी, पर सईदा ने इन्कार कर दिया होगा ।

वह प्रतीक्षा करते रहे ।

दरवाजा खुला ।

सामने—

हजारे खडा था ।

डाक्टर सिह के चेहरे पर सन्तोष की मुस्कान आ गई । हजारे की नमस्ते के जवाब मे वह मुस्कराते ही रह गए, जो स्वय उन्हे अटपटा लग रहा था । सयत होते हुए उन्होने कहा, "सामान उतारो !"

हजारे टैक्सी की ओर बढ गया । उस के पीछे-पीछे टीपू ।

डाक्टर सिह ड्राइग-रूम मे आए और जूते उतारने लगे । वह हजारे से पूछना चाहते थे कि सईदा है या नही, लेकिन न पूछा । उन्होने टैक्सी का बिल अदा करने के लिए उसे पाच का एक नोट दे दिया । हजारे जब बकाया पैसे टैक्सी-ड्राइवर से वापस ले रहा था, वह अपनी प्रयोगशाला का ताला खोल रहे थे । अभी उन्हे ब्रश करना था, नहाना-धोना था, नाश्ता करना था । प्रयोगशाला इसी वक्त खोलने की आवश्यकता बिल्कुल नही थी ।

लेकिन उन्होने दरवाजा खोला और अन्दर चले गए । प्रयोगशाला भीतर से बन्द कर के उन्होने ऐसी राहत अनुभव की मानो कोई राज-नीतिक विद्रोही अपने गुप्त तहखाने मे आ गया हो । हर तरफ धूल जमी हुई । वह बैठ गए और गुमसुम-से चारो ओर देखने लगे ।

उठे ।

कुर्सी की जो धूल कपडो मे लग गई थी, उसे हथेली से झाडने लगे । रूमाल निकाला, कुर्सी साफ की, बैठे ।

दरवाजा खोलने के लिए सईदा सामने नही आई थी, लेकिन इस के बावजूद वह इस कोठी मे हो सकती थी । शायद अभी वह सो रही हो

—रात देर तक जागती रही होगी। शायद अभी वह पिछवाडे के बगीचे मे हो—अपनी बोई हुई गोभियो को देखने गई होगी। या शायद अभी वह नहा रही हो—उठने के साथ, फिर चाहे वह जब भी उठे, उसे झट-पट ब्रश आदि करने, नहाने और उस के बाद ही चाय पीने की आदत है। या हो सकता है, अभी वह घूमने निकल पडी हो। पडोस की किसी महिला के साथ। आसपास अब उस की कई सहेलिया है।

या

वह फायरब्रिगेड लेन मे सचमुच न हो। दरियागज मे हो। लक्ष्मी के यहा।

कहा है वह ?

उन्हे सईदा का नाम ले कर पुकार उठने का प्रयोग करने की इच्छा हुई, लेकिन अगले ही क्षण इस मे प्रयोजनहीनता नजर आई।

वह प्रयोगशाला से बाहर निकले। दो कदम चले, फिर लौट गए —उन्हे वहा का ताला बन्द करना था। पूरी सावधानी के साथ। प्रयोग-शाला से इतना मोह उन्होने पहले कभी अनुभव किया हो, याद न आया। प्रयोगशाला, जो उन्हे व्यस्त रखेगी व्यस्त, क्योकि

वह उस रैक की ओर गए, जिस मे जूते रखे जाते थे। यहा पता चल सकता है यदि सईदा यही है तो उस की जूतिया और स्लीपर्स जरूर यहा होगी।

दूर से उन्होने देखा—लेडीज जूतियो और चप्पलो के एक नही, कई जोडे रैक मे रखे है।

ब्लैक-आउट के दिनो मे वह घर की कई ऐसी चीजो को पहचान गए थे, जो उन के लिए, यो देखा जाए तो, कोई महत्व की नही थी। मसलन उन्हे मालूम था कि रेडियो के पीछे जो छिपकलिया रहती हैं, उन की सख्या दो है।

उन लेडीज जूतियो मे से कुछ सईदा की थी, कुछ सुलोचना की,

जिन्हे वह सेन नर्सिग होम ले जाने की बजाय यही छोड गई थी।

और कुछ ऐसी थी, जो न सईदा की थी, न सुलोचना की। और और कुछ जूते बच्चो के साइज के थे।

"अरे, डाक्टर साहब ? नमस्ते। क्या देख रहे है वहा ?"

हडबडा कर वह उठ खडे हुए।

सामने लक्ष्मी।

ख

"हद है ! भुट्टो साहब तो बदतमीजी की आखिरी सीमा भी पार कर गए !" हीरेन्द्रजी 'दिल्ली नागरिक सघ' के कार्यकर्त्ता की ओर देख कर आश्चर्य-मिश्रित क्षोभ से बोले। कार ले कर ये दोनो सुबह-सुबह 'चुनौती कवि-सम्मेलन' के टिकट बेचने निकल पडे थे, जिस की सारी आय राष्ट्रीय सुरक्षा-कोष मे दी जाने वाली थी।

"दुनिया के सब से बडे राजनीतिक मच पर खडा हो कर कोई ऐसी अशिष्ट भाषा का प्रयोग करे ! विश्वास नही होता।" कार्यकर्त्ता ने सिर हिलाया।

पाकिस्तान और भारत द्वारा युद्ध-विराम स्वीकार किये जाने के बाद सुरक्षा-परिषद् की जो बैठक हुई थी, उस मे भारत के पूरे एतराज के बावजूद कशमीर-समस्या का निवाद उठाया गया था। भारत ने कहा था कि कश्मीर हमारा आन्तरिक मामला है, उस पर दूसरे देश बहस नही कर सकते। पाकिस्तान के विदेश मत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने वहा भाषण देते समय उत्तेजना मे आ कर सभी भारतीयो को 'कुत्ते' कह कर पुकारा था।

विडम्बना यह थी कि सारी परिषद् चुपचाप भोडा भाषण सुनती रही थी। सभी इतने हतप्रभ रह गए थे कि जनाब भुट्टो को शिष्ट भाषा का प्रयोग करने के लिए कहना भी किसी को नही सूझा था।

सभी भारतीय प्रतिनिधि यह भोडा भाषण होने से पहले ही परिषद् छोड कर चले गए थे—कश्मीर पर जबरन विचार किए जाने के विरोध मे।

हीरेन्द्रजी ने कार फायरब्रिगेड लेन मे रोक दी। दोनो बाहर आए। चारो खिड़कियो के काच चढा कर और दरवाजे के ताले मे से चाबी निकाल हीरेन्द्रजी ने कार्यकर्त्ता की ओर ऐसी निगाह से देखा, मानो पूछना चाहते हो—अब ?

चुनौती कवि-सम्मेलन' दो दिन बाद होने वाला था, जिस मे देश के सभी उच्च कोटि के कवि भाग ले रहे थे।

"आप बाई तरफ की कोठियो मे टिकट बेचिए। मै दाहिनी तरफ जाता हू।" कार्यकर्त्ता ने सुझाया।

"ठीक है।" हीरेन्द्रजी ने टिकट का बण्डल कुरते की जेब मे रखते हुए कहा। दोनो अलग-अलग दिशाओ मे बढ गए।

प्राय एक घण्टे बाद जब हीरेन्द्रजी डाक्टर सिह की कोठी मे प्रवेश कर रहे थे, अचानक एक विराट कुत्ता भौकता हुआ उन के सामने आ गया। इस से पहले कि वह भागे या खडे रहे', इस का निर्णय ले पाते, कुत्ते ने छलाग लगाई और अगले पैरो को उन की छाती पर टिका कर खौफनाक ढङ्ग से गुर्राने लगा।

हीरेन्द्रजी के होश फाख्ता हो गए लेकिन भागने या चीखने पर कुत्ते के और खतरनाक हो जाने की सम्भावना थी। उन के हाथ कुत्ते के अगले दोनो पैरो की जड के पास उलझने-फसने लगे। वह उसे नीचे उतारने के लिए धकेलना चाहते थे और भय के कारण अजीब तरीके से 'चच्च हट् ऐ धत् " कह रहे थे। कापते हुए

ग

"मैं बडे चक्कर मे था कि ये जूते किस के है।" डाक्टर सिह झेंपते हुए-से बोले।

लक्ष्मी हसी, "आप के लिए तो इतने छोटे जूते अजूबा ही होगे। पप्पू, स्वीटी के है।"

'ओह ! कहा हैं दोनो ?"

"सो रहे है अभी।"

"और सईदा "

"शायद नहा रही है।"

"हु "

उन्होने जो अटकले लगाई थी, उन मे से एक सही निकली आखिर ! वह जरा हिचकिचाते हुए बोले, "मै ने सोचा था कि कि "

लक्ष्मी प्रश्नवाचक दृष्टि से देखती रही और वह खामोश हो गए। अभी सचमुच वह बताने ही वाले थे कि क्या सोच रहे थे !

वह ब्रश पर टूथ-पेस्ट निकाल कर वाश-बेसिन की ओर बढे।

उसी समय बाथ रूम का दरवाजा खुला और सईदा बाहर निकली। इतनी सुबह, इतनी धुली-धुली और काफी हद तक तनाव-विहीन। उस ने नमस्ते की और तेजी से दूसरे कमरे मे चली गई, क्योकि साडी को अपने बदन पर वह यो ही लपेटे हुए थी।

डाक्टर सिह ब्रश करते रहे। बहुत आसानी से समझा जा सकता था कि जब लक्ष्मी सईदा को लेने आई होगी, सईदा ने स्वय जाने की बजाय बच्चो-समेत उसी को यहा रोक लिया होगा—सुलोचना ने भी इस मे सहयोग दिया होगा। सईदा के चले जाने पर सुलोचना अकेली पड जाती जिसे स्वाभाविक ही था कि वह कभी पसन्द न करती।

नहा-धो कर डाक्टर सिंह ने काफी पी। सईदा और लक्ष्मी ने मेज पर उन का साथ दिया। दोनो बच्चे उठ गए थे और डाक्टर सिंह को देख कर सहमे-सहमे से स्कूल जाने की तैयारी कर रहे थे।

काफी की चुस्किया खामोशी से ली जा रही थी। अमृतसर के कोई समाचार नही हो सकते थे जो पूछे या बताए जाते। वहा डाक्टर सिह

जिस कारण से गए थे, वह अदृश्य रूप से सभी पर लटक-सा रहा था और वातावरण बोझिल होता जा रहा था।

"हजारे ?" डाक्टर सिंह ने पुकारा।

वह आया।

"कार की सफाई करो। नर्सिग होम जाना है।"

कार की चाबी ले कर वह चला गया।

'आप दोनो भी चलेगी न ?" उन्होने लक्ष्मी की ओर देखा, सईदा की ओर नही।

"हा।"

एकाएक बाहर से टीपू के भौंकने की आवाज सुनाई पडी। सईदा तुरन्त कप रखती हुई उठी और दरवाजे की तरफ बढी। डाक्टर सिह स्वय उठने जा रहे थे, पर उसे उठते देख बैठे रहे।

"टीपू ! कम हियर !" सईदा ने जोर से कहा।

टीपू हीरेन्द्रजी की छाती से उतर कर दुम हिलाता उस के पास आ खडा हुआ।

सईदा को अपनी आखो पर सहसा विश्वास न हो सका। हीरेन्द्रजी ने राहत के साथ हाथ जोड दिए थे, "नमस्ते गीता बहनजी !"

"ओह ! नमस्ते ! नमस्ते ! आइए। लेकिन सुबह-सुबह यहा कैसे ? " सईदा आश्चर्य से बोली।

हीरेन्द्रजी दाखिल हुए, "आप का कुत्ता तो बाबा रे अरे, डाक्टर साहब भी है ? नमस्कार ! और भाभीजी भी है ! नमस्ते, नमस्ते ! इसे कहते है सयोगो का खेल। कौन जानता था, मैं यहा आ पहुचूगा। अहोभाग्य !" हीरेन्द्रजी उस कुर्सी मे बैठ गए, जिस की ओर सईदा ने इशारा किया था।

सईदा ने बिस्कुटो की प्लेट उन की ओर खिसकाई। जब वह उन के लिए काफी ढाल रही थी, वह सकोच मे बोले, "रहने दीजिए "

लेकिन तब तक वह एक छोटा बिस्कुट उठा कर मुह मे डाल चुके थे। काफी की पहली चुस्की लेने के बाद उन्होने कप रख दिया और डाक्टर सिंह पर दृष्टिपात किया। डाक्टर सिह उन्ही की ओर देख रहे थे। निगाह मिलते ही हीरेन्द्रजी ने अपने को हीन महसूस किया और नरवस होते हुए मुस्करा दिए। बोले, "आप लोग भी सोच रहे होगे, सुबह-सुबह अच्छा आ टपका नाश्ते के समय!"

'नही, अग्रवालजी, बल्कि हम लोग तीन होने के बावजूद अकेलापन महसूस कर रहे थे।" लक्ष्मी ने कहा, "सूझ नही रहा था कि क्या बातचीत करे। चौथे आप आ गए तो देखिए, बातचीत होने लगी!"

हीरेन्द्रजी हसे।

"लेकिन आप के आने का कोई कारण जरूर होगा।" लक्ष्मी ने ही कहा, क्योकि डाक्टर सिह और सईदा चुप रहे।

"हा, एक विशेष ही कारण है। आप ने 'चुनौती कवि-सम्मेलन' के इश्तहार जगह-जगह चिपके देखे होगे?"

"जी हा।"

"मै उस के टिकट बेचने निकला हू। अधिकाश बिक गए है। पच्चीस वाली कतार के कुछ बाकी है।"

वार्तालाप फिर रुक गया। हीरेन्द्रजी के लिए यह अप्रत्याशित था। बच्चे अपने झोले लटकाए हुए ड्राइग-रूम मे आए ताकि कोठी से निकल कर उस बस-स्टाप की ओर बढ सके, जहा से स्कूल की बस मिलती थी। हीरेन्द्रजी को देख कर वे इतने चौके कि नमस्ते करने की वजाय झेपते हुए हसने लगे। दोनो ने एकाएक दौड लगाई और दरवाजा खोल कर, उसे भडाक् से बन्द करते हुए बाहर चले गए। यह आवाज लक्ष्मी को बहुत खली। बन्द दरवाजे को वह नापसन्दगी से देखती रही।

हीरेन्द्रजी किसी रहस्यमयता का आभास पा रहे थे। बच्चो-समेत लक्ष्मी को डाक्टर सिह की कोठी मे देख कर उन्हे बडा आश्चर्य था।

गहरी चुस्की ले कर उन्होने शेष काफी समाप्त कर दी । कप रखते हुए लक्ष्मी से बोले, "भार्गवजी कैसे हैं ? सुना था, वह अमृतसर के अस्पताल मे "

"जी हा । कुछ दिनो मे दिल्ली आ जाएगे ।"

"याने ठीक हो गए है ?"

"पूरी तरह नही—यहा भी अस्पताल मे रहेगे ।"

"हु "

चूकि सब की काफी समाप्त हो चुकी थी, हीरेन्द्रजी ने टिकट निकाले और डाक्टर सिह की ओर देखा, "कहिए, कितने टिकट ?"

सईदा का अन्दाजा था कि शायद वह इन्कार कर दे । इन दिनो किसी भी समारोह मे जाने की उन की मन स्थिति नही थी ।

"कब है कवि-सम्मेलन ?" उन्होने पूछा ।

"दो दिन बाद, रात आठ बजे ।"

"देखिए, मै एक बिजी आदमी हू । मेरा आना तो मुश्किल ही रहेगा लेकिन " उन्होने सईदा से पूछा, "क्यो, तुम जाओगी ?"

सईदा धीमे स्वर मे बोली, "आप नही जाएगे तो मै "

उन्होने अपने को अपराधी महसूस किया । जिस के मन मे उन के प्रति इतना सम्मान है, उसी को वह घर से निकालने के लिए कितने उत्सुक

उन्होने अपनी आवाज सुनी, "उस से क्या फर्क पडता है ? तुम हो, लक्ष्मी भी है । दोनो चली जाना । सुलोचनाजी भी शायद चलती, लेकिन उन्हे हास्पिटल मे रहना होगा, इस लिए क्यो लक्ष्मी ? जाओगी न ? मन बहलेगा ।"

"क्षमा कीजिएगा, डाक्टर साहब," हीरेन्द्रजी ने साहस के साथ कहा, "एक निवेदन करना चाहता हू । 'चुनौती कवि-सम्मेलन' मन बहलाने के लिए नही है वह राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के लिए आयोजित हो

रहा है। आप को टिकट जरूर खरीदने चाहिए। चाहे आप आएं या न आएं ”

डाक्टर सिंह गम्भीरता से उठे और स्टडी-टेबल का ड्रार खोल कर चेक-बुक निकाल लाए। सौ रुपयों का बेयरर चेक ज्यों ही हीरेन्द्रजी के हाथ में आया, उन की बाछें खिल गईं। गद्गद स्वर में चार टिकट फाड़ते हुए बोले, “आप से यही आशा थी, डाक्टर साहब ”

जैसे सुना ही न हो, इस तरह डाक्टर सिंह वापस स्टडी-टेबल के पास जा कर चेक-बुक रख रहे थे। हीरेन्द्रजी ने टिकट सईदा की ओर बढ़ाए, “लीजिए, गीता बहनजी ”

डाक्टर सिंह पलट कर देखने लगे। सईदा झुरझुरा उठी। लक्ष्मी ने मेज के नीचे से हाथ बढ़ा कर सईदा के घुटने पर स्पर्श किया। शायद हिम्मत और दिलासा देने के लिए।

‘कौन गीता ?” डाक्टर सिंह ने नजदीक आते हुए पूछा। सईदा बड़ी मुश्किल से अपने होंठों की कंपकंपी जब्त कर पाई।

उन की आवाज इतनी कठोर थी कि हीरेन्द्रजी किंकर्तव्यविमूढ़ रह गए।

“यहां किस का नाम है गीता ?”

लक्ष्मी उठी। सब उस की ओर देखने लगे। वह बहुत सप्रयास ढंग से बोल रही थी, “डाक्टर साहब बात यह है, एक दिन ·एक दिन यह ” उस ने हीरेन्द्रजी की ओर संकेत किया, “हमारे यहां भोजन पर आए थे। तब सईदा भी थी। ‘इन्होंने’ इन्हें सईदा का नाम ·‘गीता’ बताया ”

“वजह ?” डाक्टर सिंह ने ज्यों ही पूछा, लगा, वह स्वयं अपने से पूछ रहे हैं।

लक्ष्मी ने हताश मौन से सईदा की ओर देखा।

सईदा कुर्सी छोड़ कर उठ रही थी। चेहरा पथरीला। दोनों होंठ

परस्पर दबे हुए। आखे जरा फैल आई-सी। हीरेन्द्रजी की ओर दो कदम चल कर वह रुकी और चबाई हुई, कसी-कसी आवाज मे बोली, "अग्रवालजी, मैं बहुत पहले भाप गई थी लेकिन चुप थी आज ' आज आप ने "

"सईदा !" लक्ष्मी ने आगे बढ कर उसे जकड-सा लिया, "सईदा सुनो "

"छोड दीजिए मुझे !" वह तडप कर अलग हो गई।

अब वह हीरेन्द्रजी के बहुत करीब खडी थी। इतनी करीब कि हाथ बढा कर उन्हे छू सके।

"मै गीता नही, अग्रवालजी, सईदा हू सईदा ! अभी आप ने मेरे साथ बैठ कर काफी पी ! और देखिए, आप काले पड गए जल्द ही आप पत्थर के हो जाएगे भागिए ! भागिए यहा से—अस्पताल पहुचिए !"

हीरेन्द्रजी झुरझुरा उठे।

"भागिए, वरना मै आप को छू लूगी " भावावेश मे हाथ उठाए वह आगे बढी।

हीरेन्द्रजी बिना कुछ बोले झपट कर बाहर निकल गए।

सईदा की आखे डाक्टर सिह पर टिकी।

वह भौहो को सिकोडे हुए देख रहे थे। उन के दोनो हाथ नकली हो, इस तरह लटक गए थे। उन्हे यह शक बुरी तरह कुरेदने लगा था कि कपार पर शायद पसीने की नमी आ गई है। कुर्सी मे बैठ कर हत्थे पकड लेने का मन हो रहा था, लेकिन कुर्सी की ओर बढते ही कही वह कापने न लगे इतने ज्यादा कि दूसरो को भी सईदा को भी पता चल जाए वह कुछ बोलना चाहते थे—कुछ भी पर आवाज जरूर विस्फारित हो जाएगी और तब

वह खडे रहे सईदा का एक एक शब्द, हीरेन्द्रजी को कहा गया

एक-एक शब्द उन्हे स्वय अपने लिए लगा पत्थर के हो जाएगे हो जाएगे आप भागिए यहा से सईदा की आखे ! ये अन्दर तक देख सकती हैं चुनौती देती, घूरती ये आखे वह उन पुतलियो मे देखते रहे। नही चाहते थे तो भी। डर-से रहे थे तो भी। अपने को क्रमश बौना महसूस कर रहे थे तो भी।

हतप्रभ लक्ष्मी जहा की तहा खडी थी। कितने दिनो से दबी-घुटी सईदा की भावनाओ मे आज कैसी अप्रत्याशित तीव्रता से विस्फोट ज्वाला-मुखी सी यह लडकी छोटे, अनिश्चय-भरे कदमो से लक्ष्मी आगे आई और बुदबुदाई, "सईदा ?"

सईदा ने पल्लू मे चेहरा छिपा लिया और रो उठी।

डाक्टर सिह को जैसे कोई जीवित चीर रहा हो • किन्तु वह हिल भी न सके खामोशी से बस, देखते रहे और सईदा के कापते शरीर को थाम कर लक्ष्मी दूसरे कमरे मे ले गई।

घ

"सुलोचना " डाक्टर सलूजा की कमजोर आवाज सेन नर्सिंग होम के खामोश कमरे मे तैरी, "मै बहुत कमजोर हो गया हू।"

"जल्द ही ताकत भी आ जाएगी, भैया ! आप ज्यादा सोचा मत कीजिए। चुपचाप लेटे रहने से•• "

"आज वह जो समाचार छपा है न• "

"धूमकेतु वाला ?"

"उसे फिर से पढ कर सुनाओ।" सलूजा ने लगभग मचलते हुए कहा।

'बीमारी मे आदमी कैसा बच्चो-सा हो जाता है !' सुलोचना ने सोचा, 'बच्चो जैसी ही छोटी-छोटी जिदें लाड करने और पाने की

वैसी ही ललक ’

वह बेड के किनारे बैठ गई और मुस्कराई, “फिर से ?”

“हु ”

“उस से क्या होगा ?”

“छुनाओ ना ? एहे ! एहे !”

वह हस पडी, “अच्चा ! अच्चा छुनाती हू, बाबा !”

सलूजा न मुस्कराए ।

वह अखबार पढने लगी, “नई दिल्ली, आठ अक्तूबर । सुबह जल्दी उठने वाले लोग पूर्व के आकाश मे एक नया धूमकेतु देख सकेगे, जो बडी तेजी से सूर्य की ओर बढ रहा है । जापान के खगोलशास्त्रियो ने, जिन्हे यह धूमकेतु सब से पहले दिखाई पडा, इस का नाम ‘इयेकासाकी’ रखा है । ‘कोडाईकैनाल मीटीरियोलाजिकल आब्जर्वेटरी’ से ‘इयेकासाकी’ भारत मे चार अक्तूबर को पहली बार देखा गया । इक्कीस अक्तूबर को यह सूर्य के अधिकतम नजदीक पहुचेगा । सुबह चार बजे से साढे पाच बजे तक यह नगी आखो से भी नजर आता है ।”

नर्सिंग होम के पास ही तिलक-ब्रिज । उस पर से गुजरती रेल की पटरिया । कमरे की विशाल खिडकी । उस के पलडो मे लगे स्वच्छ काच ।

सुनाने के बाद वह उठी और पलडे बन्द करने लगी—ट्रेन गुजर रही थी । पटरिया ऐसी ऊचाई पर थी कि लगा, ट्रेन किसी बाध के ऊपर से दौड रही है । खटाक्-खटाक् । एक के पीछे एक भागते डिब्बे । गार्ड का आखिरी डिब्बा । धूल उडाता हुआ । लेकिन यह सारा शोर बन्द पलडो के कारण आधा ।

वापस सलूजा के पास लौटी तो उन्होने पूछा, “ट्रेन गुजर रही थी ?”

“हा ।”

"धूमकेतु की तरह ?"

सुलोचना ने विषय-परिवर्तन किया, "डाक्टर सिह जरूर आएगे आज। अमृतसर से लौट चुके होगे।"

"कौन डाक्टर सिंह ? कैसे डाक्टर सिह ? फिजूल बात है !"

वह चुप रह गई।

"क्यो सुलोचना, कल वह जो लक्ष्मी आई थी…क्या आज भी वह आएगी ?"

"कह नही सकती।"

"और सईदा ?"

"…"

"फोन करो कि वह भी आए। आई लाइक हर।"

"रोज आती है। फोन करने की जरूरत नही।" सुलोचना ने अविश्वास से उन की ओर देखा।

"सईदा वाकई अच्छी लडकी है।" थोडी देर बाद उन्होंने फिर सईदा का उल्लेख किया।

बलवन्त के अवसान के समाचार उन्हे उसी समय नही दिए गए थे। दो दिन के बाद उन की हालत और बेहतर हुई थी, तभी बताया गया था। सुलोचना ने सोचा था कि सुन कर वह अपना दु ख प्रदर्शित करेंगे, लेकिन उन्होने मात्र आश्चर्य से कहा था, "अरे !" तब डाक्टर सिंह पास ही खडे थे और सुलोचना को बहुत ही बुरा लगा था। उस की निगाह उसी क्षण तीखी हो उठी थी। सलूजा ने भी यह तीखापन पहचान लिया था और तुरन्त अपनी भूल सुधारी थी, "आय'म रियली सॉरी।" किन्तु वह एक बनावटी वाक्य था। इतना बनावटी मानो उसे किसी ग्रामोफोन-रिकार्ड से सुना गया हो। उस समय सईदा वहा नही थी, वरना कितना महसूस करती ··फिर डाक्टर सिह भी कमरे मे ज्यादा देर न रुक सके थे।

ड

हीरेन्द्रजी की स्थिति ऐसी नही थी कि उस के बाद किसी और कोठी मे जा कर टिकट बेच पाते । वह अपनी कार की तरफ बढे ।

पिछली सीट पर निढाल हो कर वह बैठे रहे । लेट गए । कपार छूआ । तप आया था । कार्यकर्त्ता के लौटने का कुछ तय नही था । वह पन्द्रह मिनट मे वापस आ सकता था, एक घण्टे मे भी ।

दस मिनट बाद वह और ज्यादा अस्वस्थ हो गए । कार से निकले और एक सार्वजनिक नल की ओर बढे । देर तक चेहरा धोते रहे । चेहरा सुखाने मे सारा रूमाल गीला हो गया । वापस आए और इस बार पिछली सीट की बजाय स्टियरिंग के सामने अकड कर बैठे । सुबह दो पत्रिकाए खरीदी थी । उन के पन्ने उलटते रहे । प्राय आधा घण्टा और बीता तब जा कर कार्यकर्त्ता वापस आया । उस के सारे टिकट बिक गए थे । "लोग तो सुरक्षा कोष के नाम पर कुछ भी देने को तैयार हैं !" उस ने छलकते उत्साह से कहा ।

"मेरे कुछ टिकट रह गए । एकाएक तबीयत इतनी नरम होने लगी कि पौन घण्टे से कार मे ही बैठा हू ।" उन्होने बताया ।

"अरे ! अचानक ?" कार्यकर्त्ता ने उन का हाथ छू कर देखा । अभी भी तपा हुआ था ।

"डाक्टर के पास चले ?"

"नही । वैसे ही ठीक हो जाऊगा । मै विश्वास करता हू प्राकृतिक चिकित्सा मे । डाक्टरो के पास सिद्धान्तत नही जाता । आज उपवास रखूगा—कल देख लीजिएगा, ठीक न हो जाऊ तो ।"

कार कनाट-प्लेस छोड कर अजमेरी गेट की ओर बढ रही थी ।

"एक बात मेरी समझ मे नही आती ।" हीरेन्द्रजी ने बुझे स्वर मे कहा ।

"क्या ?"

"युद्ध के समय मजहब को बीच मे घसीटने के लिए भारत के मुसलमानो ने भी पाकिस्तान की कडी निन्दा की है। मुझे मानना पडेगा कि उन की एकना ने मेरे विचारो मे बहुत परिवर्तन ला दिया है। मुझे तो आशका थी कि वे दगे कर देगे।"

कार्यकर्त्ता खामोश रहा।

"मै पता नही, क्यो अव देखिए न मेरे परिचय का एक व्यक्ति है।" हीरेन्द्रजी 'लडकी' कहते हुए हिचकिचाए, "मै उसे हिन्दू समझता था। आज पता चला कि वह मुसलमान है। अपने नए विचारो को देखते हुए मुझे आघात नही पहुचना चाहिए लेकिन मै बहुत उद्विग्न हो उठा हू "

"अग्रवालजी, असल मे हमारे सोचने के दो धरातल होते है। मस्तिष्क और मन के अलग-अलग धरातल। हम तर्क द्वारा जो आसानी से मान लेते है, उसी को मन से स्वीकार करने मे बहुत देर लगती है।"

हीरेन्द्रजी को यह उत्तर ठीक जचा, लेकिन भीतर से वह उखड रहे थे।

कार्यकर्त्ता ने ही आगे कहा, "देर भले ही लगे, पर अन्त मे तर्कसम्मत बाते हम मन से भी मान लेते है।"

"शायद।"

अगला जो मोड आया, उसे पार करते ही जोर से ब्रेक लगने और सडक पर चके घिसटने की रिरियाती आवाज ने हवा को खुरच दिया।

कार का थूथना एक खम्भे से टकरा कर दब गया था।

८

एक घण्टे बाद ही वे लोग इतने स्वस्थ हो सके कि नर्सिङ्ग होम जा सके।

डाक्टर सिंह को देखते ही सलूजा बोले, "गुड इयेकासाकी !"

"जी ?"

"'इयेकासाकी' एक नया धूमकेतु है। आप ने अखबार नही पढा शायद। सुलोचना ? इन्हे दिखाओ भला ?"

यथासम्भव कम-से-कम विरोध कर के उन्हे तनावो से बरी रखने की अनिवार्यता होने के कारण सुलोचना ने चुपचाप आज्ञा का पालन किया। डाक्टर सिह ने पढा और मुस्कराए, "लेकिन गुड इयेकासाकी का मतलब ?"

"जब हम गुड डे, गुड मार्निङ्ग और गुड नाइट कहते है तो गुड इयेकासाकी क्यो नही ?"

"ओह ! समझा। आप ने बहुत दूर की सोची।"

सलूजा खुश हो गए।

सुलोचना को एक तरफ ले जा कर डाक्टर सिह ने कहा, "सईदा को अपने पास रोके रहिए। मैं ग्राउण्ड फ्लोर पर जा रहा हू। लक्ष्मी को वहा भेजिए। कुछ बाते पूछनी है।"

वह बाहर आए और लिफ्ट से नीचे जाने लगे। ग्राउण्ड फ्लोर पर लिफ्ट एक मुलायम झटके के साथ रुकी।

रिसेप्शनिस्ट के नजदीक रखे सोफे पर वह विचारमग्न बैठ गए। दो मिनट मे लक्ष्मी भी आ पहुची।

"मैं अमृतसर मे मिस्टर भार्गव से मिला था। तुम्हारे जाने के कुछ देर बाद ही " उन्होने शुरू किया।

"जी।"

"उन्होने बताया कि शायद तुम सईदा को दरियागज ले जाओ।"

"जी हा, मैं ने उसे मनाने की बहुत कोशिश की, लेकिन "

"क्या कहा उस ने ?"

"डाक्टर साहब, सईदा बहुत भावुक हो गई है।"

" "

"मेरे साथ चलने से उस ने साफ इन्कार कर दिया। बोली कि यह 'उन' का घर है। अब मैं 'उन्हे' कभी न देख पाऊंगी, लेकिव 'उन' के घर मे तो रह लू! जितने भी दिन रह सकू" लक्ष्मी का गला भर आया।

खामोशी के कई सेकण्ड।

" और मुझे भी उस ने दरियागज न जाने दिया।"

"हा अकेली का मन कैसे लगता ?" न चाहते हुए भी डाक्टर सिंह ने कहा।

"डाक्टर साहब ?"

" "

"बलवन्तजी के न रहने का दु ख हम लोग तो किसी तरह झेल लेगे झेल ही रहे है लेकिन बेचारी सईदा कैसे उस पर तो और भी कई दु ख उस की अम्मीजान छूही रही और " लक्ष्मी रुकी। आगे जो कहने जा रही थी, कहना अनावश्यक था।

" "

'डाक्टर साहब अभी उम्र ही क्या है उस की ? हम लोगो ने उस के लिए कुछ न किया तो बेचारी तबाह हो जाएगी "

"कैसे हो जाएगी! मैं जो हम लोग जो बैठे हुए है "

" यही तो उसे सहारा है।"

"खैर यह सब अण्डरस्टुड है। याने याने ये कहने सुनने या सोचने-समझने की बातें नही है ऐसा तो होगा ही मै ने मैं ने तो सिर्फ इतना जानना चाहा था कि उस से बाते क्या-क्या हुई।"

"आप के सामने चुप रहती है, डाक्टर साहब, लेकिन मेरे सामने बस 'उन्ही' का नाम रटती रहती है 'वह' ऐसे थे 'वह' ऐसे थे "

" ."

"उसे बहुत ही गहरा सदमा पहुचा है।"

"मैं सब समझता हू " उन्होने सिर हिलाया, "इस वक्त दर-असल एक और ही समस्या है।"

"समस्या ?"

"समस्या ही कहो। कुछ दिनो मे बलवन्त की अस्थिया दिल्ली आएगी। सैनिक-सम्मान उसे अमृतसर मे मिल गया था, इस लिए यहा वैसा कोई आयोजन नही होगा, लेकिन रिश्तेदारो की इच्छा है कि अस्थिया दो जगह प्रवाहित की जाएँ—सगम मे और राजधानी मे।"

लक्ष्मी सुनती रही।

"जो रिश्तेदार दिल्ली आएगे, जाहिर है कि वे मेरे ही यहा ठहरेंगे। तब सईदा "

लक्ष्मी काफी देर बाद बोल सकी, "डाक्टर साहब यह बहुत नाजुक मामला है।"

"वह तो वह तो मै भी जानता हू, लेकिन अब देखो न "

"सईदा को अगर जरा भी शक हुआ कि घर से निकाली जा रही है तो बहुत बुरा असर पडेगा "

"नही, नही, इस मे इस मे घर से निकालने की क्या बात है ? रिश्तेदार चले जाए, तब वह वापस आ सकती है "

"और जब फिर से रिश्तेदार आए, उसे फिर निकाल दिया जाए। यही न ?"

एकाएक अपने विचारो का सारा बचकानापन उन के सामने भयावह रूप से नग्न हो उठा। उन्हे यह स्थिति वास्तव मे असहनीय लगी कि वह देश के महान् वैज्ञानिक तो थे, किन्तु अन्य मामलो मे, अन्य गणनाओ मे बिल्कुल अनाडी थे। बिल्कुल ही अनगढ। वह लक्ष्मी की तरफ कुछ इस तरह देखने लगे जैसे अब जो भी अन्तिम रूप से तय होना है, लक्ष्मी के द्वारा ही।

"हम सुलोचनाजी की मदद ले सकते है।"

"कैसे ?"

"सुलोचनाजी सईदा से कहे कि नर्सिङ्ग होम मे अकेले उन का जी नही लगता। सईदा कुछ दिनो के लिए नर्सिङ्ग होम मे ही आ कर उन के साथ रहे। फिर उसे मै ले जाऊ। उस के बाद आगे सोचेगे। उसे बिल्कुल अहसास नही होना चाहिए कि हम लोगो के साथ वह जबरन रह रही है।"

"लेकिन "

"क्या ?"

"नर्सिङ्ग होम मे मरीज के साथ सिर्फ एक आदमी रुक सकता है। सईदा और सुलोचनाजी दोनो कैसे "

"मैं सोचती हू, स्पेशल केस होने के कारण इजाजत मिल जाएगी।"

छ

"लोग बडे विचित्र होते है।" भार्गव साहब सिस्टर से कह रहे थे, "उन्हे आप चीटी के बारे मे दिलचस्प और इटेलिजेण्ट बात बताइए। वे नही सुनेगे, क्योकि चीटी छोटी होती है। आप उन्हे हाथी के बारे मे कोई फूहड-सी बात बताइए। गौर से सुनेगे। हाथी बडा जो होता है!"

सिस्टर हस पडी, "मिस्टर भार्गव, यू आर ए रियल जौली फेलो!"

"नही सिस्टर, मैं मजाक नही कर रहा। हमारे प्रधान-मन्त्री शास्त्रीजी का ही किस्सा लीजिए। वह न आकार मे बडे है, न चेहरे से आकर्षक। आए भी वह पण्डित नेहरू के बाद। नेहरूजी विश्व के सब से आकर्षक प्रधान-मन्त्री माने जाते थे। उन की आवाज मे, उन की

आखो मे ऐसा जादू था कि वह लोगो को हिप्नोटाइज कर लेते थे। उन के तुरन्त बाद आने के कारण शास्त्रीजी फीके-फीके लगे।"

"लेकिन अब तो जनता उन्हे सिर-आखो पर ले रही है।"

"इस लडाई ने उन की पर्सनैलिटी मे और ही रग भर दिया है, पर सोचिए, अगर यह लडाई न छिडी होती "

सिस्टर खामोश रही।

"लेकिन लडाई छिडी और हमे एक नही, अनेक फायदे हुए। देश के नए नेता की पर्सनैलिटी इसी ने असली रूप मे जनता के सामने रखी। इसी ने हमारी फौजो को नया बल और आत्म-विश्वास दिया।"

"इस मे क्या शक है! बल्कि कई तो यहा तक कहते है कि शास्त्रीजी ने नेहरूजी का भी जादू खत्म कर दिया।"

"ऐसा सोचना भी गलत है। शास्त्रीजी की सफलता से नेहरू का महत्व किसी भी तरह कम नही होता।"

"मै भी यही सोचती हू लेकिन लोग ऐसा कहते है।"

"वे भूल जाते है कि आज जो हमारे अस्सी प्रतिशत हथियार भारत मे ही तैयार होते है, वह नेहरू की दूरदर्शी नीति के ही कारण। इस की बजाय अगर हम पाकिस्तान की तरह दूसरो के भरोसे रहते तो ये जगमगाती सफलताए कभी न मिलती। नेहरू ने ही हमे आत्मनिर्भरता का सबक सिखाया ."

"भार्गव साहब, आगे हमे चुटकुले कौन सुनाएगा ?" सिस्टर ने यो कहा, जैसे अभी-अभी उसे कुछ याद आया हो, "कल तो आप चले जाएगे।"

"हा। दिल्ली।"

"आप की बहुत याद आया करेगी।"

"वाकई ?" भार्गव ने उसे ऐसी शरारती निगाह से देखा कि वह झेप गई।

बयालीस

क

"शीर्षक है— मैं नहि जुद्ध करायो।' " माइक के सामने खडे कवि ने कहा।

हाल ठसाठस भरा हुआ था। विट्ठलभाई पटेल भवन की नई इमारत के सामने अनेक कारे और स्कूटर कतारबद्ध खडे थे। बाहर शामियाने मे भी लोग-लोग-लोग। शामियाने से भी बाहर लाउड-स्पीकर का एक कनेक्शन था, ताकि वे हजारो लोग भी, जो किसी कारणवश 'चुनौती कवि-सम्मेलन' के टिकट नही खरीद सके थे, कविताओ का आनन्द ले सके।

प्रधान-मन्त्री लालबहादुर शास्त्री गम्भीर मुद्रा मे कवियो के साथ मच पर बैठे थे। श्रीमती ललितादेवी शास्त्री नही आ पाई थी, जिस से कवयित्रियो को काफी निराशा हुई थी।

कवि ने 'मैया मोरी, मै नहि माखन खायो' की तर्ज पर शुरू किया, "भैया मोरे! मैं नही जुद्ध करायो।"

कवि रुका। जनता शान्त। आगे सुनने को उत्सुक।

सईदा ने लक्ष्मी की ओर देखा, फिर शास्त्रीजी की ओर।

"ब्रिटिश, चीन दौडे अइहै,
मोहि भुट्टो अस भरमायो।
मैं लरिका औंवे दिमाग को,
अबहु समझ न पायो॥"

("वाह!")

इसी शैली के दो-तीन पदो के बाद जनता इतने उत्साह मे आ गई कि बार-बार तालिया बजने लगी ।

"सत्य, न लरिहौ अब भारत से,
इतनहि संमझ मे आयो ।।
भैया मोरे—
मैं नहि
मै नहिं "

("जुद्ध करायो !")

"भइइइया मोरेए !
मैंए नहिं जुद्ध करायो !"

जनता ने उत्साह मे फिर जोरो से तालिया बजाई । कवि रुका और अभिवादन करता हुआ दो बार झुका । इस के बाद उस ने मुस्कराते हुए शास्त्रीजी की ओर देखा और कहा, "आखिरी कडी है—

"छोटो सो वजीर भारत को !"

जनता उछल पडी । तालियो और 'वाह ! वाह !' के घोष से पूरा पटेल-भवन गूज गया । शास्त्रीजी, जो अधिकाश समय नीचे देखते हुए चुप बैठे थे, मुस्कराए बिना न रह सके । ज्यो ही उन्होने कवि की ओर निगाह उठाई, कवि ने दोहराते हुए आगे कहा—

"छोटो सो वजीर भारत को,
मोहि बहुत बिलखायो ।
अस कहि, पकर कान,
बैठक दस-पाच अय्यूब लगायो ।।
भैया मोरे !
मै नहि "

आगे 'जुद्ध करायो' कह कर कवि ने वाक्य पूरा किया या नही, कोई न जान सका—तालियो की गडगडाहट मे सभी-कुछ इतना डूब गया ।

सईदा जोर-जोर से तालिया बजा रही थी, खिलखिला रही थी। बलवन्त के अवसान के बाद वह पहली बार इतनी उन्मुक्त हो सकी थी। लक्ष्मी भी खूब हस रही थी। डाक्टर सिंह ने जोर का एक ठहाका लगाया, फिर मुस्कराते रहे। सईदा की आखो की चमक ने उन्हे सचमुच खुश कर दिया था। यहा वह मात्र इस लिए आए थे कि सईदा को साथ दे सके। टिकट चार खरीदे गए थे। सुलोचना नर्सिंग होम से नही आ सकती थी। लक्ष्मी, डाक्टर सिह और सईदा—ये तीन। चौथे टिकट की सीट खाली पडी थी। हजारे की बहुत इच्छा थी कि साथ चले, परन्तु घर की सुरक्षा के लिए उस का रुके रहना अनिवार्य था। "मै रेडियो पर सुन लूगा।" उस ने अपनी लाचारी महसूस करते हुए कहा था।

तालिया डूबने के बाद अध्यक्ष महोदय ने माइक पर कहा कि अब शास्त्रीजी का सक्षिप्त भाषण होगा, जिस के बाद वह यहा से विदा लेगे। कवि-सम्मेलन उस के बाद भी जारी रहेगा।

सईदा ने धडकन बढती महसूस की—शास्त्री जी उठ कर माइक के पास आ रहे थे। 'मैं नहि जुद्ध करायो!' के कवि महोदय छह-फुटे थे, अत शास्त्रीजी के लिए माइक नीचे करना पडा। जनता उल्लास से हस पडी। एकाएक कही से तालिया शुरू हुई और जन-जन मे फैल कर खिलने लगी। शास्त्रीजी बोलना शुरू करते, इस से पहले ये तालिया कुछ डूबी और डूबी-न-डूबी कि फिर से गूजने लगी। शास्त्रीजी ने अपने नन्हे-से हाथ से माइक को स्पर्श किया और चारो तरफ देखा।

"भाइयो और बहनो "

लोग शान्त।

"विद्वान साहित्यकारो "

"यह कवियो का साहित्यकारो का सम्मेलन है और कविताए जो मैं ने सुनी सब मे मुझे आभास मिला है एक जोश का एक उत्साह का · यही जोश और उत्साह है जो हमारे जवानो मे है और देश के बच्चे-

बच्चे मे है लेकिन हमे एक बात याद रखनी है रखनी चाहिए "वो ये कि युद्ध के समय वार-पीरियड मे हमारे साहित्यकारो को ज्यादा जोश मे भी नही आना चाहिए दिलोदिमाग पर से काबू नही खोना चाहिए साहित्यकार तो जैसा कि कहा जाता है समाज का आईना है और जब युद्ध होता है, समाज को, आम जनता को अपने दिल और दिमाग शान्त रखने की जरूरत होती है "

भाषण समाप्त कर के ज्यो ही वह बैठे, तालियो की वैसी ही गड-गडाहट होने लगी, जैसी प्रारम्भ मे हुई थी।

शास्त्रीजी मच से उतरे और जनता को बार-बार नमस्कार करते हुए जाने लगे। सब उन के सम्मान मे उठ खडे हुए। दोनो ओर लोग। बीच से गुजरती धवल टोपी, कुर्ता, जैकेट, धोती मुस्कान—जयी। एक-एक कदम—विश्वास। आखे—धधक। जनता की आखे उन के साथ-साथ, धीमे-धीमे घूम जाती हुई

और वह चले गए—राष्ट्रीय व्यस्तता। अन्तर्राष्ट्रीय व्यथा।

कवि-सम्मेलन फिर से जारी हो कर क्रमश उत्कर्ष की ओर बढने लगा।

ख

सुलोचना और लक्ष्मी की छिपी योजनानुसार सईदा अगली सुबह अपने कपडो आदि की अटैची ले कर सेन नर्सिग होम पहुच गई। लक्ष्मी और दोनो बच्चे भी साथ थे। डाक्टर सिंह कार पार्क कर के एकाध मिनट के विलम्ब से ऊपर पहुचे। जब उन्होने सलूजा के कमरे मे प्रवेश किया, वह सुलोचना से कह रहे थे, "इयेकासाकी सूर्य की ओर बढ रहा है, माई डीयर!"

डाक्टर सिंह ने अभिवादन के पश्चात् आज का अखबार खोला और

सलूजा के सामने फैलाते हुए बोले, "डाक्टर साहब, आप के लिए एक न्यूज़ लाया हू ।"

"कौन-सी न्यूज ?"

"एवरेस्ट-विजेता मेजर अहलूवालिया के बारे मे ।"

सलूजा हस पडे, "इलाहाबाद मे भी आप ने एवरेस्ट की रट लगाई थी । मै पूछता हू, आप इयेकासाकी के बारे मे क्यो नही सोचते ?"

'उस बारे मे भी सोचता हू और एवरेस्ट के बारे मे भी ।"

"दोनो पर सोचने का कोई मतलब नही ।"

सुलोचना आगे आती हुई डाक्टर सिह से बोली, "लेकिन न्यूज़ कौन-सी लाए है आप ?"

उन्होने अखबार उसे दे दिया । वह गौर से देखती-पढती हुई उस पार्टीशन के पीछे चली गई, जहा सईदा और लक्ष्मी बैठी बाते कर रही थी । उन दोनो ने भी अखबार मे दिलचस्पी ली ।

समाचार का शीर्षक था—"घायल एवरेस्ट-विजेता और उस की वाग्दत्ता ।'

नीचे मेजर हरिपालसिह अहलूवालिया का फोटो ।

"आप हर बात 'एब्सोल्यूट टर्म' मे सोचते है ।" डाक्टर सिह ने कहा, "सोचने की दूसरी भी एक टर्म होती है—'रिलेटिव टर्म ।' यह दूसरी टर्म ही है जो हमारी जिदगी मे काम आती है । पहली वाली या तो किताबो मे रह जाती है या या पागलो की दुनिया मे ।"

"व्हाट डू यू मीन ?" सलूजा का चेहरा तमतमा आया, "आप मुझे पागल कहते है ?"

"ओह, नो ! आप को नही । मैं जनरल वे मे बात कर रहा हू ।"

"आप का मतलब है, मैं अगर चाहू तो भी 'रिलेटिव टर्म' में नही सोच सकता ?"

"चाहा होता तो सोच भी लिया होता ।"

" "

सलूजा अब पर्याप्त स्वस्थ थे। कम बोलने की डाक्टरी शर्त अब ऊंचा न बोलने की शर्त मे बदल गई थी। डाक्टर सिह कुर्सी खीच कर नजदीक बैठे और कहा, "सारी बाते, सारे वैल्यूज बेकार है, अगर वे एक-दूसरो की तुलना मे न आए। आदमी की तुलना मे एवरेस्ट बहुत बडी चीज है, भले ही—जैसा कि आप कहते है—खुद यह पृथ्वी ही जब धूल के बराबर है तो एवरेस्ट की क्या हस्ती ? लकिन तुलना करिए तो एवरेस्ट पर चढने वाला कोई मामूली आदमी नही होता या या किसी लडाई मे अपनी जान दे देने वाला स्क्वाड्रन-लीडर वह भी कोई मामूली आदमी नही होता " आखिरी वाक्य कहते समय उन की आवाज लरज गई। पार्टीशन के उस तरफ बैठी सईदा सुन न ले, इस लिए उन्होने स्वर बहुत धीमा कर लिया था।

सलूजा चुप देखते रहे।

डाक्टर सिह ने खखारने की चेष्टा के साथ अपने को स्वस्थ किया, "मै वह न्यूज़ सारी-की-सारी आप को पढ कर सुनाऊगा। सुनते समय प्लीज़ आप तुलनात्मक ढग से—'रिलेटिव टर्म्स' मे सोचिएगा • और जैसा कि आप ने कहा, चाहे तो आप जरूर सोच सकते है सुलोचनाजी ? वह अखबार लाइएगा जरा ?"

सुलोचना ले आई और वही एक स्टूल पर बैठी।

सईदा, लक्ष्मी और दोनो बच्चे चुप-चुप कमरे से निकल रहे थे। वे बाहर के सोफो पर बैठना चाहते थे, ताकि उन की बातचीत से सलूजा को खलल न पहुचे। मरीज के कमरे मे ज्यादा लोग इकट्ठे हो जाने पर नर्सिंग होम के अधिकारी एतराज उठाते थे, सो अलग। सुलोचना स्वय डाक्टर न होती तो इस बारे मे जो काफी छूट मिल जाती थी, कभी न मिलती। औपचारिक रूप से सलूजा के कमरे के बाहर जो 'आना मना' का गत्ता लटका दिया गया था, वह अभी हटा नही था।

बाहर से सईदा ने दरवाजा हौले से बन्द किया।

डाक्टर सिह ने सुलोचना से पूछा, "आप ने पढ लिया ?"

"हा और मैं बडी मुश्किल से सहन कर पाई ."

उन्होने सलूजा की तरफ देखा, "डाक्टर साहब, मैं पढने जा रहा हू—उस दौरान कल्पना करते रहिए कि मेजर अहलूवालिया आप की बगल मे ही लेटे हुए है।"

"लगता है," सलूजा मुस्कराए, "मेडिकल इन्स्टीट्यूट के किसी साइकालाजिस्ट ने आप को सिखा कर भेजा है।"

"नही। मैं यकीन दिलाता हू, ऐसा नही है। सुनिए—"

" 'लगभग पाच माह पहले, जब युद्ध शुरू नही हुआ था, मेजर हरिपाल सिह अहलूवालिया एवरेस्ट की चोटी पर खडे थे। वह लैफ्टिनेण्ट कमाण्डर एम० एस० कोहली की टुकडी के सदस्य थे। क्या उस वक्त उन्हे मालूम था कि दूसरी भी कई विजये उन्हे चुनौती देने के लिए इन्तजार कर रही हैं ?

" 'पाकिस्तानी घुसपैठियो का सामना करते हुए वह तीन सितम्बर को गुलमर्ग मे सख्त घायल हो गए। उन की गर्दन मे एक गोली लगी, जो रीढ की हड्डी को छूती हुई, दाहिनी ओर, कमर को भेद कर निकल गई।

" 'गर्दन से नीचे पूरे शरीर मे उन्हे लकवा हो गया है। एक दो शब्दो के अलावा वह कुछ नही बोल सकते।

" 'अक्तूबर के अन्त मे उन की शादी होने वाली थी, जिस के बाद वह अपने एवरेस्ट-अभियान की चर्चा करते हुए सम्पूर्ण भारत के दौरे पर निकलने वाले थे।

" 'आज उन की वाग्दत्ता को पहली बार उन्हे देखने की इजाजत दी गई। वह दिल्ली मे इसी उद्देश्य से पिछले नौ दिनो से ठहरी हुई है. .' "

डाक्टर सिंह ने अखबार मेज पर रख दिया। सुलोचना गहरी सास लेती हुई अस्पष्ट-सा कुछ बुदबुदाई।

सलूजा की आखे छत पर टिकी हुई थी।

'कहिए, डाक्टर साहब अगर आप इस मेजर की बगल से लेटे होते और आप की आखो के सामने एक फूल-सी लडकी उसे अपने होने वाले पति को इस हालत मे देखने आई होती क्या आप उस समय भी आकाश की बातें सोच सकते थे ? क्या तब भी तब भी आप—ओह डाक्टर •• ट्राई टु विजुअलाइज "

मौन।

'स्पीक अप ! क्या तब भी आप उदास न हुए होते ?"

सलूजा की आखे छत से ही टगी रही। कई सैकण्ड बाद वह हारे हुए स्वर मे बुदबुदाए, "हा मै जरूर उदास "बल्कि आई मस्ट कन्फेस मैं इसी समय उदास हो गया हू आय'म मूव्ड रियली मूव्ड !"

"देयर ! देयर यू आर डाक्टर ! यही 'रिलेटिव टर्म' है।" स्वय डाक्टर सिंह के लिए अपनी यह सफलता अप्रत्याशित थी, "इसी को फैला कर सोचिए। आप कभी न कहेगे कि सीमाओ और लडाइयो के सवाल बेमानी होते है।"

सुलोचना ने अपना चेहरा पल्लू मे छिपा लिया। उसे सिसकी आ रही थी।

दोपहर के बाद लक्ष्मी, सईदा, दोनो बच्चे व डाक्टर सिह पुरानी दिल्ली के रेलवे-स्टेशन पहुचे। फौजियो की एक स्पेशल ट्रेन से भार्गव आने वाले थे। दैनिक 'प्रभात' की ओर से उन के लिए दरियागज के एक प्राइवेट अस्पताल मे सीट रिजर्व करा ली गई थी। यह अस्पताल उन के घर के नजदीक ही था। अस्पताल की गाडी उन्हे लेने आई हुई थी।

आम जनता को प्लेटफार्म पर प्रवेश करने की मनाही थी। डाक्टर

सिह गेट के बाहर टहलते रहे। लक्ष्मी व सईदा एक बैच पर बैठ गई। पप्पू और स्वीटी कभी चुप बैठते, कभी इधर-उधर भागने लगते। सईदा उन्हे ज्यादा दूर न जाने के लिए बार-बार टोकती। उन्हे पकड लाने के लिए कभी उसे उठना भी पडता।

कई फौजी अधिकारी चुस्ती के साथ प्लेटफार्म पर और प्लेटफार्म के गेट मे से आ-जा रहे थे।

थोडी देर मे ट्रेन आ पहुचेगी। स्ट्रेचरो पर अनेक घायल फौजी उतारे जाएगे। सईदा ने अपने भीतर एक चट्टानीपन-सा अनुभव किया। आज वह उन घायल, विकृत शरीरो को देख कर नरवस नही होगी। यह नरवस होने का वक्त ही नही। जीवन के सब से बडे दुख झेल लेने के बाद घायल शरीरो को केवल देख कर ही नरवस होने की स्थिति कहा से आए? उस ने साडी को कन्धे पर सहेजा। यह साडी डाक्टर सिह लाए थे। कल। खुद बाजार जा कर। अकेले। सईदा की आखे भर आई थी, जब उन्होने यह उपहार उसे देते हुए कहा था, "पता नही, तुम्हे पसन्द आएगी भी या नही। लेडीज़ की पसन्द का मुझे कोई अन्दाजा नही।"

सईदा कहते-कहते रह गई थी, 'मुझे साथ ले जाते'

छोटी-छोटी हरकते छोटी-छोटी बाते वह सब पहचान लेती डाक्टर सिह उसे खुश रखना चाहते थे। खुश देखना चाहते थे। और वह खुश रहती थी। खुश दिखाई देती थी।

वह सोचती रही, 'कितना-कुछ कितनी जल्दी घट जाता है!'

बलवन्त की मृत्यु के बाद वह पहली बार भार्गव साहब को देखेगी। कैसे भाव आएगे उन के चेहरे पर? मोर्चे पर जाते समय वे दोनो साथ-साथ गए थे। एक ही ट्रेन से गए थे। और भार्गव साहब अकेले लौट रहे हैं। खाली हाथ कितना उत्साह था उन्हे, कितनी हौस थी उन्हे कितना इन्तजार था उस दिन का, जब सईदा और बलवन्त को वह अब वह दिन कभी नही

"अरे स्वीटी ! वहा क्या कर रही है ?" चूकि सईदा नही उठी थी, लक्ष्मी उठी और स्वीटी को पकड लाई, "चुप बैठ यहा। अभी डैडीजी आएगे तो बहुत मारेगे।"

अपने कपडे व दीगर सामान लक्ष्मी दोपहर को ही दरियागज पहुचा आई थी। उसे बडी तसल्ली थी कि भार्गव साहब का अस्पताल घर से नजदीक ही है।

और आज सईदा को भी फायरब्रिगेड लेन की कोठी मे वापस नही जाना है सुलोचनाजी का कितना आग्रह है आग्रह या जिद ? जो भी अब चार-पाच दिन सुलोचनाजी के साथ रहना है सईदा को फिर उसे लक्ष्मी अपने यहा ले जाएगी। "एडवान्स-बुकिग कर रही हू !" लक्ष्मी ने हसते हुए कहा था।

दरियागज मे उस के छोटे-से घर मे सईदा कितने दिन रुकेगी ? रुक सकेगी ?

और उस के बाद ?

क्या वापस वही ? वर्किङ्ग-गर्ल्स-हास्टल मे ?

अपने प्रभाव से डाक्टर सिह रेडियो-स्टेशन मे फिर से उस की नौकरी लगवा सकते है वहा नही तो कही और

सचमुच वह दरियागज से वापस उस कोठी मे नही जा सकेगी। बलवन्त (कहा चले गए तुम, ओह, अकेले) के घर मे, बलवन्त की हो कर कभी नही जा सकेगी। हास्टल मे रहेगी और धीरे-धीरे

धीरे-धीरे उन सारी चीजो से, उन सारे लोगो से कट कर दूर बहुत दूर फिकती जाएगी, जिन का बलवन्त से सम्बन्ध है, किसी भी रूप मे

सईदा दहल गई।

उसे सेन नर्सिङ्ग होम लाने और उस के बाद दरियागज ले जाने के पीछे कोई पूर्व-आयोजन है, इस का स्पष्ट या धुधला आभास मिलता, इतना

वह सोच पाती, इस से पहले ही प्लेटफार्म पर हलचल मच गई ।

डाक्टर सिह करीब आ कर थमे । लक्ष्मी बैंच से उठ रही थी । बच्चे उस के पैरो के पास सिमटे सिमटे ।

सेईदा भी उठ खडी हुई । सास कुछ तेज ।

एजिन दिखाई दिया । विराट ! आकार व ताकत, दोनो से ।

खम्भे से टिक कर बैठी एक बुढिया रो उठी । हिलक-हिलक कर । वह उठ नही रही थी । घुटनो के बीच सिर डाल कर जैसे रात के वीराने मे दूर कोई बिल्ली रो रही हो

एम्बुलैन्स-कर्मचारियो के जत्थे-के-जत्थे दौडते-भागते हुए व्यस्त, मशीनी आत्मीयता

भाप-भरा शोर मचाती ट्रेन प्लेटफार्म मे दाखिल हो चुकी थी ।

तेतालीस

डाक्टर सिह की कार सेन नर्सिंग होम की ओर बढ रही थी। रात अभी-अभी हुई थी। हवा मे अक्तूबरी-पन। कनाट-प्लेस की नियान-लाइटें चमचमा रही थी।

उन्हे आश्चर्य था कि डाक्टर सलूजा ने सुलोचना से फोन करवा कर उन्हे जो 'तुरन्त आइए' का सन्देश भेजा है, उस का कारण क्या है। फोन पर सुलोचना की आवाज ऐसी घबराई हुई नही थी कि सलूजा पर किसी तरह का खतरा आ पडने का शक हो। उन का स्वास्थ्य पहले से काफी बेहतर था। इस हिसाब से उन्हे एकाध सप्ताह मे नर्सिंग होम छोड कर घर पर आराम करने की भी इजाजत मिल सकती थी। हा, सुलोचना की आवाज मे गहरी चिन्ता अवश्य थी

सईदा कल नर्सिंग होम से भार्गव साहब के घर चली गई थी। उस ने उन्हे फोन भी किया था कि यहा पप्पू और स्वीटी के कारण मेरा मन लगा रहता है। सलूजा की तीमारदारी मे सईदा खासे दस-बारह दिनो तक नर्सिङ्ग होम मे रही।

बलवन्त की अस्थियो का विसर्जन कर के रिश्तेदार जा ही चुके थे और फिर से उन की कोठी मे एक वह थे, एक हजारे। और हा टीपू भी।

नर्सिङ्ग होम का काच-दरवाजा खोल कर वह भीतर आए और लिफ्ट की ओर बढे।

ज्यो ही उन्होने सलूजा के कमरे मे प्रवेश किया, सुलोचना उठ खडी हुई। उस का चेहरा इतना बुझा हुआ था कि डाक्टर सिह चौके। उन्होने

झट डाक्टर सलूजा पर निगाह डाली। वह आखे खोल कर चित पडे हुए थे। बेड का हैडिल घुमा कर उन का सिरहाना काफी ऊचा कर दिया गया था। प्रवेश की आहट पा जाने के बावजूद सलूजा बिल्कुल न हिले। आखो की स्थिरता के कारण उन की पुतलिया नकली लगी

डाक्टर सिंह ने उदासी और तनाव के साप जगह-जगह लटकते, जीभ लपलपाते महसूस किए। उन्होने प्रश्नवाचक दृष्टि से सुलोचना की ओर देखा। सुलोचना ने पलके झुका दी, जिस से उन का आशकित आश्चर्य और बढा।

सारी सार्थकता छत की सफेदी मे ही छिपी हुई हो इस तरह सलूजा ऊपर घूरते हुए बोले, "थैक्यू, डाक्टर सिंह! आप वाकई तुरन्त आ गए।"

सुलोचना ने उन्हे कुर्सी मे बैठने का इशारा किया और नि श्वास लेती हुई सलूजा के सिरहाने की ओर बढी।

"कैसे बुलाया एकाएक?" डाक्टर सिंह ने ही मौन भग किया।

"आप को एक खुशखबरी सुनानी है।"

"खुशखबरी?"

"जी हा।" उन का चेहरा झटके के साथ घूमा, "चियर अप! मै शादी करना चाहता हू।"

"जी?"

"जी हा, शादी!"

सुलोचना व्यग्र होती हुई उन के नजदीक आई और बोली, "बुरा न मानिएगा, डाक्टर साहब, इन्हे कल से कुछ हो गया है पता नही, इन का अब इलाज क्या है आय'म सॉरी, डाक्टर, वी आर काज़िग यू सच ए बिग ट्रबल इन्होने जिद पकड रखी थी कि आप को अभी, इसी वक्त बुलाया जाए इसी लिए मुझे फोन ..."

"हा!" सलूजा ने उत्साहित स्वर मे टोका, "क्योकि मेरी शादी से

दुनिया मे सब से ज्यादा खुशी इन्ही को होगी । यह मुझे 'रिलेटिव टर्म' समझाने की जी-जान से कोशिश करते रहे है । शादी करना इस टर्म को पूरी तरह से मान लेना है ।"

मौन—गहराता हुआ

"डाक्टर सिह ! आप ने मुझे झुका ही दिया आखिर । बधाई !" फिर से सलूजा की आवाज । सुलोचना के होठ कापे ।

सलूजा ने उस की कलाई पकड ली, "प्लीज तुम दो-चार मिनट बाहर जाओ न ? मै जरा प्राइवेट बाते करूगा ।"

वह कठोर चेहरे के साथ कमरे से निकल गई ।

सलूजा ने डाक्टर सिह को कुर्सी नजदीक खिसकाने का इशारा किया और कहा, "इस से अच्छा उपाय और क्या हो सकता है कि मैं शादी करू ? ठीक है, आकाश बहुत बडा है और उस मे हमारी पृथ्वी धूल से भी गई-बीती है, लेकिन जैसा कि आप बार-बार मुझे मनुष्य की सीमाए समझाते रहे है अब मै समझ गया हू । शादी कर के मैं साबित करना चाहता हू कि मै समझ गया हू । एकाएक ।"

" "

"क्या मत है आप का ?"

" "

"बोलिए न ? क्या सोचते है आप ?"

डाक्टर सिह उन के चेहरे की ओर झुके, "मैं आप को चोट नही पहुचाना चाहता, लेकिन आप की शादी की उम्र बीत चुकी है ।"

वह हसने लगे, "शादी के लिए कोई भी उम्र ज्यादा नही होती । मै करूगा शादी । इसे कोई नही रोक सकता । मैं डैडी बनूगा फिर मेरे बच्चे भी डैडी बनेंगे 'हिस्ट्री देख लीजिए दुनिया के कई महापुरषो ने बुढापे मे शादी की है "

" "

"फिर चुप्पी ?"

"आप पूरी तरह अच्छे तो हो जाइए ।"

सलूजा ने यह वाक्य जैसे सुना ही नही । वह उसी भावुक लहजे मे बोले, "डाक्टर सिह ! आई टेल यू ये औरते बडी अनोखी होती है काश ! मैं ने यह बात जवानी मे समझी होती लेकिन अभी भी देर नही हुई अभी भी मै शादी कर सकता हू आकाश पर सोचने की जो सीमा होती है, जिसे समझाने के लिए आप इतने समय से झीखते रहे है अल्टीमेटली मै समझ गया हू "

"ठीक है, आप की शादी जरूर कराएगे लेकिन आप एक्साइटेड न हो ।" डाक्टर सिह ने सहानुभूति से कहा ।

"आप बहुत अच्छे है, बहुत ही अच्छे । मै जानता हू, आप जरूर मेरी शादी कराएगे ।"

" "

सलूजा की आखे छत से उतर कर उन के चेहरे पर आ गईं । वह नितान्त अप्रत्याशित रूप से बोले, "डाक्टर सिह, मेरी राय मानिए— आप भी शादी कर लीजिए ।"

यह काफी असहनीय और फूहड किस्म का सुझाव था, जो क्षण भर को उन की एक-एक रग झुलसा गया । उन की भौहे सिकुड आई और गले मे लिजलिजा-सा कुछ उबल पडा । किसी तरह उन्होने कहा, "शुक्रिया ! मै सोचूगा ।"

"सोचूगा नही, कर ही डालिए ।"

".. "

"पहले मेरी शादी कराइए । फिर आप के लिए लडकी ढूढने का जिम्मा मेरा । अभी उम्र भी आप की कोई ज्यादा नही हुई । मुझ से तो काफी कम है । है न ?"

" "

"बोलिए, कितने साल के है आप ?"

डाक्टर सिह ने आतकपूर्ण आश्चर्य से देखा कि उन्हे हसी आ गई है। इस हसी ने उन्हे झेपा दिया, जिसे छिपाते हुए वह बोले, "आप भी कमाल करते है।"

"हा तो बोलिए, मेरी शादी आप कराने जा रहे है न ?"

"मैं ने कब इन्कार किया ? पहले ठीक हो जाइए।"

"हो जाऊगा—बहुत जल्दी। लेकिन आप को मेरे लिए लडकी ढूढने की तकलीफ नही करनी होगी।"

"याने आप ने लडकी देख रखी है ?"

"बेशक! एण्ड शी इज ए वण्डरफुल गर्ल !"

"कौन है ?"

सलूजा शरमा गए, "है कोई। बताऊगा।"

उन्हे यकीन नही हो रहा था कि सलूजा मे अकस्मात् इतना बडा परिवर्त्तन आ सकता है। उन्हे यही लगा कि इन का मानसिक रोग अचानक बहुत ज्यादा फूट पडा है। अब किसी भी तरह का विरोध सहने की स्थिति शायद इन की है नही

"अन्दाजा लगाइए, कौन हो सकती है।" सलूजा इतनी उमग से बोले, मानो वह उन्हे अपनी छेडखानी करने के लिए उकसा रहे हो। चकित होते हुए डाक्टर सिंह इस उमग को पहचानते-टटोलते रहे। सब इतना अनहोना, इतना अटपटा था कि वह चुप रह गए।

"लगाइए अन्दाजा, देखू ?"

उन्हे सलूजा से इतनी हमदर्दी हो आई कि छेडखानी करने का कोई तजुर्बा न होने के बावजूद उन्होने कोशिश की, "बताऊ ? वह एक गोरी-सी नर्स है न ? वही, जिस की आख के पास एक तिल है ? ."

"नही।"

"अच्छा तो फिर, वह एक सावली क्रिश्चियन नर्स है न ? जिस की नाक "

"वह भी नही।"

"फिर वह जो लेडी-डाक्टर है न ? जो इसी साल एम० बी० बी० एस० हुई है जो सुलोचनाजी से अकसर लम्बी बाते करती है "

"ऊहुक कोई और "

"फिर वह पारसी सिस्टर है न दुबली-पतली "

सलूजा जोर से हस पडे, "खूब, डाक्टर सिह। मैं ही नही, आप भी कमाल के आदमी है !"

"कैसे ?"

"शो तो ऐसा करते है, जैसे औरतो मे आप को कोई दिलचस्पी ही नही। और यहा की ढेर-सारी औरतो को पहचानते है—उन की खूबियो को भी ! हा हा हा !"

डाक्टर सिह हतप्रभ रह गए। उन्हे औरतो मे दिलचस्पी नही थी। कतई नही। फिर सचमुच इतनी औरतो को वह कैसे याद रख सके ? इतने स-रस ढग से ? उन की मुस्कान डूब गई। चेहरे पर रूमाल फेरने-रगडने की उन्हे तीव्र इच्छा हो आई, लेकिन उसे किसी तरह उन्होंने दबाया और मात्र शिष्टता के नाते मुस्करा रहे हो, इस तरह होठो पर तनाव पैदा कर लिया।

शायद वह डर गए थे। शायद क्यो ? निश्चय ही। निश्चय ही वह डर गए थे। अपने-आप से। अब तक वह अधिकाशत पुरुषो के ससर्ग मे रहे थे। वैज्ञानिको की कान्फ्रेसो के पुरुष। राजनीतिक अथवा सैनिक क्षेत्रो के पुरुष। हजारे—पुरुष। प्रयोगशाला के अकेलेपन मे या वहा रखे मोटे-मोटे पोथो मे भी पुरुषो-जैसा ही कोई स्पर्श

जीवन मे पहली बार उन के आसपास कुछ ऐसे व्यक्ति एकत्र हुए थे, बल्कि स्वय उन की कोठी मे आ कर रहे थे, जो पुरुष नही थे। नारीत्व

के अलावा उन सभी व्यक्तियो मे एक और विशेषता यह थी कि वे उन के सगे-सम्बन्धी नही थे। उन सभी के लिए अलग-अलग सम्बोधन सोचने पडे थे। पहले से तय नही था कि यह दीदी है, यह भाभी, यह छोटी बहन सुलोचना उन से उम्र मे छोटी थी, लेकिन वह उसे 'सुलोचनाजी' और 'आप' कहते थे। लक्ष्मी को वह 'तुम' कहते, कभी 'आप' भी कह देते। नाम ले कर उसे पुकारने मे उन्हे कभी हिचक हो आती, कभी न होती। लक्ष्मी और सुलोचना प्राय हमउम्र थी। इस से वह एक कचोट-सी अनुभव करते कि एक को 'आप' और दूसरी को 'तुम' कहने मे कोई तुक नही है। सईदा अब भी कई बार जब उसे नाम ले कर पुकारना होता और पुकारना भी ऊचे स्वर मे होता, डाक्टर सिह को अपनी आवाज़ अपरिचित लग आती। शक होता कि कही वह जोर से 'स' की बजाय 'छ' बोल गए तो

कोमलता से ऐसा नजदीकीपन उन के लिए नया-नया और आह्लादक था। अज्ञात रूप से उन्होने यह भी महसूस किया था कि बलवन्त के अवसान के बाद ये दुखभरे दिन इतनी तेजी से कभी न बीते होते, यदि आसपास ये बारीक-बारीक आवाजे न होती। मात्र पुरुषो के साथ या पुरुषत्व का आभास देती चीजो के साथ होने पर तो उन का एक-एक दिन घिसट-घिसट कर

किन्तु ये सारे आभास, सारी स्वीकारोक्तिया गुप्त थी। उन के धुधलेपन ने उन्हे एक अजीब-से उखडे-उखडे-पन मे फसा दिया था। कही पर वह अपने को कमजोर या छिछोरा भी अनुभव करते रहे थे और शायद इसी लिए जिस दिन से सईदा ने, साथ लक्ष्मी ने भी, उन की कोठी छोडी थी, उन्हे राहत मिली थी। मिली हो या न हो, लेकिन उन्होने सोच रखा था कि मिली है। कुछ-कुछ गणित के हिसाब की तरह जोड-घटा कर उन्होने भावात्मक निष्कर्ष निकाल ही लिए थे।

"पहचानने के लिए कोशिश थोडे ही करनी पडती है। वह तो अपने—

आप " कहते समय वह अपनी झेप से लड रहे थे ।

"खैर मतलब यह कि आप उस लडकी का अन्दाजा नही लगा पाए, जो मैं ने पसन्द की है ।"

"आप के मन की बात आखिर मै कैसे "

' मै अभी नाम बताता हू, लेकिन एक शर्त है । आगे का सारा काम आप को पक्का कराना होगा ।" सलूजा ने अनुनय से कहा ।

"पूरी कोशिश करूगा ।"

' तो सुनिए । उस का नाम है—सईदा ।" ,

डाक्टर सिह की पसलियो के नीचे भयकर क्रोध सुलग उठा । उन्होने उसी क्षण पलट कर सलूजा को ऐसे तीखेपन से देखा, जो स्वय उन्ही के लिए असह्य था । दोनो हाथ पीछे ले जा कर उन्होने उगलियो को आपस मे फसाया और जोर से भीच लिया । गालो और कान के लवो के अन्दर उबलता हुआ लहू अनेक भवरो मे घूम गया सईदा ! जैसे वह कोई यतीम हो ! इस बूढे के अलावा मानो उसे और कोई मिलेगा ही नही

उन की धधकती आखो की भाषा सलूजा न पढ सके—उन की निगाह दीवार से लटकते एक कैलेण्डर पर (मुस्कराता, दमकता नारी-चेहरा) टिकी थी । डाक्टर सिह ने उन की बुदबुदाहट सुनी, "सोचिए, यह कितना अच्छा काम होगा ! सईदा की न मा है, न बाप, न कोई और इस के अलावा, जो लडकी एक बार उठा कर ले जाई गई हो—भला उसे कौन अपनी बीवी बनाएगा ? लेकिन मै तैयार हू बिकाज आय'म इन लव विद हर "

"इन लव विद हर !" डाक्टर सिह ने व्यग्य से एक-एक शब्द तौलते हुए दोहराया और छाती पर हाथ मोड कर कुछ तनते हुए खडे हो गए ।

"जी हा और इस मे अजूबा क्या है ? वह कल से दरियागज

चली गई है और मैं तडप रहा हू डाक्टर सिह, प्लीज़, उसे बुलाइए, वापस लाइए शी मस्ट लिव विद मी "

"आप के मुह से फिल्मी डायलाग शोभा नही देते।"

"फिल्मी डायलाग ? क्या प्यार सिर्फ फिल्मो मे होता है ? रियल लाइफ मे नही ?"

"आप ने सईदा से भी पूछ कर देखा है ?"

"इस मे पूछने की क्या बात है ? मेरे जैसा मशहूर साइण्टिस्ट उसे मिल रहा हो—और क्या चाहिए उसे ?"

फिर मे वही क्रोध डाक्टर सिह के भीतर ठाठे मारने लगा, जिसे अभी-अभी उन्होने जब्त किया था। दोनो हाथ जेबो मे डाल कर उन्होने मुट्ठिया भीच ली।

"प्लीज, डाक्टर सिह ! अभी, इसी वक्त अपनी चमचमाती कार ले कर जाइए। दरियागज कौन-सा दूर है ? सईदा के साथ वापस आने मे हद-से-हद आधा घण्टा "

यहा और रुके रहना अब मुमकिन नही था। सलूजा का वाक्य पूरा सुने बिना वह जेबो के अन्दर मुट्ठिया भीचे हुए बाहर निकल गए। थोडा भी और रुकते तो शायद जोर से कोई अपमानजनक शब्द चीख पडते।

कारीडोर मे सन्नाटा था।

न तेज, न फीकी रोशनी—खामोश।

पीईई !

घड-घड→ घड→ → → धडाक्क !

तिलक ब्रिज पर से ट्रेन गुजर रही थी।

सोफे पर एक कोने मे सुलोचना चुप बैठी थी। सिर झुकाए। डाक्टर सिंह उस के नजदीक पहुचे। बैठे।

वह थरथराती आवाज मे बुदबुदाई, "आय'म सॉरी, डाक्टर "

चवालीस

"आप कल से आने लगिए ।" हेड-मिस्ट्रेस ने कहा ।

उठते हुए सईदा ने हाथ जोड दिए, "धन्यवाद ! बहुत ही धन्यवाद आप को !"

"इस मे धन्यवाद की कोई बात ही नही है । आप यहा पढाएगी, हम आप को पे करेगे । इट्स ए शीयर गिव्ह एण्ड टेक ।"

"फिर भी आप ने इतने मुश्किल समय मे मेरी सहायता की है कि "

हेड-मिस्ट्रेस सौजन्य से मुस्कराई ।

फिर एक बार नमस्ते कर के सईदा 'पटेल मौण्टेसरी स्कूल' से निकल आई । स्कूल के खुले आगन मे प्यारा-सा एक लडका लकडी के घोडे पर झूल रहा था । दो लडकिया लोहे के झूले पर ऊची-ऊची पेगे ले रही थी । उन की बेफिक्र खिलखिलाहटो से सईदा को ईर्ष्या हुई ।

अभी किसी को भनक भी नही कि सईदा नौकरी के लिए कोशिश कर रही है । मुरादाबाद मे जो टीचरशिप वह कर चुकी थी, उस के अनुभव के कारण दो-तीन प्राइवेट स्कूलो मे उसे अवसर मिल रहे थे । आज 'पटेल मौण्टेसरी' मे बात पक्की हो ही गई । रेडियो-स्टेशन जैसी अच्छी तनख्वाह या तरक्की की गुजाइश तो यहा नही, लेकिन उस अकेली जान को जो भी मिल जाए, बहुत है ।

अकेली !

कितनी अकेली !

उस के होठ भिच गए ।

लक्ष्मी के साथ रहते उसे पाच दिन हो चुके थे। बहुत-बहुत पाच-दस दिन और, या चलो, एकाध माह ही और सईदा वहा रह सकती है, हमेशा के लिए थोडे ही

कल पूरी रात वह एक मिनट के लिए भी नही सो पाई थी। फायरब्रिगेड लेन से सेन नर्सिङ्ग होम और वहा से दरियागज भावावेश और मानसिक धुधलेपन ने अब तक उसे आभास नही होने दिया था, लेकिन कल रात वह अच्छी तरह समझ गई थी कि वह डाक्टर सिह के यहा से बहुत सभ्य तरीके से अलग काट दी गई है। आगे की अनेक योजनाए उस के मन मे बनती-बिगडती रही थी। एक बार जी चाहा था कि दिल्ली छोड दे। चली जाए मुरादाबाद। वहा कोई-न-कोई नौकरी मिल जाएगी। दिल्ली मे सडक-सडक पर बलवन्त की यादे बिछी हुई है। कब, कहा घूमे थे, कहा, कैसी बाते की थी, किस-किस बहाने बलवन्त ने उसे छूआ था मुरादाबाद मे इन सडको को निश्चय ही भुलाया जा सकेगा। वक्त बडे-से-बडे घाव को भर देता है, धीरे-धीरे सईदा मुरादाबाद मे सच, रम ही जाएगी।

लेकिन वहा भी तो अम्मीजान की याद

दिल्ली की चहल-पहल मे अपने को गुमा देना क्या ज्यादा आसान नही? इतना लम्बा अरसा दिल्ली मे बिताने के बाद क्या मुरादाबाद जैसे छोटे और जरूरत-से-ज्यादा शान्त शहर मे उस का मन लग सकेगा?

अन्त मे उस ने दिल्ली मे ही रहने का फैसला किया था। कही कोई कमरा किराए पर ले लेगी और किसी तरह बिता ही देगी बकाया जिन्दगी। जिन स्थानो के साथ ज्यादा नाजुक यादे जुडी है, वहा जाएगी ही नही। उन के बारे मे सोचेगी ही नही। अगर सम्भव हुआ सम्भव-असम्भव क्यो? निश्चित रूप से वह भार्गव साहब से भी नाता तोड लेगी धीरे-धीरे ··अपनी अलग ही दुनिया बसा लेगी उदस-उदास,

अकेली, सिकुडी हुई, झुर्रियो वाली, छोटी दुनिया, जिस मे सिवा सईदा के किसी और को दाखिला नही मिलेगा कभी नही शादी ? कैसी शादी ? क्या धरा है शादी मे ? बडे शहर मे ताउम्र कुवारे रहने वाले भी बहुत होते है। उन्ही मे से एक हो जाएगी। सब को भूल जाएगी। सिवा अपने, सिवा मिस सईदा के वह किसी और को पहचानेगी भी नही। वक्त न कटेगा तो किताबे पढेगी, फिल्मे देखेगी कुछ नही तो कमरा बन्द कर के फर्श पर पाव पटकेगी बाल नोचेगी अपने या नाचेगी ! कुछ भी ! दूसरो को लेना या देना ?

सडक पर घूमते हुए अगर भार्गव साहब दिखाई पड गए ? लक्ष्मी या पप्पू-स्वीटी ?

वह दूर से कन्नी काट जाएगी।

अगर यह सम्भव न हुआ ? नमस्ते कर लेगी। दसियो लोगो को रोज नमस्ते की जाती है। या नमस्ते भी न करेगी। यही होगा न कि असभ्य समझी जाएगी ? समझते रहे ! जिन से कोई परिचय, कोई लेन-देन न हो, वे अच्छा समझे या बुरा, क्या फर्क पडता है ?

रिश्तो के कई धागे है, जिन मे अभी वह जकडी हुई है, पर ये सभी धागे क्रूरता से तोड देने होगे। यही उचित है, क्योकि यही होना है।

डाक्टर सिह ?

कभी सडक पर घूमते हुए वह मिल गए, तो ?

उन से भी वह कन्नी काट जाएगी।

या उन्हे पहचानेगी ही नही।

अव्वल तो वह सडक पर मिलने से रहे। वह है कार वाले—धनी ! पैदल चलने वालो से उन का आमना-सामना ? मुश्किल !

सईदा ने अपने भीतर वही हीनता जागती, सुरसुराती महसूस की, जो पिछले कई दिनो से दबी हुई थी जो बलवन्त के अवसान से पहले,

बल्कि उस के मोर्चे पर जाने से पहले वह डाक्टर सिह के सामने साफ-साफ महसूस करती रही थी उन की कोठी मे रहने के दौरान जो मन की निचली पर्तों मे जा धसी थी

नौकरी मिलने के बाद अब उसे कमरे की चिन्ता थी ।

कहा ले कमरा ?

वह बिल्कुल ही अलग किस्म का कोई माहौल चाहती थी । फायर-ब्रिगेड लेन का अमीर और शान्त इलाका या दरियागज का शोर-भरा लेकिन साफ-सुथरा इलाका जिस से जरा भी मेल न खाए

पहाडगज ?

ठीक है । छोटी-छोटी गलिया, ऊचे मकान ऐसे मकान कि मकान के अन्दर मकान गरीब या लगभग गरीब लोग गन्दी नालिया कूडे के नगे ढेर और बदबू के आवारा भभाके

बहुत ऊँचे सपने देख रही थी वह ! फाइटर-पायलट की बीवी, फायरब्रिगेड लेन की कोठी की मालकिन, रेडियो के माध्यम से सारे देश मे कूकती आवाज सपने टूटते देर लगती है क्या ? और सपना चाहे कितना भी मीठा हो कितना भी अपना-अपना हो, टूट जाने पर सब उसे भूल ही जाते है। सईदा—बहुत खूबसूरत नही, ऐसी एक लडकी अपहरण की शिकार हीनताओ से दबी-दबी वह एक मामूली टीचर ही हो सकती है बदबू की कगार पर, किसी मकान के अन्दर के मकान मे, किसी अधेरी कोठरी मे, अधे केचुओ जैसी जिन्दगी वह जीती रहेगी यही तो है जो उस की किस्मत मे बदा है रिश्ते-नातो के सारे धागे तोड कर सपने मे से बाहर आ ही जाना है उसे

उस ने स्वय को मकानो के एक दलाल के आफिस मे खडे देखा । विचारो-ही-विचारो मे कब वह बस मे बैठ कर पहाडगज चली आई थी, कब उस ने यह आफिस ढूढ निकाला था, कुछ पता नही । कैसा अजीब होता है आदमी नाम का यह जानवर भी ! कोई होश न हो तो भी कैसे

वह सही-सही अपनी मजिल तक पहुच जाता है । इस की बजाय अगर वह किसी बस या स्कूटर की चपेट मे आ गई होती

काश ! ऐसा हुआ होता ! सारी परेशानियो से, सारी तडपन से, उबलती यादो को भोगने के इस शाप से एक ही झटके मे छुटकारा !

उस ने सिर को झटका दिया और दलाल की तरफ देखते हुए कहा, "इधर कोई कमरा दिला सकते है ?"

"कितने किराए तक का, बहनजी ?" दलाल की मुस्कान, उस का 'बहनजी' सम्बोधन सब कितना व्यावसायिक ।

"यही चालीस-पचास, हद-से-हद । छोटा हो, कोई बात नही, लेकिन आना-जाना सेपरेट होना चाहिए ।"

"बिल्कुल सेपरेट तो नही, आलमोस्ट सेपरेट जरूर मिल सकता है । इस इलाके के मकान, आप जानती ही है, पुराने डिजाइन के है, इस लिए·· "

"देख लू, तभी कुछ कह सकती हू बट माइन इज ए स्पेशल केस मै टीचर हू और उस कमरे मे अकेली रहूगी डू यू अण्डरस्टैंड ? एण्ड एण्ड आय'म ए मोहमेडन "

दलाल चक्कर मे पड गया । काफी सोचने के बाद बोला, "आइए, एक एकोमोडेशन है तो सही लेट अस होप कि आप को मिल जाएगा "

दलाल के साथ वह गलियो के चक्करदार मोड पार करती रही । एक नुक्कड पर किसी ने टेढे-मेढे अक्षरो मे कोयले से लिख रखा था, 'हिन्दुस्तानियो ! एटम बम बनाओ चीन तीसरा बम फोडने वाला है '

आगे भी कुछ था, लेकिन वह निगाह मे आता, इस से पहले वे नुक्कड पार कर गए ।

अब वे एक बहुत बारीक गली मे से गुजर रहे थे । किसी दीवार

पर काफी ऊचाई से चिपकाया गया एक इश्तहार चूना उखड जाने से अकस्मात् गिरा और हवा को दाए-बाए काटता हुआ नीचे आया। उसी समय एक लडका उसे उठा कर अपने घर मे ले गया। पीले रग का विशाल पोस्टर। सईदा झलक पा कर ही उसे पहचान गई और आगे बढती रही। ऐसे पोस्टर गली-गली मे, दीवार-दीवार पर चिपके नजर आते थे—जवानो के परिवार, हमारे अपने परिवार सोमवार की शाम को उपवास रखिए, अन्न बचाइए अमरीकी गेहू या सम्मान का सौदा ?

देश को सोना उधार दीजिए, स्वर्ण-बाण्ड खरीदिए

दलाल ने यही कहा कि सईदा का भाग्य अच्छा है। सईदा ने भी यही समझा। उसे वह कमरा मिल ही गया। वृद्धा मकान-मालकिन की कुछ हिचक, कुरेदने वाली कुछ पूछताछ, कुछ शक आदि कई-कई 'कुछ' सईदा के शान्त, सौम्य और साहसी व्यक्तित्व ने बुझा दिए।

"कब आओगी, बेटी ?" वृद्धा ने पेशगी किराया टेट मे खोसते हुए पूछा।

"कल, सुबह आठ-नौ बजे।"

कमरे के एक माह के किराए की आधी रकम 'दलाली' थी। उसे दलाल को दे कर रसीद सम्भालती हुई सईदा बस-स्टाप की ओर बढ गई। इक्कीस नम्बर। सीधी दरियागज।

पैंतालीस

क

सईदा अभी नही आई थी ।

"शास्त्रीजी ने ससद मे कहा है कि दुनिया एक्स्ट्रीम्स के आधार पर कभी नही चलती ।" भार्गव मुस्करा कर अपने उस मित्र से बोले, जो उन का पोर्टेबल टेप-रिकार्डर और कई टेप वापस करने के लिए सुबह-सुबह अस्पताल आया था और 'सिन्धु-जल-सन्धि' को ले कर बहुत उत्तेजित व नाराज था ।

सन्धि के अनुसार भारत ने युद्ध की तमाम कटुता के बावजूद पाकिस्तान को आठ करोड रुपयो की विदेशी मुद्रा और नहरी पानी दे दिया था । ससद मे इस का अनेक सदस्यो द्वारा कडा विरोध हुआ था और वे वाक-आउट भी कर गए थे, लेकिन शास्त्रीजी अपने निर्णय पर अटल थे ।

"भला कोई बात हुई ? पजाब मे सूखा पड रहा है, हमारी फसले मर रही है और हम पाकिस्तान को पानी सप्लाई कर रहे है !" मित्र ने सिर हिलाया ।

"शास्त्रीजी को पूरा विश्वास है कि पाकिस्तान से कभी-न-कभी दोस्ती जरूर हो जाएगी । आज हम युद्ध के एक एक्स्ट्रीम पर खडे हैं, लेकिन किसी भी एक्स्ट्रीम पर हमेशा नही रुका जा सकता । नेहरूजी ने भी कहा था कि सन्धि का मुख्य उद्देश्य है पाकिस्तान के साथ समझौता करना, याने शान्ति खरीदना ।"

"भई, अपने को यह बात नही पचती ।" मित्र ने कहा ।

उसी समय सईदा ने वार्ड मे प्रवेश किया ।

मित्र हसा, "लीजिए, आ गई एक ! बीमारी मे भी आप लडकियो के काजी जरूर रहेगे ! मै चलू ?"

भार्गव बिल्कुल न हसे । मित्र समझ गया कि वह गलत अवसर पर मजाक कर बैठा है । उस के चेहरे पर शर्मिन्दगी उभरने लगी । सईदा नजदीक आती, तब तक वह उठ कर दरवाजे की ओर बढ चुका था ।

"नमस्ते ।"

"आओ, सईदा ! इतनी सुबह कैसे ?"

सईदा गम्भीरता से बैठी और बैठने के बाद ही मुस्कराई ।

रूखी मुस्कान । टेप-रिकार्डर पर निगाह पडते ही जैसे बातचीत शुरू करने का सूत्र मिल गया । बोली, "शायद अभी आया है वापस ?"

"हा ।" भार्गव अपने उत्साह मे सईदा की आवाज की कठोरता पर ध्यान न दे पाए । करवट लेते हुए बोले, "तुम्हे एक्चुअल फाइटिंग के टेप सुनाऊ ? एक मिनट "

कई टेपो मे से एक को अलग निकाल कर उन्होने टेप-रिकार्डर मे लगाया । टी०-के०-वन माडल का छोटा-सा, बैट्री-टेप-रिकार्डर

सईदा का बिल्कुल मन नही था उन खूनी आवाजो को सुनने का, लेकिन मना कर पाती, इस से पहले टेप चल चुका था ।

वार्ड के अन्य मरीज चौकन्ने हो कर आवाज की दिशा मे झुक आए ।

धाय किडक् · ऐय ! सम्भल ! मारो ! मारो होशियार ! फायर ! सा'ब उधर बहुत ज्यादा शेलिग है धडाम सिग्नै-लिग साफ नही है बढो ! खडखडखडखड उधर देख ! हुक् · क्चाय-क्चाय ! शीईंईंई अम्बाआ माताआ की ? जै ! भारत माताआ की ? जै ! ·हमारे धायँ-धाय-धाय· हमारे कैप्टन सा'ब

च्यायाय ! ईईई कैप्टन सा'ब नही रहे खच्खच्खच् क्रीईं मारो ! आआआह ! भून डालो बढो बढो वीरो क्रीईई ग्राग्राआ शोओग्रो म्डाम् हर-हर महादेव ! उधर ! उधर बढो ! पिल-बॉक्स गेट द पिल-बॉक्स ! फालो मी ! होर-होर-होर •• म्डाम-म्डाम !

बन्द।

सईदा ने टेप पर हाथ रख दिया।

"क्यो ? डर लगता है ?"

' "

'अच्छा, मैं घायल हुआ था न उस की आवाजे सुनो एण्टी-एयरक्राफ्ट गन्स " भार्गव ने 'रिवाइण्ड' वाले पाइण्ट पर नॉब घुमा कर सारा टेप वापस खीच लिया और दूसरा टेप चलाया। सईदा ने हताश होते हुए थूक निगला और हाथ गोद मे रख लिए। टेप सुनाने के लिए कितने उत्सुक है भार्गव ! इन की कल्पना मे भी न होगा कि सईदा विदा लेने आई है . ओह ! कैसे कह पाएगी, वह जा रही है'

टेप चला।

हू ! हू ! हुऊ ! हूबू ! बू

सईदा ने फिर से थूक निगला। सायरन !

सायरन खामोश।

भागते कदमो की चाप ••

ड्रोग्रोओ

क्योओओ

फायर !

मिस्टर भार्गव ! हाइड योरसेल्फ

एलर्ट !

घ्रोग्रोग्रो

ओवो

धडधडधडधडधड !

ह्राआ,

धड्धडधडधडधड !

भार्गव बुदबुदाए, "हवाई जहाज अब बिल्कुल करीब है। अब फटने ही वाला है "

ह्रोओवो

धडधडधड- - - - - - - - - - - -

ह्रावोक्क्क्क् !

धडाम

बची !

"फट गया ! अब मलबा गिर रहा है ·सारे आकाश मे—" भार्गव बोले और चौंक गए। स्टाप-बटन दबा कर उन्होने उसी क्षण टेप रोक दिया।

सईदा जोर से चीखी थी।

"सईदा ? क्या हुआ ?"

वह थरथरा रही थी। आखे फटी-फटी। चेहरा सफेद, विकृत।

वह बिलख उठी।

सारा चेहरा पल्लू मे छिपा कर भुरभुराती हुई वह सिसकिया भरने लगी। भार्गव ने उठने की चेष्टा के साथ उस की पीठ की ओर हाथ बढाया।

दो नर्से दौड आई।

ख

"डाक्टर सिह ? दिस इज सेन नर्सिङ्ग होम।" फोन पर वह सिस्टर उत्तेजना मे बोल रही थी, "प्लीज जल्दी आइए ! समथिंग

वेरी सीरियस "

ग

काफी पीने के बाद सईदा कुछ स्वस्थ हुई।

"मैं एक बात कहने आई हू।"

'बोलो।"

"प्रामिस करिए कि आप मना नही करेगे।"

"प्रामिस।"

"मै जा रही हू।"

"कहा ?"

"कही भी।"

"क्या मतलब ?"

"आप के यहा आखिर कितने दिन रहूगी ?"

"यह तुम्हारे सोचने की बात है या मेरे ?"

"मेरे।"

" "

" . "

"लेकिन अचानक जाने की यो सूझी कैसे ?"

"अचानक नही, मैं कई दिनो से कोशिश करती रही हू। मुझे एक जगह नौकरी मिल गई है।"

"कहा ?"

"कही भी।"

"अजीब लडकी हो! याने क्या हमेशा के लिए नाता तोड लेना है ?"

"शायद।"

"लेकिन क्यो ?"

"कई वजहे ऐसी होती है जो बताई नही जाती ।"

भार्गव की भौहे सिकुडी, "लक्ष्मी ने कुछ कह-वह तो नही दिया ?"

"नही, बिल्कुल नही ।"

'उसे मालूम है, तुम जा रही हो ? उस से पूछ कर देखा है ?"

"नही ।"

"समझ मे नही आता "

'मै ने एक कमरा भी किराए पर ले लिया है ।"

"सईदा !"

"आप से विदा लेने आई हू ।"

लेकिन तुम जा कहा रही हो ? कहा रहोगी ? कहा नौकरी करोगी ?"

"भार्गव साहब, आप ने हमेशा मेरी मदद की हे हमेशा मेरे लिए तकलीफे उठाई है लेकिन एक अर्ज कर रही हू बुरा न मानिएगा "

" "

"मेरी दिली ख्वाहिश है कि आइन्दा हम एक दूसरे को न पहचाने ।"

"क्या कह रही हो, सईदा ?"

"ठीक ही कह रही हू, भार्गव साहब ! मै उन सब से दूर रहना चाहती हू जिन्हे देख कर मुझे 'उन' की याद आए आप उन के बडे भाई की तरह थे मै आप से भी "

" "

"राह चलते कभी आमना-सामना हो जाए, तो भी···प्लीज़· मुझे बिल्कुल मत पहचानिएगा ।"

वह उठ खडी हुई ।

"सईदा, सुनो एक मिनट "

उस ने भार्गव के घायल पैरो को छूआ और मुड कर जाने लगी ।

"सईदा रुको "

वार्ड की सारी लम्बाई पार कर के वह दरवाजे से बाहर निकल गई । पीछे से भार्गव की पुकार सुनाई दी, "रोको कोई रोको उसे "

अगर वह पलग से उतर सकते होते, जरूर दौड कर उन्होने

वह जल्दी-जल्दी सीढिया उतरने लगी ।

भय लगा, अभी कुछ नर्सें भागती हुई आएगी और पकड लेंगी उसे "

सडक पार करने के लिए वह दौड पडी ।

और एक जोर का हार्न ।

ब्रेक लगने की कर्कश, खुरचती आवाज ।

कार रुक गई । शोफर ने उसे घूर कर देखा, निम्न-स्तरीय भाषा मे कुछ कहा भी । वह अनसुनी कर के सामने की पटरी पर आ गई ।

उस ने एक स्कूटर को आवाज दी । सारी स्थिति समझा, सारी बात तय कर उस ने उसे सडक पर, भार्गव के घर के सामने रोका और ठोस कदमो से भीतर आई ।

तब लक्ष्मी मैले कपडे धोबी को देने के लिए इकट्ठे कर रही थी । फर्श पर एक तरफ उन का ढेर लगा था । सईदा ने अपनी धोती उन मे देखी । उस ने चुपचाप उसे खीच लिया और स्टोर-रूम की ओर जाने लगी, जहा उस की अटैचिया व बिस्तर रखा था । चकित लक्ष्मी पीछे-पीछे आई, "क्या बात है, सईदा ?"

"भाभी " सईदा भार्गव के सामने कठोर रह सकी थी, लेकिन लक्ष्मी के सामने उस का सारा जिस्म झनझना उठा, "मै जा रही हू ।"

"कहा ?"

"मैं ने नौकरी कर ली है एक जगह और कमरा भी ले लिया है " जो-जो उस ने भार्गव साहब से कहा था, सब यहा दोहराना पडा ।

लक्ष्मी बिफर गई, "तुम्हारा दिमाग तो सही है ? हमारे रहते तुम दर-दर की ठोकरे खाओ ?"

"नौकरी हो, कमरा हो, फिर ठोकरे कैसी ?"

"जिगर कैसे चलता है तुम्हारा ऐसी बाते करते ? कान खोल कर सुन लो। तुम नही जा सकती ! पप्पू ? स्वीटी ? ओ स्वीटी ? इधर आओ, देखो, तुम्हारी आण्टी जा रही है।" लक्ष्मी दरवाजे पर खडी हो कर चीखने लगी।

सईदा ने पल भर को आखे मूद ली। बच्चे ! वे आए, इस से पहले चले जाना है, वरना वे लिपट जाएगे। बिस्तरा, जो पहले से बधा हुआ तैयार रखा था, वह स्टोर मे से कमरे मे घसीट लाई, "मत पुकारो भाभी, जाने दो।"

"कैसे जाओगी। 'वह' चल नही सकते, वरना हास्पिटल मे ही खबर लेते तुम्हारी ! जाओ, देखू ! मै कोई 'उन' की तरह लाचार नही हू, समझी ? हाथ-पाव भले चगे है दरवाजे से निकलो तो सही "

जी कडा कर के सईदा ने बिस्तर घसीटा और दरवाजे तक पहुच गई।

'पप्पू ! पप्पू ! स्वीटी ! कहा हो ?" लक्ष्मी ने शोर मचा दिया।

दो पडोसने झाकने लगी और बोली, "इधर तो नही है, जी ! क्या बात है ?"

सईदा ने ड्राइवर से कहा, "बिस्तरा रखो। मैं अटैचिया लाती हू।"

ड्राइवर ज्यो ही बिस्तरा उठाने के लिए झुका, लक्ष्मी ने झपट कर उस पर पैर रख दिया।

"भाआभीई !" सईदा चबाए स्वर मे बोली "जाने दो मुझे !" उस ने लक्ष्मी को लगभग धकेल दिया।

"पप्पू ! स्वीटी ! कहा हो ? पप्पू ?" लक्ष्मी फिर चीख उठी। कई औरते दूर-दूर से गर्दने निकालने लगी। लक्ष्मी के हटते ही ड्राइवर

ने बिस्तरा उठा कर स्कूटर मे रख दिया ।

सईदा दोनो हाथो मे एक-एक अटैची लिए हुए कमरे मे से निकलना चाहती थी और लक्ष्मी दरवाजे के पलडे थाम कर खडी थी—कापती हुई ।

"हटो भाभी !"

" "

सईदा उस के बिल्कुल पास आ कर, आमने-सामने, लगभग चुनौती की मुद्रा मे रुकी और भर्राई आवाज मे बोली, "जाने दो, कहती हू "

लक्ष्मी के आसू बहने लगे ।

सईदा के दोनो हाथो मे अटैचिया न होती तो एक हाथ से लक्ष्मी को किनारे हटा कर उस ने रास्ता बना लिया होता । वह इस तरह आगे बढी, मानो कोई विशाल प्राणी किसी झाडी मे घुस रहा हो । अपने पूरे शरीर से लक्ष्मी को धकेलती हुई वह घर से बाहर आ गई और स्कूटर की ओर लपकी ।

लक्ष्मी उस से पहले ही स्कूटर मे बैठ गई और थरथराती हुई बोली, "अकेली कैसे जाओगी !"

जगह-जगह से सारा मुहल्ला झाक रहा था ।

अटैचिया थामे सईदा असमजस मे खडी रह गई । घर से तो वह जबरन निकल सकती थी—निकल ही आई—लेकिन स्कूटर के अन्दर से लक्ष्मी को कैसे निकाले ? गवारो की तरह हाथ पकड कर झटके तो देने से रही ।

"जा ! शौक से जा !" लक्ष्मी कह रही थी, "लेकिन खैर-खबर की गुजाइश तो छोड ! कोई तुझे मार नही डालेगे हम—हा !"

सईदा को कुछ-कुछ चक्कर आ रहा था ।

बिस्तरे के ऊपर दोनो अटैचिया रख उस ने पूछा, "साथ चलोगी ?"

"तुम तो ऐसे जा रही हो जैसे ."

"मेरा कमरा देखना है न ?" सईदा विद्रूप से हसी, "कभी-कभार आ सको, इस लिए ?"

"सईदा ! अभी भी कहती हू, मत जा।"

"घर खुला ही छोड कर चलना है क्या ? जाओ, ताला लगा आओ।"

लक्ष्मी बैठी रही, "तुम जाओ। ताला वही रखा है।"

ताले की जगह सईदा जानती थी। चाबियो का गुच्छा उसी मे भूल रहा होगा। वह कमरे मे आई, ताला लिया, बाहर निकली। पप्पू-स्वीटी न जाने कहा वापस आएगे तो घर बन्द देख कर लेकिन पडोसने उन्हे बहलाए रखेगी

ताला लगा कर सईदा सीढिया उतरी और लक्ष्मी के बगल मे बैठ गई।

स्कूटर चल पडा।

मन के किसी अनजान कोने मे सईदा को एक तसल्ली भी थी स्वय से ही छिपाते हुए जरूर उस ने यह चाहा था कि कोई उस के साथ चले

घ

डाक्टर सिंह ने प्रवेश किया, तब सलूजा की सास फिर से उखडने लगी थी। सुलोचना के अलावा नर्सिङ्ग होम के दो और डाक्टर व कुछ नर्से उन्हे बचाने की पूरी कोशिश कर रहे थे। उन का स्वास्थ्य पिछले दिनो काफी सुधर गया होने के कारण इतनी जल्दी उन्हे तीसरा दौरा दबोच लेगा, यह विश्वसनीय नही था।

सुलोचना की पलके, जो गीली हो गई थी, सामान्य से प्राय दोगुनी झप रही थी।

डाक्टर सिंह खामोशी के साथ एक तरफ खडे हो गए। सुलोचना उन के नजदीक आ कर थमी और फिर से सलूजा के नजदीक लौट गई। चुपचाप ··

"स-ई-दा···" सलूजा का अस्पष्ट स्वर।

डाक्टर सिंह आतंकित रह गए।

सलूजा को एक और इंजेक्शन दिया गया। उन्होंने आंखें खोलीं। हौले-हौले पूछा, "डाक्टर ·सिंह आग ए ?"

वह उन के सिरहाने जा खडे हुए। सलूजा ने उन्हें पहचाना और बुदबुदाए, "सई दा क हाहै ?"

" "

"उसेबु लाइ ए "

"आ रही है, डाक्टर साहब, अभी आ जाएगी "

"उस सेकहिए किमैं उसेब हुत "

"मैं जरूर कहूंगा "

"डाक टरसिंह मुझेब चाइए मुझे सईदासे शादीक रनी है · "

" "

"करनी है सईदासेशा दीकर नीहै बचाइएमु मुझे ·"

"आप की शादी जरूर " डाक्टर सिंह बडी मुश्किल से अपनी सिसकी रोक पाए, "· होगी सईदा से ही होगी · "

सिसकी उन की पसलियों को बार-बार झिंझोड रही थी ·सलूजा का चेहरा आंखें·· जीने की कितनी डरावनी इच्छा ··

"होगी न ? जरूरहो गी ? ठैंक्यू डाव अक् "

उन की गर्दन लटक गई।

छियालीस

अधेरे मे एक अस्थिपजर चमक रहा था। वह काफी दूर खडा था इस लिए छोटा लग रहा था। धीरे-धीरे उस ने कदम उठाए और बडा होता हुआ पास आने लगा। उस ने छलाग लगाई—झुम्म ! वह अधर टॅग गया और वही टगा रहा—हाथ-पैर की हड्डिया सिर्फ धागो से बधी हुई हो, इस तरह झूलती हुई हिक्-हीईक् ही ही-ही-ही अट्टहास !

और—

डाक्टर सिह जाग गए।

अधेरा

शक हुआ, जागने के बावजूद अस्थिपजर दिखाई पडेगा—इसी अधेरे मे। इसी कमरे के अधेरे मे ! उन्होने झट नीला बल्ब जलाया और पलग मे कुछ मिनट तक बैठे रह गए। ऐसे सपने प्राय रोज आ रहे थे। सलूजा ! मृत्यु के समय उन की डरावनी नारी-लालसा क्या क्या सचमुच नारी मे इतना सम्मोहन होता है कि डाक्टर सिह सुराही के पास आए और पूरे दो गिलास पानी पी गए। सलूजा ने पृथ्वी मे, पृथ्वी की सामाजिकता मे जो सार्थकता स्वीकार कर ली थी, क्या वह डाक्टर सिह के प्रयासो के कारण थी ? उन्हे लगा, नही जरूर वह नारी के प्रति अकस्मात्, तीव्र आकर्षण के कारण उत्पन्न हुई—सईदा के कारण।

फिर सईदा की याद ?

अब उसे याद न करने, उस पर कुछ भी न सोचने मे ही समझदारी है।

कितने दिन हो गए उस से मिले हुए ? शायद एक महीने से भी ज्यादा। डाक्टर सलूजा की देह को ले कर सुलोचना और उस का पति, जो उसी दिन हवाई-जहाज से आ पहुचा था, जब इलाहाबाद वापस जा रहे थे, सईदा स्टेशन नही आई थी। लक्ष्मी भी नही। सुलोचना के जाने के दो दिन बाद उन्हे लक्ष्मी का फोन आया था और नितान्त औपचारिकता के साथ उन्होने यह जान कर 'हार्दिक खेद' प्रकट किया था कि सईदा भार्गव साहब का घर छोड कर जा चुकी। उन्होने इतना भी नही पूछा था कि सईदा का नया अता-पता लक्ष्मी को ज्ञात है या नही। किसी बहुत बडे मकान का कोई बेकार कमरा यथासम्भव हमेशा के लिए बन्द कर दिया जाए, कुछ इसी तरह वह सईदा और बलवन्त की यादो को हमेशा-हमेशा के लिए दूर धकेल देना चाहते थे।

केवल दूर धकेलना या यादो की दस्तको की क्रूर हत्या करना ?

नही करना है विश्लेषण ! उन्होने रजाई गर्दन तक खीच ली। अच्छा या बुरा, सईदा जब दूसरी पगडण्डियो पर जा ही चुकी है तो उसे यही सोच कर जाने देना चाहिए कि कभी आई ही नही थी।

सलूजा जिन्दगी भर पृथ्वी की सामाजिकता का मजाक उडाते रहे और मरते-मरते खुद अपना भी मजाक बना गए। हुह ! डाक्टर सिंह ने नीला बल्ब जलता छोड कर करवट बदली। रजाई कुछ और खीच कर सिर के ऊपर भी डाल ली और आखे इस दृढ निश्चय के साथ बन्द कर ली कि अब नीद न आएगी तो भी खोलेंगे नही।

नवम्बर आधा बीत चुका था लेकिन ठण्ड इस साल बहुत कम थी। एक पतली रजाई ही ओढी जा सकती थी। नीली, मद्धिम रोशनी रजाई के नीचे बिल्कुल नही छन रही थी। थोडी-बहुत छन भी रही हो तो बन्द पलको ने उन पर आड लगा दी थी।

सर्र ··सर्र ·

कौन आ रहा है यह ?

दूर

कोई साप—विराट ! कैसा डोल रहा है ! सर्र सर्र फन चढाए हुए । फन पर ऐनक-जैसी आकृति छोटी-छोटी आखो मे चमक भी है ओह ! उस के लम्बोतरे शरीर का तीन-चौथाई हिस्सा सडाक् से ऊपर उठ गया है डोलता जा रहा है और आ रहा है करीब दो छोरो मे फटी हुई जीभ लपलपाता अभी इस के मुह मे कुछ नही था, अब है क्या है वह ? सफेद-सफेद ? साप जोरो से बढ रहा है—सफेद-सी वह चीज ब्रेसियर है फो ! अधेरे के फर्श पर वह फन पटक रहा है झाय-झाय ब्रेसियर के फीते फडफडा रहे है साप झपट कर उन की छाती पर चढ गया है छाती पर उस का वजन महसूस भी हो रहा है फीतो वाली उस सफेद चीज को वह उन के चेहरे पर पटकने ही वाला है फोओओ

जागने से पहले डाक्टर मिह का समूचा शरीर झुरझुरा उठा ।

चेहरे पर से रजाई हटाई । फीकी, नीली रोशनी मौजूद थी । उन्हे राहत मिली । सभी सपने 'ब्लैक-एण्ड-व्हाइट' मे होते हैं । चूकि रोशनी का नीलापन देखा जा सका, उन्हे निश्चय हो गया कि वह जाग गए है ।

भय को नकारने के लिए वह भय के और करीब जाने के सफल प्रयोग कर चुके थे । क्या औरत को नकारने के लिए उस के करीब ? विचार ने उन के होठो पर क्षणिक मुस्कान ला दी । वह रजाई से बाहर निकले और स्लीपर्स मे पाव डालने लगे । तलुओ पर रबर का ठण्डा स्पर्श अगर सईदा, सुलोचना या लक्ष्मी, किसी का भी कोई वस्त्र इस कोठी मे छूट गया हो तो उसे तकिए के नीचे रख कर क्या 'ऐसे' सपनो से छुटकारा नही पाया जा सकता ? इस 'टोटके' की कल्पना-शीलता ने उन के होठो पर फिर मुस्कान पैदा कर दी । किसी का कोई वस्त्र नही छूटा होगा—उन्हे पूरा यकीन था । उन्होने खोज करने का प्रय न कियास और कुर्सी मे बैठ गए ।

क्लट-क्लिट क्लट-क्लिट

खामोशी मे एलार्म-वाच कितनी मुखर हो उठती है ! तीन बज चुके । सुबह होने मे अभी तीन, साढे तीन घण्टो की देर है कैसे कटेगा इतना समय ? सोने का प्रयास करने पर तो फिर से सपने उन्होने तय किया कि वह सोचेगे । ऐसे विषयो पर सोचेगे, जिन का औरतो से दूर का भी रिश्ता न हो । सब से पहले उन्हे रूस का ध्यान आया । रूसी प्रधान मन्त्री कोसिगिन ने युद्ध-विराम होते ही निहायत दोस्ताना ढग से शास्त्रीजी और अय्यूबखा की मुलाकात के लिए ताशकन्द के राजनयिक दरवाजे खोल दिए थे । शास्त्रीजी ने कहा था कि उन्हे अय्यूबखा से मिलने और शान्ति-वार्ता करने पर कोई एतराज नही है, लेकिन इस वक्त, जब पाकिस्तान लगातार युद्ध-विराम का उल्लघन कर रहा है, मुलाकात उचित नही होगी ।

हु अच्छा विषय था सोचने का । सईदा से इस का कोई ताल्लुक ही नही ।

११६ वर्षो बाद लन्दन से गुरु गोविन्दसिह के पवित्र हथियार शीघ्र ही धूमधाम के साथ भारत लाए जाने वाले है जो अब तक लार्ड डलहौजी के वशजो के अधिकार मे रहे ।

ऐसे और भी तो विषय हो सकते हे ?

हा, याद आया । धूमकेतु 'इयेकासाकी' ! वह सूर्य के इतना नजदीक पहुच गया था कि गुरुत्वाकर्षण न सह पाने के कारण फट गया था । विस्फोट के बाद उस का बहुत थोडा हिस्सा अपनी भ्रमण-कक्षा मे घूमता हुआ सूर्य से दूर जा सका था ·ऐसी 'आकाशीय दुर्घटना' करोडो क्या, अरबो सालो मे भी नही होती । डाक्टर सलूजा इस विस्फोट के समय जिन्दा होते तो कितने उत्तेजित

हु · यह भी अच्छा विषय था ।

और कौन-सा विषय लिया जाए ?

युद्ध होने से पहले उन के मन मे यह हीन-भावना धुधली-धुधली पल रही थी कि उन की डाक्टरेट की डिग्री किसी विदेशी विश्वविद्यालय की न हो कर भारतीय विश्वविद्यालय की थी। युद्ध ने इस हीनता को हमेशा के लिए पोछ दिया था। अच्छा विषय !

हा। ठीक। चीन। सिक्किम और लद्दाख मे वह सशस्त्र हमलावरी कर रहा है भारतीय फौजो से उस की छोटी-छोटी मुठभेडे भी हुई है और उस के अनेक सैनिक खेत रहे है

मुठभेड। आग। देश। सरहदे। हमले। हवाई हमले। बलवन्त। सईदा।

फिर सईदा के विचार ?

इस से तो अच्छा है, स्वर्ण-बाण्डो पर सोचा जाए। डाक्टर सिह के पास सोने के रूप मे कुछ भी नही। अगूठी भी उन्होने कभी नही पहनी। और यहा 'ऐसा' है भी कौन, जिस के बहाने घर मे सोना हो ? अगर वह अगूठी पहनते होते, उसी को उन्होने बाण्डो के एवज मे राष्ट्र को उधार दे दिया होता। सारा देश इम अभियान मे साथ दे रहा है गरीब, अमीर सब बढ-बढ कर··

स्वर्ण-बाण्ड विदेशी मुद्रा बचाएगे। तब अमरीकी सहायताओ के एहसान से बचा जा सकेगा। वियतनाम पर बमबारी कर रहा अमरीका। पैटन टैंक अमरीकी ही तो थे। पैटन टैंक और सैबर जेट। भारत के नैट। हवाई कलाबाजिया। बलवन्त। सईदा।

लौट-फिर कर सईदा ! कौन सईदा ? कैसी सईदा ? किस का नाम है सईदा ?

और किस का नाम है गीता ?

अगर सईदा हिन्दू होती··

हिन्दू 'बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी धर्म-निरपेक्षता के नाम पर इस मे से 'हिन्दू' शब्द निकाल देने के सरकारी निर्णय का विद्यार्थियो और कई

राजनीतिज्ञो द्वारा कडा विरोध

सईदा यदि सचमुच हिन्दू होती

बुरी तरह झुझला कर उन्होने तकिए पर जोर से मुक्का मार दिया।

'लेकिन किसे ले कर झुझला रहे है आप ?' उन्होने इस तरह सोचा, जैसे डाक्टर सिह वह स्वय न हो, कोई दूसरा ही हो, जो डाक्टर सिंह से पूछ रहा हो, 'सईदा को ले कर ? दुनिया मे लाखो लडकिया इस नाम की होगी उन मे से कौन-सी सईदा ?'

फिर सईदा-सईदा ! क्या बेवकूफी है !

उन्होने नीद की गोलिया ली। सपने तभी आते है, जब नींद उचटी-उचटी हो। गोलियो के कारण नीद गहरी पडेगी तो कैसे आएगे सपने। रात सोने के लिए होती है, यो जागने के लिए नही। साहस के साथ—साहस ही तो !—उन्होने नीला बल्ब भी बुझा दिया और लेट कर गोलियो की खुमारी चढने का इन्तजार करते रहे।

ज्यादा इन्तजार न करना पडा।

सुबह काफी देर से उठे।

लेकिन उठने से पहले वह अस्थिपजर एक बार और उन से मिलने आया · खी-खी-खी ! पहचाना नही ? अरे, चाचाजी, मैं बलवन्त हू बलवन्त ! देख रहा हू ई-हिहिहि ! देख रहा हू कि सईदा कैसी तबाह हो रही है और मेरा चाचा मेरा साइण्टिस्ट चाचा इतना · हा-हा-हा ! इतना कायर है कि सईदा को पहचानने मे भी डरता है चाचा का तो· इईऽऽ हीऽऽ ही ! कोई फर्ज ही नही· ·

सैंतालीस

"सईदा ? तुम्हारी कौन-सी इच्छा है जो हम ने न मानी हो ? दिल कडा कर के घर से भी निकल आने दिया। अब हमारी यह इच्छा है तो तुम्हे इन्कार नही करना चाहिए।" लक्ष्मी ने कहा।

सईदा खामोश रही।

भार्गव चलने-फिरने मे समर्थ हो गए थे। कुछ दिन घर पर आराम करने के बाद आज पहली बार वह बाहर निकले थे और सपत्नीक आए थे सईदा के यहा।

परसो राष्ट्रपति भवन के दरबार हाल मे एक विशाल, गौरवपूर्ण समारोह होने जा रहा था। भारत-पाक युद्ध के वीरो को सम्मानित करने के लिए राष्ट्रपति डाक्टर राधाकृष्णन उन्हे विभिन्न पदक देने वाले थे। भार्गव का, लक्ष्मी का भी अत्यधिक आग्रह था कि सईदा इस समारोह मे जाए।

बलवन्त को मरणोपरान्त महावीर चक्र से विभूषित किया गया था। भार्गव चाहते थे, राष्ट्रपति के हाथो से यह चक्र सईदा ही स्वीकार करे।

लेकिन

समारोह मे डाक्टर सिंह भी उपस्थित होगे। युद्ध-काल मे वैज्ञानिक सहयोग के लिए उन्हे पद्मश्री की उपाधि दी जाएगी। बलवन्त का महावीर चक्र भी डाक्टर सिंह ही स्वीकार करेगे। सईदा उन के अधिकारो का हनन कैसे कर सकती है ?

"तुम्हारा अधिकार उन से भी ज्यादा है।" भार्गव बोले।

"मैं नही चाहती कि जो बीत चुका है उसे फिर से जिन्दा करू

इसी लिए मैं यह मकान किसी को दिखाना नही चाहती थी, लेकिन ” उस ने लक्ष्मी की ओर उलाहने से देखा, “आज की ही बात नही है। आगे भी ऐसा होगा।”

“क्या होगा ?”

‘जो मै नही चाहूगी, वही आप लोग चाहेगे और

भार्गव को बुरा लगा। एकदम उठते हुए बोले, “चलो लक्ष्मी, इस से और ज्यादा क्या हुज्जत करे !”

लक्ष्मी एकाध बार और मिन्नत करना चाहती थी, लेकिन उठ गई। कहा, ‘दुख को बटोर-बटोर कर इकट्ठा करना ही किसी का शौक हो तो क्या इलाज !”

“मै तो दुखो से दूर भाग रही हू, भाभी !” सईदा दरवाजे तक आई।

लक्ष्मी कटु हुए बिना न रह सकी, “कैसी भाभी ? उस दिन मै साथ न ही आई होती तो अच्छा था।”

दोनो के जाने के बाद सईदा ने तकिए मे मुह छिपा लिया और रोती रही। ‘इतना ही आसान है पिछला सब भूल जाना ?’ विचार उसे मथ रहे थे, ‘हुए को अनहुआ कर देना ?’

एक-डेढ घण्टे बाद लक्ष्मी के दरवाजे पर खटखट हुई। दरवाजा खोला तो सामने सईदा खडी थी।

दरबार हाल की गर्वीली शान आज समाए न समा रही थी तो इस मे अजूबा क्या था ? आजादी के बाद देश ने लालबहादुर शास्त्री और यशवन्तराव चव्हाण के नेतृत्व मे जो सर्वाधिक रोमाचित जीवन जीया, उस का कर्णधार, युद्ध-भूमि का सारा फौलादी शौर्य जहा एकत्र हो गया हो, वहा की छत की नक्काशी, दीवारो पर बनी या लगी कलाकृतियो मोटे-मुलायम कालीनो, चमचमाते दीपदानो मे नया ही रग हो तो

आखिर क्यो न हो ?

भार्गव और सईदा एक तरफ चुप खडे थे। भीड। सौम्य मुस्काने, आत्मविश्वासी हास्य। सैनिक अधिकारियो की रौबीली पोशाके और दमकते तमगे। एक तरफ सफेद वस्त्रो मे सिकुडी वे बेवाए, जो अपने दिवगत पतियो के पदक लेने आई थी। शान्त, गम्भीर, दृढ, विजयी।

सईदा की धडकन तेज हो गई—डाक्टर सिह आ गए थे। दरबार हाल से बाहर वह अपने जूते उतार रहे थे। केवल मोजो मे वह भीतर आए। अकेले। यहा भी उन की चाल मे वही लाक्षणिक व्यस्तता।

"सईदा ! यही बैठो। मै उन से मिल आता हू।" भार्गव बढ गए।

सईदा एक दरबान पर निगाह टिकाए रही जो किसी रोमन सिपाही की तरह अकड कर चुस्ती से आ-जा रहा था।

"नमस्कार।"

"ओहो ! भार्गवजी !" डाक्टर सिह ने, जिन्हे इतनी भीड मे भी कोई साथी नही मिल रहा था, उन से बैठने का आग्रह करते हुए पूछा, "कैसे है ?"

"ठीक हू, डाक्टर साहब, लेकिन बैठूगा नही। बस, नमस्कार करने चला आया था।"

"पत्रकारो के साथ है शायद ?"

"पत्रकारो के तो नही, किसी और के।" भार्गव ने सईदा बैठी थी, उस ओर सकेत किया, "उधर।"

डाक्टर सिह ने देखा—अरे ! सईदा ! यहा कैसे ? क्यो ? भार्गव के साथ कैसे ? मुझ से मिली भी नही आ कर ? नमस्ते भी नही ? लेकिन वह भार्गव के साथ कैसे ? वह तो उन के यहा से जा चुकी थी ? और भार्गव उस के बारे मे यो बोल रहे है, जैसे डाक्टर सिह उसे जानते ही न हो !

लेकिन तुरन्त उन्होने अपने को सम्भाल लिया। नही। उन्हे कोई

प्रतिक्रिया नही दिखानी चाहिए। सईदा कोई नही है। न है, न रही, न रह सकती है।

"अच्छा फिर, आप चलिए।" उन्होने शुष्कता से कहा।

"अकेले ही है क्या ?"

उन्हे लगा, शायद व्यग्य किया जा रहा है। सह गए। बोले, "हा।"

भार्गव लौटे और सईदा के पास बैठ गए। सईदा ने कोई जिज्ञासा न दिखाई कि वहा क्या बातचीत हुई।

बिगुल बजा।

राष्ट्रपति डाक्टर राधाकृष्णन प्रवेश कर रहे थ। भीड सम्मानार्थ उठ खड़ी हुई।

भार्गव जानते थे, डाक्टर सिह को अपने जीवन का एक और बहुत बडा आघात लगने वाला है, लेकिन वह चाहते थे कि ऐसा हो। उन्होने सईदा की जो बिल्कुल ही खैर-खबर नही ली थी, भार्गव इस से अत्यन्त क्षुब्ध थे। बलवन्त का महावीर चक्र लेने के लिए अब डाक्टर सिह का नाम नही पुकारा जाएगा। पुकारा जाएगा सईदा का नाम। बहुत दौड-धूप कर के उन्होने सम्बन्धित कागजातो मे यह 'भूल-सुधार' करवाया था।

सईदा को वही छोड कर वह अपना कैमरा सम्भालते हुए 'डायस' की तरफ बढ गए।

चीफ आफ दि आर्मी स्टाफ जनरल जयन्तनाथ चौधरी को पद्म-विभूषण की उपाधि। उन के अनेकानेक तमगो के साथ राष्ट्रपति एक और तमगा लगा रहे थे—

क्लिक !

भार्गव के कैमरे की फ्लैश-गन कौध गई। राजधानी के अनेक अखबारो, पत्रो के फोटोग्राफरो की चुस्त फ्लैश-गनें—रोमाचक।

एयर-मार्शल अर्जनसिह । पद्म-विभूषण की ही उपाधि ।

फिर से क्लिक ! फ्लैश-गने सम्पूर्ण वातावरण को बार-बार रजत-क्षण देती हुई ।

पूरे इकहत्तर पदक दिए जाने थे ।

और अब ऐलान किया जा रहा था—

"अमृतसर पर युद्ध-विराम से कुछ ही घण्टे पहले हुए हवाई हमले मे, व्यक्तिगत सुरक्षा की कोई परवाह न करते हुए, शत्रु से लोहा लेने के लिए, स्क्वाड्रन-लीडर बलवन्त सिह को, मरणोपरान्त, महावीर चक्र से विभूषित किया जाता है । उन की वाग्दत्ता कुमारी सईदा बानो महावीर चक्र स्वीकार करे "

सईदा उठी ।

डाक्टर सिह हतप्रभ बैठे रह गए ।

सईदा का सौम्य चेहरा झुका हुआ था । सफेद साडी मे एक-एक कदम कुमकुमी सागर-सा अथाह हस-व्यक्तित्व वह बढ रही थी कैमरे के व्यू-फाइण्डर मे वह मुश्किल से दो इच की बिम्बित हो रही थी सब लोग, सब चीजे व्यू-फाइण्डर की चिकनी, काचीली सतह पर छोटी-छोटी सिमट आई थी ।

अब सईदा राष्ट्रपति के सामने खडी नमन कर रही थी । राष्ट्रपति—शुभ्र, कोमल दार्शनिकता वह उसे महावीर चक्र प्रदान कर रहे थे सईदा के आँसू उन के हाथ पर चू गए सईदा व्यथापुज चक्र थामते उस के हाथ काप रहे थे ।

क्लिक !

रजत-क्षण !

क्लिक ! क्लिक ! कई रजत-क्षण !

भार्गव ने व्यू-फाइण्डर मे देखते हुए रील आगे घुमाई ।

दो इची सईदा

नमन के बाद वह लौट रही थी। आसुओ मे डूबी आखे, सारा शरीर थर-थर।

वह लडखडाई।

क्लिक !

एक सैनिक अधिकारी ने तत्काल उसे थाम लिया।

क्लिक !

सहेजता हुआ वह सईदा को उस की कुर्सी की ओर ले जा रहा था।

क्लिक !

भार्गव ने जल्दी-जल्दी पलके झपकाई, गहरी सास ली, इधर-उधर देखा, सास छोड दी। पलके भीग आई थी झट रील घुमा कर उन्होने अगले स्नैप की तैयारी कर ली। इस के बाद ही उधर देखा, जहा डाक्टर सिंह बैठे थे—आघात और डूबन की अविश्वसनीयता के साथ गोद मे हाथ रखे, आखे फैलाए और देखते हुए भी कुछ न देखते हुए· कुछ ही देर मे अब उन के नाम की भी घोषणा होगी युद्ध-कौशल मे आधुनिकीकरण के लिए दी गई वैज्ञानिक सेवाओ का विनम्र सम्मान · पद्मश्री

किन्तु जब वह उठेगे, राष्ट्रपति की ओर बढेगे, उन का चेहरा कितना प्रताडित, कितना झुलसा-झुलसा, कितना ठगा-सा···